सुरेन्द्र मोहन पाठक

ग्रैंड मास्टर

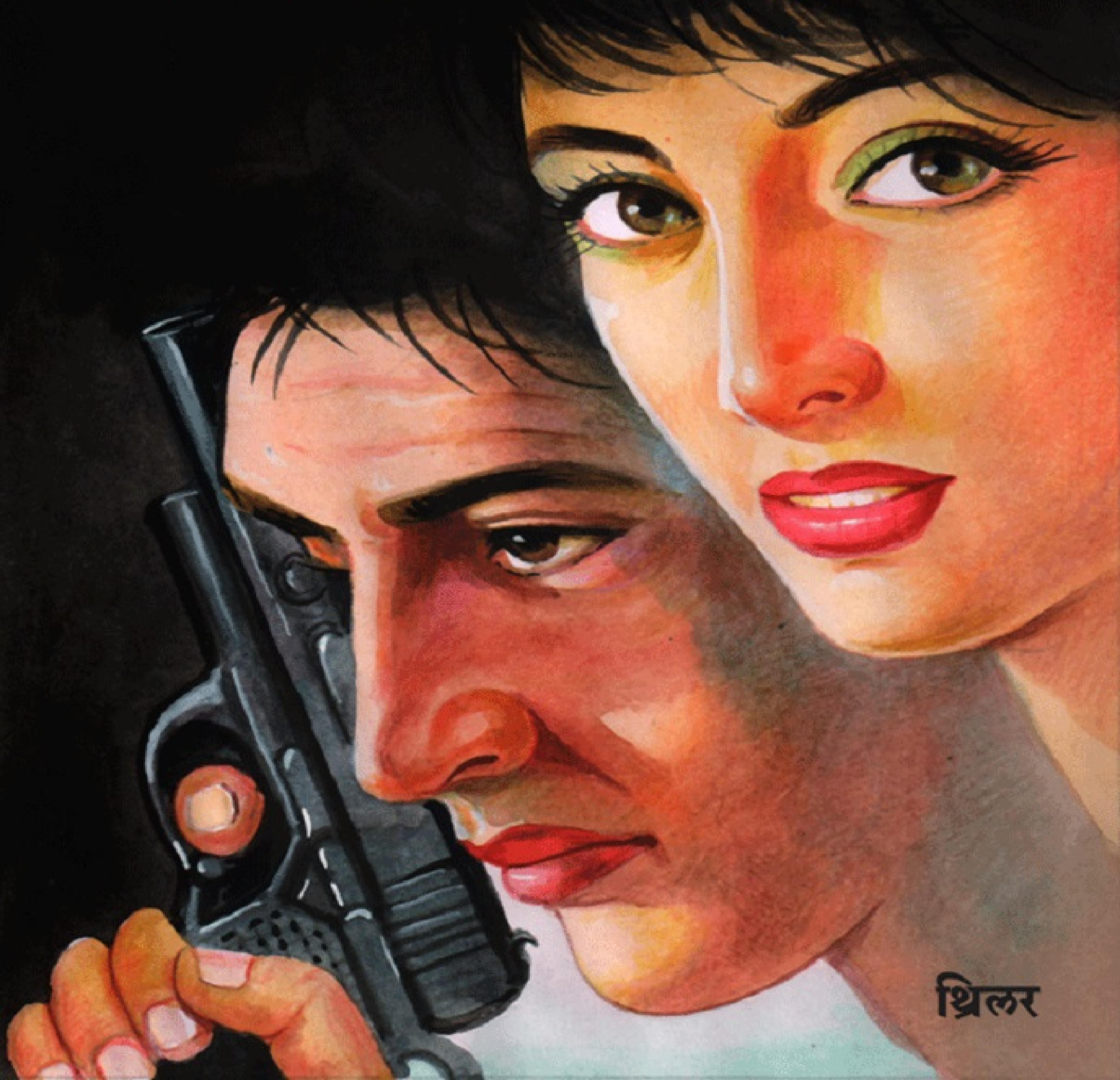

ग्रैंडमास्टर

(Thriller)

Surender Mohan Pathak

First Published : 2007
Copyright: Surender Mohan Pathak 2014
Author Website: www.smpathak.com
Author e-mail : contact@smpathak.com

पूर्वाभास

डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला योग्य, उच्च शिक्षा प्राप्त डाक्टर था लेकिन लक्ष्मी की कृपा से महरूम था । अपनी कोई माली औकात बनाने का मौका उसके हाथ में तब आया जबकि उसे एडवोकेट कपिल कोठारी मिला जो कि, बकौल उसके, उसके पिता का परिचित था । उसकी वजह से डाक्टर सिंगला की प्रैक्टिस बढ़ने लगी और यूं हासिल हुए मरीजों में सबसे ज्यादा हैसियत वाला शख्स सदानन्द पुणेकर था जो कि अपने आप को सम्भ्रान्त बिजनेसमैन कहता था लेकिन असल में दुबई के एक ‘भाई’ के नारकाटिक्स समगलिंग के धंधे का फ्रंट था, जिसकी बीवी नमिता कड़क जवान थी और जिस से पहली मुलाकात पर ही उसकी हालत गश खाने जैसी हो गयी थी । एडवोकेट कोठारी सदानन्द पुणेकर का ट्रबलशूटर था और उसकी वजह से सिंगला की नमिता पुणेकर से अक्सर मुलाकातें होने लगीं जो कि आखिरकार भीषण लव अफेयर तक पहुंची ।

एक रात ऐशली क्राउन प्लाजा में हुई उनकी पार्टी के बाद और नमिता को उस के घर, जो कि गोरई सी-बीच पर एक ऐश्वर्यशाली काटेज था, छोड़ कर डाक्टर सिंगला जब बोरीवली ईस्ट में स्थित अपने फ्लैट पर पहुंचा तो उसने एक नौजवान लड़की को, जो कि उसके लिये सर्वदा अपरिचित थी और जो पता नहीं कैसे बन्द फ्लैट में दाखिल हो पायी थी, अपने फ्लैट के ड्राइंग रूम में मरी पड़ी पाया । पुलिस तफ्तीश से मालूम हुआ कि लड़की का नाम श्यामली सावन्त था और वो ड्रग्स के ओवरडोज से मरी थी । तफ्तीश के लिये आये इंसेक्टर मनोहर पावटे की निगाह में वो कत्ल का केस था और केस में डाक्टर सिंगला भी सस्पैक्ट था ।

जब कि डाक्टर को लग रहा था - और ठीक लग रहा था - कि सब किया धरा उसके नये बने मरीज सदानन्द पुणेकर का था क्योंकि वो पहले भी एक अपरिचित, गोली से घायल महिला को गोली निकलवाने के लिये उसके दादर स्थित क्लीनिक पर ला चुका था और बावजूद काफी हील हुज्जत के उसे पुणेकर की जिद पर उस काम को अंजाम देना पड़ा था ।

बाद में पुलिस ने डाक्टर सिंगला को श्यामली सावन्त के कत्ल के इलजाम से तो बरी कर दिया लेकिन केस को क्लोज न किया इसलिये उसे हुक्म हुआ कि वो पुलिस से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखे ।

उस कत्ल के सन्दर्भ में डाक्टर सिंगला सदानन्द पुणेकर से उसके ग्रांट रोड पर स्थित ओमेगा इन्टरनैशनल नामक आफिस में मिलने गया तो पहली बार ये बात खुलकर सामने आयी कि पुणेकर कोई सम्भ्रान्त व्यापारी नहीं, नारकाटिक्स समगलर था और ओमेगा इन्टरनैशनल का स्ट्रेट धंधा और भव्य आफिस उस के गैरकानूनी धंधों की ओट था ।

पुणेकर भारी उजरत का लालच देकर डाक्टर सिंगला को अपने धंधे में शामिल होने के लिये - अपने से पहले उसके डाक्टर देशमुख की, जो कि वृद्धावस्था की वजह से रिटायर हो कर कैनेडा माइग्रेट कर रहा था, जगह लेने के लिए - तैयार कर लेता है । डाक्टर सिंगला का दौलत का लालच और बाजरिया दौलत बाहैसियत बनने का सपना उसे पुणेकर की पेशकश को कबूल करने के लिये मजबूर करता है और यूं एक इज्जतदार डाक्टर स्वेच्छा से एक नारकाटिक्स स्मगलिंग रिंग का पुर्जा बन जाता है । अपनी उस हैसियत में जो पहला काम उसके पल्ले पड़ता है वो तीन करोड़ रुपये कीमत की हेरोइन को अपने क्लीनिक में महफूज रखने का होता है जिसे कि वो डरता, खौफ खाता अंजाम देता है ।

पुणेकर के गोरई वाले काटेज पर अक्सर होने वाली पार्टियों में डाक्टर सिंगला की एक बड़े डाक्टर जसवाल से भेंट होती है जो कि पनवेल में अपना नर्सिंग होम चला रहा होता है और जो डाक्टर सिंगला को अपना नर्सिंग होम जॉइन करने की आकर्षक आफर देता है जिसे पुणेकर से पहले ही फंस चुका होने की वजह से डाक्टर सिंगला नकार देता है । उस पार्टी के बाद - मेहमान डाक्टर जसवाल और एडवोकेट कोठारी के रुखसत हो जाने के बाद - वहां ऐसे हालात पैदा होते हैं कि पुणेकर ओवरड्रिंकिंग से होश खो बैठता है, डाक्टर सिंगला उसे कंधे पर उठा कर टैरेस से ऊपर उसके बैडरूम में पहुंचाता है - ये नजारा उस की गैरजानकारी में पड़ोस में बसी बेवा गोवानी औरत मिसेज रोटोलो देखती है - और फिर नमिता पुणेकर का और डाक्टर सिंगला का धुआंधार अभिसार काटेज के ड्राइंगरूम के कार्पेट बिछे फर्श पर होता है । डाक्टर सिंगला को यूं परमानन्द की प्राप्ति तो होती है लेकिन बार बार उसके जेहन में ये शक कुलबुलाता है कि जो कुछ उन दोनों के बीच यूं हुआ था वो उसके लिये नयी बात थी, नमिता के लिए कोई नयी बात नहीं थी । यानी कि नमिता का किसी और से भी अफेयर था ।

और कौन था उस औरत का पहलू आबाद करने वाला ?

कोई था भी या नहीं !

आखिरकार डाक्टर सिंगला अपने दिमाग का खलल मान कर उस बात को अपने जेहन से निकालता है ।

फिर भी वो उस बाबत एडवोकेट कोठारी से बात करता है जो कि नमिता से उसकी पुणेकर से शादी से पहले से परिचित था लेकिन कुछ हाथ नहीं आता.. .सिवाय इस जानकारी के कि शादी से पहले नमिता पुणेकर की एक क्लब में होस्टेस थी, और नमिता का कोई दूसरा यार हो सकता था तो वो एडवोकेट कोठारी ही हो सकता था ।

पुणेकर एक बार अपने बिजनेस दूर पर मुम्बई से बाहर जाता है तो नमिता और पुणेकर की हाइवे पर स्थित एक मोटल में बड़ी धुंआधार मुलाकात होती है जहां नशे में पहली बार नमिता अपनी ये ख्वाहिश जाहिर करती है कि काश पुणेकर को मौत आ जाती और वो सदा के लिये डाक्टर सिंगला की बन जाने के लिये आजाद हो जाती । यूं उसका

उसदराज खाविंद से ही पीछा न छूटता वो पांच करोड़ रुपया भी उसके हाथ आता जिस की न तुड़ाई जा सकने वाली एफडी पुणेकर ने नमिता के नाम कराई हुई थी। वो बाकायदा डाक्टर को ये आइडिया सरकाती है कि मौत आती नहीं तो बुलाई भी तो जाती है वो पुणेकर को डूबता जहाज बताती है और डाक्टर सिंगला को हिंट देती है कि कुछ खास दिन खास वक्त पर पुणेकर माटुंगा वैस्ट में स्थित होटल महामाया के सुइट नम्बर 102 में उपलब्ध होता था जहां चुपचाप उसे टपकाना मुमकिन था।

आइन्दा दिनों में ये खयाल पूरी तरह से डाक्टर सिंगला के जेहन में घर कर जाता है कि अगर उसने नमिता नाम की उस परीचेहरा औरत को हमेशा के लिये हासिल करना था तो उसके लिये होटल महामाया के सुइट नम्बर 102 में चुपचाप पहुंच कर उसके पति सदानन्द पुणेकर को शूट कर देना जरूरी था।

उस काम को अंजाम देने के लिए जब वो दिल मजबूत कर लेता है तो कत्ल में इस्तेमाल की जाने लायक गन का सवाल उठता है जिस की बाबत वो पहले एडवोकेट कोठारी से इशारों में बात करने की हिमाकत करता है और फिर जिक्र नमिता से कर के अपनी हिमाकत का अहतराम करता है। फिर गन भी - बमय साइलेंसर - नमिता ही उसे मुहैया कराती है।

श्यामली सावन्त वाले केस के इनवेस्टिगेटिंग आफिसर मनोहर पावटे से उसकी फिर मुलाकात होती है जिसे वो बीच के वक्फे में इन्स्पेक्टर से एसीपी बन गया पाता है। वो तसदीक करता है कि वो उस केस पर अभी भी काम कर रहा था और बहुत घुमाकर डाक्टर सिंगला से सवाल करता है कि क्या मिजेस पुणेकर - नमिता - पेशेंट होने के अलावा उसकी कुछ और भी थी। डाक्टर सिंगला उस इशारे पर भड़क कर दिखाता है और नमिता से अपना अफेयर होने से पुरजोर इंकार करता है।

तदोपरांत डाक्टर सिंगला कत्ल के लिये जेहनी और जिस्मानी तौर से पूरी तरह से तैयार हो जाता है और जो करना था, जैसे करना था, उसका बाकायदा रिहर्सल कर लेता है।

पुणेकर नमिता को ग्यारह लाख कीमत की नयी सोनाटा उपहारस्वरूप देता है और फिर तसदीक करता है कि फिगारो आइलैंड पर प्रापर्टी खरीदने का और गोरई से वहां शिफ्ट कर जाने का उसका इरादा पक्का था। नमिता मुम्बई छोड़ने को कतई तैयार नहीं थी क्योंकि मुम्बई से दूर जा बसने का मतलब था यारी खत्म, आशिकी खत्म। तब नमिता डाक्टर सिंगला को साफ कहती है कि उसने जो करना था जल्दी करे, वक्त रहते करे। तब दोनों कत्ल की योजना को बाकायदा डिसकस कर के सैट करते हैं, कत्ल के वक्त की अपनी अपनी एलीबाई निर्धारित करते हैं। तभी नमिता ये बमशैल छोड़ती है कि अगर डाक्टर सिंगला अपनी कोशिश में नाकाम रहा और पकड़ा गया तो कत्ल में अपनी कैसी भी किसी शिरकत से वो साफ मुकर जायेगी। इश्क के मारे डाक्टर सिंगला को वो बात भी

इसलिये कबूल होती है क्योंकि उसे भरोसा था कि अपने मिशन में वो नाकाम नहीं होने वाला था ।

लेकिन वक्त आने पर ऐन यही होता है ।

डाक्टर सिंगला न सिर्फ कत्ल की कोशिश में नाकाम रहता है, महामाया के सुइट नम्बर 102 में सदानन्द पुणेकर की गिरस्त में भी आ जाता है । उसे नहीं मालूम होता कि उसके साथ विश्वासघात हुआ था, जो कुछ वो वहां महामाया में करने वाला था, खुद नमिता ने उसकी बाबत होटल के सिक्योरिटी आफिसर अजय सिंह को फोन कर दिया हुआ था जो कि ऐन मौके पर सुइट में पहुंच भी गया होता है । पुणेकर अजय सिंह को टाल कर रुखसत कर देता है और डाक्टर सिंगला को गिरफ्तारी से तो बचा लेता है लेकिन उससे बिल्कुल नहीं छुपाता कि उसने ऐसा इसलिये किया होता है क्योंकि उसके खिलाफ इतना बड़ा कदम उठाने वाले को सजा खुद पुणेकर के हाथों मिलना जरूरी था । वो डाक्टर से सब कुछ दरयाफ्त करता है लेकिन मुलाहजे का मारा डाक्टर अपनी माशूक की बाबत - नमिता की बाबत - अपनी जुबान नहीं खोलता ।

तब पुणेकर उस पर इस भयंकर रहस्योद्घाटन की बिजली गिराता है कि नमिता का असली आशिक वो नहीं, एडवोकेट कोठारी था, उसे तो उन दोनों ने - नमिता और कोठारी ने - बाकायदा उल्लू बनाया था, बतौर बलि का बकरा चुना था जो पुणेकर के कत्ल के मुहाम पर निकला कत्ल करने के बाद खुद भी कत्ल हो जाता, होटल के सिक्योरिटी स्टाफ के हाथों मारा जाता । यूं नमिता का अपने खाविन्द से नहीं, अपने फर्जी यार से - डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला नाम के आशिकी के कैजुअल वर्कर से - भी पीछा छूट जाता । वो डाक्टर सिंगला को और जलील ‘मदारी का बन्दर’ बताकर करता है जो उसकी बीवी की - नमिता की - डुगडुगी पर उछलता कूदता था, कलाबाजियां खाता था ।

तब पुणेकर ये रहस्योद्घाटन भी करता है कि अपनी बीवी की बदनीयती की उसे शुरू से खबर थी और इस वजह से उसके पास इस बात का भी इरजाम था कि पांच करोड़ की जिस एफडी की रकम को वो अपनी मुट्ठी में समझती थी वो बावजूद उसके हक में तमाम लिखत पढत के उसे हासिल न हो पाती ।

उधर ‘मराठा मंदिर’ में पुणेकर के मेहमानों के साथ मौजूद असली षड़यंत्रकारियों को - एडवोकेट कोठारी और नमिता को - ये चिंता सता रही होती है कि आखिर डाक्टर सिंगला अपने मिशन में कामयाब हुआ था या नहीं, पुणेकर को मारकर खुद मर गया था या नहीं । सस्पेंस के मारे वो होटल में फोन करते हैं तो मालूम होता है कि वहां के सुइट नम्बर 102 में खून हो गया था लेकिन गोली चलाने वाला खूनी फरार हो गया था ।

लिहाजा उन का काम हुआ था । पुणेकर खत्म था लेकिन डाक्टर सिंगला किसी तरह से सिक्योरिटी स्टाफ द्वारा शूट कर दिये जाने से बच गया था और भाग निकलने में

कामयाब हो गया था । बहरहाल जो आधा काम हुआ था असल में तो वो ही खास काम था ।

अलबत्ता सस्पेंस बरकरार था ।

खूनी फरार हो गया तो कहां गया ?

डाक्टर सिंगला कहां था ?

ग्रैंडमास्टर सदानन्द पुणेकर उस विकट स्थिति को भी अपने हक में इस्तेमाल करने की योजना बनाता है । वो डाक्टर सिंगला के साथ तारदेव में स्थित अपने फ्लैट में छुपकर बैठने की योजना बनाता है जहां कि तफ्तीश के लिये पुलिस का पहुंचना लाजमी था और पुलिस से पहले 'मराठा मंदिर' से फारिग होकर कोठारी और नमिता का पहुंचना लाजमी था और कुछ ऐसा वार्तालाप उन दोनों में जरूर होता जो कि असलियत को डाक्टर सिंगला पर उजागर करता और यूं उसका ये भरम टूटता कि नमिता का इकलौता चाहने वाला वो ही था, वो नमिता और कोठारी के सामूहिक षड़यंत्र का शिकार नहीं हुआ था, वो 'मदारी का बन्दर' नहीं था ।

फ्लैट में होता तो सब कुछ पुणेकर के सोचे मुताबिक ही है लेकिन उसमें फच्चर ये पड़ता है कि भीतर दाखिल होते ही नमिता को भनक लग जाती है कि वहां कोई - सदा के अलावा और कौन - छुपा बैठा था । नतीजतन वो कोठारी को भी आगाह कर देती है और फिर जान बूझकर पुणेकर को ऐसी बातें परोसती है जो कि उसकी एक निष्ठावान, पति के लिये चिन्तित नारी की छवि उकेरती हैं । फिर वो ये भी जाहिर करते हैं कि वो सदा को ढूंढ़ने निकलने लगे थे, खास तौर से गोरई वाले बंगले पर जाने वाले थे जहां कि वो हो सकता था ।

लेकिन उनके जेहन में ये सस्पेंस तब भी बरकरार था कि अगर पुणेकर जिन्दा था, वो उनकी बातें सुनने को फ्लैट में छुपा बैठा था तो 'महामाया' में मरा कौन था ! जब उन्हें बताया गया था कि सुइट नम्बर 102 में गोली चली थी और खूनी.. .खूनी भाग निकला था तो कोई तो मरा था ।

डाक्टर सिंगला !

गोरई का रुख करने से पहले कोठारी और नमिता 'महामाया' पहुंचते हैं ।

वहां से उन्हें मालूम होता है कि सुइट नम्बर 102 में गोली बराबर चली थी लेकिन चलाने वाला सिंगला नहीं था ।

तो गोली किस को लगी थी ?

वो नहीं जान पाते ।

लिहाजा उनका कनफ्यूजन और बढ़ जाता है ।

बहुत सोच विचार के बाद वो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि डाक्टर सिंगला उनके साथ चालाकी का खेल खेल गया था, पुणेकर का कत्ल खुद करने की जगह उसने कोई सुपारी

किलर एंगेज कर लिया था जिसकी गोली का शिकार पता नहीं कौन हुआ था ? क्योंकि अगर वो पुणेकर को फ्लैट में छुपा बैठा मान कर चलते थे तो वो तो हुआ नहीं था ।

गोरई पहुंचने पर उन का सस्पेंस खत्म होता है ।

वो पुणेकर को काटेज की पहली मंजिल के मास्टर बैडरूम में मौजूद पाते हैं ।

पुणेकर, जो कि माहिम क्रीक के पुल पर डाक्टर सिंगला की कार का एक्सीडेंट स्टेज कर के वहां लौटा होता है और तब घोड़े बेचकर सोया पड़ा होता है ।

अगले रोज दोपहरबाद पुणेकर यूं सो कर उठता है जैसे पिछली रात गैरमामूली कुछ भी न हुआ हो । पूछे जाने पर कहता है कि ‘ज्यास्ती हो गयी थी’ इसलिये वो तारदेव वाले फ्लैट पर लौटना भूल गया था और गोरई के काटेज में पहुंच गया था । महामाया में गोली चली होने की बात वो कबूल करता है लेकिन कहता है कि ऐसा करने वाला कोई मवाली था जिस की चलाई गोली उसकी खुशकिस्मती से उसे नहीं लगी थी लेकिन गोली उसे लगी थी और घातक सिद्ध हुई थी, ये जाहिर करना इसलिये जरूरी था ताकि वो मवाली उस पर और गोलियां न दागता । लिहाजा उसी के हुक्म पर सिक्योरिटी स्टाफ ने कहा था कि सुइट नम्बर 102 में खून हो गया था ताकि उसको टपकाने की फौरन ही दूसरी कोशिश वजूद में न आ जाती । मवाली ने उस पर हमला क्यों किया था, इसका जवाब खुद नमिता सुझाती है कि किसी तरह से उसे मालूम पड़ गया था कि वो जिस्म पर मनी बैल्ट पहनता था जिसमें वो बहुत रोकड़ा रखता था और जिसे वो लूटना चाहता था लेकिन फायरिंग की आवाज सुनकर सिक्योरिटी स्टाफ के उसकी उम्मीद से जल्दी सक्रिय हो जाने की वजह से नहीं लूट सका था ।

अब फिर ये सवाल था ?

डाक्टर सिंगला कहां गया ?

जरूर आखिरी वक्त पर हिम्मत दगा दे गयी और डर कर भाग गया, शर्म से कहीं जा छुपा ।

डाक्टर की हर जगह से गैरहाजिरी पर पुणेकर भी हैरान होकर दिखाता है और बीवी को उसकी बाबत दरयाफ्त करने का आश्वासन देता है ।

तभी एडवोकेट कोठारी उस रोज के अखबार के साथ वहां पहुंचता है जिस में डाक्टर सिंगला की बाबत खबर छपी थी कि पिछली रात माहिम क्रीक से गुजरती उसकी कार उसके कन्ट्रोल से बाहर हो गयी थी और पुल की रेलिंग तोड़ती समुद्र में जा गिरी थी । कार के रजिस्ट्रेशन से पता चला था कि वो डाक्टर सिंगला की थी जबकि लाश समुद्र में बह गयी थी । पुलिस द्वारा लाश की तलाश जारी थी ।

नमिता को यकीन न आया कि जो शख्स पिछली रात न ‘महामाया’ में मरा न मारा वो जा के घातक एक्सीडेंट कर बैठा । कोठारी को उस पर साफ पुणेकर की छाप लगी जिसके हुक्म पर वो एक्सीडेंट स्टेज किया गया था ताकि ये न जाहिर हो पाता कि असल में उसका

कत्ल हुआ था । उसी बात से उन्हें भी लगा कि पुणेकर नाम का ग्रैंडमास्टर सब जानता था, सब समझता था, सब उसके कन्ट्रोल में था और अब वो महज उनके साथ चूहे बिल्ली का खेल खेल रहा था । और अब उन दोनों की इसी में भलाई थी कि इससे पहले पुणेकर अपना खेल खत्म करे, खुद उसका खेल खत्म हो जाये ।

तब वो दोनों एक ऐसी नयी स्कीम तैयार करते हैं जिसको वो खुद अंजाम दे सकते थे ।

पुणेकर की ये स्थापित रुटीन थी कि हर रविवार सुबह मुंह अंधेरे वो अपनी मोटरबोट पर सवार होकर फिशिंग के लिये समुद्र में निकल जाता था । उसकी इस रुटीन की पड़ोस की मिसेज रोटोलो हमेशा गवाह होती थी क्योंकि वो आंधी आये या तूफान, हमेशा सुबह पांच बजे जाग जाती थी और उसकी निगाह उनके काटेज की टैरेस पर ही होती थी जिधर से कि पुणेकर फिशिंग के लिये निकलता था । स्कीम ये थी कि शनिवार रात को ऐसा माहौल बने कि वो इतनी पिये कि रात को मुर्दों से शर्त लगा के सोये । उस बात में फच्चर ये था कि वो शनिवार को अपनी ड्रिंकिंग पर खास कन्ट्रोल रखता था ताकि उसे इतवार सुबह जल्दी उठने में दिक्कत महसूस न हो । उस शनिवार वो उस कन्ट्रोल पर अमल न करे, उसके लिये बाजरिया सम्भाजी भौंसले - जो उसका परिचित था और उसी की तरह फिशिंग का दीवाना था - तूफान की चेतावनी उस तक पहुंचाने का इंतजाम कोठारी ने किया । बकौल उसके भौंसले बतौर क्लायंट उसका अहसानमन्द था इसलिये कोठारी जो भी कहता, वो निःसंकोच करता । टैरेस पर शनिवार को विस्की ज्यादा उड़े उसके लिये कोठारी ने ये बहाना स्थापित किया कि उस रोज उसका जन्म दिन था और तीन मेम्बरान की - कोठारी और पुणेकर दम्पति की - टैरेस पर ड्रिंक डिनर की पार्टी उसकी तरफ से थी । पुणेकर से मशवरा कर के शनिवार आठ बजे का पार्टी का टाइम मुकर्रर किया गया और पुणेकर की ये जिद कबूल की गयी कि पार्टी दस साढ़े दस बजे से ज्यादा न चले । निर्धारित समय पर निर्धारित तरीके से सब कुछ ऐन चौकस हुआ । भौंसले आकर तूफान की चेतावनी दे गया तो समय की पाबन्दी अपने आप ही खत्म हो गयी क्यों कि तूफान में तो फिशिंग के लिये समुद्र में उतरना खुदकुशी करने जैसा था । अलबत्ता अपने बड़बोलेपन में भौंसले के मुंह से ये जरूर निकल गया कि वकील साहब का बर्थ डे तो अभी बरसात के महीने में हो के हटा था । कोठारी के पहले तो छक्के छूट गये लेकिन फिर उसने किसी तरह बात संवारी और भौंसले को यकीन दिलाया कि उस बाबत उसे मुगालता लगा था ।

पार्टी आधी रात के करीब तक चली । पुणेकर बेतहाशा विस्की पी कर होश खो बैठा तो कोठारी उसे टैरेस से उठाकर ऊपर उसके बैडरूम में छोड़ आया और नमिता को खबरदार कर के वहां से रुखसत हो गया ।

आगे का काम नमिता ने करना था ।

जिसे वो बहुत ही मुश्किल से अंजाम दे पायी !

उसने एक भारी फूलदान का भरपूर वार सोये पड़े पुणेकर की खोपड़ी पर करना था जिसकी वजह से वो सुबह तक होश में न आ पाता ।

दूसरी तरफ कोठारी ने अपने काटेज में सारी रात अपना टाइपराइटर खटखटाते रहना था जिससे लगता कि वो उस रात अपना नावल लिखने में पूरी तरह से मसरूफ रहा था और अनिद्रा की बीमारी से ग्रस्त पड़ोस की मिसेज रोटोलो इस बात की गवाह होती । फिर सुबह मुंह अंधेरे कोठारी ने चोरों की तरह वहां आना था, बाहर की सीढ़ियों के रास्ते पुणेकर के बैडरूम में पहुंचना था, उसके अचेत शरीर को एक बैग में डालना था, उसकी फिशिंग वाली विशेष पोशाक खुद पहननी थी और बैग उठाकर फिशिंग के लिये निकल पड़ना था । मिसेज रोटोलो अपने काटेज से पायर की तरफ देखती तो यकीनन यही समझती कि अपनी स्थापित साप्ताहिक रुटीन के तहत पुणेकर फिशिंग के लिये निकल रहा था । बाद में कोठारी मोटरबोट को बीच समुद्र ले जाकर पुणेकर को बिल्कुल ही खत्म करके लाश समुद्र में बह जाने देता, बोट को लंगर पर छोड़कर खुद तैरकर किनारे आ लगता और अपने काटेज में जाकर पूर्ववत् टाइपराइटर खटखटाने लगता । बाद में शाम को जब पुणेकर न लौटता, बीवी की रपट पर पुलिस तफ्तीश करती तो यही पता चलता कि वो समुद्र में किसी एक्सीडेंट का शिकार हो गया था और डूब मरा था ।

सब कुछ सुचारू रूप से, ऐन कोठारी की स्कीम के मुताबिक संपन्न हुआ ।

नमिता ने सुबह सवेरे, साढ़े छ: बजे मिसेज रोटोलो के यहां जाकर उस बात की तसदीक भी कर ली कि उसने हमेशा की तरह पुणेकर को फिशिंग पर निकलते देखा था और बकौल उसके वकील साहब सारी रात अपने काटेज में कभी टहलता सोचता रहा था तो कभी अपने सोचे को टाइप करके कागज पर उतारता रहा था । उसकी जानकारी में नमिता ने ये इजाफा किया कि उसे बताया कि वकील उन दिनों एक जासूसी नावल लिख रहा था इसलिये रात को टाइपराइटर पर मसरूफ रहता था और जो बैग उठाये मिसेज रोटोलो ने ‘पुणेकर’ को देखा था उसमें खाने पीने का डिब्बाबंद सामान था जिस की सप्लाई बोट पर खत्म हो गयी हुई थी ।

अब उसने लौट कर शाम होने का इंतजार करना था जबकि उसने अपने फिशिंग को गये पति के लौटा न होने की खबर पुलिस को देनी थी ।

यहां तक की कहानी आपने ‘मकड़जाल’ में पढ़ी अब आगे -

Chapter 1

वोदका के तीन लार्ज पैग से आयी नींद से नमिता दोपहरबाद जागी तो उसे न लगा कि नशे से या नींद से उसके दिलोदिमाग ने कोई राहत पायी हो । चेतनावस्था में पहुंचते ही उसके मानसपटल पर फिर फूलदान के खोपड़ी से टकराने से हुई आवाज गूंजने लगी, बार बार सदा के मुंह से निकली हल्की सी सिसकारी नगाड़े की तरह उसके कानों में बजने लगी ।

उसने बड़ी पर निगाह डाली ।

दो बजे थे ।

लिहाजा जल्दी जाग गयी थी । अगला कदम उठाने से पहले उसने चार बजने का इन्तजार करना था ।

अगला कदम !

उसने पुलिस को रिपोर्ट करना था कि हमेशा की तरह फिशिंग के लिये निकला उसका पति वापिस नहीं लौटा था ।

तब तक कोठारी कुछ दिनों के लिये जहां बाहर जाना चाहता था, वहां पहुंच भी गया हो सकता था, इसलिये उसके व्याकुल दिल को उस बाबत उसकी काल का भी इन्तजार था ।

जो कि हो सकता था कि रात तक आती, अगली सुबह आती या न ही आती ।

लेकिन पहले तो ये तसदीक होनी चाहिये थी कि उसकी रवानगी हो चुकी थी ।

कैसे ?

फोन से ।

लेकिन फोन करने से उसने मना किया था ।

उसके काटेज पर जाकर ?

वो भी ठीक न होगा ।

इतने अरसे से वो वहां था, फिर भी सिर्फ एक बार वो उसके काटेज पर गयी थी ।

क्यों गयी थी ?

उसके जेहन पर न्यूजरील की तरह कुछ अक्स उबरे ।

मिजाज दिखाने लगा था ।

जैसे औरतें रूठकर दिखाती थीं, वैसे रूठ गया था ।

वजह !

कोई प्रत्यक्ष वजह नहीं थी, महज जनाना नखरा था, जो कि मर्द को शोभा नहीं देता था । पांच-छ: दिन उससे बात करना तो दूर, दांव लगाकर कोई हरकत करना तो दूर, वो

उससे निगाह मिलाने से भी परहेज करता रहा था । टैरेस पर ड्रिंक्स के लिये बैठक होती थी तो वो यूं जाहिर करता था जैसे वो वहां उसकी मौजूदगी से भी बेखबर था ।

रूठे को मनाने की नीयत से पिछले हफ्ते एक सुबह चुपचाप वो उसके काटेज पर पहुंची थी । पिछली रात वो टैरेस पर ड्रिंक्स में शमिल था और आधी रात के बाद वहां से गया था इसलिये उसे मालूम था कि सुबह उसने वहीं होना था ।

लेकिन वो वहां नहीं था ।

उसने दरवाजे की नॉब घुमाकर उसे धक्का दिया था तो दरवाजा खुला पाया था । पिछवाड़े में जा के पिछला दरवाजा ट्राई किया था तो वो भी वैसे ही खुल गया था । ये सोचकर कि वो आस-पास ही कहीं था, जल्द लौट आने वाला था, वो भीतर चली गयी थी । भीतर पड़े इकलौते सोफे पर बैठते, पसरते, लेटते, ऊंघते दो घंटे उसने उसका इंतजार किया था, लेकिन वो नहीं लौटा था ।

हार कर वो वापिस लौट आयी थी ।

अगले रोज वो उसे दिखाई दिया था ।

और उससे यूं मिला था जैसे कुछ हुआ ही नहीं था ।

उसके उस मिजाज की कोई वजह पूछने पर उसने हंसकर बात को टाल दिया था ।

खुद वो एक ही वजह समझ पायी थी ।

तपा रहा था ।

ताकत दिखा रहा था ।

मर्द होने का नाजायज फायदा उठा रहा था ।

अब कैसे तसदीक होती उसकी रवानगी की ?

मिसेज रोटोलो !

ठीक ।

***

मिसेज रोटोलो उसे आया पाकर बहुत खुश हुई ।

“वैलकम !” - वो मीठे स्वर में बोली - “ब्लकि, कम इन ।”

“नहीं, मिसेज रोटोलो” - नमिता बोली - “मैं रुकूंगी नहीं । मेरे को अपने कुछ काम हैं ।”

“ऐसा ?”

“हां । मैं आपसे ये पूछने आयी थी कि जिस ग्रीन टी की आपने इतनी तारीफ की थी, उसका ब्रांड कौन-सा है ?”

“दार्जिलिंग गोल्ड लीफ प्रीमियम । अभी बनाता है न !”

“नो, थैंक्स । मुझे जरा जल्दी है । नौकर और सामान खरीदने मार्किट जा रहा है, वो ले के आयेगा ।”

"न मिले तो इधर से ले के जाने का है ।"

"जरूर । थैंक्स अगेन ।" - वो लौटने के लिये घूमी, ठिठकी और फिर बोली - "लगता है राइटर साहब की शिफ्ट खत्म हो गयी ?"

"बोले तो ?"

"टाइपराइटर की आवाज नहीं आ रही ।"

"ओह, दैट ! बहुत टेम हो गया क्विट किये । होल नाइट बजाया न ! मार्निंग में तुम्हारा जाने का थोड़ा टेम बाद टाइप खल्लास किया ।"

"ओह !"

"उसके थोड़ा टेम बाद मैं उसको बाहर जाते देखा । अभी लौट आया होयेंगा तो सोता होयेंगा ।"

"अभी तक ?"

"होल नाइट जाग के वर्क किया न ! अभी होल डे स्लीप करके कम्पेंसेट करता होयेंगा । नो ?"

"यस । दार्जिलिंग गोल्ड लीफ प्रीमियम । थैंक्यू मिसेज रोटोलो ।"

"यू आर वैलकम, माई हनीचाइल्ड ।"

वो वापिस लौटी ।

उसे पूरा यकीन था कि खामोशी का मतलब ये नहीं था कि कोठारी भीतर सोया पड़ा था, वो अपने पूर्वनिर्धारित प्रोग्राम के मुताबिक वहां से कूच कर चुका था ।

कहां के लिये ?

क्या पता ? खबर करेगा तो मालूम पड़ेगा ।

वो काटेज पर वापिस लौटी ।

चार बजने में तब भी पौने दो घंटे बाकी थे । फिर से ड्रिंक करने लग जाना उसे मुनासिब न लगा । तो ?

ड्राइव !

कैसा अजीब इत्तफाक था कि जब से उसको नयी सोनाटा मिली थी, उसने एक बार भी उसे आन रोड ड्राइव करके नहीं देखा था । तब वो मौका था । वक्त भी कट जाता और नयी कार का मजा भी आता ।

लेकिन कोठारी की काल ! अगर पीछे आ गयी तो !

देखा जायेगा । अभी तक नहीं आयी थी तो एक सवा घंटे में क्या आती !

मेन डोर के रास्ते वो बाहर निकली और उधर बढ़ी जहां काटेज के पहलू में वो गैराज था जिसमें कि वो कार खड़ी की गयी थी ।

सोनाटा वहां नहीं थी ।

वहां सिर्फ सदा की एम्बैसेडर खड़ी थी और उसकी अपनी मारुति वैन खड़ी थी ।

उसके छक्के छूट गये ।

कहां गयी ?

चोरी चली गयी ?

गैराज तो खुला ही रहता था, उसको तो सिर्फ बाहर से कुंडी लगती थी, लेकिन इग्नीशन की चाबी !

तब उसे याद आया कि जब उसने कार की डिलीवरी के वक्त कम्पाउन्ड में चार चक्कर लगाने के बाद और आटोमोबाइल कम्पनी के राजवानी नामक कर्मचारी को रुखसत करने के बाद कार को गैराज में ले जाकर खड़ा किया था तो अपनी बुरी आदत के तहत इग्नीशन की चाबी उसने सोनाटा के इग्नीशन में ही छोड़ दी थी, जबकि बाकी कागजात और डुप्लीकेट चाबी वो भीतर ले गयी थी ।

कहां गयी कार ?

क्या वाकई चोरी चली गयी ?

उस बात की उसके दिल ने हामी न भरी, उस इलाके में ऐसी चोरी-चकारियों का कोई रिकार्ड नहीं था ।

तो ?

कार कोठारी ले गया ।

नानसेंस !

लेकिन - तब उसे याद आया - उसके पास कार कहां थी ! परसों रात वापिसी में उसकी कार रास्ते में बिगड़ गयी थी जिसकी वजह से उसे एक ट्वेन्टी फोर आवर्स चलने वाली वर्कशाप के हवाले किया गया था जिसका टो ट्रक कार को टो करके ले कर गया था और बाकी का सफर उन्होंने टैक्सी पर तय किया था ।

लेकिन कोठारी का महंगी ब्रांड, न्यू कार पर - जिसकी तरफ कि हर किसी की तवज्जो जाती - कहीं खिसकने का क्या मतलब ?

वो भी बिना बताये !

वो पुलिस को कार के चोरी चले जाने की रिपोर्ट लिखवा दे तो वो तो कार के साथ कहीं भी पकड़ा जा सकता था । दूसरे, ये बात छुपने वाली तो थी नहीं कि अभी पांच रोज पहले सदा ने उसे नयी कार तोहफे में दी थी, वो उसकी बाबत पुलिस में रिपोर्ट न लिखवाती तो सवाल होने पर क्या वजह बताती !

कोठारी वकील था, कानूनी दिमाग लगा सकता था, हैरानी थी कि उसने वो गैरजिम्मेदाराना हरकत की थी ।

तभी उसकी निगाह वैन की छत पर पड़ी ।

वहां एक बड़ा-सा पत्थर रखा हुआ था ।

लानत ! कार पर पत्थर किसने रखा !

भुनभुनाते हुए उसने वो पत्थर वहां से हटाया तो नीचे से एक चार गुणा छ: का लिफाफा नमूदार हुआ । उसने पत्थर को गैराज से बाहर फेंका और लिफाफा काबू में किया ।

लिफाफा बंद था, बिल्कुल कोरा था, उस पर कोई नाम-पता दर्ज नहीं था । उसने उसे खोला और भीतर से एक तहशुदा कागज बरामद किया । उसने कागज की तहें खोलीं तो पाया कि वो एक टाइपशुदा चिट्ठी थी, जो न किसी से सम्बोधित थी और न जिसके सिरे पर लिखने वाले का नाम दर्ज था ।

सस्पेंस के हवाले उसने वो चिट्ठी पढ़ी । लिखा था :

सोनाटा मैं ले जा रहा हूं । मैने लम्बा सफर तय करना है जो अपनी कार की गैरहाजिरी में टैक्सी में या पब्लिक कनवेंस पर करना मुझे मुनासिब नहीं लग रहा था । कार जल्दी ही तुम्हारे पास वापिस पहुंच जायेगी । उस दौरान कोई सवाल हो तो तुमने यही कहना है कि मैंगलोर जाने के लिये पुणेकर ने खुद तुम्हारे सामने, कल वो कार मुझे ले जाने की इजाजत दी थी । बल्कि जिद की थी । उसके इसरार पर ही मैने कार ले जाना कबूल किया था । सवाल होने पर तुम्हें इस बात की तसदीक करनी होगी ।

फिलहाल तुम्हारे लिये खुशखबरी है कि सुबह सब कुछ बिना किसी विघ्न-बाधा के ऐन स्कीम के मुताबिक हुआ । मिसेज रोटोलो इस गवाही के लिये पूरी तरह ने सैट है कि मैं सारी रात अपने काटेज में मौजूद था और अपना नावल टाइप करता रहा था । वक्त आने पर देखना, उस नेकबख्त औरत की एलीबाई को कोई नहीं हिला सकेगा ।

अब ये तो मैने ऊपर लिख ही दिया है कि मेरी मंजिल मैंगलोर है । वैसे तो सम्पर्क की कोई जरुरत नहीं फिर भी किसी खास वजह ने कोई जरुरत महसूस करो तो मार्फत पोस्ट मास्टर जीपीओ, मैंगलोर चिट्ठी लिखना और स्पीड पोस्ट से अरसाल करना जो कि मुंबई से मैंगलोर अगले दिन हर हाल में पहुंचती है ।

मैं बहुत जल्द, तफ्तीश के रफ्तार पकड़ने या कोई विकट मोड़ लेने ने पहले लौटूंगा । फिर हम एक साथ होंगे ।

हमेशा के लिये ।

चिट्ठी को पढकर नष्ट कर देना ।

उसने चिट्ठी को एक बार फिर पढ़ा और फिर लिफाफे समेत उसका पुर्जा-पुर्जा करके बाहर हवा में उड़ा दिया ।

उस चिट्ठी ने ये रहस्य तो खत्म कर दिया था कि सोनाटा कहां चली गई थी, लेकिन उसके मन की बेचैनी को खत्म नहीं किया था । उसका दिल गवाही दे रहा था कि उसकी वो हरकत गलत थी । कल तक वो उसके वक्ती तौर पर कहीं चले जाने की बात से मुतमइन थी, लेकिन आज उसे लगता था कि उसकी वो हरकत भी गलत थी । हर सवाल का, हर

इन्क्वायरी का अकेला मुकाबला करने के लिये उसे पीछे छोड़कर उसका खुद खिसक जाना गलत था ।

वो काटेज में वापिस लौटी, जहां भारी बेचैनी में उसने चार बजाये ।

उसने सौ नम्बर पर फोन किया ।

तुरंत जवाब मिला ।

उसने अपना नाम-पता बताया, फोन नम्बर बताया और बोली - “मेरे हसबैंड अर्ली मार्निंग फिशिंग पर निकले थे, अभी तक नहीं लौटे । मुझे चिंता हो रही है ।”

“यूं पहली बार निकले ?” -पूछा गया ।

“नहीं, हर इतवार को जाते हैं ।”

“कैसे ?”

“अपनी मोटरबोट पर । बड़ा केबिन क्रूसर है । तीस फुट लम्बा । सफेद रंग का ।”

“मैडम, इतनी बड़ी मोटरबोट तो छोटा-मोटा घर होती है । थक गये होंगे, रैस्ट कर रहे होंगे, लौट आयेंगे ।”

“लेकिन आज तक ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि वो दो ढाई बजे तक घर न लौट आये हों ! “

“आपने कोस्ट गार्ड्स को फोन किया ?”

“नहीं ।”

“कीजिए ।”

“मुझे नम्बर नहीं मालूम ।”

“नम्बर नोट कीजिये ।”

“लेकिन आप उन्हें खुद फोन कीजिये न !”

“हम भी करेंगे । आपको इसलिये बोला कि शायद आपको पहले कोई जवाब मिल जाये ।”

“ठीक है, बताइये नम्बर ।”

उसे एक नम्बर बताया गया और पूछा गया - “उन्हें फिशिंग का तजुर्बा है ?”

“खूब तजुर्बा है । नाम है उनका इस फील्ड में ।”

“लिहाजा कोई बड़ी फिश फंस जाये तो हैंडल कर सकते हैं ?”

“हां, लेकिन आजकल ऐसा नहीं करते ।”

“वजह ?”

“हार्ट केस हैं । ऐसी जोर आजमाइश उन्हें मना है ।”

“तो क्या करते हैं ?”

“डोरी काट देते हैं । फिश को आजाद कर देते हैं ।”

“फिशिंग के शौकीनों को इन मामलों में बड़े लालची होते हैं । बहुत बड़ी फिश पकड़ना फख्र का काम होता है, फोटो खिंचवाते हैं उसके साथ ।”

“क्या कहना चाहते हैं ?”

“सोचिए । बहरहाल हम कॉल बैक करेंगे ।”

लाइन कट गयी ।

***

दो घंटे बाद काल आयी ।

“आप लोगों की बोट का नाम मरमेड है ?” - पूछा गया ।

“जी हां ।”

“मिल गयी है ।”

“ओह ! शुक्र है भगवान का । कहां मिली ?”

“किनारे से एक मील दूर समुद्र में । लंगर गिराये । हमारे आदमी उसे वापिस ला रहे हैं ।”

“आपके आदमी ! आपके आदमी ला रहे हैं ?”

“जी हां । मैडम, वो क्या है कि बीच समुद्र में खड़ी वो बोट जब लोकेट की गयी थी तो उस में कोई सवार नहीं था ।”

“क्या !”

“ये हकीकत है । आपकी बोट पर कोई नहीं था ।”

“तो.. .तो.. .मेरे हसबैंड...”

“शायद किसी और बोट पर सवार होकर कहीं चले गये । शायद कहीं किन्हीं यार-दोस्तों को मिलने ।”

“लेकिन ऐसा पहले तो उन्होंने कभी नहीं किया !”

“आप कहती हैं वो दो-ढाई बजे तक हमेशा लौट आया करते थे ?”

“हां । तीन से ऊपर तो कभी नहीं बजे ।”

“अब तो छ: बज चुके हैं ।.. .मैडम, हम ऐसा करते हैं, बोट के किनारे आ के लगने का इन्तजार करते हैं । उसके बाद आइंदा कार्यवाही करेंगे ।”

“क्या कार्यवाही करेंगे ?”

“तफ्तीश को, जांच-पड़ताल को आगे बढायेंगे ।”

“तब तक मैं क्या करूं ?”

“इन्तजार । इन्तजार कीजिये । आप म्यूनिसिपल डॉक पर पहुंचिये ।”

“वहां किसलिये ?”

“आपकी बोट वहीं पहुंचेगी । आप को मालूम है म्यूनिसिपल डॉक कहां है ?”

“वो तो मालूम है लेकिन मैं वहां नहीं जा सकती ?”

“वजह ?”

“मेरे हसबैंड का यहां फोन आ सकता है ।”

“ओह ! ठीक है, आप वहीं रहिये, हम आपको सूरत अहवाल की खबर करेंगे ।”

“थैंक्यू ।”

उसने फोन रख दिया ।

मन-ही-मन वो सन्तुष्ट थी कि कोठारी ने बेहतरीन तरीके से अपना काम किया था । बेहोश सदा समेत उसकी मोटरबोट को बीच समुद्र लेकर गया, सदा को ऐसी जगह फेंका जहां कि बड़ी मछलियां पाई जाती थीं और उसकी बोट को समुद्र में उस जगह पर लाकर - जो कि उसकी पसंदीदा थी और जिसका नाम नोडल पॉइंट था - बोट का लंगर गिरा दिया । उसके बाद अपने कपड़ों को वाटरप्रूफ बैग में बंद करके, बैग को पीठ पर लादकर उसने एक मील का फासला तैरकर किनारे लगना था जो कि उसके लिये मामूली काम था ।

उसने अपने लिये चाय और एक सैंडविच बनवाई और टैरेस पर जा बैठी ।

पता नहीं कितना टाइम यूं ही गुजरा ।

फिर काल बैल बजी ।

उसने जाकर दरवाजा खोला ।

दो पुलिस अधिकारी चौखट पर खड़े थे जिनमें से एक को वो पहचानती थी ।

लेकिन उस वक्त उसकी वर्दी पर इंस्पेक्टर के तीन सितारे नहीं एसीपी की त्रिमूर्ति दिखाई दे रही थी ।

उसके साथ जो अपरिचित पुलिसिया था, वो इंस्पेक्टर था ।

इंस्पेक्टर ने उसका अभिवादन किया और बोला - “मैं विनोद नगरकर । लोकल थाने का एसएचओ । ये सर्कल के एसीपी मिस्टर...”

“इन्हें मैं जानती हूं ।” - नमिता बोली - “कैसे हैं, मिस्टर पावटे ?”

“कृपा है गणपति की, मैडम ।” - मनोहर पावटे बोला ।

“प्रोमोशन हो गयी ?”

“जी हां । अभी हाल ही में हुई ।”

“आप इधर कैसे ?”

“जिस सर्कल में मेरी पोस्टिंग हुई है, गोरई का थाना भी उसी के अन्डर आता है । पता चला कि केस आपका था तो एसएचओ साहब के साथ मैं भी चला आया ।”

“आइये ।”

वो दोनों को ड्राइंगरूम में लेकर आयी ।

“क्या खबर है ?” - वो बोली ।

“खबर आपको दी ही गयी थी । मिस्टर पुणेकर की मोटरबोट मिल गयी है ।”

“उसके अलावा ?”

"उसके अलावा गोताखोरों को उस जगह पहुंचाया गया था, जहां कि मोटरबोट मिली थी, लेकिन उनके हाथ कुछ नहीं लगा ।"

"ओह !"

"आप तो" - पावटे बोला - "बहुत फिक्रमन्द होंगी !"

"फिक्रमन्द ! मैं ये सोच सोच के पागल हुई जा रही हूं कि वो पर क्यों न लौटे, वो मोटरबोट पर क्यों नहीं थे ?"

पावटे ने हमदर्दी से सिर हिलाया ।

"मोटरबोट म्यूनिसिपल डॉक पर पहुंच चुकी है ।" - नगरकर बोला - "हम उसकी इंस्पेक्शन के लिये जा रहे हैं । आप साथ चलना पसन्द करेंगी ?"

"मैं इंस्पेक्शन को क्या समझूंगी ! और फिर मेरा इधर ठहरना जरूरी है ।"

"क्योंकि आप समझती हैं कि आपके हसबैंड का, मिस्टर पुणेकर का, कहीं से फोन आ सकता है ?"

"बात तो यही है लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"अब तो नाउम्मीदी होने लगी है । अब तो लगता नहीं कि फोन आयेगा ।"

"मुझे आपसे पूरी हमदर्दी है, मैडम ।"

"थैंक्यू ।"

"आप कहती हैं कि आपके हसबैंड अपने फिशिंग के अभियान से दो और ढाई के बीच हमेशा लौट आया करते थे ! तीन बजे तक तो हर हाल में ?"

"जी हां ।"

"इसका मतलब है कि कम-से-कम चार घंटे से उनका कोई अता-पता नहीं है ?"

नमिता ने सहमति में सिर हिलाया ।

"मिस्टर पुणेकर की गुमशुदगी की" - नया बना एसीपी मनोहर पावटे बोला - "एक सिम्पल एक्सप्लेनेशन हमारे जेहन में है । लेकिन अभी उस पर एतबार लाने में हमें झिझक है । लिहाजा किन्हीं और सम्भावनाओं को उजागर करने के लिये आपसे कुछ सवाल पूछना जरूरी है । आपको कोई एतराज ?"

"नहीं, मुझे क्या एतराज होगा ! आप अपना काम कर रहे हैं और उसमें सहयोग करना मेरा फर्ज है ।"

"वैरी वैल सैड, मैडम । आई एप्रीशियेट दैट । अब आप ये बताइये कि आप किसी ऐसे शख्स को जानती हैं जिसकी आपके पति से कोई अदावत हो, खुन्नस हो, रंजिश हो, जो उन्हें कोई नुकसान पहुंचा सकता हो ?"

"नहीं, मैं ऐसे किसी शख्स को नहीं जानती । किसी की मेरे पति से खुन्नस का क्या मतलब ?"

“मतलब तो बहुतेरे हैं ।”

“किसी एक का नाम लीजिये ।”

“आप खुद जानती हैं । आप मिस्टर पुणेकर की बीवी हैं इसलिये ये तो नहीं हो सकता कि आप उनकी असलियत से वाकिफ न हों ।”

“कैसी असलियत ?”

“मेरे से ही कहलवायेंगी ?”

“कैसी असलियत ?”

“मिस्टर पुणेकर के माफिया से ताल्लुकात हैं, बल्कि वो खुद माफिया हैं ।”

“दैट्स शियर नानसेंस । ये मेरे पति पर बिल्कुल बेजा इलजाम है । मिस्टर पुणेकर एक इज्जतदार बिजनेसमैन हैं ।”

“आधी बात ठीक है ।”

“क्या मतलब ?”

“बिजनेसमैन हैं ।”

“लेकिन इज्जतदार नहीं हैं । ये कहना चाहते हैं आप ?”

“हमें संकेत मिले हैं ।”

“आई डोंट केयर, आई डोंट पे टू हूट्स...”

“लेकिन...”

“चुप रहिये जरा । और पहले मेरी दो बातों का जवाब दीजिये ।”

“पूछिये ।”

“मिस्टर पुणेकर के खिलाफ कोई चार्ज है ?”

“वो तो नहीं है लेकिन...”

“आपने उन्हें कभी गिरफ्तार करने की कोशिश की ? आप इस वक्त यहां उन्हें गिरफ्तार करने आये हैं ?”

“नहीं ।”

“मेरा पति गुम है । मेरी रिपोर्ट के तहत आप लोग उसकी गुमशुदगी की तफ्तीश कर रहे हैं । इस तफ्तीश से उन बातों का क्या ताल्कुक है जो नाजायज हैं लेकिन आप पूछ रहे हैं ?”

“ताल्लुक हो सकता है ।”

“तो अभी आप पहले ताल्कुक पर सिर धुनेंगे या मेरे पति को तलाश करेंगे ?”

“मैडम, आप समझती नहीं हैं...”

“क्या नहीं समझती मैं ? क्या ये नहीं समझती कि जिस मामूली पूछताछ के लिये पुलिस का हवलदार आता है या सब-इन्स्पेक्टर आता है, उसके लिये खुद एसएचओ साहब तशरीफ लाये हैं, साहब के साहब एसीपी साहब तशरीफ लाये हैं !”

“आप हमारी खिल्ली उड़ा रही हैं ।”

“हरगिज नहीं । मैं आपको ये जताने की कोशिश कर रही हूं कि मैं क्या समझती हूं ।”

“ये बड़े आदमी की गुमशुदगी का मामला है इसलिये केस में सीनियर ऑफिसर्स की दिलचस्पी स्वाभाविक है ।”

“कौन बड़ा आदमी ? जिसके माफिया से ताल्लुकात हैं ? जो माफिया है ?”

“बहस अच्छी कर लेती हैं आप । शायद वकील साहब की सोहबत का असर है ।”

“कौन वकील साहब ?”

“आपको मालूम है कौन वकील साहब !”

“सब कुछ मुझे ही मालूम है तो आपको क्या मालूम है ?”

“वो वकील साहब जिन्होंने और आपने डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला को तब एलीबाई दी थी जब उनके फ्लैट से एक नौजवान लड़की की लाश बरामद हुई थी । अब ये भी बताऊं कौन डाक्टर सिंगला ? कैसी एलीबाई ?”

वो खामोश रही ।

“कैसे हैं डाक्टर साहब ?”

उसने तुरंत जवाब न दिया

क्या डाक्टर सिंगला वाकई सड़क दुर्घटना में मर चुका था ?

लाश तो बरामद हुई नहीं थी, दुर्घटनाग्रस्त कार के सदके ही सोच लिया गया था कि कार खुद डाक्टर ही ड्राइव कर रहा था इसलिये उसी ने एक्सीडेंट किया था, वो ही मरा था ।

उसके दिल ने गवाही दी कि पहले उस बात की तसदीक होनी चाहिये थी जो कि बेहतरीन तभी होती, जबकि लाश बरामद होती ।

डाक्टर को मरा मान लेने से पहले उसने उसकी बाबत खुद पता करने का भी फैसला किया ।

“कैसे हैं डाक्टर साहब ?” - पावटे ने अपना सवाल दोहराया ।

“ठीक हैं ।” - वो बोली, फिर जोड़ा - “मेरा मतलब है, ठीक ही होंगे ।”

“लगता है कोई हालिया मुलाकात नहीं हुई !”

“ऐसा ही है ।”

“वैसे अभी भी आप तीनों का इकट्ठे ड्रिंक डिनर चलता है ?”

“आपको इस बाबत खामखयाली है । ऐसी ड्रिंक डिनर की बैठक में मेरे हसबैंड साथ होते हैं, वो साथ न हों ऐसा इत्तफाक कभी-कभार ही होता है ।”

“जैसा कि इस बार हुआ ?”

“हां, मिस्टर पुणेकर ने हमारे साथ होना था लेकिन कहीं फंस गये इसलिये न पहुंच पाये ।”

“बहरहाल मेरा सवाल ये था कि क्या अभी भी इकट्ठे ड्रिंक डिनर चलता है ?”

“नहीं । अब काफी मुद्दत हो गयी है ।”

“और वकील साहब... ? शायद कपिल कोठारी नाम था ?”

“यही नाम था ।”

“उन्हें भी मिले काफी मुद्दत हो गयी है ?”

“नहीं । उनसे मुलाकात होती रहती है क्योंकि वो मेरे हसबैंड के लीगल एडवाइजर ही नहीं, बिजनेस एसोसियेट भी हैं ।”

“आई सी । मैडम, मेरा ओरीजिनल सवाल किसी एसोसियेट की ही बाबत था जिसकी कि शायद आपके पति से रंजिश हो !”

“ऐसा है तो नहीं लेकिन अगर हो भी तो इससे आप क्या नतीजा निकालना चाहते हैं ?”

उसने उस सवाल का जवाब न दिया, बल्कि नया सवाल किया - “आपके पति को फिशिंग का शौक कब से है ?”

“एक मुद्दत से है । शौक क्या, दीवानगी है । इसी वजह से उन्होंने ये काटेज लिया हुआ है ।”

“लेकिन फिशिंग के लिये निकलते इतवार को ही हैं ?”

“मजबूरी है । बाकी दिन कारोबार में बहुत बिजी रहते हैं । इतवार को ही टाइम निकलता है इसलिये वो इस दिन को कभी मिल नहीं करते ।”

“आप कभी साथ गयीं ?”

“हां । कई बार ।”

“फिशिंग के लिये ?”

“पिकनिक के लिये ।”

“फिर तो नोडल पॉइंट की बाबत, उस जगह की बाबत जहां कि बोट लंगर डाले खड़ी मिली थी, आपको मालूम होगा ?”

“मालूम है ।”

“फिशिंग के लिये वो हमेशा वहीं पहुंचते हैं ? वहीं लंगर डालते हैं ?”

“हां ।”

“वजह ?”

“अपने जाती तजुर्बे से उन्हें मालूम है कि इधर के कोस्टल एरिया में फिशिंग के लिये वो बेहतरीन जगह है ।”

“जब इस्तेमाल में नहीं होती तो मोटरबोट कहां खड़ी की जाती है ? म्यूनिसिपल डॉक पर जा किसी पब्लिक डॉक पर ?”

“दोनों में से किसी जगह पर नहीं । इस काटेज का अपना प्राइवेट बीच है और अपना पायर है ।”

"देखें जरा ।"
"क्या ?"
"पायर । आपका अपना प्राइवेट पायर, जहां कि बोट खड़ी की जाती है ।"
"वहां क्या देखेंगे ?"
पावटे ने उत्तर न दिया ।
"तफ्तीश की रुटीन है ।" - एसएचओ नगरकर बोला ।
"आइये ।"
नमिता के साथ वो टैरेस पर पहुंचे और फिर लकड़ी की सीढ़ियां उतरकर बीच पर पहुंचे ।
"बहुत सीढ़ियां हैं ।" - पावटे बोला ।
"बाईस ।"
"बार-बार उतरने-चढ़ने में जहमत होती होगी !"
"बार-बार नहीं उतरना-चढ़ना पड़ता ।"
"आई सी ।"
"वैसे मिस्टर पुणेकर यहां से शिफ्ट करने की सोच रहे हैं ।"
"अच्छा ! कहां शिफ्ट करेंगे मुम्बई में ? कोई जगह पसंद कर ली है ?"
"मुम्बई में नहीं ।"
"ओह ! मुम्बई में नहीं । तो कहां ?"
"गोवा । पणजी से आगे अरब सागर में एक आइलैंड पर । फिगारो नाम है । कलंगुट बीच से पचास किलोमीटर दूर है ।"
"जरूर बढ़िया जगह होगी ।"
"मैंने नहीं देखी लेकिन मेरे हसबैंड ने पसन्द की है तो बढ़िया ही होगी ।"
"ठीक ।"
वो बीच के सिरे पर बने पायर पर पहुंचे । वो पानी में खड़ी बल्लियों के सहारे लम्बे प्लेटफार्म की तरह खड़ा था ।
कितनी ही देर टार्च की रोशनी में वो दोनों पायर की पूरी लम्बाई का मुआयना करते रहे और नीचे पानी में झांकते रहे ।
"कुछ नहीं रखा ।" - पावटे धीरे से बोला ।
दोनों ने उस काम से किनारा किया ।
"आपके पति तैरना जानते हैं ?" - फिर पावटे ने पूछा ।
"जानते हैं ।" - नमिता बोली - "लेकिन तैरते नहीं हैं ।"
"वजह ?"
"पाबन्दी है । हार्ट के पेशेंट हैं । दो अटैक झेल चुके हैं ।"

“दैट्स टू बैड । फिर भी यहां के लिये बाईस सीढ़ियां चढ़ते-उतरते हैं ?”
“हमेशा नहीं । हफ्ते में एक बार । बोला न !”
“हां । सॉरी ।”
“तैराकी के बारे में सवाल करने की वजह ?”
“बताओ, भई ।” - पावटे अपने मातहत से बोला ।
“हम” - नगरकर बोला - “इस सम्भावना पर विचार कर रहे थे कि शायद मिस्टर पुणेकर का मूड स्विमिंग का बन आया हो ! आज दोपहरबाद मौसम काफी गर्म हो गया था इसलिये । लंगर डाले खड़ी अपनी बोट से शायद वो स्विमिंग के लिये निकल गये हों !”
“और बोट को बीच समुद्र में छोड़कर तैरते हुए कहीं किनारे पर पहुंच गये हों ?” - नमिता व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली ।
“ऐसा खयाल था तो सही मेरे जेहन में ।”
“ये नहीं हो सकता । नोडल पॉइंट से किनारा एक मील के फासले पर है । कोई हार्ट का पेशेंट इतनी लम्बी स्विमिंग का रिस्क नहीं ले सकता । और वो भी बेवजह । सिर्फ इसलिये कि दोपहरबाद मौसम गर्म हो गया था ।”
“ये ठीक कह रही हैं ।” - पावटे बोला ।
“अब वापिस चलें ?” - नमिता बोली ।
“जी हां ।”
वापिसी में पुलिसियों की निगाह उन सीढ़ियों पर पड़ी जो कि इमारत के पहलू से पहली मंजिल तक जाती थीं ।
“ये सीढ़ियां” - पावटे ने पूछा - “ऊपर कहां जाती हैं ?”
“पहली मंजिल पर ही जाती हैं ।”
“पहले से बनी होंगी ! इस्तेमाल नहीं होती होंगी !”
“होती हैं ।”
“जबकि भीतर ड्राइंगरूम से फैंसी सीढ़ियां ऊपर जाती हैं ।”
“इसी वजह से मेरे हसबैंड ने वो सीढ़ियां खास तौर से बनवाई थीं । ड्राइंगरूम में मेहमान बैठे हों या कोई पार्टी चल रही हो तो उन बाहरी सीढ़ियों के जरिये मेहमानों को डिस्टर्ब किए बिना भी ऊपर पहुंचा जा सकता है ।”
“आई सी ।”
“इतवार को फिशिंग के लिये वो बहुत जल्दी, मुंह अंधेरे, निकलते हैं, जबकि मैं अभी सोई ही पड़ी होती हूं । तब उन्हें भी वो बाहरी सीढ़ियां सूट करती हैं । भीतरी सीढ़ियां इस्तेमाल करने पर उन्हें ड्राइंगरूम का ग्लास डोर खुला छोड़ के जाना पड़ेगा जबकि बाहरी सीढ़ियों के दहाने पर स्प्रिंग लॉक है, जो दरवाजे के चौखट के साथ जुड़ने पर अपने आप लग जाता है ।”

“ऊपर, सीढ़ियों के दूसरे सिरे पर, क्या है ?”

“मेरे हसबैंड का बैडरूम है ।”

“आपके हसबैंड का ? आपका नहीं ?”

“एक ही बात है ।”

“सीढ़ियां ऊपर आपके हसबैंड के बैडरूम में पहुंचती हैं तो फिर तो उनके एक्सक्लुसिव इस्तेमाल के लिये हुईं !”

“ऐसी कोई बात नहीं । फिर यहां कोई दस बीस जने तो रहते नहीं कि एक्सक्लुसिवनैस का सवाल उठे ।”

“ठीक । हम ऊपर चल सकते हैं ?”

“भीतर से जाना होगा । इधर से तो दरवाजा लॉक्ड होगा, बाहर से नहीं खोला जा सकेगा ।”

“ओह !”

“आइये, भीतर से चलते हैं ।”

“शुक्रिया ।”

तीनों पहली मंजिल पर मास्टर बैडरूम में पहुंचे ।

उधर से सीढ़ियों का दरवाजा खोलकर पावटे ने बाहर दूर समुद्र तक झांका ।

फिर उसने बाहर से दरवाजा बंद करके उसे खोला ।

दरवाजा खुल गया ।

“ये तो” - वो बोला - “बाहर से खुलता है !”

“तब जबकि” - नमिता बोली - “भीतर से लॉकिंग बटन न दबा हुआ हो । मैं बटन दबाती हूं । उसके बाद बन्द करके बाहर से खोलिये ।”

वैसे दरवाजा बाहर से न खुला ।

“ये बटन” - पावटे बोला - “न दबाया जाये या दबाया जाना भूल जाये तो दरवाजा बाहर से खुल सकता है ?”

“हां ।”

वो भीतर पहुंचा, उसने सरसरी निगाह विशाल बैडरूम में दौड़ाई ।

उसकी निगाह विशाल ड्रैसिंग टेबल पर पहुंचकर स्थिर हुई । उसने करीब जाकर ड्रैसिंग टेबल का मुआयना किया ।

वैसा ही मुआयना उसने बाथरूम का भी किया ।

“आप ये मास्टर बैडरूम अपने हसबैंड के साथ शेयर नहीं करतीं ?”

“ये क्या सवाल हुआ ?” - नमिता बोली - “आपने नीचे भी कहा था कि...”

“नीचे की बात और थी ।”

“यहां की क्या बात है ?”

“यहां जनाना इस्तेमाल की कोई चीज नहीं है । कोई लिपस्टिक, कोई नेल पॉलिश, कोई क्रीम, पाउडर जैसे कास्मेटिक्स, कोई परफ्यूम । बाथरूम में भी कोई लेडीज सोप या शैम्पू नहीं था ।”

“वो... वो सब बगल के बैडरूम में है !”

“तो फिर आपका बैडरूम तो बगल वाला हुआ न !”

“नहीं हुआ । कभी मिस्टर पुणेकर स्पेशल रैस्ट की जरूरत महसूस करते हैं तो मैं बगल के बैडरूम में चली जाती हूं । मेरी ब्यूटी एड्स वहां इसलिये हैं क्योंकि वो सिर्फ मैंने ही इस्तेमाल करनी होती हैं । यहां मिक्स अप का अन्देशा होता है ।”

“लिहाजा आपकी रिहायश दो बैडरूम में है !”

“यही समझ लीजिये । इसमें कोई एतराज वाली बात है तो बोलिये ।”

“नहीं, कोई एतराज वाली बात नहीं ।”

“ये सारा काटेज हमारा है, मैं इसमें कहीं भी रह सकती यूं कहीं भी कुछ रख सकती हूं ।”

“यकीनन । मैंने पहले ही अर्ज किया, मैडम, कि एतराज वाली कोई बात नहीं । आइये, नीचे चलें ।”

सीढ़ियां उतरकर वो वापिस ड्राइंगरूम में लौटे ।

“मैं एक गिलास पानी पीना चाहता हूं ।” - वहां पावटे बोला ।

“मैं अभी लाती हूं ।” - नमिता बोली ।

“आप लाती हैं ?” - पावटे हैरानी से बोला ।

“यहां लिव इन सर्वेंट कोई नहीं है । जो नौकर यहां हैं, वो सब शाम को अपने-अपने घर चले जाते हैं ।”

“ओह ! फिर आप जहमत न कीजिये । पानी मैं खुद ले लेता हूं । किचन उधर पीछे ही होगी ।”

नमिता के विरोध कर पाने से पहले पावटे लम्बे डग भरता पिछवाड़े की ओर बढ़ चला ।

उसके लौटने तक ड्राइंगरूम में खामोशी रही ।

नमिता ने देखा, वो उस घड़ी बड़ी विचारपूर्ण मुद्रा बनाये था । उसे अभी भी लग रहा था कि उसके किचन में खुद जाने के पीछे कोई और वजह थी ।

वो आ कर नगरकर के पहलू में सोफे पर बैठ गया और फिर सामने बैठी नमिता से मुखातिब हुआ ।

“मैडम” - वो बोला - “पिछले कुछ दिनों में यहां जो भी आवाजाही हुई, बरायमेहरबानी उसके बारे में बताइये । पार्टी हुई तो बताइये मेहमान कौन-कौन थे, सोशल कॉल्स हुईं तो ऐसे लोगों के नाम लीजिये । और भी किसी आये गये का नाम लीजिये ।”

“ऐसा कुछ नहीं हुआ पिछले दिनों ।” - नमिता सावधान स्वर में बोली ।

“कोई डोर-टू-डोर सेल्समैन ?”

“न ।”

“दूध कैसे आता है ?”

“दूध तो सुबह दूध वाला ही देने आता है लेकिन वो हफ्ते में सिर्फ तीन दिन - सोम, बुध, शुक्र - आता है ।”

“ऐसा क्यों ?”

“इतनी ही जरूरत होती है । रोज लें तो नौकर पी जाते हैं ।”

“कोई गारबेज कलैक्टर भी आता है ?”

“कौन ?”

“गारबेज कलैक्टर ! कूड़ा उठाने वाला !”

“हां । हफ्ते में एक बार आता है । हर मंगलवार ।”

“अखबार वाला भी आता होगा ?”

“नहीं । मेरे को अखबार का शौक नहीं, वो अखबार आफिस में जाकर पढ़ते हैं ।”

“हूं । कोई अड़ोसी-पड़ोसी ?”

जवाब से पहले नमिता को हिचकना पड़ा, फिर उसने यही फैसला किया कि झूठ बोलना बेकार था ।

“कोई नहीं आता, लेकिन आजकल एक टैम्परेरी पड़ोसी इधर है जो कि कल शाम ही आया था ।”

“वो कौन हुआ ?”

“एडवोकेट कपिल कोठारी ।”

पावटे के चेहरे पर हैरानी के भाव आये ।

“वकील साहब यहां रहते हैं ?” - वो बोला ।

“रहते नहीं हैं - रहते तो फोर्ट में हैं - लेकिन आज कल अपने एक मिशन के तहत यहां डेरा जमाये हैं ।”

“मिशन ?”

“नावल लिख रहे हैं । इस काम के लिये यहां का शान्त वातावरण उनको रास आता है । कभी टाइम निकाल पाते हैं तो एक-दो दिनों के लिये अपना नावल लिखने इधर आ जाते हैं ।”

“इधर कहां ?”

“बाजू का एक काटेज छोड़कर अगला काटेज उनका है ।”

“उनका अपना है ?”

“कभी पूछा नहीं, लेकिन मेरे खयाल से किराये का है ।”

"तो कल शाम वकील साहब यहां आये थे ?"

"हां ।"

"सोशल काल पर या कोई खास वजह थी ?"

"खास वजह थी । कल उनका बर्थडे था । जो कि हमने तीन जनों ने टैरेस पर सैलीब्रेट किया था ।"

"कब तक ठहरे ?"

"पौने ग्यारह तक । शनिवार रात मेरे हसबैंड हमेशा जल्दी सो जाते हैं क्योंकि इतवार को उन्होंने फिशिंग पर निकलने के लिये बहुत सुबह सवेरे उठाना होता है । इस वजह से उन्हीं के कहने पर पार्टी को जल्दी वाइन्ड अप कर दिया गया था ।"

"और आया गया कोई नहीं ?"

नमिता हिचकिचाई ।

क्या भौंसले को किसी ने वहां पहुंचते या लौटते देखा हो सकता था ?

या वो खुद कहीं जाने-अनजाने अपनी पिछली रात की विजिट का जिक्र छेड़ सकता था ?

रिस्क लेने का कोई फायदा नहीं था ।

"नौ बजे के करीब मेरे हसबैंड का एक फ्रेंड यहां आया था" - वो बोली - "लेकिन वो सिर्फ दस मिनट रुका था ।"

"कौन फ्रेंड ?"

"नाम तो मुझे मालूम नहीं ।"

"मालूम नहीं या याद नहीं ?"

"मालूम नहीं । याद वाली बात तो तब होती, जबकि उसने अपना नाम बताया होता ।"

"अच्छा, नहीं बताया था ?"

"वो मेरे हसबैंड और वकील साहब दोनों से वाकिफ था ।"

"ओह ! इसलिये नहीं बताया था !"

"हां ।"

"लेकिन आप उससे वाकिफ नहीं थीं; होतीं तो आपको मालूम होता कि वो कौन था ! नहीं ?"

"हां ।"

"इसी वजह से किसी ने - आपके हसबैंड ने या वकील साहब ने - आपको उससे इंट्रोड्यूस न कराया !"

"और भी वजह थी ।"

"और क्या वजह थी ?"

"उसकी आमद के वक्त मैं किचन में थी । जब तक मैं वहां से लौटी थी, तब तक तो वो जाने के लिये उठ खड़ा हुआ था ।"

"क्योंकि उसकी विजिट बहुत ब्रीफ थी, सिर्फ दस मिनट ठहरा था ?"

"हां ।"

"और तकरीबन उतना अरसा आप किचन में रही थीं ?"

"हां । रात की उस घड़ी नौकर-चाकर यहां..."

"नहीं होते । आपने बताया था । वैसे कितने हैं नौकर-चाकर ?"

"पांच हैं । ड्राइवर को भी मिलायें तो छ: ।"

"ड्राइवर को छोड़िये । डोमेस्टिक सर्वेंट्स, घर का काम-काज करने के लिये नौकर, पांच हैं यहां ?"

"हां ।"

"और घर के मालिकान दो । दो जनों के लिये पांच नौकर !"

"आपको कोई एतराज ?"

"मतलब ही कोई नहीं । इतनी बेरोजगारी है, शायद ऐसे ही दूर हो जाये । मैं ये कहना चाहता था कि फिर भी पार्टी की शाम यहां नौकरों को नहीं रोका जाता ! एकाध को भी नहीं !"

"रेगुलर पार्टी हो तो सबको रोका जाता है, लेकिन वो कोई रेगुलर पार्टी नहीं थी, बल्कि पार्टी ही नहीं थी । बर्थ डे सेलीब्रेशन का माहौल था इसलिये पार्टी बोला ।"

"बर्थ डे वकील साहब का लेकिन सेलीब्रेशन आपके यहां ! जरूर वकील साहब के सम्मान में आपके पति ने दी होगी ?"

ट्रैप क्वेश्चन !

जब सदा ने इतवार को मुहं अंधेरे उठना होता था तो पिछली रात पार्टी का आडम्बर भला वह क्यों करता ?

"नहीं ।" - वो बोली - "पार्टी वकील साहब ने ही आर्गेनाइज की थी । सब कुछ उनकी तरफ से था ।"

"खाना-पीना सब ?"

"हां । डिनर, स्नैक्स वगैरह सब होटल से डिलीवर हुआ था ।"

"फिर भी आप किचन में मसरूफ थीं ?"

"और काम भी तो होते हैं । चीजें ठण्डी हो जाती हैं, उन्हें गर्म करना पड़ता है, सर्विस के लिये तैयार करना पड़ता है वगैरह ।"

"जो कि खाली एक नौकर को भी आप रोक लें तो सब हो जाये ।"

"सलाह का शुक्रिया ।" - नमिता के स्वर में व्यंग्य का पुट आया - "अगली बार के लिये याद रखूंगी ।"

"दस मिनट के मेहमान की आमद किस वजह से हुई थी ?"

"मुझे नहीं मालूम । मैंने बोला न, मैं किचन में थी ।"

"लेकिन विदा वो आपके सामने हुआ था ?"

"हां ।"

"साहब ने कुछ बताया नहीं कि मेहमान क्यों आया था ?"

"नहीं बताया ।"

"आपने पूछा भी नहीं ?"

"नहीं पूछा ।"

"मेहमान ने ड्रिंक में शिरकत न की ?"

"शायद की । क्योंकि जब मैं लौटी थी तब वो अपना गिलास खाली करके मेज पर रख रहा था ।"

"लेकिन एकाध ड्रिंक ही लिया होगा ?"

"दस मिनट में और क्या कर सकता था ?"

"ये मेन मुम्बई शहर से दूर अलग-थलग जगह है, रात के वक्त फासले से आया मेहमान दस मिनट तो नहीं ठहरता !"

"वो पार्टी के दौरान यहां पहुंचा होगा, इसलिये संकोच कर रहा होगा, अपने आपको, गेट क्रैशर समझ रहा होगा ।"

"इसलिये तकल्कुफ किया, ड्रिंक के नाम पर बस मुंह जूठा किया !"

"आधे घंटे में उसने कहीं और हाजिरी भरनी थी ।"

"अच्छा ! ऐसा बोला था उसने ?"

"हां ।"

"मेरे को उसके कोई लोकल आदमी होने की सम्भावना ज्यादा जान पड़ती है । आप उसका हुलिया बयान कर सकती हैं ?"

"कोशिश करती हूं ।"

अपनी कोशिश में हुलिये की बाबत उसने मुकम्मल गलतबयानी की, उस समेत कोई बात दुरुस्त न बताई ।

"हूं । आप उसका नाम बता पातीं तो हमारी ज्यादा मदद होती ।"

"क्या मदद होती ?"

"उसकी आमद का आज की वारदात से कोई रिश्ता निकल सकता था ।"

"खामखाह ! और वारदात का क्या मतलब हुआ ? आप समझते हैं कि..."

वो जानबूझकर खामोश हो गयी ।

दोनों पुलिस अधिकारियों में से किसी ने उसे जुबान देने की कोशिश न की ।

“तो” - पावटे बोला - “वकील साहब आजकल यहां का एक - तीसरा बोला आपने - काटेज आबाद किये हैं ?”

“हां ।” - नमिता ने उत्तर दिया ।

“यहां से वो काटेज दिखाई देता है ?”

“नहीं । अगले काटेज की ओट में आ जाता है ।”

“ये काटेज ही तो ! और तो बहुत कुछ दिखाई देता होगा !”

“वो तो है ।”

“अपने काटेज से शायद वकील साहब ने कुछ देखा हो !”

“बात करेंगे ।” - एसएचओ नगरकर दबे स्वर में बोला ।

“हां । अभी मिलते चलेंगे ।”

“ये तो” - नमिता बोली - “मुझे लगता नहीं कि मुमकिन होगा ।”

पावटे की भवें उठीं ।

“वजह ?” - वो बोला ।

“कल रात वो मैंगलोर जाने की बात कर रहा था । मेरे खयाल से वो आज सुबह निकल लिया होगा ।”

“आपके खयाल से ही तो ?”

क्या नई कार की - नमिता ने अपने आप से सवाल किया - और उसकी वहां गैरमौजूदगी की बात छुपी रह सकती थी ?

नहीं ।

“मेरे खयाल से तो” - वो बोली - “यूं समझिये कि फिगर आफ स्पीच के तौर पर कहा था मैंने ? असल में तो चला ही गया हुआ होगा क्योंकि.. .हमारी कार लेकर गया है ।”

“आई सी, लेकिन ऐसा क्यों ? वकील साहब के पास अपनी कार नहीं है ?”

“है । परसों रात बिगड़ गयी । वर्कशाप में है । कल शाम मिलनी थी लेकिन न मिल सकी । ये बात जानकर पुणेकर साहब ने खुद ऑफर किया था कि वो हमारी कार ले जायें । वो तो मना कर रहा था लेकिन पुणेकर साहब ने ही इस बाबत जिद की थी ।”

“क्योंकि करीबी था ? लीगल एडवाइजर था, बिजनेस एसोसियेट था ?”

“यही समझ लीजिये ।”

“आप लोगों के पास कई कारें हैं ?”

“तीन हैं । एक मारुति वैन है जो जरूरत पड़ने पर मैं चलाती हूं एक एम्बैसेडर है जो पुणेकर साहब रेगुलर इस्तेमाल करते हैं और एक सोनाटा है ।”

“उसे कौन चलाता है ?”

“अभी खास कोई नहीं, क्योंकि इसी हफ्ते खरीदी है ।”

“वकील साहब कौन-सी कार लेकर गये ?”

नमिता हिचकिचाई और फिर बोली - "सोनाटा ।"

"सुना है दस ग्यारह लाख की आती है ?"

"जी हां ।"

"ऊपर से ब्रैंड न्यू । यूं नयी कार कोई किसी को देता तो नहीं ।"

"किसी को नहीं दी, वकील साहब को दी ।"

"क्योंकि वो आपके हसबैंड के बहुत करीबी हैं, लीगल एडवाइजर हैं, बिजनेस एसोसियेट हैं, वगैरह वगैरह हैं !"

"हां ।" - नमिता दृढ़ता से बोली - "ऐसा ही है । आपको कोई एतराज ?"

"नहीं, कोई नहीं ।"

उसने नगरकर की तरफ देखा ।

"बैंगलोर जाने की वजह ?" - नगरकर ने पूछा ।

"मैंगलोर ।" - नमिता ने संशोधन किया ।

"यही बोला मैंने । बैंगलौर ! जाने की वजह ?"

नमिता ने असहाय भाव से पावटे की तरफ देखा ।

"मैंगलोर ।" - पावटे बोला - "बकौल इनके, वकील साहब मैंगलोर गये हैं, बैंगलौर नहीं ।"

"दोनों जुदा जगह हैं ?" - नगरकर सकपकाया ।

"हां । बैंगलोर कर्नाटक की राजधानी है, मैंगलोर उससे साढ़े तीन सौ किलोमीटर दूर कोस्टल टाउन है ।"

"ओह ! यहां से कितनी दूर है ये... मैंगलोर..."

"साढ़े नौ सौ किलोमीटर ।"

"ऐसी जगह जिसका मैंने कभी नाम भी नहीं सुना, वो शख्स क्या करने गया ? वो भी खुद ड्राइव करके ।"

"मैडम से पूछो ।"

नगरकर ने नमिता की तरफ देखा ।

"मुझे नहीं मालूम ।" - वो उखड़े स्वर में बोली ।

"कोई अन्दाजा ?" - पावटे बोला ।

"नो ।"

"हूं ।"

पावटे ने फिर नगरकर की तरफ देखा ।

"अगले काटेज में कौन रहता है ?" - नगरकर ने पूछा ।

"क्या ?" - नमिता बोली ।

"मैंने अर्ज किया, वकील साहब वाले काटेज के और आपके इस काटेज के बीच में जो काटेज है, उसमें कौन रहता है ?"

"मिसेज रोटोलो । उम्रदराज गोवानी औरत हैं । बेवा हैं । अकेली रहती हैं ।"

"मिसेज रोटोलो !" - नगरकर ने नाम दोहराया - "उनका आपके यहां आना-जाना है ?"

"कभी-कभार आ जाती हैं लेकिन पिछले काफी अरसे से - जिस की बाबत कि आपका सवाल है - नहीं आयी हैं ।"

"मिजाज मैं कैसी हैं ?"

"बहुत भली । बहुत नेक । बहुत मीठी ।"

"आखिरी बार जब आयी थीं तो आमद की क्या वजह थी ?"

"इतवार का दिन था वो । उन्होंने उस सुबह मेरे पति की मोटरबोट की रवानगी की आवाज नहीं सुनी थी तो सोचा था कि शायद उन्हें कुछ हो गया था । इसलिये हालचाल पूछने चली आयी थीं ।"

"उनका अन्देशा सही था ?"

"नहीं ।"

"असल में क्या बात थी ?"

"उनकी तबीयत खराब थी ।"

"ओह !"

"मिसेज रोटोलो को" - पावटे बोला - "उस इतवार मोटरबोट की रवानगी की आवाज न आयी और वो मिस्टर पुणेकर का कुशल क्षेम मालूम करने यहां पहुंच गयीं, इसका क्या ये मतलब है कि वो आवाज वो हमेशा सुनती हैं ?"

"हां । सुनती हैं या देखती हैं या दोनों, मौसम पर निर्भर करता है । वो साठ साल की हैं, बहुत कम सो पाती हैं और आदतन सुबह बहुत जल्दी उठती हैं । मेरे पति की मोटरबोट की ठीक पांच बजे पायर से रवानगी की मिसेज रोटोलो को हमेशा खबर होती है, कभी वो खबर न लगे तो अनिष्ट की आशंका तो होती ही है न !" - एकाएक नमिता के नेत्र फैले - "ओह.. .ओह !"

"क्या हुआ ?" - पावटे सकपकाया ।

"मैं समझ गयी ?"

"क्या समझ गयीं आप ?"

"मैं समझ गयी कि क्या हुआ !"

"क्या हुआ ?"

"झटका ! हार्ट अटैक ! ही हैड अनदर अटैक । फिर दिल का दौरा पड़ गया और वो मोटरबोट से समुद्र में जा गिरे ।"

दोनों पुलिस अधिकारियों की निगाहें मिलीं ।

"हे भगवान !" - कांपती आवाज में उसके मुंह से निकला - "हे भगवान !"

"मैडम, आप कहती हैं कि वो कनफर्म्ड हार्ट पेशेंट थे तो सम्भावना तो इस बात की बराबर है, लेकिन है तो आखिर सम्भावना ही । है तो ये आपके पशेमान दिल का महज खयाल ही । इसलिये हौसला रखिये और दुआ कीजिये कि ऐसा कुछ न हुआ हो ।"

नमिता खामोश रही, लेकिन ज्यादा-से-ज्यादा व्याकुल दिखने की कोशिश करती रही ।

"जरा अपने पड़ोस की गोवानी मैडम की तरफ फिर तवज्जो दीजिये । आपने फरमाया कि वो काफी अरसे से इधर नहीं आयीं, इसका क्या ये मतलब हुआ कि तब से आपकी उनसे कभी मुलाकात नहीं हुई ?"

"ऐसा तो नहीं है ।" - नमिता सावधान स्वर में बोली - "मुलाकात तो आज ही सुबह हुई थी ।"

"कहां ?"

"उनके काटेज पर ।"

"आप वहां गयी थीं ?"

"हां ।"

"वजह ?"

"चौबीस जनवरी को रिपब्लिक डे सेलीब्रेशन के तौर पर इस इलाके में एक क्राफ्ट्स बाजार और फूड फेस्टिवल आर्गेनाइज किया जा रहा है । मैं उसकी मैनेजिंग कमेटी पर हूं । मैं चाहती थी कि मेरे साथ वो भी उसमें हिस्सा लेतीं इसलिये इस बाबत बात करने के लिये आज सुबह उनके काटेज पर गयी थी लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया था ।"

"सुबह कब गयी आप ?"

"साढ़े छ: बजे के करीब ।"

"इतनी सुबह ।"

"मैं जल्दी उठ जाती हूं । मिसेज रोटोलो तो उठ जाती ही हैं । वो तो वक्त की ऐसी पाबंद हैं कि आंधी आये या तूफान, सुनामी आये या भूचाल, सुबह पांच बजे हर हाल में उठ जाती हैं ।"

"आई सी । कितनी देर ठहरीं ?"

"चाय-वाय पीने में पन्द्रह बीस मिनट तो लग ही गये थे ।" - वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - "बाई दि वे, वकील साहब तब तक अपने ट्रिप पर नहीं निकले थे ।"

"अच्छा !"

"हां । काटेज की एक खिड़की से मैंने तब भी उन्हें अपना टाइपराइटर खटखटाते सुना था और एक बार खिड़की के आगे से गुजरते देखा भी था । मिस्टर रोटोलो कहती थीं

कि कोठारी सारी रात अपने नावल पर काम करता रहा था या टाइप करता रहा था, या कमरे में टहल-टहलकर अपनी स्टोरी की बाबत, अपने प्लाट की बाबत सोचता रहा था ।"

"सारी रात !"

"हां ।" - यहां नमिता ने नयी बात जोड़ दी - "वजह उसने पिछली रात हमें बतायी थी ।"

"अच्छा ! क्या बताया था ?"

"उसका मैंगलोर ट्रिप ऐसा था कि लौटकर आकर भी वो काफी दिन अपनी स्क्रिप्ट पर काम नहीं कर सकता था और नावल एक ऐसे खास मोड़ पर पहुंचा हुआ था कि अगर उसका एक खास प्रसंग वो जल्दी कागज पर न उतारता तो वो उसके जेहन से निकल जाता । उसने यहां तक कहा था कि कल सुबह तक वो उस प्रसंग को न टाइप कर सका तो वो मैंगलोर जाना मुल्तवी कर देगा ।"

"मुल्तवी न किया, इसका मतलब है, वकील साहब रात को जितना लिखना चाहते थे, सुबह तक लिखने में कामयाब हो गये थे ।"

"जाहिर है । तभी तो सारी रात लगा रहा ।"

"क्योंकि मिसेज रोटोलो ऐसा कहती हैं ?"

"हां ।"

"सारी रात की जामिन वो कैसे बन सकती हैं ? सोती नहीं क्या ?"

"उन्हें अनिद्रा की बीमारी है ।"

"कभी तो सोई होंगी । कभी नहीं सोती तो ये कहने का क्या मतलब कि वो सुबह पांच बजे नियम से उठ जाती हैं ?"

"उठ जाती हैं का मतलब ये है, एसीपी साहब, कि बिस्तर त्याग देती हैं, सोने की कोशिश छोड़ देती हैं और नये दिन की शुरुआत के लिये तैयार हो जाती हैं ।"

"मैडम, आपने कानून की पढ़ाई तो नहीं की हुई ?"

"क्यों पूछते हैं ?"

"जिरह कमाल की करती हैं ।"

"मैं जिरह नहीं करती, मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं, लेकिन मुझे आपकी बातों पर हैरानी होती है ।"

"ऐसा ?"

"जी हां, ऐसा । आप तो मेरे पड़ोसियों के यूं पीछे पड़ने की कोशिश कर रहे हैं जैसे मेरे पति के किसी बुरे अन्जाम में उन दोनों का हाथ है ! जैसे ये हो ही न सकता हो कि मेरे पति को हार्ट अटैक हुआ हो !"

"ऐसी कोई बात नहीं, मैडम ।" - पावटे नम्र स्वर में बोला - "सच पूछें तो आपके पति की कोरोनरी केस हिस्ट्री के मद्देनजर मुझे आप ही की बात सबसे ज्यादा सम्भावित और

विश्वसनीय लग रही है । लेकिन मैं पुलिस आफिसर हूं और मेरी ये ही ट्रेनिंग है कि मैं हर सम्भावना पर विचार करूं । जो और सम्भावनायें मुझे विचार करने योग्य लगती हैं, उनमें से एक यह है कि ये जानते-बूझते कि इतवार सुबह आपके पति बीच समुद्र में नोडल पॉइंट पर अकेले होते थे, कोई जना या कोई जने बोट पर चढ़े, उन्होंने आपके पति को अपने काबू में किया और या तो फिरौती हासिल करने के लिये अगवा करके ले गये या...”

पावटे खामोश हो गया ।

“या क्या ?”

“आपको मालूम है क्या ! लेकिन आप अपनी जुबानी कहां कबूल करेंगी !”

“या क्या ?”

“गैंग किलिंग ।”

“आपकी ये कहने की मजाल हो रही है कि मेरा हसबैंड गैंगस्टर है ?”

“देखा !”

नमिता खामोश हो गयी, उसने दिखावटी अन्दाज से कई बार पहलू बदला ।

“मेरा” - पावटे बोला - “जाती तौर पर आपके पति की बोट का मुआयना करने का इत्तफाक नहीं हुआ है, लेकिन मुझे रिपोर्ट मिली है कि वहां हाथापायी के या धकापेल के कोई निशान नहीं पाये गये हैं ।”

“फिर अगवा या कत्ल की आपकी थ्योरी तो फेल हो गयी । बिना भीषण विरोध किये मेरे पति भला क्यों किसी को बोट पर चढ़ आने देंगे ?”

“नहीं फेल हो गयी । इससे सिर्फ ये साबित होता है कि आगन्तुक कोई अजनबी नहीं था या एक से ज्यादा वे तो अजनबी नहीं थे । जो कोई भी बोट पर चढ़ आया, वो मिस्टर पुणेकर का जाना-पहचाना और भरोसे का आदमी था जिसकी बीच समुद्र बोट पर आमद से उन्हें कोई एतराज नहीं था । मैडम, खास इस वजह से मेरा आपसे हाल में यहां आये किसी पड़ोसी या किसी ऐसे ही और शख्स की बाबत सवाल था ।”

“लेकिन अगवा ! कत्ल !”

“कत्ल आपके पति की उस हकीकत की वजह से जिसे कबूलना आपको गवारा नहीं और अगवा - जो कि बड़े शहरों में आजकल इन्डस्ट्री बन गया है - प्रॉफिट मोटिव के लिये, पैसा कमाने के लिये ।”

“ये दोनों ही वजह न हों तो ?”

“तो चोरी - सीना जोरी के साथ चोरी । लूट - अगरचे कि मोटरबोट पर कोई कीमती सामान उपलब्ध रहता हो । बोट पर नहीं तो खुद उनके पास । क्या कहती हैं आप इस बाबत ?”

मनी बैल्ट ! नमिता के मन में हाहाकार उठा - हे भगवान ! क्या मनी बैल्ट डूब गयी ? लाश को मछलियां खा गईं और मनी बैल्ट समुद्र की तलहटी में पहुंच गयी ? नहीं नहीं, ऐसा

कैसे हो सकता था ! कोठारी जैसा काइयां शख्स ऐसा कैसे होने दे सकता था ।

"जवाब दीजिये ।" - पावटे पुरइसरार लहजे में बोला - "मिस्टर पुणेकर कैश में बड़ी-बड़ी रकमें पास रखने के आदी हों ? कीमती ज्वेलरी पहनते हों ? आजकल तो हीरे की एक अंगूठी ही लाखों में आती है, लोग-बाग कई-कई अंगूठियां पहनते हैं, कीमती जवाहरात से जड़े आइडेंटिटी ब्रेसलेट पहनते हैं, लाखों की घड़ी पहनते हैं, गले की चेन तक जैम्स से जड़ी पहनते हैं । आपके पति थे ऐसे ?"

"न... नहीं ।"

मनी बैल्ट ! मनी बैल्ट !

वो दो लफ्ज धाड़-धाड़ उसकी धड़कन में बज रहे थे ।

क्या वो मनी बैल्ट की बाबत पुलिस को बताये ?

क्या ये हो सकता था कि उस माहौल की वक्ती टेंशन में कोठारी मनी बैल्ट को भूल गया हो ?

कैसे हो सकता था ?

लेकिन अगर मनी बैल्ट उसने कब्जा ली थी तो उसका उसकी चिट्ठी में जिक्र क्यों नहीं था ।

क्योंकि यार दगा दे गया, मनी बैल्ट ले गया ।

बैंक की पांच करोड़ की एफडी तेरह उधार थी, मनी बैल्ट नौ नकद थी ।

गयी - उसके दिल से आवाज निकली - कार भी गयी ।

हे भगवान !

***

दोनों पुलिस अधिकारी पगडण्डी वाले रास्ते से मिसेज रोटोलो के काटेज पर पहुंचे ।

इन्स्पेक्टर नगरकर की निगाह में अगर वो हार्ट अटैक और डूब मरने का केस था तो वो परेड बेकार थी । एसीपी मनोहर पावटे सैद्धांतिक तौर पर उससे सहमत था, लेकिन कुछ बातें ऐसी थीं जो नमिता पुणेकर से मुलाकात के बाद उसे गैरमामूली जान पड़ती थीं । उन बातों का जिक्र वो अभी इन्स्पेक्टर से नहीं करना चाहता था क्योंकि उनकी बाबत उसका खयाल गलत भी हो सकता था । फिलहाल वो कूदकर किसी नतीजे पर नहीं पहुंचना चाहता था ।

दूसरे, इन्स्पेक्टर को ये नहीं मालूम था कि ताजा ताजा बने एसीपी का नमिता पुणेकर से पहले भी - वो भी एक कत्ल के केस में - वास्ता पड़ चुका था ।

इतने थोड़े अरसे में एक हाउसवाइफ का क्योंकर दो गम्भीर वारदातों से रिश्ता था ?

तफ्तीश का मुद्दा था बराबर ।

मिसेज रोटोलो ने बहुत सौजन्यतापूर्ण ढंग से उन्हें रिसीव किया, उनका परिचय प्राप्त किया और उनकी आमद की वजह समझी ।

"सांता मारिया !" - वो गले में लटके क्रॉस को छूती हुई बोली - "अभी मार्निंग में तो मैं उसको अपना प्राइवेट पायर का डायरेक्शन में जाता देखा । फाइव एएम आन दि डॉट । ऐज यूजुअल । ऐज आलवेज ।"

"तब" - पावटे बोला - "आपने कोई गैरमामूली, कोई खटकने वाली बात नोट की थी ?"

"नो । नाट ऐट आल । आल रुटीन । ऐज यूजुअल ।"

"सुबह बहुत धुंध थी !"

"यस । बट मैं सब चौकस करके देखा । सिर पर नेवी वाला वाइट पीक कैप पहनकर जैसे हमेशा जाता था, वैसा आज मार्निंग में भी जाता था । कंधे पर बड़ा वाला कैनवस का बैग लादकर । मिसेज पुणेकर मार्निंग में इधर आया तो बोला बोट पर खाने-पीने का सामान फिनिश था, कैंड गुड्स का फ्रैश सप्लाई लेकर जाता था ।"

"हूं । आपके इस बाजू मिस्टर एण्ड मिसेज पुणेकर रहते हैं, दूसरे बाजू भी मालूम कि कौन रहता है ?"

"बट आफकोर्स । मैं इधर सबको जानता है, सब मेरे को जानता है । दूसरे बाजू के काटेज में आजकल मिस्टर कपिल कोठारी रहता है जो एडवोकेट है, बट इधर आकर नावल लिखता है । मर्डर मिस्ट्री । हूडनुइट, यू नो ।"

"एडवोकेट पुणेकर दम्पति से वाकिफ है ?"

"वन हण्ड्रेड पर्सेंट । लाइक वन आफ दि फैमिली । अभी कल शाम उधर टैरेस पर सैलीब्रेट करता था ।"

"कैसे मालूम कि आम खाना-पीना नहीं था, सैलीब्रेशन था ?"

"केक पर कैण्डल जलाया, बुझाया न ! केक काटा न ! सैलीब्रेशन का तरीका से चियर्स बोला न ! तभी तो मैं इधर बराबर सुना । लाउडली चियर्स तो सैलीब्रेशन का वास्ते ही बोलता होना सकता !"

"यू आर राइट । कब तक चला वो जश्न ?"

"तभी तक चला जब तक कि एडवोकेट उधर था । एडवोकेट बोले तो एट पीएम से थोड़ा टेम पहले उधर पहुंचा था । टैन थर्टी तक तो मैं बराबर उसको उधर देखा ।"

"उसके बाद ?"

"टीवी देखता था न ! मेरा फेवरेट प्रोग्राम । टैन थर्टी पर स्टार्ट होता था । वन आवर में फिनिश होता था । मैं बराबर देखा । टैन मिनट्स या फिफ्टीन मिनट्स बाद टीवी ऑफ किया । वो टेम टैरेस पर कोई भी नहीं होना सकता ।"

"यानी कि पार्टी साढ़े ग्यारह पौने बारह से पहले किसी वक्त खत्म हुई ?"

"यस, दैट्स क्वाइट पासिबल ।"

"आपने एडवोकेट साहब को वहां से लौटते नहीं देखा था ?"

"नो । बट बाई मिडनाइट वो काटेज पर अपना टाइपराइटर बजाता था । मीनिंग वो काटेज में लौटा था और वो टेम से पहले लौटा था ।"

"उसके बाद ?"

"उसका बाद क्या ? बोले तो टाइपराइटर बजाता था । उसका बाद अपना काटेज में होल नाइट टाइपराइटर बजाता था ।"

"सारी रात !" - जानबूझकर अनजान बनता पावटे हैरानी से बोला ।

"लाइक क्रेजी ।"

"आपने सारी रात देखा, सुना उसे टाइप राइटर कूटते ?"

"थोड़ा टेम नहीं देखा, थोड़ा टेम मैं सोता था । बट जब सोने को गया, तब वो टाइप करता था, मार्निंग में सोकर उठा तक भी वो टाइप करता था ।"

"मिस्टर पुणेकर हमेशा सुबह पांच बजे फिशिंग के लिये निकलते हैं ?"

"बट ऑफकोर्स । अभी बोला तो । आज भी पांच बजे गया ।"

"तब आपने वकील साहब को देखा था ?"

"आई.. .यस, आई थिंक सो । उधर उसका काटेज में लाइट जलता था.. .एण्ड.. .एण्ड.. .अभी बोले तो मिस्टर पुणेकर का पायर डिफरेंट डायरेक्शन में । एक टेम में मैं दो डायरेक्शन में तो नहीं देखना सकता ।"

"मतलब क्या हुआ इसका ?"

"मतलब ? ओह, यस.. .बोले तो मिस्टर पुणेकर के पायर से चले जाने के बाद मेरे को फीलिंग आया कि टाइप राइटर का आवाज नहीं आ रहा था ।"

"क्यों नहीं आ रहा था ?"

"राइटर सोचता था । प्लाट बनाता था । जब सोचता था तब टाइप नहीं करता था । इधर" - उसने एक उंगली से अपनी कनपटी ठकठकाई - "सब सैट हो जाता था तो फिर टाइप करता था ।"

"ये खामोशी का दौर कितना अरसा चलता था ?"

"क्या बोलेंगा ? टेम क्लाक करके तो रखा नहीं । मे बी हाफ ऐन आवर । मे बी वन आवर । मे बी ईवन मोर । मैं स्टाप वाच लेकर तो उसको वाच किया नहीं । बोले तो वाच ही नहीं किया । विंडो से बाहर निगाह चली गयी तो देखा, कुछ सुनाई दे गया तो सुना ।"

"आई सी ।"

"तुम क्या सोचता है ? मिस्टर पुणेकर की डिसअपीयरेंस का साथ एडवोकेट का कोई लिंक होना सकता ? ही हैज एनीथिंग टु डू विद दिस ?"

पावटे से जवाब देते न बना । उसने नगरकर की तरफ देखा तो उसने अनभिज्ञता से कंधे उचकाये ।

"मैडम" - पावटे बोला - "अभी इस बाबत कुछ कहना मुहाल है ।"

“आई सी ।”

“तो” - नगरकर बोला - “आपके खयाल से मिस्टर पुणेकर और एडवोकेट एक दूसरे के बहुत करीबी हैं । उन के आपसी ताल्लुकात बहुत उम्दा हैं, इतने उम्दा हैं कि खुशी के मौके एक साथ सैलीब्रेट करते हैं ?”

“यस, आई गैस सो । ही इज लाइक वन आफ दि फैमिली । तभी तो ऐसा काम भी करता है जो दूसरा कोई किधर करता है ।”

“ऐसा क्या काम हुआ ?”

“एक टेम मैं देखा वो तीनों - एडवोकेट एण्ड मिस्टर एण्ड मिसेज पुणेकर - टेरेस पर ड्रिंक करता था । उस एक टेम नाइट में मैं क्या देखा ?”

“क्या देखा ?”

“मैं देखा कि मिस्टर पुणेकर सडनली अपना चेयर पर ऐसा ढेर हुआ जैसे स्ट्रोक आ गया हो । सिर नीचू चैस्ट पर लटक गया । बोथ आर्म्स चेयर के आजू-बाजू लटक गया । नो मोशन इन बॉडी । लाइक डैड मैन । तब एडवोकेट उसको इधर” - उसने अपने दायें कंधे पर हाथ रखा - “इधर पिक किया और भीतर किधर छोड़ के आया । किधर छोड़ के आया होयेंगा ! पाजिटिवली बैडरूम में । नो ?”

“यस ।”

“स्ट्रोक था ?” - पावटे ने उत्सुक भाव से पूछा ।

“नो ।”

“कैसे मालूम ?”

“उधर कोई डाक्टर तो पहुंचा नहीं था । न ही वो लोग उसको किधर किसी नर्सिंग होम में, किसी कैजुअल्टी में पहुंचाया । वो एडवोकेट ही कोई फस्ट एड किया होयेंगा ऊपर बैडरूम में या आर्टीफिशल रेस्पीरेशन दिया होयेंगा या कुछ और किया होयेंगा ।”

“मैडम ने ऐसा बोला ?”

“नो ।”

“तो फिर ?”

“बोलता है न !”

“सारी ।”

“वो सैटरडे नाइट का बात था, नैक्ट मार्निंग संडे था, बट अपना रुटीन से मिस्टर पुणेकर फिशिंग का वास्ते न निकला । मैं उसका मोटरबोट ओशन को जाता न देखा तो मैं मिस्टर पुणेकर का वैलफेयर जानने के वास्ते उनका काटेज पर विजिट किया । मैं उसको ये तो नहीं बोलना सकता था कि मैं रात को उनका टेरस का वो डैडली सीन देखा । बोलता तो मिसेज पुणेकर सोचता कि मैं स्नूपिंग करता था । मैं तो उधर जा के कैजुअली पूछा कि लार्ड एण्ड मास्टर आफ दि हाउस कैसा था ! तब मिसेज पुणेकर मेरे को बोला कि कोई

सीरियस बात नहीं था, किसी वायरस का कोई सडन अटैक हो गया था । उसी वजह से वो सुबह फिशिंग का वास्ते नहीं निकल सका था ।”

“फिर ?”

“मैं वापिस लौट के आया, बट सोचता था, सोचता था कि वायरल अटैक ऐसा सडनली किधर होता था कि अभी कोई ओके था अभी नहीं था । तब मेरे को श्योर था कि उसको लास्ट टाइम का माफिक सडन स्ट्रोक ही लगा था ।”

“जैसे” - नगरकर अर्थपूर्ण स्वर में बोला - “आज बोट पर लगा हो सकता है ।”

पावटे ने सहमति में सिर हिलाया ।

“आपको” - वो फिर वृद्धा की तरफ आकर्षित हुआ - “उसके लास्ट टाइम के स्ट्रोक की बाबत कैसे मालूम था ?”

“मैं उसको डाक्टर देशपाण्डे के क्लीनिक में देखा न, जो कि कार्डियालोजिस्ट होना सकता और जो मेरा भी डाक्टर होना सकता । नर्स मेरे को बोला कि मिस्टर पुणेकर को पहले एक स्ट्रोक लगा, रीसेंट नहीं लगा, बहुत पहले लगा बट लगा ।”

“आई सी । मैडम, ये कब की बात है ?”

“एट.. .मे बी नाइन मंथ्स । बट सेम सीन मैं उसका बाद भी देखा सैवरल टाइम्स ।”

“सेम सीन ! यानी कि मिस्टर पुणेकर की आपने कई बार ऐसी हालत देखी जैसे कि उसको स्ट्रोक आ गया हो ?”

“बट आफकोर्स । तभी मेरे को स्ट्राइक किया कि इन रीयलटी मिस्टर पुणेकर का क्या प्राब्लम था ?”

“क्या प्राब्लम था ?”

“बहुत ड्रिंक करता था । ओवरड्रिंकिंग की वजह से सम टाइम्स ऑर दि अदर अनकांशस हो जाता था ।”

“टुन्न होकर होश खो बैठता था ?”

“यस ।”

“और एडवोकेट कोठारी उसे उठाकर, कंधे पर लादकर ऊपर बैडरूम में पहुंचाकर आता था ?”

“यस । बट नाट ही आलवेज ।”

“जी !”

“ए कपल आफ टाइम्स मैं एक डिफ्रेंट पर्सन को सेम सर्विस करता देखा ।”

“डिफ्रेंट पर्सन यानी कि कोई और मेहमान ?”

“यस ।”

“कौन ?”

“आई डोंट नो । कभी पूछा नहीं । कभी डे टाइम में उसको उधर देखा नहीं ।”

“होगा तो कोई फैमिली फ्रेंड ही ।”

“बट आफकोर्स ।”

“जब उस दूसरे मेहमान ने ये सर्विस की थी तब कोठारी भी.. .एडवोकेट भी वहां मौजूद था ?”

“नो । नेवर ।”

“आई सी । बहरहाल ओवरड्रिंकिंग आपके पड़ोसी के लिये आम बात है जबकि वो हार्ट का पेशेंट है, दो स्ट्रोक झेल चुका है !”

“क्या बोला, मैन ?”

“दो स्ट्रोक झेल चुका है ।”

“दो ?”

“जी हां ।”

“बट आई नो अबाउट वन ओनली ।”

“एक माइल्ड स्ट्रोक बहुत.. .बहुत पहले भी आया ।”

“फिर भी इतना ड्रिंक करता है । बोले तो लाइक ए फिश ।”

“ऐसा ही सुना है ।”

“अगर दो स्ट्रोक बोला तो उसको तो ड्रिंक करना ही नहीं मांगता है ।”

“यू आर राइट देयर ।”

दोनों पुलिस अधिकारियों ने आंखों-आंखों में मन्त्रणा की कि और कुछ पूछने को बाकी नहीं था, फिर वृद्धा का शुक्रिया अदा किया और वहां से रुखसत हुए ।

दोनों पुणेकर के काटेज की तरफ लौटे जिसके फ्रंट यार्ड में उनकी जीप खड़ी थी ।

“आपको” - रास्ते में नगरकर बोला - “एडवोकेट कोठारी पर कोई शक है ?”

“शक !” - पावटे बोला - “कैसा शक ?”

“कैसा भी ?”

“नहीं । अभी तो नहीं ।”

“आपके सवाल पूछने के स्टाइल से तो मुझे ऐसा ही लगा था ।”

“खामखाह लगा ।”

“क्या सच में ?”

“हां ।”

“ठीक है । हां तो हां ।”

“लगता है तसल्ली नहीं हुई ।”

“है तो यही बात ।”

“तो सुनो । शक नहीं, खुन्नस है । बहुत भौंकता है । कोर्ट में कई बार मेरी किरकिरी कर चुका है । अब उसकी भी वाट लगे तो मुझे खुशी होगी ।”

“ओह !”

***

वो म्यूनीसिपल डॉक पर पहुंचे, जहां कि पुणेकर का शानदार केबिन क्रूसर ऐसी जगह खड़ा था जो कि खूब रोशन थी ।

एक सब-इन्स्पेक्टर उनके करीब पहुंचा, उसने ठोककर सैल्यूट मारा ।

“कुछ चैक किया, कदम ?” - नगरकर बोला ।

“सब चैक किया, सर ।” - सब-इन्स्पेक्टर कदम तत्पर स्वर में बोला ।

“कोई क्लू मिला ? कोई शक के काबिल बात मिली ? कुछ हाथ आया ?”

“नो सर ।”

“हूं ।”

दोनों अफसर पायर से बोट के डैक पर पहुंचे ।

उन्होंने कन्ट्रोल केबिन समेत पूरे डैक का चक्कर लगाया ।

पुलिसिया दिलचस्पी के काबिल कहीं कुछ न मिला ।

सीढ़ियां उतरकर वो नीचे के लम्बे, संकरे गलियारे में पहुंचे । वहां दो केबिन थे जिनमें से एक छोटा-सा था, लेकिन दूसरा काफी बड़ा था और उसकी फर्निशिंग बताती थी कि वो ही मेन केबिन था । वहां एक तरफ सोफा-कम-बैड के स्टाइल से बनी सीट थी, जो इकट्ठी हो तो बैठने के काम आती थी, खोली जाने पर डबल बैड बन जाती थी । उसके ऊपर कुछ क्लोजेट्स थे जिनमें से एक में एक विस्की की एक चौथाई भरी बोतल मौजूद थी, जो कि किसी केबिन क्रूसर पर कोई असाधारण बात नहीं थी । एक कोने में एक भारी सेफ फिट थी जिसका दरवाजा उसके फ्रेम से जुड़ा हुआ नहीं था ।

पावटे ने करीब जाकर वो दरवाजा पूरा खोला ।

सेफ खाली थी ।

उसने काफी देर उसका बारीक मुआयना किया ।

“लगता नहीं” - फिर बोला - “कि ये इस्तेमाल होती थी ।”

नगरकर ने सहमति में सिर हिलाया ।

“ये बात भी गौरतलब है कि मोटरबोट कीमती है लेकिन भीतर से हालत फकीर की झोली जैसी है ।”

“क्या मतलब ?” - नगरकर बोला ।

“खाली खाली सी है ।”

“ओह !”

“ओह नहीं बोलो । वजह बोलो । क्यों है ऐसा ?”

“क्यों है ?”

“तुम कुछ भूल रहे हो ।”

“क्या ?”

“‘बोट पर खाने-पीने का सामान फिनिश’ - मिसेज रोटोलो के लहजे की नकल करता पावटे बोला - “कैंड गुड्स का फ्रैश सप्लाई लेकर जाता था’ । कहां है कैंड गुड्स की फ्रैश सप्लाई ? कहां है कैनवस का बड़ा वाला बैग ?”

“इसका तो एक ही मतलब हो सकता है ।”

“क्या ?”

“बोट लुट गयी । लूट का विरोध करता बोट का मालिक शहीद हो गया । इसी वजह से सेफ खुली है ।”

“करेक्ट । शायद यही वजह है कि लगता नहीं कि बोट का मालिक यहां फिशिंग करता रहा था ।”

“वो कैसे ?”

“वो माडर्न बंसी तो उधर दीवार के साथ बनी ब्रैकेट में लगी हुई है लेकिन बेट - मछली पकड़ने का चारा - कहीं नहीं है ।”

“शायद ऊपर डैक पर हो या कन्ट्रोल केबिन में हो ।”

“हां, शायद । ऊपर हम चारे की तलाश में नहीं थे इसलिये हो सकता है कि हमारी उस पर निगाह न पड़ी हो । फिर देखते हैं ।”

वो वापिस ऊपर पहुंचे, जहां उन्होंने इस बार बड़ी बारीक निगाहबीनी की ।

कुछ न मिला ।

पावटे उस बड़ी मोटरबोट के अग्रभाग में था जो कि ‘बो’ कहलाता था और उधर की बोट जैसे ही सफेद पेंट से पुती कदरन नीची रेलिंग का मुआयना कर रहा था ।

नगरकर उसके करीब पहुंचा ।

“कुछ मिला ?” - वो बोला ।

“लगता तो है ।”

बोट पूरी तरह से रोशन थी फिर भी उसने टार्च काबू में की और उसकी रोशनी रेलिंग पर डाली ।

टार्च की रोशनी में एक छोटा-सा, अठन्नी के नाप का, गहरी रंगत वाला धब्बा चमका ।

“देखो, ये क्या है ?” - पावटे बोला ।

नगरकर और करीब उसके पहलू में पहुंचा, उसने झुककर धब्बे का मुआयना किया ।

“खून !” - फिर वो तनिक संदिग्ध भाव से बोला ।

“बिल्कुल !”

उसने जेब से अपना एक विजिटिंग कार्ड निकाला और उससे बड़ी सावधानी से धब्बे की एक साइड को तनिक खुरचा । फिर कार्ड का वो कोना उसने ऊंचा करके आंखों के सामने किया ।

सफेद कार्ड का कोना लाल लग रहा था ।

“समुद्री हवा की नमी की वजह से” - वो गम्भीरता से बोला - “धब्बा ऊपर से सूख गया है, लेकिन नीचे से अभी भी नम है । ये यकीनन खून का धब्बा है ।”

“रेलिंग पर कैसे लगा ?”

“तफ्तीश का मुद्दा है । वैसे एक तरीके से देखा जाये तो इस से हार्ट अटैक वाली थ्योरी को सपोर्ट मिलती है । उसको यहां आते ही, फिशिंग शुरू करने से भी पहले, स्ट्रोक आ गया जिसकी वजह से ढेर होने लगा तो सिर रेलिंग से टकराया और वो इस पर से उलटकर समुद्र में जा गिरा । कहानी खत्म ।”

“फिर तो केस भी खत्म ।”

“मुमकिन है लेकिन कुछ बातें फिर भी परखी जाने के काबिल हैं और उन्हें हम परखेंगे ।”

“कौन-सी बातें ?”

“बोलूंगा । यहां से फिंगरप्रिंट्स उठवाने का इंतजाम किया गया है ?”

“इंतजाम किया गया है लेकिन अभी उठाये नहीं गये हैं । हमारे टैक्नीकल एक्सपर्ट्स बस पहुंचते ही होंगे ।”

“वो अपना काम खुद करेंगे ।”

“बराबर ।”

“तो फिर हमारा यहां कोई काम नहीं । आओ, चलें ।”

वो बोट से पायर पर और आगे पार्किंग में खड़ी पुलिस जीप पर पहुंचे ।

जीप थाने के लिये रवाना हुई ।

“कौन-सी बातें परखी जाने के काबिल हैं ?” - तब नगरकर उत्सुक भाव से बोला ।

“उनके लाइफ स्टाइल से, उनके खुद से ताल्कुक रखती बातें । मसलन बीवी कड़क जवान है जबकि खाविन्द - मैं जाती तौर से जानता हूं - उम्रदराज शख्स है । मसलन हार्ट का पेशेंट है, दो झटके झेल चुका है, फिर भी शहर से इतना दूर ऐसी जगह पर रहता है जहां उसे बाइस जमा चौदह सीढ़ियां अक्सर उतरना-चढ़ना पड़ता है । कोई निष्ठावान बीवी क्या अपने ऐसी केस हिस्ट्री वाले हसबैंड को ऐसी टार्चर की इजाजत देगी !”

“नहीं, लेकिन वो कहती थी कि वो हफ्ते में एक बार की ड्रिल थी !”

“उसके कहने से क्या होता है ? हफ्ते में एक बार की ड्रिल फिशिंग की वजह से हो सकती है लेकिन जो शख्स प्राइवेट बीच वाले काटेज में रहता हो, ये कोई मानने की बात है कि बीच का, समुद्र का आनन्द लेने के लिये वो कभी सीढ़ियां नहीं उतरता होगा ?”

“ठीक ।”

“तैरने पर तो पाबन्दी है, लेकिन इतनी सीढ़ियां उतरने-चढ़ने पर कोई पाबन्दी नहीं ।”

“बीवी गोवा में कहीं शिफ्ट करने की बात कर रही थी, क्या पता उस फैसले में ये बातें भी वजह हों !”

“खाली बात कर रही थी, शिफ्ट कर तो नहीं लिया ! जब तक शिफ्ट कर नहीं लेते, तब तक तो पुणेकर के साथ ये तमाम प्राब्लम हैं न !”

“ठीक ।”

“नम्बर दो, उम्रदराज शख्स की नौजवान बीवी अलग बैडरूम में रहती है...”

“गुस्ताखी माफ सर, अलग बैडरूम में नहीं रहती, अलग बैडरूम में भी रहती है और इसकी वजह उसने बताई थी ।”

“हसबैंड को स्पैशल रैस्ट की जरूरत महसूस होने वाली ?”

“और जनाना कास्मैटिक्स के मिक्स अप वाली । मुझे तो उसकी इस बात में कोई नुक्स नहीं लगता कि जब वो इतने बड़े काटेज में रहते हैं तो क्यों न दो बैडरूम इस्तेमाल करें !”

“उसकी हिमायत कर रहे हो ?”

“अरे नहीं, पावटे साहब । मैं सिर्फ ये कहने की कोशिश कर रहा हूं कि ऐसा कोई हिंट हमें नहीं मिला है जिससे ये जाहिर हो कि दोनों में जिंसी ताल्लुकात खत्म थे इसलिये वो अलग बैडरूम में रहते थे । मैंने ऐसे अक्खड़ मिजाज मर्द अपनी आंखों से देखे हैं, जो बीवी से सैक्स करने के बाद या तो खुद उठके कहीं चल देते हैं या उसे हुक्म देते हैं कि ‘जा कहीं और जा के पड़’ ।”

“ऐसा ?”

“हां । ये तो आपसी अन्डरस्टैंडिंग की, आपसी सहूलियत की बात है ।”

“लिहाजा मेरी इस आब्जरवेशन में कुछ नहीं रखा !”

“अब मैं क्या कहूं ? वो हैवी ड्रिंकर है, बाज औरतों को बेवड़े के साथ सोने से परेशानी होती है ।”

“जबकि ये औरत लगता है कि खुद बेवड़ी है ।”

“कहां से लगता है ?”

“जब टैरेस पर ड्रिंक-डिनर की पार्टियां होती हैं जिसमें वो शरीक होती है तो और क्या हुई ?”

“औरतें अमूमन सोशल ड्रिंकर्स होती हैं । कम्पनी देने को ड्रिंक करती हैं । क्या पता वो भी वैसी ही ड्रिंकर हो ।”

“मैं एक बात और बोलता हूं उसके बाद फैसला करना कि वो कैसी ड्रिंकर है ?”

“बोलिये ।”

“जब मैं पानी के लिये किचन में गया था तो मकसद पानी नहीं था, किचन की खिड़की से काटेज के उधर के पहलू में झांकना था । मैंने जब खिड़की से बाहर झांका था

तो उधर मुझे एक कूड़ेदान दिखाई दिया था जिसके बाजू में खाली बोतलें पड़ी थीं । कितनी भला ? आठ । पांच विस्की की और तीन वोदका की ।”

“मेहमानों की वजह से ।”

“बीवी ने खुद कहा था कि एडवोकेट कोठारी को छोड़कर हाल में कोई मेहमान वहां नहीं आया था । उधर से कूड़ा कलैक्ट करने वाला हर हफ्ते आता है, परसों आयेगा । यानी कि वो बोतलें पांच दिन में खाली हुई थीं ।”

“इसका मतलब क्या हुआ ?”

“हसबैंड वाइफ दोनों बेवड़े हैं । बीवी कम होगी लेकिन हसबैंड के हैवी ड्रिंकर होने की तो पड़ोस से भी तसदीक हुई है । जो शख्स ड्रिंक करता बैठा बैठा बेहोश हो जाता हो, कल्पना करो कि वो कितनी विस्की पीता होगा !”

“दिस इज लाइक डैथ विश ।”

“ऐसा तुम समझते हो । बाज लोगों को खुशफहमी होती है कि जो अंजाम औरों का हुआ था, वो उनका नहीं होने वाला था ।”

“ये भी ठीक है ।”

“लेकिन इस वक्त बहस का मुद्दा खाविन्द नहीं, बीवी है जिसे तुम कहते हो कि शायद सोशल ड्रिंकर हो, सिर्फ कम्पनी की खातिर पीती हो । ऐसी सोशल ड्रिंकर जो पांच दिन में तीन बोतल वोदका पी गयी ।”

“वो ही क्यों ?”

“वोदका तो औरतें ही पीती हैं ।”

“मर्दों को कोई पाबन्दी तो नहीं !”

“कबूल । फिर वो विस्की नहीं पीते । एक ही टाइम में वोदका और विस्की दोनों पीते तो मैंने किसी को नहीं देखा ।”

“आप एक ही टाइम में पीने की बात करते हैं ! मैंने एक गिलास में पीते देखा है ।”

“क्या ?”

“आधी वोदका, आधी विस्की, बराबर एक लार्ज ।”

“ऐसा ?”

“जी हां । बहरहाल आप ये कहना चाहते हैं कि बीवी भी बेवड़ा है और उसे हसबैंड के बेवड़ा होने से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये ?”

“हां ।”

“तो फिर हसबैंड की तरह बीवी कभी पीकर आउट होती क्यों न देखी गयी ?”

“वो नौजवान घोड़ी है, उसकी बर्दाश्त ज्यादा होगी ।”

“सर, आई बैग टू डिफर । हो भले ही वो कुछ भी लेकिन सिर्फ खाली बोतलों से ऐसे नतीजे निकालना ...इट इज टू फारफैच्ड ।”

“ऐसा ?”

“हो सकता है कुछ खाली बोतलें किचन के भीतर पड़ी हों, एक अरसे से पड़ी हों और वो आजकल में ही कूड़ेदान के करीब बाहर रखी गयी हों । अगर ऐसा है तो ये नहीं कहा जा सकता कि वो आठ बोतलें पिछले पांच दिनों में खाली हुईं ।”

“गुड ! वैरी गुड ! अब इस केस की मेरी पर्सनल ओब्जर्वेशन सुनो और उसके बारे में अपने कमैन्टस जारी करो ।”

“फरमाइये ।”

“मेरी जाती राय ये है कि ये, मिसेज नमिता पुणेकर, एक बद्कार औरत है जिसे अपने उम्रदराज खसम के मुकाबले में हर नौजवान मर्द पसन्द है और अपनी जिंसी भूख मिटाने के लिये वो हमेशा मौके तलाशती रहती है । ये वकील - जो कि कोई नावल लिखने की कोशिश में - नावल, माई फुट - आजकल पड़ोस में बसा बताया जाता है, उस औरत की फैन क्लब का चार्टर्ड मेम्बर है । मुझे शक है कि ऐसे ही उसके ताल्लुकात प्रफुल्ल सिंगला नाम के उस डाक्टर से हैं, जिसने कि श्यामली सावंत नाम की लड़की के कत्ल के केस में वकील को और इस औरत को बतौर अपनी एलीबाई पेश किया था । तब मुझे इस बात से कुछ लेना-देना नहीं था लेकिन अब हो सकता है कि ये तीनों - डाक्टर, वकील और ये औरत - उस रात, एलीबाई वाली रात, ऐशली क्राउन प्लाजा के पिकाडली रेस्टोरेंट में ड्रिंक डिनर में मशगूल थे, जबकि औरत का खाविन्द उनके साथ नहीं था । तब मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं था लेकिन अब मौजूदा केस की रू में है कि क्यों एक शादीशुदा औरत अपने हसबैंड की हाजिरी के बिना आधी रात से भी बाद तक हसबैंड के वकील और डाक्टर के साथ मौजमेले में मशगूल थी !”

“बड़े लोगों की बातें हैं ।”

“पुणेकर काहे का बड़ा लोग !”

“आपकी निगाह में नहीं होगा औरों की निगाह में तो रुतबे और रसूख वाला बराबर है । पन्द्रह नाइट क्लबों का मालिक है ।”

“मवाली है । गैंगस्टर है ।”

“आप कहते हैं - कहते क्या हैं समझते हैं - और तो कोई नहीं कहता ।”

“तुम जरूर उन लोगों के हिमायती हो ।”

“आप मजाक कर रहे हैं ।”

“हां ।”

“शुक्र है । अब जो खाका आपने खींचा है, उसका नतीजा भी तो बयान कीजिये ।”

“नतीजा यही है कि हसीन औरत के हाथों बेवकूफ बनना मर्द की नियति होती है और पुणेकर बन रहा था । उसे जान-बूझकर टुन्न करके रास्ते से हटाया जाता था और फिर ऐसा करने वालों की - बीवी और उसकी बैंग-बैंग क्लब के चार्टर्ड मेम्बर्स की - चान्दी थी ।

मिसेज रोटोलो के बयान से ऐसे दो मेम्बर तो उजागर हुए ही हैं जिनमें से एक की - एडवोकेट कपिल कोठारी की - शिनाख्त हुई है और दूसरे की होनी है, लेकिन न जाने क्यों मेरा दिल गवाही देता है कि वो दूसरा डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला के अलावा कोई हो ही नहीं सकता ।”

“पावटे साहब, गुस्ताखी माफ, मैं तो यही कहूंगा कि आपकी इमेजिनेशन ओवरटाइम कर रही है । जो कुछ आप कह रहे हैं अव्वल तो उसका कोई सबूत नहीं है, है भी तो इसका मौजूदा केस से क्या रिश्ता है ?”

“पूरा-पूरा रिश्ता है । सदानन्द पुणेकर का किरदार कैसा भी है, लेकिन है वो दौलतमन्द आदमी । अब सोचो, दौलत के लिये औरत क्या नहीं कर सकती और क्या नहीं करवा सकती !”

“बीवी की निगाह खाविन्द की दौलत पर है ?”

“और किस चीज पर होगी ? एक परीचेहरा हसीना को देने के लिये दौलत के सिवाय पुणेकर जैसे उम्रदराज शख्स के पास और क्या है ?”

“लेकिन सर, खाविन्द का जैसा लाइफ स्टाइल है, जैसी हरकतें हैं, उसकी रू में तो परलोक सिधारने के लिये वो वैसे ही तैयार केस है ।”

“बेसब्रों से सब्र कहां होता है !”

“लिहाजा जो काम कुदरत के किये नहीं हो रहा, उसको करने का बीड़ा इस औरत ने उठाया !”

“इन एसोसिएशन विद यार बादशाह ! एडवोकेट कपिल कोठारी !”

“जब आप कहते हैं कि औरत की फैन क्लब के कई मेम्बर हो सकते हैं - एक डाक्टर सिंगला की बाबत तो बोला भी आपने - तो एसोसियेट एडवोकेट कोठारी ही क्यों ?”

“क्योंकि वो करीब है । क्योंकि उसका करीब होना मुझे शक में डालता है ।”

“नावल लिख रहा है ।”

“मां का सिर लिख रहा है ।”

“हम उसे चैलेंज करें कि वो साबित करे कि वो नावल लिख रहा था तो ?”

“तो वो साबित कर देगा । अगर सारी खिचड़ी पहले से पकी हुई है तो उसने इसका इन्तजाम बराबर किया हुआ होगा ।”

“कैसे ?”

“फोर्ट में काला घोड़ा के इलाके में उसका आफिस-कम-रेजीडेंस है । वहां हर इतवार को पुरानी किताबों का बाजार लगता है । वहां से एक पुराना अनजाना ऐसा नावल लाया होगा जिसके लेखक का किसी ने नाम तक न सुना हो और ढूंढ़े से जिसकी दूसरी कापी न मिले, उसे पढ़ा होगा और फिर उसे टाइप करने बैठ गया होगा । सवाल होने पर टाइपशुदा शीटें पेश कर देगा ।”

"ओह !"

"आखिर वकील है । इतनी-सी बात नहीं सोच सकता !"

"वो गायब है । पुणेकर फैमिली की नयी, कीमती कार के साथ गायब है । ये शक की सुई खास अपनी तरफ घुमाने वाली हरकत न हुई ?"

"ऐन वक्त पर हिम्मत दगा दे गयी होगी ।"

"कौन-सी हिम्मत ? किस बात की हिम्मत ?"

"सोचो ।"

"आपका इशारा कत्ल की तरफ है ?"

"और किसकी तरफ है ?"

"बोट पर तो आप हार्ट अटैक और एक्सीडेंट की थ्योरी को सपोर्ट कर रहे थे ।"

"वो भी एक थ्योरी थी, ये भी एक थ्योरी है, कोई और थ्योरी भी वजूद में आ सकती है । खुद फैसला करो कि किसमें सम्भावनायें ज्यादा हैं ।"

"कत्ल में ?"

"हां ।"

"कातिल वकील ?"

"क्यों नहीं ?"

"फिर कैंड गुड्स की सप्लाई के गायब होने का क्या मतलब ? सेफ के खुली होने का क्या मतलब ?"

"ये मतलब कि वो किन्हीं लुटेरों का काम लगे ।"

"आपकी तमाम बातें कबूल । लेकिन वो कातिल कैसे हो सकता है ? वो तो पहले अपने काटेज में बैठा टाइप कर रहा था और फिर मैंगलौर के लिये रवाना हो गया । उसने कत्ल को क्योंकर अंजाम दिया ?"

"वो खुद बोलेगा न ! इसी वास्ते तो उसको थामने का है, उसका बयान लेने का है । हमें उसके लिये आल पॉइंट बुलेटिन जारी कराना होगा ।"

"सोच लीजिये । वकील है । बेगुनाह हुआ तो कहर बरपा देगा । इस बार आपकी सारी किरकिरयों की मदर किरकिरी करा देगा ।"

"खामखाह ! नगरकर, हमने उसे गिरफ्तार नहीं करना है, क्वेश्चनिंग के लिये अवेलेबल बनाना है । नहीं ?"

नगरकर ने अनमने भाव से सहमति में सिर हिलाया ।

***

अगले रोज सुबह नमिता सो कर उठी तो उसने खुद को बेहद निढाल पाया । पिछली रात वो ठीक से सो नहीं पायी थी, फिर भी जल्दी उठ गयी थी । उसके पपोटे भारी थे, लेकिन आंखों में नींद का कोई आसार नहीं था, हाथ-पांव टूट रहे थे और सिर दुख रहा था ।

उस मौसम में हमेशा वो गर्म पानी से नहाती थी और लेट नहाती थी लेकिन उस रोज वो बाथरूम में जाकर ठण्डे पानी के शावर के नीचे खड़ी हो गयी ।

तदोपरान्त वो किचन में पहुंची और अपने लिये खुद चाय बनाने लगी क्योंकि मेड की बनाई मार्निंग टी उसे कभी पसन्द नहीं आती थी ।

पानी उबलने के इन्तजार में वो खिड़की के करीब जा खड़ी हुई जिसमें से सुबह की धूप भीतर दाखिल हो रही थी । उसकी निगाह दूर समुद्र तक भटकी, लौटी तो कूड़ेदान के करीब अटकी ।

बोतलें !

विस्की और वोदका की खाली बोतलें !

उसकी चेतना को जोर का झटका लगा ।

तो ये वजह थी ताजा बने एसीपी मनोहर पावटे के पानी के बहाने किचन में आने की । इस वजह से वो पूछ रहा था कि वहां हालिया पार्टी कब हुई थी और कूड़ा उठाने वाला कब आता था ।

उन आठ खाली बोतलों से जरूर उस पुलिसिये ने ये नतीजा निकाला था कि वो मियां-बीवी दोनों बेवड़े थे ।

दोनों नहीं तो उनमें से एक तो यकीनन था ।

कौन ?

अगर वो विवेकपूर्ण फैसला करता तो यकीनन सदा को चुनता जो कि मर्द था, उम्रदराज था और उस सोशल ब्रैकेट में था जिसमें कि विलासिता पर जोर होता है ।

लेकिन दिल का मरीज था जिसके लिये बोतल को ज्यादा मुंह लगाना घातक साबित हो सकता था ।

इसलिये बीवी ।

हसीन बीवी, जिसके पड़ोस में उन दिनों मियां का मुंहलगा हैण्डसम वकील बसा हुआ था ।

जो कि उसी दिन उनकी नयी नकोर कार ले गया था जिस दिन कि मियां गायब हुआ था ।

चुराकर !

तौबा !

तभी बिजली की केतली में पानी उबल गया होने की सूचना देती ‘खट्ट’ की आवाज हुई ।

उसने अपने लिये चाय बनायी और उसके साथ डायनिंग रूम की एक कुर्सी पर आ बैठी ।

उस पड़ी एक ही सवाल उसके जेहन में बज रहा था ।

क्या पावटे उसके खिलाफ कुछ साबित कर सकता था ?

नहीं कर सकता था - उसकी अक्ल का जवाब था - सबूत कहां था ।

कोई सबूत था तो वो तो मिसेज रोटोलो की गवाही की सूरत में था और वो उसके हक में था । मिसेज रोटोलो ने सुबह पांच बजे सदा को फिशिंग के लिये निकलते देखा था । वो कोठारी के सारी रात टाइप करता रहा होने की गवाह थी ।

नहीं, उसके खिलाफ कुछ साबित नहीं किया जा सकता था ।

लेकिन जिस बात में उसे पहले कोई नुक्स नहीं दिखाई दिया था, वो उसे अब बिल्कुल गलत लग रही थी ।

कोठारी को सवेरे ही नहीं खिसक जाना चाहिये था । उसे कल का दिन जरूर रुकना चाहिये था ।

और उसे कार नहीं ले जानी चाहिये थी ।

ये दो काम उसने न किये होते तो उन पर शक की कोई दूर-दराज की वजह भी न होती ।

जो दूसरा खयाल सारी रात उसके जेहन में बजता रहा था, वो मनी बैल्ट की बाबत था ।

क्या उसके खिसकने के पीछे वो मनी बैल्ट थी ?

कितना माल हो सकता था उसमें ?

सदा ने एक बार कहा था कि अगर फिगारो आइलैंड वाले बंगले का सौदा हो जाता तो वो उसकी कैश पेमेंट खड़े पैर मनी बैल्ट में से ही कर सकता था ।

उसे नहीं मालूम था कि वो बंगला कितना बड़ा था, न ही उसकी कीमत की बाबत उसे कोई अन्दाजा था ।

फिर भी कितने का हो सकता था ?

चालीस ! पचास ! साठ !

रुपयों में तो इतना पैसा मनी बैल्ट में नहीं आ सकता था ।

सारे नोट हजार के होते तो भी साठ लाख का मतलब साठ गड्डियां होतीं । कैसे वो मनी बैल्ट में समा सकती थीं ?

तो ?

फारेन करेंसी !

डालर ! पाउन्ड ! यूरो !

या फिर प्रेशस स्टोंस ! हीरे जवाहरात !

एक करोड़ का माल भी अगर उस मनी बैल्ट में था तो क्या वो रकम - जमा कार - नीयत मैली करने के लिये काफी थी । उस रकम के लिये क्या कोठारी खुद उससे भी विमुख हो सकता था ?

कैसे हो सकता था ? वो तो उसे दिलोजान से चाहता था ।

क्या वाकेई ?

हां । हां । हां । उसका दिल गवाही देता था कि कपिल कोठारी की चाहत में कोई खोट नहीं थी । आखिरकार सब कुछ ठीक हो जाने वाला था । खुद वो सब कुछ ठीक कर लेने वाला था ।

क्या वाकेई ?

अगर मनी बैल्ट में करोड़ रुपया था तो क्या वो शुरू से ही था या हाल में मुहैया किया गया था ?

उस सवाल का जवाब उसे तारदेव के उस बैंक से मिल सकता था जिसमें सदा का वो निजी अकाउंट था जिसे वो अपना 'एक्टिव एकाउंट' बताया करता था ।

ठण्डी होकर बदमजा हो चुकी चाय को उसने तिलांजलि दी और बैंक में फोन लगाया ।

जवाब मिला कि धन की निकासी से सम्बन्धित जानकारी किसी को नहीं दी जा सकती थी ।

"लेकिन मैं कोई नहीं हूं" - उसने तीखा प्रतिवाद किया - "अकाउंट होल्डर की बीवी हूं । मिसेज सदानन्द पुणेकर हूं ।"

वांछित उत्तर उसे तब भी न मिला, लेकिन ये राय उसे बराबर मिली कि वो आकर ब्रांच मैनेजर से मिले ।

उसने फोन पटक दिया ।

***

सर्कल के एसीपी का आफिस गोरई थाने के ही परिसर में था ।

थाने के एसएचओ इन्स्पेक्टर नगरकर ने आफिस में कदम रखा तो एसीपी मनोहर पावटे को वहां मौजूद पाया ।

दोनों में अभिवादनों का आदान-प्रदान हुआ ।

"आप अखबार नहीं पढते ?" - नगरकर बोला ।

"पड़ता हूं भई ।" - पावटे ने जवाब दिया - "क्यों पूछ रहे हो ?"

"कल पढ़ा था ?"

"नहीं, कल तो नहीं पढ़ा था । कल दरअसल घर में अखबार आया ही नहीं था, और कहीं अखबार पढ़ने का इत्तफाक नहीं हुआ था ।"

"मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था । कल और आज के अखबार मैंने आज अपने आफिस में इकट्ठे पड़े देखे ।"

"अखबार का जिक्र किसलिये ?"

"कल के अखबार का । उसमें एक खास खबर छपी है ।"

“किस बाबत ?”

“जिस डाक्टर का कल आप उस औरत के - मिसेज नमिता पुणेकर के, जिसका खाविन्द गुम है - आगे जिक्र कर रहे थे...”

“डाक्टर सिंगला ! प्रफुल्ल सिंगला !”

“वही, अखबार के मुताबिक वो कल एक रोड एक्सीडेंट में मारा गया है ।”

“अच्छा !”

“ये देखिये कल के अखबार की सुर्खी । माहिम क्रीक के पुल पर एक्सीडेंट हुआ । कार रेलिंग तोड़ती समुद्र में जा गिरी ।”

पावटे ने गौर से पिछले रोज के अखबार की खबर पढ़ी ।

“कमाल है !” - फिर बोला - “इसने भी अभी मरना था । मैं तो आज इससे मिलने जाने की सोच रहा था ।”

नगरकर खामोश रहा ।

“लेकिन लाश तो बरामद हुई नहीं !”

“हो जायेगी ।” - नगरकर लापरवाही से बोला - “न बरामद होने की वजह छपी है न ! इम्पैक्ट से कार का दरवाजा खुल गया और लाश कार से बाहर जा गिरी और समुद्र में बह गयी ।”

“बरामद होगी ?”

“हो सकती है । लाश फूल जाये तो किनारे आ लगती है । समुद्र में दूर बह गयी तो गयी ।”

“बुरी मौत मरा बेचारा ।”

“मेरा हवलदार कहता है कि ये खबर शनिवार के मिड डे में भी छपी थी ।”

“मैं मिड डे नहीं पढ़ता ।”

“मैं भी नहीं पढ़ता । मैं कुछ और कहना चाहता था ।”

“क्या ?”

“उस औरत की बातों से लगता था कि उस को डाक्टर के अंजाम की खबर नहीं थी ।”

“क्या बड़ी बात है ? उसने खुद तो कहा था कि उनके यहां अखबार नहीं आता था ।”

“डाक्टर उसका वाकिफ था, फैमिली फ्रेंड था, घर में आना-जाना था; ऐसे शख्स के किसी बुरे अंजाम की खबर अखबार के बिना भी लगती है ।”

“भई, इत्तफाक की बात है, नहीं लगी । या लाश की गैरबरामदी की वजह से उसे यकीन ही नहीं आया होगा कि डाक्टर दूसरी दुनिया में पहुंच गया था । तुम डाक्टर का खास जिक्र क्यों कर रहे हो ?”

“आपको ये जताने के लिये कि अब डाक्टर से आपकी मुलाकात मुमकिन नहीं हो पायेगी ।”

पावटे ने एक क्षण सोचा और फिर बोला - “शायद हो पाये ।”

“कैसे ?”

“शायद वो न मरा हो ! शायद एक्सीडेंट के वक्त उसकी गाड़ी कोई और चला रहा हो !”

“तो फिर वो कहां है ?”

“होगा कहीं ।”

“अखबार में उसकी बाबत खबर छपी है और वो...”

“अरे मेरे भई, जब मैंने अखबार न देखा, तुमने अखबार न देखा, मिसेज पुणेकर ने अखबार न देखा तो क्या ये नहीं हो सकता कि डाक्टर ने भी अखबार न देखा हो ।”

“हो तो सकता है ।”

“उसके क्लीनिक से पता करो । दादर वैस्ट में है । वो और कहीं जाये न जाये, वहां सुबह-शाम की उसकी हाजिरी जरूरी है । वहां एक नर्स भी है जो रिसैप्शनिस्ट की ड्यूटी को भी अंजाम देती है । डाक्टर क्लीनिक नहीं अटैंड कर रहा है तो वजह उसे जरूर मालूम होगी । मालूम करो ।”

“ठीक है ।”

“वैसे मुझे नहीं लगता कि ये कोई अहम बात है, लेकिन तुमने जिक्र करके इसे अहम बना दिया है इसलिये लगाओ किसी को डाक्टर की टोह में ।”

“अभी ।”

“एक काम और ।”

“बोलिये ।”

“कल जब हम मिसेज रोटोलो से मिले थे तो उसने डाक्टर देशपाण्डे का जिक्र किया था, जो कि बकौल उसके पुणेकर का कार्डियालोजिस्ट था और जिसकी मिसेज रोटोलो भी पेशेंट थी । किसी को मिसेज रोटोलो के पास भेजकर पाता लगाओ कि ये डाक्टर देशपाण्डे कहां पाया जाता है !”

“ठीक ।”

***

दस बजे स्पीड पोस्ट से एक बन्द लिफाफा पहुंचा जिस पर मैंगलोर जीपीओ का पोस्ट मार्क था ।

नमिता ने ऊपर अपने बैडरूम में जाकर बड़ी व्यग्रता से वो चिट्ठी खोली तो पाया कि पिछली बार की तरह वो भी टाइपशुदा थी । तब भी न वो किसी से सम्बोधित थी और न

आखिर में भेजने वाले का नाम था, लेकिन वो यकीनी तौर से जानती थी कि चिट्ठी लिखने वाला कपिल कोठारी था ।

लिखा था :

पिछली चिट्ठी में मैं मनी बैल्ट के बारे में लिखना भूल गया था । तुम उस बाबत सस्पेंस में होगी इसलिये फौरन ये चिट्ठी लिखी । मनी बैल्ट मैने अपने कब्जे में कर ली थी और उसकी सुरक्षा की संतुष्टि करके ही मैं मैगंलोर के लिये रवाना हुआ था ।

जैसा कि मैने पहले ही लिखा था सब कुछ बिना किसी पंगे के बिना किसी लोचे के ऐन स्कीम के मुताबिक हुआ था । सिवाय इसके कि बोट पर वह एकाएक होश में आ गया था, बिजली की तरह तमाम माजरा समझ गया बह और मेरे पर हमला कर बैठा था जिसमें उसने मेरी नाक तोड़ने में कसर नहीं छोड़ी थी । वो बस इतना ही कर सका था, आखिरकार मैने उसे काबू में कर लिया था ।

मैं जानता हूं ये चिट्ठी मिलने तक पुलिस हरकत में आ चुकी होगी उनका फेरा - या फेरे - काटेज में लग चुके होंगे फिर भी मैने ये चिट्ठी लिखने का खतरा मोल लिया है ताकि मेरे एक-दो दिन में लौट आने तक तुम मनी बैल्ट की बाबत सोच-सोचकर ही हलकान न होती रहो ।

मुझे फौरन चिट्ठी लिखना ताकि मुझे खबर लगे कि पीछे क्या हो रहा है । चिट्ठी फिर याद दिला रहा हूं माफर्त पोस्ट मास्टर जीपीओ मैंगलोर लिखना और स्पीड पोस्ट से भेजना । फौरन खबर करना पीछे क्या हो रहा है । सब कुछ लिखना । पिछली बार की तरह इस चिट्ठी को भी पढकर नष्ट कर देना ।

चिट्ठी नष्ट करते वक्त पहला खयाल उसके जेहन में यही आया कि अगर वो पुलिस के हाथ में पड़ जाती तो क्या होता !

बुरा होता ।

कोठारी को सोचना चाहिये था कि अगर फोन करना गलत था तो चिट्ठी लिखना भी गलत था ।

लेकिन उस चिट्ठी ने एक बहुत बड़ा काम किया । उसके जेहन में जो शक का कीड़ा कुलबुला रहा था कि कोठारी उसे धोखा देकर खिसक गया था, वो गायब हो गया । कोठारी ने उसकी भारी फिक्र की थी, तभी चिट्ठी लिखने का रिस्क लिया था ।

लेकिन आदतन फिर उसके जेहन में वहमी खयाल आया ।

गया क्यों ? जाना क्यों जरूरी था ?

उसने एक-दो दिन में लौट आने को लिखा था, मालूम पड़ जायेगा ।

ठीक ।

वो अपने और कोठारी के भय और आंशका से मुक्त मिलन की कल्पना करती मास्टर बैडरूम में पहुंची ।

जहां एक दीवार के साथ लगी सदा की राइटिंग टेबल थी ।

राइटिंग टेबल पर से उसने एक कागज और कलम काबू में किया और फिर लिफाफे के लिये दराजों को टटोला ।

एक दराज में से पीले रंग का वाटरप्रूफ पांच इंच गुणा नौ इंच का लम्बा लिफाफा बरामद हुआ ।

गुड !

उसने कागज-कलम सम्भाला और चिट्ठी लिखनी शुरू की ।

उसने लिखा :

माई डियरेस्ट कपिल,

तुम्हारी चिट्ठी मिलना मुझे तुम्हारे मिलने जितना सुखद और रोमांचक लगा । डार्लिंग आई लव यू । आई लव यू । आई लव यू ।

मैं सच में मनी बैल्ट की बाबत सस्पेंस में थी, मैं कार की बाबत भी सस्पेंस में थी लेकिन तुम्हारी बाबत मुझे कोई सस्पेंस नहीं क्योंकि तुम पर मुझे अपने से ज्यादा भरोसा है ।

अब पीछे की रिपोर्ट ।

पुलिस ने मोटरबोट तलाश कर ली है और वो लोग उसे किनारे पर ले आये हैं । तुम्हें जानकर हैरानी होगी कि गुमशुदगी की तफ्तीश वो ही पुलिसिया कर रहा है जो कि हमारे पास डाक्टर सिंगला की एलीबाई चैक करने आया था और जो अब - करेला और नीम चढा - एसीपी बन गया है । वो मेरे बयान पर और तुम्हारे मैंगलोर गमन पर साफ शक करता जान पड़ता है लेकिन फ्रिक की कोई बात नहीं है । वो लाख जोर लगा ले, अपने शक को यकीन में तब्दील नहीं कर सकता । मिसेज रोटोलो ने तुम्हें परफेक्ट एलीबाई दी है, खुद मैने भी इस बात की तसदीक की है कि किसी काम से सुबह जब मैं मिसेज रोटोलो के पास गयी थी, तब तुम अपने काटेज में थे और अपनी टाइपिंग में बिजी थे ।

मैने पुलिस वालों को सदा के हार्ट केस होने की बाबत बताया था और उन्हें ये आइडिया सरकाया था कि शायद बोट पर सदा को फिर हार्ट अटैक हो गया और वो उससे होश खोकर या मरकर समुद्र में जा गिरा था । मुझे एसीपी मनोहर पावटे को वो बात हजम होती लगी थी ।

कार की बात भी फिट हो गयी है, मैने उन लोगों को बोल दिया था कि कार तुम सदा की जिद पर लेकर गये थे ।

प्लीज, जल्दी आना । इधर तुम्हारे बिना सब सूना है । मैं तुम्हारे से मिलने को तड़प रही हूं ।

तुम्हारी अपनी

नमिता

उसने चिट्ठी को दोबारा पढ़ा । उसे लिफाफे में बन्द किया और उस पर कोठारी के निर्देश के अनुसार नाम-पता लिखा । फिर तारदेव के रास्ते में कहीं से स्पीड पोस्ट करने के लिये उसने उसे अपने हैंड बैग में रख लिया ।

एक बात उसे खटक रही थी ।

कोठारी ने मनी बैल्ट का जिक्र किया था, लेकिन ये नहीं लिखा था कि भीतर कितना माल था । उसने देखना जरूरी नहीं समझा था या उस बाबत लिखना जरूरी नहीं समझा था ?

***

बैंक मैनेजर का नाम रतन मेहता था । वो बाईफोकल्स लगाने वाला, अधगंजा, दुबला-पतला आदमी था जो शक्ल से ही बैंकर लगता था ।

प्रोफेशनल कर्टसी के साथ उसने नमिता को रिसीव किया ।

"आप मिस्टर सदानन्द पुणेकर को जानते हैं ?" - नमिता यूं बोली जैसे उससे पूछ न रही हो, उसे बता रही हो ।

मैनेजर ने सहमति में सिर हिलाया ।

"मैं मिसेज पुणेकर हूं । मिस्टर पुणेकर का यहां सेविंग एकाउंट है । मैं उसका बैलेंस जानना चाहती हूं ।"

"जॉइंट अकाउंट है ?" - मैनेजर ने पूछा ।

"नहीं । सिर्फ उनके नाम है । मैं नामिनी हूं ।"

"आई एम सारी मैडम, बैलेंस तो नहीं बताया जा सकता ।"

"मैं उनकी बीवी हूं ।"

"किसी को नहीं बताया जा सकता ।"

"भले ही कोई इमरजेंसी आ गयी हो ! कोई हादसा हो गया हो !"

"कैसी इमरजेंसी ? कैसा हादसा ?"

"जो कल सुबह फिशिंग के लिये निकले मिस्टर पुणेकर के साथ हुआ । वो गायब हैं । पुलिस उनको तलाश करने की कोशिश कर रही है, न मिले तो ये अखबार की खबर बनेगी । उसी सिलसिले में ये जानना जरूरी है कि क्या उनकी गुमशुदगी के वक्त उनके अधिकार में कोई बहुत बड़ी रकम थी ?"

"आई सी ।"

"नो, यू डोंट सी एनीथिंग । आपके पल्ले नहीं पड़ रहा है कि मुझे ये अन्देशा सता रहा है कि मेरे हसबैंड कहीं किन्हीं लुटेरों के शिकार तो नहीं बन गये !"

"आई सी ।"

"अगेन !"

"एक मिनट । एक मिनट । प्लीज ।"

नमिता खामोश हो गयी ।

मैनेजर मेज पर पड़े कम्प्यूटर की तरफ आकर्षित हुआ । कुछ देर वो की-बोर्ड खटखटाता रहा, फिर बोला - "आप हमारे मेजर अकाउंट होल्डर की धर्मपत्नी हैं, इसलिये नियम तोड़कर मैं आपको ये जानकारी दे रहा हूं ।"

"थैंक्यू ।"

"एक हालिया नकद निकासी है उनके खाते से जिसकी वजह से बैलेंस काफी डाउन आ गया है ।"

कितना डाउन आ गया होगा ? - नमिता ने मन - ही - मन सोचा - घड़े में से बून्द निकाली होगी । दो बून्द निकाली होंगी ।

"कितने निकाले ?" - प्रत्यक्षत: उसने पूछा ।

"चालीस लाख रुपये ।"

नमिता जैसे आसमान से गिरी ।

"क्या !" - उसके मुंह से निकला ।

"जी हां ।"

"ब.. .बाकी.. .बाकी क्या है ?"

"एक हजार बारह रुपये साठ पैसे ।"

"थैंक्यू ।" - उसे खुद अपनी आवाज बहुत दूर से आती लगी - "थैंक्यू वैरी मच ।"

मशीन की तरह - जैसे किसी सम्मोहन की जकड़ में हो - चलती वो बाहर सड़क पर पहुंची ।

क्या मतलब हुआ इतनी बड़ी रकम निकालने का ?

शायद दूसरे बैंक में जमा करा दी हो !

ऐसा करना था तो नकद निकासी का क्या मतलब ? रकम को हाथ लगाये बिना दूसरे बैंक में ट्रांसफर किया जा सकता था ।

दूसरा बैंक ओमेगा के आफिस के करीब ग्रांट रोड पर था ।

अपने उस बैंक के अकाउंट को सदा अपना एक्टिव अकाउंट नहीं बताया करता था । बकौल सदा वो आल्टरनेट अकाउंट था जो एफडी की वजह से जरूरी था और जिस के इस्तेमाल की नौबत शायद ही कभी आती थी । इसी वजह से नमिता ने जब तारदेव वाले उसके बैंक अकाउंट की बाबत सोचा था तब उस अकाउंट का उसे खयाल तक नहीं आया था ।

वो ब्रांच मैनेजर के पास पहुंची ।

बैलेंस बताने की बात पर वहां भी पहले बैंक जैसी हुज्जत हुई लेकिन आखिरकार वो भी मान गया ।

पांच दिन पहले सदा ने वहां से इकत्तीस लाख रुपये निकाले थे ।

इकत्तीस लाख !

आल्टरनेट अकाउंट में इतना पैसा ?

बैलेंस ?

एक हजार चार सौ सत्तासी रुपये चालीस पैसे ।

सन आफ बिच !

कोई वजह नहीं थी लेकिन उस घड़ी उसे अपनी पांच करोड़ की एफडी भी डावांडोल लगने लगी ।

नहीं, नहीं । वो उसका वहम था । सदा उसे छू भी नहीं सकता था । वो उसके हक में वाटरप्रूफ, एयरटाइट, स्टीलजैकेटिड एफडी थी ।

वो एफडी सैक्शन में पहुंची और उसके इंचार्ज एकाउंटेंट के रूबरू हुई ।

“मेरी यहां एक एफडी है ।” - वो बोली - “मैं आपके ब्याज के बारे में पता करना चाहती हूं कि वो रैगुलर और करैक्ट लग रहा है या नहीं ।”

“कितने की एफडी है ?” - एकाउंटेंट ने पूछा ।

“पांच करोड़ की ।”

एकाउंटेंट ने नये सम्मान के साथ नमिता की तरफ देखा, फिर अपने कम्प्युटर के हवाले हुआ ।

कई क्षण खामोशी रही ।

“ये एफडी तो” - फिर वो बोला - “क्लोज हो चुकी है ।”

नमिता जैसे कुर्सी पर बैठे-बैठे मर गयी ।

“आपकी तबीयत ठीक है, मैडम ?” - एकाउंटेंट सशंक स्वर में बोला ।

“क.. कब क्लोज हुई ?”

“पिछले हफ्ते ।”

“किसने कराई ? क्यों कराई ?”

“ये सब बताने का नियम नहीं है ।”

“भाड़ में गया तुम्हारा नियम ।” - नमिता इतनी जोर से चिल्लाई कि आसपास के सारे क्लर्क उसे देखने लगे - “ये कोई आम एफडी नहीं थी । ये एफडी ट्रस्टीशिप के तहत थी जो कि...”

“तो जा के ट्रस्टी से मिलिये ।” - एकाउंटेंट विनयशील स्वर में बोला - “मैं मामूली एकाउंटेंट यूं मेरे अधिकार मामूली हैं, मैं जो कुछ आपको बता सकता था, बता चुका हूं ।”

ट्रस्टी का नाम उसे मालूम था कि वानखेड़े था ।

“मिस्टर वानखेड़े” - वो बोली - “इस वक्त आफिस में हैं ?”

एकाउंटेंट ने खेद के भाव से इंकार में सिर हिलाया ।

“क्यों ?” - वो फिर भड़की - “अभी तो साढ़े ग्यारह ही बजे हैं ।”

"मैडम, उनकी डैथ हो चुकी है ।"

"क्या !"

"चार महीने पहले । आफिस में ही हार्ट फेल हो गया ।"

"ओह ! तो उनकी जगह चीफ मैनेजर कौन हैं अब ?"

"पटेल साहब ।"

"इसी ब्रांच के हैं या मिस्टर वानखेड़े की जगह लेने बाहर से आये हैं ?"

"बाहर से आये हैं । सायन ब्रांच से ।"

"कहां बैठते हैं ?"

एकाउंटेंट ने एक चपरासी को बुलाकर नमिता को उसके हवाले किया ।

चपरासी उसे एक सजे-सजाये आफिस में चीफ मैनेजर की पीए के पास पहुंचा गया ।

"मेरे को मिस्टर पटेल से मिलना है ।" - वो उतावले स्वर में बोली ।

"आपकी अपॉइंटमेंट है ?" - पीए युवती ने पूछा ।

"नहीं है, लेकिन..."

"चीफ मैनेजर साहब विदाउट अपॉइंटमेंट कस्टमर्स से दोपहर बाद तीन से चार बजे तक मिलते हैं इसलिये आप..."

नमिता के जबड़े भिंच गये । वो दृढ़ कदमों से उस बन्द दरवाजे की तरफ बड़ी जिसकी ग्लास विंडो पर 'एन पटेल, चीफ मैनेजर' लिखा था ।

"मैडम ! मैडम !" - युवती उछलकर अपनी सीट पर से उठी और झपटकर उसके और दरवाजे के बीच पहुंची ।

"गैट आउट आफ माई वे, डैम यू ।" - उसको परे धकेलती नमिता आगे बढ़ी और भीतरी आफिस में दाखिल हुई ।

चीफ मैनेजर साहब भीतर बैठा पीजा खा रहा था ।

"यस ?" - पीजा से भरे मुंह से वो बोला ।

"आई हैव टू सी यू । सी यू नाओ आन एन अर्जेन्ट बिजनेस । एण्ड डोंट आस्क मी अबाउट अपॉइंटमेंट । यू नो आई डोंट हैव वन ।"

चीफ मैनेजर पटेल ने आंख भरकर उसकी अद्वितीय सुन्दरता का रसस्वादन किया ।

"सर, सर" - पीछे से पीए बोली - "ये.. .ये जबरदस्ती..."

"इट्स आल राइट, मिल पोपली ।" - पटेल बोला - "प्लीज शट दि डोर ।"

पीए दरवाजे पर से गायब हो गयी ।

"आइये ।" - पटेल बोला - "विराजिये ।"

"थैंक्यू ।"

भुनभुनाती हुई वो एक कुर्सी पर ढेर हुई ।

पटेल ने पीजा की प्लेट उसकी तरफ बढ़ा दी ।

"लीजिये ।" - वो बोला ।

"नो, थैंक्स, मैं..."

"बहुत बढ़िया है । मेरी बीवी खुद बनाती है । बस दो ही काम बढ़िया करती है । एक पीजा बनाती है और दूसरे..."

"और क्या ?" - यूं ही नमिता के मुंह से निकल गया ।

"मुझे उल्लू बनाती है । हा हा हा ।"

चीफ मैनेजर पटेल आदतन खुशमिजाज आदमी जान पड़ता था ।

"फरमाइये" - फिर बोला - "क्या खिदमत कर सकता हूं मैं आपकी ?"

जवाब में नमिता ने उसे पांच करोड़ की अनब्रेकेबल एफडी और उसकी स्पेशल ट्रस्टशिप की बाबत बताया ।

"बैंक में ट्रस्टीशिप इनडिविजुअल से नहीं, उसकी पोस्ट से चलती है । इसलिये अपनी चीफ मैनेजर की कपैसिटी में वानखेड़े की जगह - भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे - ट्रस्टी होता तो मैं होता ।"

"होता क्या मतलब ? अगर आप चीफ मैनेजर हैं..."

"बराबर हूं ।"

"तो आप ट्रस्टी हैं ।"

"लेकिन जब एफडी ही खत्म है - आपने खुद बोला, डीलिंग एकाउंटेंट से कनफर्म किया - तो मैं ट्रस्टी किस बात का हूं ?"

"एफडी क्यों खत्म है ? क्योंकर खत्म है ? यही तो मैं जानना चाहती हूं । जो काम नहीं हो सकता था, वो कैसे हो गया ?"

"मैं... देखता हूं ।"

वो अपने कम्प्यूटर के हवाले हुआ ।

"उतनी देर आप पीजा खाइये ।" - वो बोला - "एक स्लाइस तो ले ही लीजिये ।"

वैसी कोई कोशिश उसने न की । उस वक्त उसका जी चाह रहा था कि वो उस मुंहजले का कलेजा भून के खाये जो कहता था कि एफडी खत्म थी ।

कितनी ही देर वो कम्प्यूटर से उलझा रहा ।

आखिकार वो फिर नमिता की तरफ आकर्षित हुआ ।

"तो आप कहती हैं कि" - वो बोला - "आप मिस्टर सदानन्द पुणेकर की पत्नी हैं ?"

"कहती नहीं हूं, हूं ।" - नमिता भड़की ।

"हाल में शादी की ?"

"नहीं, हाल में नहीं । तीन साल होने को आ रहे हैं ।"

"उतना ही अरसा पहले वो इतनी बड़ी रकम की एफडी वजूद में आयी थी ।"

"हां । वो अपने हसबैंड की तरफ से मुझे मिला शादी का तोहफा था ।"

"कमाल है !"

"क्या कमाल है ?"

जवाब देने की जगह वो प्लेट में से उठाकर पीजा खाने लगा ।

"आप कहां रहती हैं ?" - फिर बोला ।

नमिता ने बताया ।

"आप ये कहना चाहती हैं कि आप मिस्टर पुणेकर के साथ रहती हैं ।"

"और कहां रहूंगी ?"

"मुम्बई से बाहर कहीं । किसी कदरन छोटी जगह पर..."

"खामखाह !"

"बहरहाल आपका क्लेम है कि आप मिस्टर पुणेकर की पत्नी हैं ?"

"क्लेम ! वाट नानसेंस !"

"इस ब्रांच में कोई आपको जानता है ?"

"वानखेड़े साहब जानते थे ।"

"वो तो बेचारे गये दूसरी दुनिया में । उनके बाद से और भी काफी सारा स्टाफ ट्रांसफर हो गया है, इसलिये प्राब्लम है ।"

"क्या प्राब्लम है ?"

"मैं बताता हूं ।"

उसने फोन उठाया, उस पर दो डिजिट का एक नम्बर डायल किया और बोला - "मोदी, कम हेयर इमीजियेटली ।"

उसने और कोई बात किये बिना फोन रख दिया ।

"एक मिनट ।" - वो बोला ।

नमिता ने जबरन सहमति में सिर हिलाया ।

एक मिनट बाद एक सूटधारी व्यक्ति वहां पहुंचा । पटेल के इशारे पर वो नमिता से परे एक विजिटर्स चेयर पर बैठ गया । दोनों गम्भीरता से गुजराती में बतियाने लगे जिसका कोई शब्द नमिता की समझ में आया तो मतलब समझ में न आया ।

आखिरकार मोदी कुर्सी पर से उठा और चुपचाप वहां से बाहर निकल गया ।

नमिता ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला तो पटेल ने पहले ही उसे 'एक मिनट, बस एक मिनट' कहकर चुप करा दिया ।

कमीने ! - बेचैनी से पहलू बदलते उसने सोचा - खामखाह सस्पेंस फैला रहे थे ।

उलटे पांव एक फाइल के साथ मोदी वापिस लौटा । इस बार नमिता से परे बैठने की जगह वो उसके बाजू की विजिटर्स चेयर पर बैठा ।

"मैडम" - फिर वो बोला - "जरा मेरी तरफ तवज्जो दीजिये ।"

"वजह ?"

"मैं आपसे दो बातें कहना चाहता हूं ।"

"क्यों कहना चाहते हैं ? पहले पता तो लगे कि आप हैं कौन ?"

"मिस्टर मोदी" - पटेल बोला - "एफडी सैक्शन में मैनेजर हैं । जिस एफडी का आप जिक्र कर रही हैं, उसकी बाबत ये बेहतर जानते हैं ।"

"ओके । कहिये, मिस्टर मोदी, कौन-सी दो बातें कहना चाहते हैं ?"

"एक तो कहना नहीं, पूछना चाहता हूं । क्या मिस्टर सदानन्द पुणेकर की दो बीवियां हैं ?"

"क्या कह रहे हैं आप ?"

"एक नमिता पुणेकर और दूसरी कोई और ?"

"और कौन ?"

"आप ।"

"वाट नानसेंस । अरे, मैं नमिता पुणेकर हूं ।"

"दूसरी बात जो मैं कहना चाहता था वो ये है कि इमपर्सनेशन इज ए क्राइम ।"

"क्या ?"

"किसी दूसरे की आइडेंटिटी अख्तियार करना अपराध है । यूं आइडेंटिटी अख्तियार करके उससे कोई मैटीरियल बैनीफिट हासिल करने की कोशिश करना और भी बड़ा अपराध है ।"

"क. ..क्या. ..क्या बक रहे हैं आप ? मैं यहां अपनी एफडी की बाबत दरयाफ्त करने आयी हूं और आप कोई और वाहीतवाही बके जा रहे हैं ।"

"आपको उसी का जवाब दिया जा रहा है ।"

"क्या ?"

"किसी शख्स की दो बीवियां हो सकती हैं लेकिन दोनों का नाम नमिता हो, इतना बड़ा इत्तफाक नहीं हो सकता ।"

"अरे, क्या कह रहे हैं आप ?"

"मिस्टर सदानन्द पुणेकर की पत्नी नमिता पुणेकर मर चुकी है ।"

"क्या !"

"इसी वजह से एफडी भंग की गयी है और बमय व्याज रकम मिस्टर पुणेकर को सौंप दी गयी है ।"

नमिता हक्की-बक्की सी उसका मुंह देखने लगी ।

"क... कौन, कौन कहता है ?"

"डाकूमेंट्स कहते हैं । मिस्टर पुणेकर का एफीडेविट कहता है । मिसेज नमिता पुणेकर का डैथ सर्टिफिकेट कहता है ।"

"डैथ... डैथ सर्टिफिकेट ?"

"ये देखिये" - मोदी ने फाइल खोलकर उसके सामने रखी - "बाकायदा श्मशान घाट से जारी हुआ है । और डाकूमेंट्स भी देखिये ।"

"ये सर्टिफिकेट जाली है ।" - वो चिल्लाई - "ये एफीडेविट झूठा है । ये धोखा है । फ्रॉड है ।"

"धीरे बोलिये, मैडम" - पटेल चेतावनीभरे स्वर में बोला - "वर्ना बैंक यहीं इकट्ठा हो जायेगा ।"

"किसके साथ धोखा है ?" - मोदी बोला - "किसके साथ फ्रॉड है ?"

"मेरे साथ धोखा है । मेरे साथ फ्रॉड है ।"

"आप कौन हैं ?"

"हे भगवान ! अरे, मैं नमिता पुणेकर हूं और सदानन्द पुणेकर की इकलौती ब्याहता बीवी हूं ।"

"साबित करके दिखाइये कि हैं ।"

"मैं क्यों साबित करके दिखाऊं ? आप साबित करके दिखाइये कि नहीं हूं ।"

"हमें कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है । हमारी तरफ से ये केस क्लोज्ड है ।"

"आप ऐसे पेश आयेंगे तो मैं कहूंगी कि आप लोग भी फ्रॉड में शामिल हैं ।"

"मैडम, दिस इज स्लांडर । यू कैन बी स्यूड फार दैट ।"

"यू टू कैन बी स्यूड फार कंट्रीब्यूटिंग टू ए फ्रॉड ।"

"हमने कोई फ्रॉड नहीं किया । हमारे डाकूमेंट्स चौकस हैं ।"

"हमें यकीन नहीं" - पटेल बोला - "कि कोई फ्रॉड हुआ है, फिर भी आप ऐसा समझती हैं तो वो मिस्टर पुणेकर ने किया है । अगर वो आपके पति हैं तो आप उन्हें यहां ले के आइये, ताकि उनकी जुबानी इस बात की तसदीक हो सके कि आप उनकी बीवी हैं, न सिर्फ बीवी हैं, बल्कि वो बीवी हैं जिसका डैथ सर्टिफिकेट उन्होंने यहां जमा कराया है । आप बुलाइये उन्हें यहां ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो सके ।"

"ऐसा नहीं हो सकता ।"

"क्यों नहीं हो सकता ?"

"क्योंकि वो गायब हैं ।"

"आपकी सहूलियत के लिये । ताकि वो आकर आपकी पोल न खोल सकें कि आप उनकी बीवी नहीं हैं ।"

"ऐसी बात नहीं है ।" - नमिता रुआंसे स्वर में बोली - "ये हकीकत है । कल सुबह वो अपनी बोट पर समुद्र में फिशिंग के लिये निकले वे तो अपने लौटने के टाइम पर लौटकर नहीं आये थे । उनकी मोटरबोट उनके बिना समुद्र में लंगर के सहारे डोलती खड़ी पायी गयी थी । पुलिस केस की तफ्तीश कर रही है । आप चाहें तो गोरई पुलिस स्टेशन से इस बाबत

दरयाफ्त कर लें । एसएचओ का नाम विनोद नगरकर है, सर्कल आफिसर एसीपी मनोहर पावटे हैं, आप दोनों में से किसी को भी फोन लगा लें ।"

उसके रुआंसे स्वर का दोनों बैंक अधिकारियों पर प्रत्याशित प्रभाव पड़ा । दोनों के चेहरे पर हमदर्दी के भाव आये ।

"एसीपी मनोहर पावटे न सिर्फ मिस्टर पुणेकर की गुमशुदगी की तसदीक करेगा" - उसका स्वर और आर्द्र हो उठा - "बल्कि ये भी तसदीक करेगा कि मैं.. .मैं गुमशुदा शख्स की बीवी यूं नमिता पुणेकर हूं । आप फोन लगाइये ।"

किसी ने वो कोशिश न की ।

"तीन साल की व्याहता बीवी को कहीं यूं एक फर्जी डैथ सर्टिफिकेट के दम पर खारिज किया जा सकता है ? यहां ग्रांट रोड पर ही मिस्टर पुणेकर का आफिस है, आप आफिस से किसी को भी बुलाइये और मेरे को उसके रूबरू कराइये, फिर देखिये क्या जवाब मिलता है !"

दोनों अधिकारियों की निगाहें मिलीं ।

"आपको एफडी को चैक करना सूझा क्योंकर ?" - फिर मोदी बोला ।

"क्योंकि पुलिस को अन्देशा है कि मिस्टर पुणेकर को लूटने की कोशिश की गयी थी और उसी कोशिश में - या शायद कोशिश को छुपाने के लिये - उन्हें उन्हें.. .मार डाला गया या और लाश समुद्र में बहा दी गयी थी । मिस्टर पुणेकर बॉडी पर मनी बैल्ट पहनते हैं और उसमें काफी रकम रखते हैं । वो रकम काफी से भी ज्यादा तो नहीं थी, ये जानने के लिये मैं उनके बैंक अकाउंट चैक करने निकली थी । मुझे अभी मालूम हुआ कि हाल ही में उन्होंने अपने तारदेव वाले बैंक के अकाउंट से चालीस लाख रुपये निकाले थे और ऐसे ही यहां के सेविंग अकाउंट से इकत्तीस लाख रुपये निकाले थे । दोनों खातों में बस इतना ही पैसा था जो कि उन्होंने चन्द रुपयों को छोड़कर पूरे का पूरा निकाल लिया था । इतनी बड़ी रकम उनके पास होना अपनी हालत आ बैल मुझे मार करने जैसा था । और यही हालत शायद उनकी हुई थी । तब क्योंकि मैं यहीं थी इसलिये मुझे एफडी को भी चैक करने का खयाल आ गया । जो जवाब मिला, उसने मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसका दी । अब आप कहते हैं कि मैं मिस्टर पुणेकर की बीवी ही नहीं हूं ।"

"हम क्या करते ?" - पटेल बोला - "मिस्टर पुणेकर मकबूल आदमी हैं, बैंक के प्रेफर्ड कस्टमर हैं, उनकी बात पर, उनके शोक समाचार पर, उनके द्वारा पेश किये डैथ सर्टिफिकेट पर शक करने की कोई वजह ही नहीं थी ।"

"मैं ऐसे शख्स की बीवी हूं इसलिये मुझे भी तो लोग जानते हैं ।"

"हम नहीं जानते न ! हम दोनों इस ब्रांच में नये हैं । यहां का काफी सारा स्टाफ भी - मैंने पहले ही बोला - इस ब्रांच में नया है ।"

"और फिर" - मोदी बोला - "पैसा तो यहीं है ।"

“क्या !” - नमिता चौंकी - “क्या मतलब ?”

“मिस्टर पुणेकर ने एफडी का सिर्फ अपटुडेट इंटरेस्ट कैश में कलैक्ट किया था, एफडी की मूल राशि पांच करोड़ रुपया उन्होंने अपनी कम्पनी के, ओमेगा इन्टरनैशनल के, करंट अकाउंट में जमा करा दिया था, जो कि इसी बैंक में है ।”

“ऐसा क्यों किया उन्होंने ?” - नमिता के मुंह से निकला ।

“हमें क्या मालूम ? बाई ट्रांसफर डिपाजिट पर कौन सवाल करता है !”

“इंटरेस्ट.. .ब्याज कितना बना था ?”

पटेल ने फिर कम्प्यूटर की बोर्ड ठकठकाया ।

“दो साल दस महीने का ब्याज अदा किया गया था” - वो बोला - “जो कि तकरीबन एक करोड़ पांच लाख रुपया बना था ।”

“इतना पैसा वो नकद साथ ले के गये ! जबकि दो और अकाउंटों से निकाला कोई इकहत्तर लाख रुपया पहले से उनके पास था । इतना रुपया कैसे हैंडल किया उन्होंने ?”

“बड़ी आसानी से ।”

“कैसे ?”

“कोई पौने दो करोड़ रुपया यूरो में कनवर्ट करा लिया । ग्रांट रोड पर ही एक मनी चेंजर है जिसे हमने मिस्टर पुणेकर के लिये यहीं बुला दिया था । उसने रुपयों के बदले में कोई तीन लाख सोलह हजार यूरो सौंप दिये थे । पेमेंट के ज्यादातर नोट क्योंकि पांच सौ यूरो के थे इसलिये सारी रकम का कोई बहुत बड़ा बल्क नहीं बना था ।”

इसलिये आसानी से मनी बैल्ट में आ गया था ।

मनी बैल्ट में इतना माल !

मनी बैल्ट कोठारी के कब्जे में ।

हे भगवान !

क्या इसीलिये उसने रकम का जिक्र नहीं किया था क्योंकि वो अप्रत्याशित रूप से बड़ी थी ?

कोठारी पर से एक बार फिर उसका विश्वास डगमगाया ।

“अब आप क्या करेंगे ?” - वो बोली ।

“हम क्या करेंगे ?” - पटेल बोला - “हमारी तरफ से तो केस क्लोज्ड है । आपको फ्रॉड का अन्देशा है...”

“और आप वाकई” - मोदी बोला - “मिसेज पुणेकर हैं और जिन्दा हैं ।”

“...तो आप पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा सकती हैं ।”

“मेरे पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने से” - नमिता बोली - “आप इंक्वायरी से बच जायेंगे ?”

“आप बच जायेंगी ?”

“मुझे किस बात से बचना है ? मेरे पर कौन सा चार्ज आयद होता है ?”

“इमपर्सनेशन का ।”

“तो आप ये राग अलापना छोड़ेंगे नहीं कि मैं बीवी नहीं, फ्रॉड हूं ?”

“अब क्या कहें...”

“क्यों न कहें ?”

“हमारे सामने जो केस फाइल है...”

“भाड़ में गयी आपकी केस फाइल । मुझे लगता है कि आपने जो किया है, इरादतन जो केस फाइल बनायी है, वो या तो मिस्टर पुणेकर को ओब्लाइज करने के लिये बनायी है और या आप लोगों ने उनसे रिश्वत खायी है ।”

“मैडम, आप गैरजिम्मेदाराना बातें करेंगी तो आपके लिये प्राब्लम होगी । आप...”

तभी फोन की घंटी बजी ।

पटेल ने काल रिसीव की । उसने कुछ क्षण दूसरी ओर से आती आवाज सुनी, फिर माउथपीस को हाथ से ढककर बोला - “आपकी कार सफेद रंग की वैन है ? आपने उसे बैंक के सामने खड़ा किया है ?”

कार ! कार !

हे भगवान ! क्या उनकी अक्ल मारी गयी थी !

“दरबान कहता है” - पटेल बोला - “कि ट्रैफिक का एसआई बोल के गया है कि अगर पांच मिनट में कार वहां से न हटाई गयी तो चालान होगा ।”

“आई डोंट केयर ।” - नमिता उत्तेजित भाव से बोली - “आप फोन बन्द कीजिये और इधर मेरी तरफ तवज्जो दीजिये ।”

पटेल ने फोन वापिस क्रेडल पर रख दिया ।

“ये मेरा ड्राइविंग लाइसेंस है जिस पर मेरी तसवीर है और नाम पता दर्ज है । आप बार-बार कहते हैं कि मैं साबित करके दिखाऊं कि मैं मिसेज नमिता पुणेकर हूं । ये है सबूत मेरे मिसेज नमिता पुणेकर होने का । चौकस कीजिये ।”

दोनों अधिकारियों ने ड्राइविंग लाइसेंस का बारीक मुआयना किया ।

“लाइसेंस नकली बन जाता है ।” - आखिरकार पटेल बोला ।

“पासपोर्ट तक नकली बन जाता है” - मोदी बोला - “ड्राइविंग लाइसेंस की क्या बिसात है !”

“तो ये लाइसेंस” - नमिता बोली - “नकली है ?”

“हो सकता है ?” - पटेल बोला ।

“अगर ये नकली हो सकता है तो आप की फाइल में लगा डैथ सर्टिफिकेट क्यों नहीं नकली हो सकता ।”

“डैथ सर्टिफिकेट के नकली होने की कोई वजह नहीं ।”

"वो पैसा" - मोदी बोला - "जिसकी एफडी कराई गयी थी आखिर था तो मिस्टर पुणेकर का ही, जो उन्होंने एफडी के लिये ओमेगा के अकाउंट से निकाला था और अब वहीं वापिस जमा करा दिया था । इसके लिये उन्हें नकली डैथ सर्टिफिकेट पैदा करने की क्या जरूरत थी ?"

"बराबर जरूरत थी । एक तो आप साहबान करोड़ रुपये से ज्यादा की उस रकम को भूल रहे हैं जो कि बतौर ब्याज उन्हें हासिल हुई, दूसरे उस एफडी की शर्तें ऐसी थीं कि एक बार उसके जारी हो जाने के बाद वो मेरी मौत की सूरत में ही उस रकम को छू सकते थे । ये थी नकली डैथ सर्टिफिकेट पैदा करने की जरूरत । अब आप ऐसी कोई जरूरत मुझे नकली ड्राइविंग लाइसेंस पैदा करने की बताइये ।"

कोई कुछ न बोला ।

"और ये न भूलिये कि ये साबित करना कोई मुश्किल काम नहीं होगा कि डैथ सर्टिफिकेट नकली है या नहीं । ऐसी कोई पड़ताल होगी तो मेरा ड्राइविंग लाइसेंस एकदम चौकस पाया जायेगा और आपकी फाइल में लगा ये डैथ सर्टिफिकेट जाली पाया जायेगा ।"

"ऐसा होगा तो हमें अफसोस होगा ।" - पटेल बोला - "हमने जो किया है, नियमों के अनुरूप किया है ।"

"आप" - मोदी बोला - "बेशक पुलिस के पास जा सकती हैं ।"

"वो तो मैं जाऊंगी ही और साबित कराके रहूंगी कि इतने बड़े फ्रॉड में आप भी शामिल थे क्योंकि ये मिलीभगत के बिना हो ही नहीं सकता, लेकिन पहले मैं एक और काम करूंगी.. .आपसे कराऊंगी ।"

"क्या ?"

"एफडी के लिये फार्म भरा जाता है जिस पर एफडी कराने वालों के दस्तखत होते हैं और उनकी तसवीर चिपकाई जाती है । आप अपने रिकार्ड से इस एफडी का फार्म निकलवाइये और मेरे सामने चैक कीजिये कि उस पर मेरी तसवीर चिपकी हुई है या नहीं ! उस पर मेरे दस्तखत हैं या नहीं !"

दोनों अफसरों की फिर निगाह मिली ।

"अब ये न कहियेगा कि क्योंकि एफडी क्लोज हो चुकी है इसलिये फार्म नष्ट कर दिया गया है, क्योंकि मैं जानती हूं कि बैंक का रिकार्ड यूं नष्ट नहीं किया जाता, किया जाता है तो वही रिकार्ड नष्ट किया जाता है जो कि दस साल से ज्यादा पुराना हो ।"

फार्म निकलवाया गया ।

उस पर से नमिता पुणेकर की तसवीर गायब पायी गयी ।

साफ पता लग रहा था कि वो तसवीर वहां से उखाड़ ली गयी थी ।

"तसवीर कहां गयी ?" - नमिता के मुंह से निकला ।

पटेल ने अनभिज्ञता से कंधे उचकाये ।

“हमें तो ये” - मोदी के मुंह से निकला - “आप ही की कोई कारस्तानी जान पड़ती है ।”

“खामखाह मुंह न फाड़िए ।” - नमिता चिढकर बोली - “सोच समझकर बात मुंह से निकालिये वर्ना पछतायेंगे ।”

“तसवीर” - पटेल जल्दी से बोला - “एक्सीडेंटली उखड़ के गिर सकती है । गम वीक हो या ठीक से न लगाई गयी हो तो ऐसा हो सकता है ।”

“और दस्तखत भाप बनकर हवा में उड़ सकते हैं !”

पटेल ने फार्म पर हुए दस्तखतों का मुआयना किया, उन्हें ड्राइविंग लाइसेंस पर हुए दस्तखतों से मिलाकर देखा ।

“दस्तखत जाली बनाये जा सकते हैं ।” - फिर वो बोला - “अभ्यास से किसी के भी दस्तखत करना सीखा जा सकता है ।”

“और ये अभ्यास मैंने किया हुआ है ?”

“हो सकता है । आखिर ऐसे ही दस्तखत आपने जाली ड्राइविंग लाइसेंस पर भी तो बनाये ही हैं ।”

“नकल के लिये असल उपलब्ध होनी चाहिये ।”

“क्या कहना चाहती हैं ?”

“मुझे कैसे मालूम पड़ सकता था कि इस फार्म पर कैसे दस्तखत किये गये थे ?”

“वो कोई बड़ी बात नहीं । यहां सौ से ज्यादा आदमी काम करते हैं, ईमानदारी की सनद किसी को नहीं मिली हुई ।”

“लिहाजा मैंने किसी को पटा के जाना कि इस फार्म पर दस्तखत किस किस्म के थे ?”

“हो सकता है ।”

“और” - मोदी बोला - “उसी को फार्म से तसवीर उखाड़ देने को बोला ।”

नमिता ने गहरी सांस ली ।

“बहुत बोलते हो, मिस्टर मोदी ।” - वो बोली - “तुम्हारी तो मैं खास खबर लूंगी ।”

“मैडम, आप मुझे धमका रही हैं ।”

“और वार्निंग दे रही हूं । आप दोनों को । आपके बैंक को । तीन दिन में मेरी एफडी रिवाइव हो जाये, पूरा पैसा वापिस एफडी अकाउंट में पहुंच जाये वर्ना आप जेल में होंगे ।”

उसने पटेल के हाथ से अपना ड्राइविंग लाइसेंस नोचकर निकाला और फर्श को रौंदती हुई वहां से रुखसत हुई ।

***

नगरकर मनोहर पावटे के आफिस में पहुंचा ।

“हवलदार खोटे” - नगरकर बोला - “जो मिसेज रोटोलो से मिलने गया था, लौट आया है ।”

“क्या खबर लाया ?” - पावटे सहज भाव से बोला ।

“डाक्टर देशपाण्डे का अपना रेजीडेंस-कम-क्लीनिक वरली में सिद्धार्थ नगर में था...”

“था !”

“अभी । अभी ।”

“सारी !”

“लेकिन कोलाबा और जोगेश्वरी के दो प्राइवेट क्लीनिक्स में भी विजिट करता था । पिछले साल वो अपनी प्रैक्टिस से रिटायर हो गया था और अपने बेटे पास कैनेडा चला गया था ।”

“पक्का ही माइग्रेट कर गया या लौटने के लिये गया ?”

“मालूम नहीं ।”

“मालूम करो ।”

नगर ने सहमति में सिर हिलाया और बोला - “मिसेज रोटोलो से एक बात और पता चली है कि डाक्टरदेशपाण्डे ने जब अपनी प्रैक्टिस वाइन्ड अप की थी तो अपने काफी सारे पेशेंट दादर के डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला को ट्रांसफर कर दिये थे । डाक्टर सिंगला बोला मैं ।”

“सुना । कुछ पता चला उसका ?”

“नहीं । अपने पर पर, अपने क्लीनिक पर कहीं भी उसकी वापिसी फिलहाल नहीं हुई है ।”

“आई सी ।”

“अपने जो पेशेंट्स देशपाण्डे ने सिंगला के पास ट्रांसफर किये थे, उनमें सदानन्द पुणेकर भी था ।”

“लेकिन फायदा क्या ! डाक्टर सिंगला गायब है और देशपाण्डे हमारी पहुंच से बाहर कैनेडा में है ।”

“आप क्या फायदा चाहते हैं ?”

“भई, गुमशुदा की बीवी कहती है कि उसे हार्ट अटैक हुआ हो सकता है । उसके डाक्टर से ही तो उसकी मैडीकल केस हिस्ट्री का पता चल सकता है ।”

“ठीक ।”

“तुम किसी तरह से डाक्टर देशपाण्डे का कैनेडा का टेलीफोन नम्बर मालूम करो, किसी-न-किसी को - पुणेकर की बीवी को, मिसेज रोटोलो को, किसी और पेशेंट को, डाक्टर सिंगला की गैरहाजिरी में उसके क्लीनिक की नर्स को - जरूर मालूम होगा । मालूम हो जाये तो बोलना, फिर हम फोन पर उससे कैनेडा बात करेंगे । ओके ?”

“यस, सर ।”

Chapter 2

अंगारों पर लोटती नमिता गोरई लौटी ।

सारे रास्ते वो एक ही बात सोचती आयी थी ।

क्यों किया सदा ने ऐसा ?

क्यों उसने अपने बैंक अकाउंटों पर यूं झाड़ू फेरा ?

एफडी तुड़ाने की जो हरकत उसने की थी, उससे तो जाहिर होता था कि उसे अपनी हसीनतरीन बीवी की कोई परवाह नहीं रही थी, कोई चाह नहीं रही थी ।

क्या सदा को उसके कोठारी से अफेयर की खबर लग गयी थी जिसकी वो सजा उसने उसे दी थी ?

या उसे इलहाम हो गया था कि वो जान से जाने वाला था और उसने अपने मुकम्मल माल के साथ पहले ही कहीं खिसक जाने का फैसला किया था ?

लेकिन खिसक नहीं सका था ।

कैसे वो उस बात पर एतबार लाती, वो सोच ही नहीं सकती थी कि सदा उससे विमुख हो सकता था । वो खतरनाक आदमी था, वो उसके कोठारी से अफेयर से भड़का होता तो वो कोठारी की खबर लेता । बाजरिया डिमोलिशन स्कवायड वो उसकी लाश का पता न लगने देता ।

काटेज पर पहुंचते ही वो सीधी बार पर पहुंची, उसने वोदका का एक पैग बनाया और उसे गटागट हलक से उतारा ।

"बहन... ! मादर... !"

गालियां बकते हुए उसने दूसरा पैग तैयार किया ।

तभी मेड वहां पहुंची ।

"मैडम" - वो अदब से बोली - "खाना लगा दूं ?"

"दफा हो जा !"

मेड सहमकर पीछे हटी और वहां से हवा हो गयी ।

"हरामजादा ! कुत्ते का पिल्ला ! कंजर का..."

अपने नये पैग के साथ वो बार पर से हटी और आकर सोफे पर ढेर हुई ।

तब उसे अहसास हुआ कि वो गालियों से सदा को नहीं, कोठारी को नवाज रही थी । उसने सदा की बैल्ट कब्जाई थी तो ये तो हो नहीं सकता था कि उसने देखा नहीं था कि भीतर कितना माल था । उसे इसी वजह से उसकी बाबत उसे खबर करनी चाहिये थी कि माल अप्रत्याशित रूप से ज्यादा था । जब वो मनी बैल्ट में बड़ी हद पचास लाख रुपये की कल्पना कर रही थी तो तब उसके मन में कोठारी की नीयत को लेकर शक का कीड़ा

कुलबुलाया था, पौने दो करोड़ की रकम के कोठारी के कब्जे में होने का खयाल तो उसे दीवाना किये दे रहा था ।

क्या कोठारी को पहले ही मनी बैल्ट में किसी बड़ी रकम के मौजूद होने का हिंट मिल गया था ?

क्या पता लगता था ? वो सदा का राजदां था, जो कुछ उसने बैंकों में किया था, क्या पता उसकी बाबत, कोठारी को पहले से मालूम हो !

नहीं, नहीं । ऐसा कैसे हो सकता था ! वो और कुछ उसे बताता या न बताता, इतना बेमुरब्बत नहीं हो सकता था कि ये भी न बताता कि सदा किसी तरीके से एफडी तुड़ाने में कामयाब हो गया था ।

जरूर उसे वो बात मालूम ही नहीं थी - उसके मन में कोठारी के लिये हिमायत आयी - क्योंकि ये बात स्थापित थी कि एफडी नहीं तुड़ाई जा सकती थी ।

लेकिन - शंका ने फिर सिर उठाया - उसने चिट्ठी में मनी बैल्ट का जिक्र क्यों किया ? अगर उसका इरादा माल के साथ खिसक जाने का था तो चिट्ठी ही क्यों लिखी ? ये क्यों कहा कि मैंगलोर जा रहा था ?

झूठ कहा । असल में कहीं भी चला गया ।

तो ये क्यों कहा कि वो वहां पोस्ट मास्टर की मार्फत उसे चिट्ठी लिख सकती थी ?

चिट्ठी जीपीओ में पड़ी सड़ती रहती, उसे क्योंकर पता चलता कि वो उसे कलैक्ट करने के लिये मैंगलौर में था ही नहीं ?

फौरन खबर करना पीछे क्या हो रहा है । सब कुछ लिखना ।

और उसने भी - उसने घबराकर सोचा - अहमकों की तरह सब कुछ लिख दिया था । लिख क्या दिया था, जहन्नुम में अपनी सीट सुरक्षित करा ली थी । अपनी, अपने षड़यंत्र की, अपने अफेयर की सब पोल खुद खोल दी थी । वो चिट्ठी नहीं थी, उसका इकबालिया बयान था जो पुलिस के हाथ पड़ जाता तो ये साबित करने के लिये कि सदा का कत्ल हुआ था और उस साजिश में उसकी बराबर की शिरकत थी, किसी अतिरिक्त सबूत की जरूरत ही न होती ।

हे भगवान ! क्यों उस पर नाजायज इश्क का बुखार यूं हावी हुआ कि चिट्ठी लिखते वक्त वो आपे से बाहर हो गयी और कागज पर सब उगल बैठी ? जो अन्देशे उसे अब सता रहे थे, उन्होंने क्यों तब अपना सिर न उठाया जबकि वो चिट्ठी लिख रही थी ? उसने चिट्ठी नहीं लिखी थी, अपनी मौत के फरमान को खुद मोहरबंद किया था ।

क्या उस चिट्ठी को डाकखाने से वापिस हासिल करने का कोई जरिया मुमकिन था ?

क्या पता !

नर्वस भाव से उसने अपनी वोदका खत्म की ।

उसने नया काम बनाने का खयाल किया लेकिन अक्ल ने हामी न भरी ।

जाम की जगह उसने एक सिग्रेट सुलगाया ।

अब उसे ये भी सूझ रहा था कि क्यों कोठारी की जिद थी कि ‘पहला कदम’ वो उठाये ।

ताकि वारदात में उसकी बराबर की शिरकत हो ।

वो बाखूबी सब कुछ खुद कर सकता था । सोये हुए सदा पर फूलदान से उसका वार करना कतई जरूरी नहीं था, उसने उसे बातों में भरमा के ऐसा करने के लिये तैयार किया था, ताकि उलटी पड़ जाने पर वो वारदात से, उससे पल्ला न झाड़ सके ।

सन आफ बिच ! लाउजी सन आफ बिच !

कमीने ने जान-बूझकर उसे ‘सब कुछ’ लिखने के लिये उकसाया ।

पुलिस की तफ्तीश से भी बड़ा मसला अब उस नामुराद चिट्ठी की वजह से खामखाह बन गया था । वो चिट्ठी पुलिस के हाथ न लगे, उसके लिये जरूरी था कि अब ज्यादा से ज्यादा देर तक कोठारी पुलिस के हाथ न लगे । उनका कोठारी के पीछे पड़ना इस बात का सबूत होता कि उनके मन में ये सम्भावना प्रबल थी कि जो हुआ था, वो कोठारी का वन मैन शो हो सकता था । उसका ‘फरार’ हो जाना इस सम्भावना को बल देता था । उसने अपने लिये जो एलीबाई गढ़ी थी, वो आखिर उतनी मजबूत नहीं थी जितनी कि वो जान पड़ती थी या जितनी कि वो समझता था । उस पर सवालिया निशान बराबर लगे थे ।

मसलन मिसेज रोटोलो की छोटी-मोटी झपकी के दौरान वो क्या कर रहा था ?

जब टाइपराइटर खामोश होता था तब वो क्या कर रहा था ?

ऊपर से वो गायब था ।

फ्लाईट इज एन ईवीडेंस आफ गिल्ट ।

लिहाजा जब तक कोठारी फरार था तब तक पुलिस का फोकस उस पर, नमिता पर, नहीं बनने वाला था ।

दूसरे अब वो धनाढ्य विधवा थी, पुलिस का उससे अदब से पेश आना लाजमी थी ।

उस बात से उसे एक नया खयाल आया ।

सदा के पास काफी सारे शेयर भी तो थे जिन्हें एक बार उसने ऊपर मास्टर बैडरूम की एक दीवार के साथ लगी उसकी राइटिंग टेबल के एक दराज में पड़े देखा था ।

उसने सिग्रेट को तिलांजलि दी और तत्काल ऊपर पहुंची ।

राइटिंग टेबल के दराजों को उसने कुल जहान के कागजों से ठुंसे पाया लेकिन शेयर सर्टिफिकेट वहां कहीं नहीं थे ।

कहां गये ?

कमबख्त ने जैसे बैंक अकाउंट बन्द कराये वैसे उन्हें भी तो कैश नहीं करा लिया !

तत्काल उसके जेहन में सदा के स्टाक ब्रोकर संदीप नाडकर्णी का अक्स उबरा ।

अगर ऐसा कुछ हुआ था तो नाडकर्णी को यकीनन उसकी खबर होगी ।

उसने उसे फोन लगाया ।

“हल्लो !” - उसकी आवाज पहचानकर नाडकर्णी मधुर स्वर में बोला - “कैसी है हमारी स्वर्णसुन्दरी ? कैसा है सुन्दरी का लार्ड एण्ड मास्टर ?”

तब तक सदा की गुमशुदगी मीडिया की न्यूज नहीं बनी थी इसलिये जाहिर था कि नाडकर्णी को उसकी बाबत कुछ नहीं मालूम था ।

उसने सदा के साथ हुए सम्भावित हादसे की बाबत नाडकर्णी को बताया ।

“अरे, क्या कह रही हो ?” - वो हैरान होता बोला - “मजाक तो नहीं कर रही हो ?”

“ये कोई मजाक करने वाली बात है ?”

“है तो नहीं लेकिन. ..ठीक से बताओ क्या किस्सा है ?”

कोठारी और कार का जिक्र किये बिना उसने किस्सा बयान किया ।

“देवा !” - नाडकर्णी बोला - “तुम्हारे तो छक्के छूटे हुए होंगे ?”

“है तो सही मुसीबत की घड़ी ।”

“फोन कैसे किया ?”

“वो क्या है कि पुलिस को ये लूटमार का केस लग रहा है । किसी को सदा की इतवार सुबह की रुटीन की खबर थी, कोई समुद्र में नोडल पॉइंट पर घात लगाये बैठा था जिसने कि सदा को लूटने के लिये उस पर हमला कर दिया था । पुलिस ये जानना चाहती है कि क्या तब सदा के पास कोई कीमती माल या कैश में कोई मोटी रकम थी ?”

“फिशिंग के लिये निकले शख्स के पास कैश में मोटी रकम का क्या मतलब ?”

“कोई मतलब नहीं लेकिन पुलिस सवाल तो करती है न ! सवाल करना उनका काम है ।”

“वो तो है ।”

“सदा के पास काफी सारे शेयर सर्टिफिकेट थे...”

“हां । साठ लाख के करीब के ।”

“अगर सदा ने उन्हें बेचा होगा तो स्टाक ब्रोकर के - तुम्हारे - जरिये ही बेचा होगा । क्या सदा ने ऐसा किया था ?”

“नहीं । वो तो उलटे कुछ शेयर और खरीदने की फिराक में था । मैंने उसे कुछ नये इशूज का लिटरेचर भेजा भी था जिसकी बाबत वो कहता था कि वो इतवार को फिशिंग के लिये निकलेगा तो बोट पर उसे पढ़ेगा क्योंकि वहां उसके पास खुला वक्त होगा ।”

“शेयर सदा ने किसी और तरीके से बेच दिये हों, ये हो सकता है ?”

“हो तो सकता है ।”

“पता कैसे लगे ?”

“सर्टिफिकेट तलाश करो । घर में ही होंगे ।”

“घर में जहां होने चाहिएं वहां नहीं हैं ।”

"तो बैंक के लॉकर में होंगे ।"
"लॉकर में ! लॉकर का तो मुझे खयाल ही नहीं आया था ।"
"आना चाहिये था । या तो सर्टिफिकेट उसने लॉकर में रख दिये होंगे या..."
"या क्या ?"
"आजकल क्या उसे पैसे की तंगी थी ?"
"क्यों पूछ रहे हो ! फर्ज करो, थी ।"
"उसका शेयर बेचने का कोई इरादा नहीं था, होता तो मुझे खबर होती, लेकिन शेयर अच्छी, मजबूत कम्पनियों के हों तो उन्हें बेचे बिना भी पैसा हासिल किया जा सकता है ।"
"कैसे ?"
"शेयर बैंक के पास गिरवी रख के । छत्रपति बैंक तो लिमिटिड बैंक है, वहां से तो सदा जैसे रसूख वाले शख्स को नब्बे फीसदी तक लोन मिल गया होगा ।"
"मैं मालूम करूंगी ।"
"मुझे सदा की बाबत सुनकर अफसोस हुआ । मैं उसकी सलामती की दुआ करूंगा ।"
"थैंक्यू ।"
उसने फोन रख दिया ।
छत्रपति कोआपरेटिव बैंक लिमिटिड कांदीवली वैस्ट में था, जहां सदा का अकाउंट सिर्फ इसलिये था क्योंकि बैंक में बड़ा लाकर लेने के लिये बैंक में अकाउंट रखना और उसमें दस हजार का मिनिमम बैलेंस रखना जरूरी होता था ।
नाडकर्णी की सुझाई दोनों बातें उसे जंची थीं ।
या तो वो सर्टिफिकेट - साठ लाख के वो सर्टिफिकेट - बैंक के लाकर में बंद थे या सदा ने उनके बदले बैंक से लोनउठाया था जो अगर नब्बे फीसदी तक मिल सकता था तो पचास लाख से कम क्या होता !
और पचास लाख रुपया !
क्या वो भी यूरो की सूरत में मनी बैल्ट में था ।
कदम-कदम पर वो कोठारी से खिलाफ होती जा रही थी जो पता नहीं कितना पैसा ले उड़ा था ।

***

वो कांदीवली वैस्ट पहुंची ।
छत्रपति बैंक में वो सीधे मैनेजर के केबिन में पहुंची ।
भीतर कदम रखते ही वो थमककर खड़ी हो गयी ।
मैनेजर के सामने एसीपी मनोहर पावटे और इंस्पेक्टर नगरकर बैठे हुए थे ।
"आइये ।" - पावटे मधुर स्वर में बोला - "आइये, मिसेज पुणेकर ।"

“आप.. .आप लोग यहां !” - नमिता के मुंह से निकला ।

“ड्यूटी कर रहे हैं ।”

“क्या ड्यूटी कर रहे हैं ?”

“हमें मालूम पड़ा था कि आपके हसबैंड का यहां लॉकर है । हम उसे चैक करना चाहते हैं ।”

“आप ऐसे किसी का लॉकर खोल सकते हैं ?”

“आम हालात में नहीं खोल सकते, लेकिन आपके हसबैंड के मामले में हालात आम कहां हैं !”

“आप” - वो मैनेजर की तरफ घूमी और गुस्से से बोली - “इनकी वर्दी का रोब खा के इनके सामने बिछे जा रहे हैं ?”

“ऐसी कोई बात नहीं ।” - मैनेजर बोला - “लेकिन लाकर की बात जुदा है ।”

“कैसे जुदा है ?”

“लाकर खुला पड़ा है ।”

“कैसे खुला पड़ा है ?”

“मिस्टर पुणेकर खुला छोड़ के गये । चाबी भीतर डाल गये ।”

“ऐसा कैसे हो सकता है ?”

“आप खुद देख लीजिये चल के ।”

नमिता अनिश्चित सी खामोश खड़ी थी ।

“आप बैठ जाइये, प्लीज ।”

उसने बैठने का उपक्रम न किया ।

“आप यहां कैसे आयीं ?” - पावटे ने पूछा ।

“लाकर का ही पता करने आयी थी ।” - वो बोली ।

“लाकर तो, मैनेजर साहब बता रहे हैं कि, खाली है ।”

“खाली है या खाली कर दिया गया है ?”

“खाली कर दिया गया है ।” - मैंनेजर बोला ।

“आपको कैसे मालूम ? ग्राहक के लाकर आपरेट करते वक्त उसके पास तो कोई मौजूद नहीं होता !”

“ग्राहक की खुद की फरमाइश पर हो सकता है ।”

“क्या मतलब ?”

“डीलिंग क्लर्क कहता है कि पुणेकर साहब ने खुद उसे आवाज देकर बुलाया था और अपने शेयर सर्टिफिकेट रखने को उससे एक बड़े लिफाफे का इन्तजाम करने को बोला था ।”

“शेयर सर्टिफिकेट रखने के लिये ?”

"क्लर्क कहता है, उन्होंने खुद बोला था शेयर सर्टिफिकेट रखने के लिये । कहता है कि ढेर सारे सर्टिफिकेट तब उनके हाथ में थे, लाकर का ढक्कन तब खुला था और क्लर्क ने साफ देखा था कि भीतर से वो बिल्कुल खाली था ।"

"वो कब यहां आये थे ?"

"परसों सुबह ।"

"आपके बैंक से उन्होंने कोई लोन उठाया हुआ है ?"

"नहीं ।"

"जो सर्टिफिकेट वो ले गये थे, उनके अलावा उनके पास और भी सर्टिफिकेट हों जिन्हें गिरवी रखकर उन्होंने कोई कर्ज लिया हो ?"

"नहीं ।"

"हूं ।"

"आप बेसमेंट में चल के लाकर देखना पसन्द करेंगी ?"

"नहीं, जरूरत नहीं है ।"

"मैडम" - पावटे नम्र स्वर में बोला - "आप प्लीज बैठ जाइये..."

"नहीं, मैं..."

"वर्ना हम खड़े हो जाते हैं ।"

"मैं. ..मैं जा रही हूं ।"

"अभी रुकिये । इत्तफाक से आप यहां मिल गयी हैं तो मैंने आपसे कुछ पूछना है ।"

"क्या ?"

"आप बैठें तो पूछूं न !"

वो धम्म से एक कुर्सी पर बैठी ।

"मैनेजर साहब" - पावटे मैनेजर की तरफ घूमा - "आप जरा इंस्पेक्टर साहब को लाकर दिखाइये ।"

मैनेजर हिचकिचाता हुआ अपनी सीट से उठा, फिर नगरकर को साथ लेकर वहां से बाहर निकल गया ।

पीछे पावटे फिर नमिता की तरफ आकर्षित हुआ ।

"हमने" - वो बोला - "आपके हसबैंड की बोट का जब मुआयना किया था तो पाया था कि मास्टर स्टेटरूम में एक सेफ थी । आपको उस सेफ की खबर है ?"

नमिता ने सहमति में सिर हिलाया ।

"मैं बोट्स के बारे में ज्यादा जानता नहीं । उनमें ऐसी सेफ होना आम बात होती है ?"

"बड़े केबिन क्रूसर में - जैसा कि मरमेड था - तो होती है ।"

"किसलिये ?"

"जाहिर है कि कीमती सामान महफूज रखने के लिये ।"

"आई सी । मैडम, हमने सेफ का दरवाजा खुला पाया था और सेफ को यहां के लाकर की ही तरह खाली पाया था । सेफ में कुछ नहीं था ।"

नमिता खामोश रही ।

"होता तो क्या होता ?"

नमिता सकपकाई ।

"क्या ?" - वो बोली ।

"होता तो क्या होता ? अमूमन क्या रखते थे मिस्टर पुणेकर उस सेफ में ? कैश ? ज्वैलरी ? शेयर सर्टिफिकेट ?"

"मुझे मालूम नहीं ।"

"जो शेयर सर्टिफिकेट यहां जिक्र का मुद्दा हैं, उनकी वैल्यू का कोई अन्दाजा हो ?"

"मुझे कोई अन्दाजा नहीं ।"

"आपको ये तो मालूम है न, आपके हसबैंड के पास कई कम्पनियों के शेयर सर्टिफिकेट थे ?"

"हां, ये तो मालूम है ।"

"कैसे मालूम है ?"

"डाक से । डिवींडेंड के चैक आते हैं, और कई तरह के सर्कुलर वगैरह आते हैं, कुछ तो मालूम हो ही जाता है न ?"

"लेकिन निश्चित रूप से कुछ नहीं मालूम ? आपके हसबैंड ने कभी आपको ये नहीं बताया कि कुल जमा कितनी रकम के शेयर उनके पास थे ?"

"नहीं ।"

"आपने कभी पूछा भी नहीं ?"

"मैं ऐसे सवाल नहीं करती ।"

"जरूर नहीं करती होंगी, क्योंकि ऐसी बातें पति पत्नियों को अमूमन खुद बताते हैं । नहीं ?"

"हां ।"

"लेकिन मेरा सवाल करना फिर भी जरूरी था क्योंकि हम इस सम्भावना को नजरअंदाज नहीं कर सकते कि बोट पर आपके हसबैंड के साथ लूटपाट की वारदात हुई थी । बोट की सेफ खुली पाया जाना, खाली पाया जाना इस बात की तसदीक करता है । यहां का लाकर खाली पाया जाना भी इसी बात की तरफ इशारा है । आपके हसबैंड ने यहां से शेयर सर्टिफिकेट निकाले और ले जाकर बोट की सेफ में रखे जहां से वो लुट गये और जहां उनके साथ भी जो बीती, बुरी बीती ।"

"बोट की सेफ में किसलिये ?"

"मैं कोई वजह बयान नहीं कर सकता । शायद आप कर सकती हों !"

"नहीं, मैं भी नहीं कर सकती ।"

"हूं । मेरा सवाल उनकी कीमत, उनकी वैल्यू की बाबत भी था ।"

"मुझे कीमत का कोई अन्दाजा नहीं । मुझे इस बाबत कुछ नहीं मालूम ।"

"दैट्स टू बैड । बाई दि वे, उनका स्टॉक ब्रोकर कौन है ?"

"स्टॉक ब्रोकर !"

"शेयर्स के सौदे स्टॉक ब्रोकर्स के जरिये ही होते हैं न ! शेयर्स की खरीद फरोख्त करने वाले सब साहबान के स्टॉक ब्रोकर्स होते हैं, आपके हसबैंड का भी जरूर कोई होगा । कौन है ?"

"संदीप नाडकर्णी ।"

"कहां पाया जाता है ?"

"कांदीवली ईस्ट में । उधर दत्तानी पार्क रोड पर सतपुरा इनवेस्टमेंट्स के नाम से उसका दफ्तर है ।"

"उसे तो आपके हसबैंड के स्टाक की बाबत जरूर मालूम होगा । फोन नम्बर बोलिये, मैं अभी पूछता हूं ।"

"फोन नम्बर तो मुझे जुबानी याद नहीं, लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"मुझे कुछ याद आ रहा है कि वो एक बार फोन पर एक सिलसिले में किसी से, शायद नाडकर्णी से ही, कुछ बात कर रहे थे और तब शायद उन्होंने कहा था कि उनके पास साठ.. .साठ लाख की फेस वैल्यू के शेयर थे ।"

"आई सी । आई सी । बाई दि वे, आपके नये पड़ोसी - वकील साहब, कोठारी साहब - लौटे ?"

"अभी नहीं । अभी तो एक ही दिन हुआ है गये । दो-तीन दिन बाद लौटने को बोल के गये थे । शायद उसके भी बाद ।"

"उसके भी बाद ? ऐसा बोला था उन्होंने ?"

"बोला तो था ।"

"वो लौटेंगे तो आपकी कार लौटेगी । सोनाटा बोला था न ?"

"हां ।"

"मैंने पता किया था । ग्यारह लाख की आती है । नहीं ?"

"हां ।"

"हैरानी है इतनी कीमती, नयी नकोर कार आपने दो हजार किलोमीटर की ड्राइव के लिये वकील साहब को दे दी ।"

"मैंने नहीं, मेरे हसबैंड ने ।"

"बाकायदा जिद करके, आपने बोला !"

"हां ।"

"हैरानी है ।"

"आप और कुछ पूछना चाहते हैं ?"

"नहीं, शुक्रिया । फिलहाल इतना काफी है, कुछ और पूछना होगा तो हाजिरी भरेंगे ।"

"तो मैं चलूं ?"

"जी हां । जरूर ।"

वो उठी और वहां से बाहर निकली ।

कमीना ! कंजर !

बाहर को बढ़ती वो कोठारी को कोस रही थी ।

जरूर वो ही शेयर सर्टिफिकेट भी ले गया था ।

धोखेबाज ! लालची कुत्ता ! !

लेकिन - फिर उसने सोचा - सर्टिफिकेट ले जाने का फायदा क्या !

सदा के दस्तखतों के बिना उन्हें बेचा तो जा नहीं सकता था !

जरूर उसने सदा के होश में आने का इंतजार किया था और सारे सर्टिफिकेटों पर जबरन एनडोर्समेंट कराने के बाद उसे खत्म किया था ।

हे भगवान ! क्यों सदा ने अपने शेयर बोट की सेफ में रखे ?

क्योंकि, बकौल नाडकर्णी, वो और शेयर खरीदने की फिराक में था । नयी खरीद की अर्जी भरते वक्त पुराने शेयरों के नम्बरों का हवाला देना जरूरी होता था, इसलिये वो अपने तमाम के तमाम शेयर ही बोट पर ले गया था ।

गोली लगे कमीने को ।

पावटे को उसने नयी पुड़िया सरका दी थी कि कोठारी और भी देर में वापिस लौट सकता था । लिहाजा सुरक्षित फरार हो जाने के लिये उसे और वक्त दरकार था । जितनी ज्यादा वो बात पुलिस के दिमाग में पैवस्त होती, उतनी ही ज्यादा वो खुद को सुरक्षित महसूस करती ।

वो बैंक से बाहर निकली ।

फुटपाथ पर एक छोकरा 'मिड डे' बेच रहा था । दूर से ही उसे उसकी सुर्खी दिखाई दी ।

गोरई का व्यवसायी समुद्र में गायब
फिशिंग को निकला लौटकर न आया
नोडल पॉइंट पर बोट खाली तैरती पायी गयी

उसने अखबार लेकर पूरी खबर पढ़ी ।

पुलिस के हवाले से सदानन्द पुणेकर के साथ हुए सम्भावित हादसे पर उसमें सविस्तार जिक्र था ।

उसने अखबार को तह करके अपने बैग में रख लिया ।

***

वो मलाड वैस्ट पहुंची ।

जहां कि वो पोस्ट आफिस था, जहां से उसने स्पीड पोस्ट भेजी थी ।

वो काउंटर पर पहुंची, उसने काउंटर क्लर्क को रसीद दिखाई ।

"मैंने सुबह ये चिट्ठी" - वो बोली - "स्पीड पोस्ट से मैंगलोर भेजी थी ।"

क्लर्क ने रसीद पर निगाह डाली ।

"हां ।" - वो बोला - "भेजी थी ।"

"ये चिट्ठी मैं वापिस चाहती हूं ।"

"ये तो नहीं हो सकता ।"

"देखो" - वो व्यग्र भाव से बोली - "उस चिट्ठी के लिफाफे में गलती से मेरा एक चैक बन्द हो गया है । चिट्ठी मैंगलोर पहुंच गयी तो वो मुझे कई दिनों में मिलेगा । हो सकता है न भी मिले । वो चिट्ठी मुझे वापिस मिलना जरूरी है, बदले में अगर तुम कोई सेवा.. .कोई पैसा..."

"वो बात नहीं है, मैडम । वो क्या है कि लंच तक बुक हुई सारी स्पीड पोस्ट जीपीओ भेजी जा चुकी हैं इसलिये यहां आपको आपकी चिट्ठी नहीं लौटाई जा सकती ।"

"ओह ! जीपीओ कहां है ?"

"फोर्ट में ।"

जो कि वहां से मुम्बई का दूसरा सिरा था ।

असहाय भाव से गर्दन हिलाती वो बाहर निकली ।

वो फोर्ट और आगे जीपीओ पहुंची ।

वहां उसने सोर्टिंग विभाग के जिस क्लर्क को पकड़ा उसे स्पीड पोस्ट की रसीद के साथ पहले ही सौ का नोट थमा दिया और फिर अपना मंतव्य उसे समझाया ।

"पता करता हूं ।" - वो बोला - "आप यहीं ठहरिये ।"

नमिता ने सहमति में सिर हिलाया ।

असाधारण रूप से उंची छत वाले विशाल हाल में बेशुमार डाक कर्मचारियों को काम करता देखती वो प्रतीक्षा करने लगी ।

पांच मिनट बाद वो वापिस लौटा ।

"वो डाक तो निकल गई ।" - वो बोला ।

"कहां निकल गयी ?" - नमिता त्याकुल भाव से बोली ।

"मैंगलोर के लिये ।"

"कैसे ?"
"इधर से एयरपोर्ट गयी । आगे हवाई जहाज से मैंगलौर ।"
"वहां जाने से कोई फायदा होगा ?"
"नक्को । अभी तक डाक लोडिंग एरिया में पहुंच चुकी होगी जिधर जाना मना है ।"
"उस चिट्ठी को हासिल करने का कोई और तरीका ।"
"एकीच है ।"
"क्या ?"
"दूसरे सिरे से थामिये ।"
"दूसरा सिरा ?"
"मैंगलौर । डाक से पहले मैंगलोर पहुंचिये ।"
"बहुत अच्छी राय दी । बहुत आसान काम बताया । शुक्रिया ।"
वो जीपीओ से बाहर निकली ।
क्लर्क की राय उसके लिये बहुत अव्यवहारिक थी, लेकिन गलत नहीं थी, नाजायज नहीं थी । उसने उस पर दूसरे तरीके से अमल करने का फैसला किया ।
एक पब्लिक टेलीफोन से उसने खेड काल लगाई ।
तत्काल उत्तर मिला ।
"जूली बोलती हूं ।" - वो अपने स्वर में मद घोलती बोली ।
"जूली !" - नाना मराठे की अचरजभरी आवाज आयी - "नहीं बोली तो सालों नहीं बोली । बोली तो महीने में दो बार बोल पड़ी ।"
"ऐसीच है ।"
"अभी क्या है ? तेरा काम तो हो गयेला है । मेरे को पक्की करके मालूम । वासन के लड़के स्मिथ में कोई खोट ! कोई लोचा ?"
"नक्को ।"
"तो बोले तो ?"
"और काम है न ! उससे ज्यादा डिफीकल्ट करके । ज्यादा कड़क करके ।"
"क्या ?"
"डैडियो । अपनी जूली का काम करके देने का है । टालने का नहीं है ।"
"खास काम तो रूबरू बोलना चाहिये ।"
"अभी मैं खेड नहीं आ सकती..."
"वान्दा नहीं । मैं मुम्बई आता है न ! बोल, किधर है तू ?"
"दोनों तरीकों से टेम खोटी होगा । काम ऐसा कि टेम का तोड़ा ।"
"काम बोल ।"

"डैडियो, करके देने का है । टालने का नहीं है । हो गया तो गुजरे टेम के सारे गिले-शिकवे एकीच बार में खल्लास कर दूंगी ।"

"अरे, काम बोल ।"

"मैंगलौर जाने का है । कल उधर का जीपीओ खुलने से पहले उधर पहुंचने का है । जीपीओ दस बजे खुलता होगा । खुलते ही उधर ऐंट्री मारने का है ।"

लाइन पर खामोशी छा गयी ।

"क्या हुआ ?" - नमिता व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली - "सांप सूंघ गया या बुढ़ापे में जूली का थैंक्यू झेलने के खयाल से हवा सरक गयी ?"

"वो बात तो खैर नहीं है ।"

"तो फिर ?"

"अरे, खड़े पैर मैंगलौर..."

"अपनी जूली की खातिर ।"

"अरी, खेड से तो पिलेन नहीं जाता न ? उधर मुम्बई आना पड़ेगा, पिलेन का टिकट निकालना पड़ेगा, इतने कम टेम में सब कैसे होयेंगा ?"

"होयेंगा न ! नाना करेंगा तो होयेंगा । क्यों नहीं होयेंगा ?"

"लेकिन बात क्या है ? जाना क्यों है मैंगलोर ?"

नमिता ने बताया ।

"देवा ! खाली एक चिट्ठी की खातिर..."

"जूली की खातिर ।"

"करना क्या है उधर जा के ?"

"चिट्ठी काबू में करने का है । कोई दूसरा भी चिट्ठी की ताक में होगा । वो पहले काबू में कर ले तो उसको काबू में करने का है ।"

"किसको ?"

"जिसका चिट्ठी पर नाम लिखेला है । कपिल कोठारी ।"

"वो सीधे से काबू में न आये तो ?"

"तो टेढ़े से काबू में करने का है ।"

"बोले तो ?"

"खल्लास ।"

"एक चिट्ठी की खातिर ?"

"अपनी जूली की जान की खातिर जो उस चिट्ठी में अटकेली है ।"

"चिट्ठी काबू में आ जाये तो क्या करने का है ? ला के तेरे को देने का है ?"

"नक्को । उधर ही फिनिश करने का है । हाथ आते ही माचिस दिखाने का है । खोलने का भी नहीं है । जैसीच हाथ आये, माचिस । राख हवा में । क्या !"

"ठीक है, मैं करता हूं कुछ ।"

"सब कुछ ।"

"मैं करता हूं सब कुछ ।"

"थैंक्यू डैडियो, जूली तुम्हारा ये अहसान ताजिन्दगी नहीं भूलेगी और अहसान का बदला यूं चुकायेगी कि गिला करोगे कि जूली का कोई काम पहले क्यों न अटका !"

"ऐसा ?"

"हां, आजकल मेरा वजन" - अपने लहजे को रंगीनी में डुबोती नमिता बोली - "बासठ किलो है । झेल लोगे ।"

"देखेंगे ।"

"और जो खर्चा होगा, वो मेरे जिम्मे होगा ।"

"वो भी देखेंगे ।"

"अभी रखती हूं ।"

***

शाम आठ बजे विनोद नगरकर की फिर मनोहर पावटे से मुलाकात हुई ।

"डाक्टर देशपाण्डे का कैनेडा का फोन नम्बर मिला आखिरकार ।" - नगरकर बोला - "बहुत मुश्किल से मिला लेकिन मिला ।"

"कैसे ? कहां से ?"

"उसके पड़ोसी से जिसे कि वो कोई खास जरूरत आन पड़ने पर उससे कांटेक्ट करने के लिये नम्बर बता के गया था ।"

"ऐसा क्यों ?"

"पड़ोसी कहता है कि वो परमानेंट माइग्रेट नहीं कर गया हुआ, फिलहाल वो चेंज के लिये, रैस्ट के लिये, वहां गया है । पक्का ही बेटे के पास कैनेडा में बस जाने की बाबत अभी वो सोचेगा ।"

"आई सी । बहरहाल उसका कैनेडा का नम्बर हमें मालूम है ?"

"हां ।"

"अरे, तो फोन लगाना था ।"

"लगाया न !"

"अच्छा, लगाया ?"

"हां । और पता चला कि डाक्टर देशपाण्डे आजकल वापिस मुम्बई में था ।"

"दैट्स वैरी गुड न्यूज ।"

"मेरी उससे बात हो गयी है । कल किसी भी वक्त आप उससे मिलने जा सकते हैं ।"

"बढ़िया, कोई और बात ।"

“है तो सही एक बात, लेकिन उसकी कोई अहमियत फिलहाल मेरी समझ से बाहर है । शायद आप समझ सकें ।”

“क्या बात है ?”

“आपको याद होगा कि मिसेज पुणेकर ने कहा था कि काटेज में लिव इन सर्वेंट कोई नहीं था । सब सुबह आते थे और शाम को छुट्टी करके अपने घर चले जाते थे ।”

“हां ।”

“आज सात बजे जब उन्होंने छुट्टी की थी तो सबको राउंड अप करके थाने मंगवा लिया गया था । मैंने खुद उनके बयान लिये थे । उनके बयानों से दो बातें - एक महज काबिलेजिक्र और एक दिलचस्प - मालूम हुई हैं ।”

“क्या ?”

“डाक्टर सिंगला, जो कि अभी भी गायब है, पिछले पांच-छ: महीने से काटेज में होने वाली छोटी-बड़ी पार्टियों में फ्रीक्वेंट विजिटर था । छोटी पार्टियां इतनी छोटी भी होती थीं कि उसमें मेजबान मियां बीवी और डाक्टर, वकील के अलावा कोई शामिल नहीं होता था, बड़ी पार्टियों में शिरकत पन्द्रह-बीस लोगों तक भी पहुंच जाती थी ।”

“यही काबिलेजिक्र बात है ?”

“नहीं । काबिलेजिक्र बात ये है कि डाक्टर सिंगला मेजबान की, सदानन्द पुणेकर की गैरहाजिरी में कभी काटेज पर नहीं आया था जबकि वकील कपिल कोठारी सिर्फ बीवी की मौजूदगी में आया हो, ऐसा कई बार हुआ था ।”

“खासुलखास जो ठहरा ।”

“अगर यूं आमद से ही कोई खासुलखास बन जाता है तो वो तो डाक्टर भी हो सकता है । क्या पता उसका ऐसा फेरा नौकरों के आफ ड्यूटी आवर्स में लगता हो ।”

“हूं ।”

“पुणेकर एक-एक दो-दो दिन के ब्रीफ टूर्स पर मुम्बई से बाहर भी जाता बताया गया है, क्या पता तब लगता हो ।”

“डाक्टर साहब ओवरनाइट बीवी के पहलू में और सुबह नौकरों की आमद से पहले रुखसत ?”

“क्या पता !”

“डाक्टर मिले तो कुछ पता चले ।”

“उसकी नर्स कहती है उसने शुक्रवार शाम से उसकी शक्ल नहीं देखी । बोरीवली ईस्ट में जहां कि मारुति अपार्टमेंट्स के फोर्थ फ्लोर पर वो रहता है, किसी पड़ोसी ने, किसी सिक्योरिटी गार्ड ने शुक्रवार सुबह के बाद से उसकी शक्ल नहीं देखी ।”

“कहां गायब हो गया ?”

“समुद्र में बह गया, एक्सीडेंट में सच में ही मारा गया ।”

"हूं । तुम एक-दो दिन और उस पर वाच रखो । उसके बाद पक्का ही सोच लेंगे कि निपट गया ।"

"ठीक है ।"

"अब वो बात बोलो जो दिलचस्प है ।"

"सदानन्द पुणेकर कपड़ों के नीचे कमर के गिर्द मनी बैल्ट पहनता था ।"

"हैवी कैश पास रखने वाले, डायमंड ज्वैलर्स वगैरह पहनते हैं मनी बैल्ट ।"

"चौबीस घंटे ।"

"क्या ?"

"नौकरों ने तसदीक की है । कभी नहीं उतारता था ।"

"उन्हें क्या मालूम ?"

"दिन का तो बराबर मालूम है । उठते-बैठते कई बार उसे मनी बैल्ट को कम्फर्ट के लिये, सहूलियत के लिये, एडजस्ट करना पड़ता था । नौकर कहते हैं कि कोट न पहने हो तो कमीज के नीचे से वैसे ही मनी बैल्ट का अहसास होता था क्योंकि उसका पेट भारी था । मेड कहती है उसने मैडम को दो-तीन बार शिकायत करते सुना था कि मनी बैल्ट उसे चुभती थी इसलिये वो उसे घर में तो उतारा करे, लेकिन पुणेकर ने उसकी बात मानने से इंकार कर दिया था ।"

"कमाल है !"

"दूसरे, पता चला है कि कोई कसम ही नहीं है कि सात बजे के बाद कोई नौकर उधर नहीं ठहरेगा । पार्टी हो तो एकाध जने को, बड़ी पार्टी हो तो सबको, उधर रात के लिये रोक भी लिया जाता है । पावटे साहब, आप ये बात निश्चित ही जानिये कि वो मनी बैल्ट पहनता था और चौबीस घंटे पहन के रखता था ।"

"हम इस बात की तसदीक मैडम से भी कर सकते हैं । उम्मीद नहीं कि वो इस बाबत गलतबयानी करेगी ।"

"काहे को करेगी ! करेगी तो मुंह पर मारने को नौकरों के बयान हैं न !"

"और हो सकता है हसबैंड की खास आदत की वो कोई खास वजह भी बताये ।"

"ठीक ।"

"नगरकर, अगर वो मनी बैल्ट ऐसे ही कर्ण का कवच बनी हुई थी तो वो कल सुबह सवेरे तब भी उसके जिस्म पर होगी जब वो फिशिंग के लिये निकला था ।"

"जाहिर है ।"

"तब क्या होगा उसमें ?"

"मनी बैल्ट कहलाती है तो मनी । या वो शेयर सर्टिफिकेट जो उसने कान्दीवली वाले बैंक के लाकर से निकाले थे ।"

"नहीं, वो नहीं हो सकते । वो मनी बैल्ट में समा सकने लायक आइटम ही नहीं थे ।"

"तो फिर ?"

"कान्दीवली बैंक में, छत्रपति कोआपरेटिव बैंक लिमिटिड में, उसका जो अकाउंट था, उसमें सिर्फ दस हजार रुपये जमा सालाना इंटरेस्ट की मामूली रकमें जमा थीं जिनमें कभी कोई घट-बढ़ नहीं हुई थी । इसका मतलब है उसका यूजेबल, आपरेटेबल अकाउंट कहीं और था । कल मालूम करना, कहां था !"

"मैं करूंगा ।"

***

उस रात भरपूर ड्रिंक करने के बावजूद नमिता ठीक से न सो पायी ।

कभी ऊंघ आती थी तो धूर्तता से मुस्कराता कोठारी का चेहरा उसके मानसपटल पर उभरने लगता था और नींद हवा हो जाती थी ।

कमीने ने कैसी चतुराई से उसे इस्तेमाल किया था, मजबूर किया था, धोखा दिया था, फंसाया था और अपना उल्लू सीधा हो जाने पर उसे तिलांजलि दे दी थी, धकिया दिया था ।

उसका गुस्सा थोड़ा शांत हुआ तो उसके जेहन पर उस खुशगवार घड़ियों की न्यूज रील चलने लगी जो कि उसने उसके साथ बिताई थीं ।

तमाम मुखालफत के बावजूद उसे कुछ होने लगा । वो उसकी - जिसे वो गालियों और कोसनों से नवाज चुकी थी - कल्पना अपने पहलू में करने लगी ।

किसी करिश्माई तरीके से वो लौट आये तो वो क्या करेगी ?

दुत्कार देगी ?

मुंह नोच लेगी ?

नहीं । बांहों में भर लेगी, कलेजे से लगा लेगी, भले ही वो तमाम माल पानी उजाड़ के लौटा हो ।

खयाल से ही उसके दिल की धड़कन तेज होने लगी, अनजाने में वो अपनी जांघों को आपस में मसलने लगी और अपना वक्ष सहलाने लगी ।

ऐसी ही दीवानावार मुहब्बत थी नमिता को उस शख्स से, जो उसे दगा देकर, उसे मंझधार में छोड़कर भाग गया था ।

***

अगले रोज सुबह आठ बजे वो किचन में बैठी अपनी बनाई चाय चुसक रही थी ।

और सोच रही थी ।

क्या होगा उसका ?

कहां होगा कोठारी ?

क्या कर रही होगी लोकल पुलिस ?

शायद अखबार में नया कुछ छपा हो !

लेकिन अखबार तो उनके यहां आता नहीं था ।

उसने मेड को बुलाया ।

"मार्केट में जा ।" - उसने आदेश दिया - "और आज का अखबार ले के आ । न मिले तो पड़ोस में कहीं से मांग के ला ।"

मेड अखबार के साथ लौटी जो कि उसे मार्केट में ही मिल गया था ।

नमिता ने देखा अखबार के पहले पृष्ठ पर ही सदा की बाबत खबर थी जिसकी सुर्खी थी:

क्या गोरई के गुमशुदा व्यवसायी को लूटा गया था ?

उसने जल्दी-जल्दी सुर्खी के नीचे की खबर पढ़ी ।

पुलिस के हवाले से अखबार ने इस बात पर ज्यादा जोर दिया था कि वो लूट की वारदात थी जिसका विरोध करते हुए सदानन्द पुणेकर की जान गयी, लेकिन अखबार में दुर्घटना की सम्भावना को भी दरकिनार नहीं किया गया था ।

साथ में पुलिस का दावा छपा था कि वो बहत्तर घंटे में असलियत को उजागर करने में कामयाब हो जायेंगे ।

आखिर में छपा था कि वारदात की बाबत कमैंट करने के लिये मिसेज सदानन्द पुणेकर उपलब्ध नहीं थीं ।

तभी उसे फोन की घंटी सुनायी दी ।

अखबार बगल में दबाये वो ऊपर बैडरूम में पहुंची । वहां उसने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि घंटी बजनी बन्द हो गयी । बुरा-सा मुंह बनाती वो वापिस लौटने लगी तो घंटी फिर बजने लगी ।

उसने काल रिसीव की ।

"मिसेज पुणेकर !"

"स्पीकिंग ।" - वो सावधान स्वर में बोली ।

"मिसेज पुणेकर, मैं डाक्टर एसके जसवाल बोलता हूं पनवेल से । मैंने अभी आपके हसबैंड की बाबत पेपर में पढ़ा । पढ़कर यकीन करने को जी न चाहा । क्या वाकई..."

"जी हां ।"

"बहुत अफसोस हुआ । हैरानी है कि इतने सीजंड ऐंगलर के साथ ऐसा हादसा हुआ !"

"हादसा !"

"मेरे को पुलिस के लूट वाले वर्शन पर एतबार नहीं । जब पहले कभी ऐसी वारदात नहीं हुई तो अब भला क्यों हुई ?"

"कभी तो पहल होनी ही होती है ।"

"नो । आई कांट बाई इट । हादसा ही हुआ । मुझे दुख है कि मिस्टर पुणेकर के साथ हुआ । मिसेज पुणेकर, आप मुझे और मेरी वाइफ को अपने गम में शरीक समझिए और कोई सेवा हो तो बताइये ।"

"मैं बताऊंगी ।"

"आपके पास मेरा कांटेक्ट नम्बर है ?"

"जी हां, है ।"

"आप चाहें तो कुछ अरसे के लिये मेरी वाइफ आपके पास आ सकती है ।"

"मैं मशकूर हूं लेकिन अभी इस जहमत की जरूरत नहीं । होगी तो खबर करूंगी ।"

"निसंकोच !"

"जी हां ।"

"मैं फिर काल करूंगा ।"

"सो नाइस ऑफ यू सर ।"

लाइन कट गयी ।

उसके रिसीवर क्रेडल पर रखते ही घंटी फिर बज उठी ।

वो हिचकिचाई ।

फिर कोई सम्वेदना प्रकट करने वाला होगा ।

ऐसे फोन तो अब आते ही रहने थे । लेकिन सुने बिना गति भी तो नहीं थी ।

उसने फिर रिसीवर को क्रेडल पर से उठाया और कान से लगाया ।

"मिसेज पुणेकर ?" - पूछा गया ।

"बोल रही हूं ।"

"मैंने पुणेकर साहब की बाबत छापे में पढ़ा । बहुत अफसोस हुआ । अभी ये सोच के आपको फोन किया कि बंगले के डील की बाबत आपको मालूम होगा ।"

"कौन-सा बंगला ? कौन सा डील ? आप बोल कौन रहे हैं ?"

"मैं परांजपे । कैपिटल प्रापर्टीज से । मैडम, मैं फिगारो आइलैंड के बंगले की बात कर रहा था जिसकी खरीद की बाबत अपनी जिंदगी में पुणेकर साहब सोच रहे थे ।"

अपनी जिन्दगी में । ठहर जा कमीने । तेरे को गारंटी हो भी गयी थी कि वो इस दुनिया में नहीं थे ।

"तो ?" - प्रत्यक्षत: वो बोली ।

"क्या सोचा ? उन्होंने नहीं सोचा तो आपने क्या सोचा ?"

"अभी कुछ नहीं सोचा ।" - वो रुखाई से बोली ।

"आपको डील की बाबत जानकारी तो है न ?"

"डील की बाबत है, आपकी बाबत नहीं है, आपकी फर्म की बाबत नहीं है ।"

"जो जानकारी नहीं है, वो मैंने आपको अब दे दी न, मैडम ।"

"अब क्या चाहते हो ?"

"यही जानना चाहता हूं कि उनकी. ..गैरहाजिरी में. ..उनकी जगह आप कोई डिसीजन लेंगी या नहीं ?"

"आपको जल्दी है डिसीजन की ?"

"है न ! मैं उस प्रॉपर्टी को पुणेकर साहब के लिये... आप लोगों के लिये होल्ड किये हूं । कल के बाद मैं उसे होल्ड किये नहीं रह सकता, इसलिये कोई इमीजियेट फैसला जरूरी है । इसीलिये मैंने आपको फोन लगाया जबकि मैं जानता हूं कि ऐसी बातें करने का ये कोई मुनासिब वक्त नहीं है । अभी अगर आप..."

"हमने उस बंगले का खयाल छोड़ दिया है ।"

"ये आपका फाइनल फैसला है ?"

"हां ।"

"तो फिर कहां शिफ्ट कर रही हैं ?"

"शिफ्ट ?"

"हां ।"

"काहे को ?"

"आपको मालूम है काहे को ।"

"नहीं, मुझे नहीं मालूम ।"

"ठीक है फिर ।"

लाइन कट गयी ।

नमिता ने भी रिसीवर वापिस क्रेडल पर रखा और फिर वहीं एक कुर्सी पर बैठ गयी ।

उसके लिये ये भी बुरी खबर थी कि फिगारो आइलैंड की जिस प्रॉपर्टी पर उसकी निगाह थी, उसकी खरीद की बाबत अभी उसने कुछ नहीं किया था । किया होता तो वो बंगला अब उसका होता । सदा की बैंकों से नकद निकासी की बाबत जानकर उसे उम्मीद हुई थी कि शायद उसने वो रकमें बंगले की कैश पेमेंट करने के लिये निकाली थीं लेकिन नहीं, वो तो उसने बाजरिया मनी बैल्ट कोठारी को परोसने के लिये निकाली थीं ।

कोठारी के खिलाफ उसके जज्बात फिर भड़के ।

क्यों जो कुछ हो रहा था, कोठारी के हक में हो रहा था ?

***

एसीपी मनोहर पावटे की वयोवृद्ध डाक्टर देशपाण्डे से उसके सिद्धार्थ नगर, वरली स्थित आवास पर मुलाकात हुई ।

वहां डाक्टर देशपाण्डे के ग्राउन्ड और फर्स्ट फ्लोर पर नीचे-ऊपर दो फ्लैट थे । क्लीनिक जब चलता था तो नीचे के फ्लैट में चलता था और ऊपर उसका आवास था जहां के ड्राइंगरूम में उसने पावटे को बिठाया ।

“यस ?” - डाक्टर बोला ।

“आपको सदानन्द पुणेकर के बारे में खबर लगी ?” - पावटे ने पूछा ।

“हां भई, लगी । अखबार से लगी ।”

“जब आपने अपनी प्रैक्टिस से वालंटियरी रिटायरमेंट नहीं ली थी तो वो आपके रेगुलर पेशेंट थे ?”

“हां ।”

“काफी अरसे से ?”

“हां ।”

“फिर तो वाकफियत भी होगी ?”

“उतनी ही जितनी कि किसी भी डाक्टर की अपने पुराने पेशेंट से होती है ।”

“सुना है कार्डियाक केस थे ?”

“ठीक है ।”

“पहले भी हार्ट अटैक झेल चुके थे ?”

“ठीक सुना है ।”

“आपको उनकी फिशिंग की रुटीन की भी खबर थी ?”

“हां । फिशिंग का बहुत शौक था मिस्टर पुणेकर को । टाइम होता तो तीन सौ पैंसठ दिन फिशिंग करते और फिशिंग के अलावा कुछ न करते ।”

“परसों सुबह वो अपनी हमेशा की रुटीन के तौर पर फिशिंग के लिये निकले थे । आपकी राय में क्या उन्हें बोट पर हार्ट अटैक हुआ हो सकता है ?”

“भई, हार्ट अटैक का कोई शिड्यूल, कोई कैलेंडर तो होता नहीं, हार्ट अटैक कभी भी हो सकता है, कहीं भी हो सकता है ।”

पावटे को लगा डाक्टर जान-बूझकर गोल-मोल, टालू जवाब दे रहा था ।

“लेकिन” - वो जिदभरे स्वर में बोला - “मिस्टर पुणेकर के केस में ये सम्भावना ज्यादा थी !”

“क्यों ?”

“आप उनके डाक्टर थे, आपको मालूम होना चाहिये ।”

“क्या मालूम होना चाहिये ?”

पावटे ने एक फरमायशी आह भरी ।

“सुना है” - फिर बोला - “उनका लाइफ स्टाइल आ बैल मुझे मार जैसा था !”

“कैसा था ?”

“खुद मुसीबत मोल लेने जैसा था !”

उसने तुरंत जवाब न दिया, वो कुछ क्षण खामोश रहा और फिर बोला - “तुम पुणेकर की मैडीकल हिस्ट्री के बारे में क्या जानते हो ?”

“खास कुछ नहीं ।” - पावटे तनिक हड़बड़ाये स्वर में बोला - “हम सिर्फ वही जानते हैं जो पूछताछ से, खास तौर से उनकी बीवी से पूछताछ से, मालूम हुआ ।”

“क्या मालूम हुआ ?”

“सर, गुस्ताखी माफ, आप तो मेरे से ज्यादा सवाल पूछ रहे हैं ।”

“जवाब दो ।”

“सुना है मिस्टर पुणेकर को दो बार हार्ट अटैक हो चुका है । एक शादी से थोड़ा पहले और दूसरा अभी कोई एक-सवा साल पहले ।”

“ऐसा सुना है तुमने ?”

“जी हां ।”

“बीवी से ?”

“जी हां ।”

“हूं ।”

वो फिर खामोश हो गया ।

“सर, मैं...”

“चाय पीओगे ?”

“जी !”

“चाय बनाना जानते हो ?”

“सर, बनाना तो जानता हूं लेकिन...”

“पीछे किचन है । बना के लाओ । मेरे लिये भी । तब तक मैं जवाब सोचता हूं ।”

“यस, सर ।”

भुनभुनाता हुआ वो किचन में गया ।

चाय बनाये ! मुम्बई पुलिस का असिस्टेंट कमिश्नर बुढऊ के लिये चाय बनाये ?

सत्तर से ऊपर का जान पड़ता है - कुढ़ते हुए उसने सोचा - मेरी उम्र का होता तो मैं पता नहीं क्या कर बैठता ।

चाय के साथ वो वापिस लौटा ।

“थैंक्यू ।” - डाक्टर यूं सहज भाव से बोला जैसे पावटे का उसके घर में आकर उसके लिये चाय बनाना रोजमर्रा की बात हो ।

तब उसने बम शैल छोड़ा ।

“पुणेकर को कभी कोई हल्का-भारी कैसा भी - हार्ट अटैक नहीं हुआ था ।”

पावटे ने तभी चाय का घूंट भरा था, चाय उसके मुंह से निकलकर वर्दी पर गिरते-गिरते बची ।

“जी ! क्या फरमाया आपने ?”

“पुणेकर वाज नाट ए हार्ट पेशेंट । ही नैवर हैड ए हार्ट अटैक । लाइफ स्टाइल रिलेटिड बहुत अलामतें उसे थीं, हार्ट की फंक्शनिंग में भी कभी कोई छोटा-मोटा नुक्स डिटेक्ट होता था जो कि उम्रदराज हैवी ड्रिंकर्स में, हैवी ईटर्स में आम बात होती है लेकिन दिल का दौरा उसे कभी नहीं पड़ा था ।”

“तो फिर वो ऐसा कहता क्यों था ? उसके जानने वाले, खुद उसकी बीवी, ऐसा क्यों कहते थे ? मुझे पहले हार्ट अटैक की बाबत तो ज्यादा कुछ सुनने को नहीं मिला है, लेकिन दूसरे की बाबत तो मैंने सुना है । अगर उसे अटैक नहीं हुआ था तो क्यों वो हास्पीटल केस बना था ? क्यों वो नर्सिंग होम में भरती रहा था ? क्यों वो वहां एक अरसा आपकी मुतवातर देखरेख में रहा था ?”

“ये जो तुम पूछ रहे हो, वो लगता एक सवाल है, लेकिन असल में कई सवाल हैं और हर सवाल का अपना, जुदा, जवाब है । पहले वो हास्पीटल केस क्यों बना ? ऐसा तब हुआ था, जब उसने एक पूरा दिन पिकनिक के तौर पर अपनी बीवी के साथ अपनी मोटरबोट पर गुजारा था । और होने के पीछे वजह कई थीं । मसलन पिछली रात इतनी पी थी कि उस रोज हैंगोवर महसूस कर रहा था । हैंगोवर की वजह से खाया-पिया कुछ नहीं और, बीवी कहती है कि, बोट पर पूरी बोतल पी गया । ऊपर से उस रोज चिलचिलाती धूप थी, जो अकेली ही किसी को धराशायी कर देने के लिये काफी थी । इन तमाम बातों का सामूहिक नतीजा ये हुआ कि एकाएक कोलैप्स कर गया, लेकिन उसके एग्जामिनेशन पर पाया गया था कि उसे कोई कोरोनेरी डैमेज, आम जुबान में जिसे हार्ट अटैक कहते हैं, नहीं हुआ था । उसे किसी स्पेशल ट्रीटमेंट की जरूरत नहीं थी । जरूरत थी तो सिर्फ रैस्ट की ।”

“रेस्ट के लिये नर्सिंग होम में भरती था ?”

“डिएडिक्शन के लिये । एक्सैसिव अल्कोहल अब्यूज का असर दूर करने के लिये । रैस्ट तो अपने आप हो ही जाता ।”

“आप ये कहना चाहते हैं कि आपने उसका अल्कोहलिज्म का इलाज किया था ?”

“अल्कोहालिक तो वो एक मुद्दत से था और उसकी ये हालत इलाज से बाहर थी क्योंकि वो बाज नहीं आता था, अपने पर कन्ट्रोल करने की कोई मंशा नहीं जताता था, समझता था जैसा चल रहा था बढ़िया चल रहा था ।”

“तो ?”

“उसको लिवर की खराबी के लिये नर्सिंग होम में भरती होना पड़ा था ।”

“ओह !”

“तुम्हारी जानकारी के लिये लिवर मानव शरीर का सबसे बड़ा अंग होता है और उसमें खुद को ठीक कर लेने की अद्भुत क्षमता होती है । लिवर को आधा काट के फेंक दिया जाये तो भी काम करता है । तीन चौथाई खराब हो तो भी परहेज से, इलाज से ठीक हो जाता है ।”

"दैट्स ग्रेट !"

"वो भी ठीक हो गया था । उसे इस वार्निंग के साथ नर्सिंग होम से डिस्चार्ज किया गया था कि उसने अपनी ड्रिंकिंग पर कन्ट्रोल रखना था । या तो पीनी ही नहीं थी या मर्यादा में पीनी थी ।"

"वार्निंग पर अमल किया ?"

"कहां किया ! नहीं किया । यही नहीं, इस बात को भी मुकम्मल तौर से छुपाकर रखा कि ओवरड्रिंकिंग की वजह से ही उसका लिवर खराब हुआ था, वो खड़े पैर कोलैप्स कर गया था और मरते-मरते बचा था । लेकिन नर्सिंग होम की लम्बी हाजिरी का उसने कोई तो जवाब देना था ।"

"क्या जवाब दिया ? ये कि हार्ट अटैक आ गया था ?"

"हां ।"

"ये तो एक गुनाह छुपाने के लिये उससे बड़ा गुनाह कबूल करने जैसा काम हुआ ?"

"ऐग्जैक्टली ।"

"लेकिन उसकी बीवी से तो असलियत छुपी नहीं रह सकती थी, उसे तो असल बात यकीनन मालूम थी, उसने उसके कनफर्म्ड हार्ट पेशेंट होने की तसदीक क्यों की ? उसे तो मालूम होना चाहिये था कि पुलिस को हकीकत की खबर लग के रहनी थी ।"

"वो वही तो बताती जो उसे बताया जाता !"

"यानी कि अपनी तरफ से बीवी ने जो कहा था, सच कहा था ?"

"हां । नर्सिंग होम में मरीज हो तो मरीज के खैरख्वाह डाक्टर से ही तो पूछेंगे कि उसे क्या हुआ था ! डाक्टर कहता कि मरीज को हार्ट अटैक हुआ था तो क्योंकर वो खुद एग्जामिन करके देखते कि ऐसा था या नहीं !"

"आपने बीवी से कहा कि पुणेकर के कोलैप्स कर जाने की वजह हार्ट अटैक थी ?"

"मरीज के इसरार पर । पुणेकर की जिद पर । उसने ऐसा कहलवाया इसलिये कहा और आइन्दा भी उसके राज को राज रखा ।"

"अब तो न रखा !"

"दो वजह से । एक तो पूछने वाली पुलिस है, पुलिस का आला अफसर है । दूसरे, अब क्या फर्क पड़ता है ? जिसका राज था जब वो ही नहीं रहा तो अब असलियत जुबान पर लाने से उसका क्या बिगड़ जाने वाला है ?"

"आपको यकीन है कि वो नहीं रहा ?"

"भई, अखबार की खबर तो यही कहती है । असल बात कुछ और है तो तुम बोलो ।"

"नहीं, असल बात कुछ और नहीं है । हालात का इशारा साफ इस तरफ है कि, हार्ट अटैक ऑर नो हार्ट अटैक, वो खत्म है । पहले हमारी एक थ्योरी ये थी कि शायद फिरौती के लिये उसको अगवा किया गया था लेकिन अब उस थ्योरी में कोई दम हमें नहीं दिखाई

देता क्योंकि अभी तक फिरौती की कोई मांग सामने नहीं आयी है । अगवा हुआ होता तो चौबीस घंटे के भीतर फिरौती की मांग होती ।"

"यू आर राइट देयर ।"

"बहरहाल बात कुछ और हो रही थी ।"

"हां । बात ये हो रही थी कि उसे हार्ट अटैक नहीं हुआ था, उसका लिवर खराब हो गया था, इस बात में मैं उसका राजदां था ।"

"लेकिन इस प्रपंच की वजह क्या थी ? वो अपने आपको लिवर की बीमारी से उबरा भी बोलता तो कौन-सी तबाही आ जाती !"

"वो क्या है कि पहले मैं भी यही समझा था कि वो लिवर का, अपनी अल्कोहलिज्म का, नाम इसलिये नहीं लेना चाहता था कि उसकी बीवी उसे हरगिज वैसी बेतहाशा न पीने देती जैसी पीने का कि वो आदी था । हार्ट के पेशंट को मर्यादा में ड्रिंक करने की पाबन्दी नहीं होती इसलिये उसने लिवर वाली बात छुपाकर रखी और हार्ट अटैक वाली स्टोरी पेश की । लेकिन असल में ये बात भी नहीं थी ।"

"ये बात भी नहीं थी ?"

"हां ।"

"तो और बात क्या थी ?"

"और बात ये थी कि पुणेकर बेतहाशा पी पी कर नपुंसक हो गया था ।"

"जी !"

"ही वाज सैक्सुअली इमपोटेंट ।"

पावटे हैरान शक्ल बनाये खामोश बैठा रहा ।

"अपनी नपुंसकता छुपाने के लिये उसने हार्ट अटैक का बहाना किया । लिवर की अलामत में सैक्स करने पर पाबन्दी नहीं है, ठीक हो जाने पर तो बिल्कुल भी पाबन्दी नहीं है, लेकिन मैसिव हार्ट अटैक के बाद पेशेंट को ऐसी हिदायत दी जाती है कि वो जोश न खाये इसलिये उसने अपने लिये बीवी से अलग बैडरूम ठीक कर लिया । नर्सिंग होम से डिस्चार्ज होकर जब वो घर गया था तो अपने प्रपंच को मजबूती देने के लिये शुरू में तो वो ग्राउन्ड फ्लोर के एक बैडरूम में सोता रहा था, ताकि उसे सीढ़ियां न चढनी पड़ें । बाद में तबीयत सुधर गयी बताकर वो ऊपर मास्टर बैडरूम में गया था ।"

"तो ये वजह थी बीवी का उसके बाजू में अलग बैडरूम होने की ?"

"हां । कभी-कभार फिर भी होशियारी आ जाती होगी तो वो या बीवी को अपने पास बुला लेता होगा या खुद उसके पास चला जाता होगा ।"

"कभी-कभार ही तो ! आम तौर पर दोनों अलग अलग सोते थे ?"

"हां । ताकि उसका बहाना बरकरार रहता कि पोस्ट कोरोनेरी उसे लम्बे आराम की जरूरत थी और सैक्स उसके लिये वर्जित था । यूं उसके अपने स्वाभिमान की, अपनी ईगो

की भी हिफाजत होती थी । इससे जाहिर होता था कि वो तो सैक्स करने के लिये मरा जाता था - यानी कि सक्षम था - लेकिन पाबन्दी ऐसा नहीं करने देती थी ।"

"इसका तो ये मतलब हुआ कि बीवी भी एक लम्बे अरसे से रति सुख से वंचित थी !"

"हां ।"

"पति के साथ !"

"क्या कहना चाहते हो ?"

"सोचिये ।"

"मैं नहीं सोचना चाहता । नमिता एक भली औरत है, निष्ठावान पत्नी है । तुम पुलिस वाले हो, कोई पुलिस वाला ही ऐसी वाहियात बात को हवा दे सकता है कि बीवी ने अपनी सैक्स किक्स के लिये कोई दूसरा घर तलाश कर लिया था ।"

"आई एम सारी ।"

"यस । बी सो ।"

"आई एम । मेरा जोर इस बात पर था..."

"छोड़ो अब वो बात ।"

"बिल्कुल तो नहीं छोड़ सकता । कुछ तो पूछना ही पड़ेगा । मैं पुलिस इनक्वायरी पर यूं पिकनिक पर तो नहीं हूं । चाय बनाने तो यहां नहीं आया था ।"

"मैं" - डाक्टर का स्वर शुष्क हो उठा - "शर्मिंदा हूं कि मैंने तुम्हें चाय बनाने के लिये प्रेरित किया ।"

"नहीं - नहीं, मैं शर्मिंदा हूं कि वो बात मेरे मुंह से निकल गयी । सारी बोलता हूं ।"

"मुझे अलजाइमर्स की प्राब्लम है । गैस आन करके जलाना भूल जाता हूं, इस्तेमाल करके बुझाना भूल जाता हूं इसलिये..."

"मैं दिल से सारी बोलता यूं जनाब । पुलिस की नौकरी ही ऐसी है, नाजायज बात खामखाह मुंह से निकल जाती है ।"

वो खामोश रहा ।

"कब से मिया-बीवी में जिंसी ताल्लुकात नहीं हैं ?"

"साल से ऊपर हो गया है ।"

"कब तक पुणेकर समझता था कि वो ये भरम बनाये रख सकता था ? आप बीवी को चरित्रवान बताते हैं तो इतना अरसा गुजर जाने के बाद कभी वो भी तो अग्रेसिव हो सकती है ? वो भी तो हमबिस्तर होने की जिद कर सकती है ?"

"हां, ये अन्देशा उसे भी बराबर था । लेकिन उसे ये भी तो उम्मीद थी कि देर सवेर वो नार्मल हो जाने वाला था ।"

"कैसे ? जादू के जोर से ?"

"ट्रीटमेंट से ।"

“आपका मतलब है नपुंसकता का वो कोई ट्रीटमेंट ले रहा था ?”

“हां ।”

“आपसे ?”

“नहीं भई । मैं उस किस्म की बीमारियों का डाक्टर नहीं हूं ।”

“तो किससे ?”

“सैक्सालोजिस्ट से ।”

“कामयाबी की कोई उम्मीद थी ?”

“मुझे तो नहीं थी ।”

“वजह ?”

“वजह ये है कि उसकी प्रॉब्लम फिजीकल ही नहीं, साइकालोजीकल भी थी । वो उम्रदराज शख्स था, बीवी कड़क नौजवान है, समझता था कि एक हमउम्र की तरह वो बीवी की शारीरिक भूख नहीं मिटा सकता था । इस अपराधबोध के नीचे दबा वो अपनी बची-खुची सक्रियता भी खो बैठता था ।”

“ओह !”

“उसकी यही ट्रेजडी थी कि शराबखोरी की वजह से नपुंसकता गले पड़ी और नपुंसकता की शर्मिन्दगी शराब में घोलने लग गया ।”

“और ज्यादा पीने लगा ?”

“हां ।”

“नपुंसकता को स्टेट आफ बॉडी से ज्यादा स्टेट आफ माइन्ड बताया जाता है । शारीरिक बीमारी से ज्यादा मानसिक बीमारी बताया जाता है । आपने भी कहा कि उसकी प्रॉब्लम फिजीकल ही नहीं, साइकालोजीकल भी थी । ऐसे शख्स के लिये आपने साइकालोजीकल काउन्सलिंग तजवीज न की ?”

“की न ! एक टॉप के साइकालोजिस्ट से उसे अपॉइंटमेंट लेकर दी । उसने दो सैशन अटेंड किये और जाना बन्द कर दिया ।”

“वजह ?”

“न बताई ।”

“इस बात पर एतबार नहीं बना होगा कि उसकी प्रॉब्लम साइकालोजीकल थी !”

“शायद ।”

“शादी क्यों की ?”

“उसी वजह से जो उसे महंगी से महंगी विस्की पीने, महंगे से महंगा सिगार पीने, महंगे से महंगा डिनर करने को प्रेरित करती थी ।”

“महंगी, खास औरत की ललक की वजह से शादी की ?”

"और क्या ! सारे विलासी पुरुष ऐसे होते हैं । अपनी हवस को, अपनी ख्वाहिश को तरजीह देते हैं; अपनी लिमिटेशंस को, अपने हैंडीकैप्स को नजरअंदाज करते हैं । नहीं समझते कि बुढ़ापे में नौजवान लड़की से शादी करना किसी किताब को बीच में से पढ़ना शुरू करने की तरह होता है, बल्कि औरों के पढ़ने के लिये किताब पर लाने की तरह होता है ।"

"बहरहाल दूसरे हार्ट अटैक को तो उसने अपनी नपुंसकता को कवर करने का जरिया बनाया, पहली बार क्यों झूठ बोला ?"

"वो भी उसकी स्ट्रेटेजी थी, मछली के लिये चारा था ।"

"मछली यानी कि नमिता ?"

"और कौन ? एक हुस्न की मलिका को, जिसके सब दीवाने हों, उसमें कोई अट्रैक्शन दिखाई देनी चाहिये थी या नहीं ?"

"चाहिये थी ।"

"आधी सदी पार कर चुके शख्स में क्या अट्रैक्शन दिखाई देती उसे ?"

"दौलत ।"

"करैक्ट । और खाविन्द की दौलत औरत के हाथ कैसे आती है ?"

"खाविन्द को खो कर ।"

"यू सैड इट, माई डियर । नमिता को पहले हार्ट अटैक की कहानी उसने इसलिये सरकाई कि उसे एहसास होता कि शादी के बाद वो कभी भी जान से जा सकता था और वो उसकी तमाम असैट्स की मालकिन बन सकती थी ।"

"ओह !"

"हर औरत आदतन धनदीवानी होती है । पुणेकर ने ऐन करैक्ट चारा चुना था, जिसे कि मछली निगल भी गयी थी । साथ में दूसरे हार्ट अटैक की कहानी होने वाली विधवा की उम्मीदों को और हवा देने के काम भी आयी ।"

"लेकिन जान से तो न गया वो ?"

"वो तो है ।"

"इसलिये भेज दिया गया ।"

"क्या ? क्या बोला ?"

"पुलिस को हर वारदात के हर ऐंगल पर गौर करना होता है । एक एंगल ये भी है कि शायद उसका कत्ल हुआ हो ।"

"बीवी इंतजार से आजिज आ गयी, इसलिये ?"

"हां ।"

"नमिता कत्ल कर सकती है ?"

"करा सकती है । आपने उसे हुस्न की मलिका कहा । हुस्न की मलिकाओं के एक इशारे पर तो वार हो जाती हैं ।"

"इशारा थामने वाला कोई कैंडीडेट है तुम्हारी निगाह में ?"

"है तो सही ।"

"कौन ?"

"एडवोकेट कपिल कोठारी ।"

"ओह, नो ।"

"आप जानते हैं उसे ?"

"खूब अच्छी तरह से । तभी तो.. .तुम्हारे पास कोई सबूत है उसके खिलाफ ?"

"नहीं । सिवाय इसके कि वो फरार है ।"

"प्लीज एक्सप्लेन ।"

पावटे ने कोठारी से ताल्लुक रखते वाकयात बयान किये ।

"भई" - सुनकर डाक्टर बोला - "इतनी सी बात पर तुम्हारा उसको फरार कहना तो गलत है । फरार कहना तो उसे पहले ही, बिना किसी सबूत के, मुजरिम करार देना हुआ । बड़ी हद तुम ये कह सकते हो कि वो क्वेश्चनिंग के लिये उपलब्ध नहीं है ।"

"चलिये, ऐसा ही सही ।"

"तुम पुलिस वालों की स्पेशलिटी बताई जाती है कि बटन हाथ लग जाये तो उस पर कोट टांकने की कोशिश करते हो । कोठारी के मामले में तुम ऐसा ही कर रहे हो ।"

"क्या करें !" - पावटे ने गहरी सांस ली - "पुलिस की नौकरी जो ठहरी । कभी केस खुद बनता है, कभी बनाना पड़ता है । मुजरिम न सूझे तो जो सूझे, उसके मुताबिक मुजरिम का तसव्वुर करना पड़ता है । बहरहाल आपने हमारी हार्ट अटैक वाली थ्योरी की तो टांग तोड़ दी । पुणेकर के किसी बुरे अन्जाम की वजह हार्ट अटैक नहीं हो सकती ।"

"हो भी सकती है । हट्टे-कट्टे, ऐन चौकस तन्दुरुस्ती वाले आदमी को भी तो हार्ट अटैक हो जाता है । हार्ट अटैक तो आसमानी बिजली की तरह है जो पता नहीं कब कहां आन गिरे ! लेकिन पुणेकर को अगर हार्ट अटैक हुआ है तो यकीन जानो वो पहला है, तीसरा नहीं ।"

"ठीक ।"

"तुमने आत्महत्या पर विचार किया नहीं जान पड़ता ।"

"आत्महत्या ?"

"हां ।"

"आपके खयाल से पुणेकर ने आत्महत्या की होगी ?"

"भई, तुम्हीं ने तो कहा था कि पुलिस को केस को हर सम्भावना पर विचार करना पड़ता है । ये भी तो सम्भावना है ।"

"आत्महत्या किसलिये ?"

"नपुंसकता से आजिज आ गया । शर्मिंदगी की, हत्तक की इन्तहा हो गयी ।"

"जो काम घर बैठे हो सकता था उसके लिये सुबह सवेरे, मुंह अंधेरे उठकर बीच समन्दर जाने का क्या मतलब ?"

"सनक । जुनून । बीवी के लिये कम-से-कम जहमत पैदा करने की ख्वाहिश ।"

"हूं । मैं सोचूंगा इस बाबत भी । आप एक बात बताइये ।"

"पूछो ।"

"आपको पुणेकर से ताल्लुक रखती इतनी बातें कैसे मालूम हैं, जबकि एक अरसे से आप कैनेडा में हैं ।"

"फोन से सम्पर्क बना रहता था न !"

"पुणेकर आपको कैनेडा फोन करता था ?"

"अक्सर ।"

"अभी आप वापिस कैसे लौटे ?"

"मैं वहां का माहौल देखने गया था, रहन-सहन जांचने गया था, ये परखने गया था कि मैं वहां रह सकता था या नहीं ! मैं टूरिस्ट वीसा पर गया था जो कि इतने ही टाइम का था । अब माइग्रेशन के लिये अप्लाई करूंगा ।"

"आई सी । मैं जरूरत महसूस करूं तो क्या फिर हाजिर हो सकता हूं ?"

"जरूरत महसूस होगी ?"

"हो सकती है । वर्ना समझियेगा कि चाय बनाने के लिये आया । आपकी जानकारी के लिये मैं आमलेट भी बहुत उम्दा बनाता हूं ।"

"अभी तक मिजाज दिखा रहे हो कि मैंने तुम्हें चाय बनाने को बोला ?"

"ओह, नो, सर । नैवर, सर । यकीन कीजिये मेरा ।"

"ठीक है । जब मर्जी आना ।"

"थैंक्यू ।"

***

दोपहरबाद नमिता ने नाना मराठे के फोन पर काल लगायी ।

तत्काल उत्तर मिला ।

"मैं तुम्हें ही याद कर रहा था ।" - वो बोला - "तू मेरे को अपना कोई कांटेक्ट नम्बर तो दियेली नहीं थी, इस वास्ते..."

"सारी ।" - वो व्यग्र भाव से बोली - "क्या खबर है ?"

"तेरी वो चिट्ठी तो जिसके नाम थी, उसने सुबह सवेरे ही कलैक्ट कर ली थी ।"

"ऐसा ?"

"हां । तू मेरे को गलत बोली कि जीपीओ दस बजे खुलता था । वो पब्लिक डीलिंग के वास्ते दस बजे खुलता था, बाकी कामों के वास्ते - खास तौर से सॉर्टिंग के वास्ते - आठ बजे खुलता था इसलिये वो कपिल कोठारी चिट्ठी को पहले ही ले गया ।"

"ये पक्का है कि चिट्ठी वो ही लेकर गया ?"

"हां ।"

"कैसे पक्का है ?"

"जीपीओ के पोस्ट मास्टर की मार्फत आई डाक बाहर एक नोटिस बोर्ड पर टांग दी जाती है, कोठारी ने क्योंकि उसे सॉर्टर के पास जाकर टेम से पहले लिया इसलिये सॉर्टर साबित करने को बोला कि वो कपिल कोठारी था । तब, सॉर्टर कहता है कि, कोठारी ने उसे अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाया था ।"

"ओह ! तो डैडियो, अब तुम्हें उस चिट्ठी के वास्ते कोठारी को थामने का है ।"

"वो अब मुमकिन नहीं है ।"

"क्या ?"

"उसे पहले ही किसी और ने थाम लिया ।"

"और किसने ?"

"ऊपर वाले ने ।"

"क्या मतलब ?"

"खल्लास !"

"हे भगवान ! क.. .कैसे ? मालूम पड़ा कुछ ?"

"पड़ा न ! बोलता है न !"

"हां, प्लीज ।.. .नहीं, पहले ये बोलो तुम हो कहां ?"

"खेड में ।"

"क्या ! लौट भी आये ?"

"मैं गया ही नहीं ।"

"क्या ?"

"मुम्बई से मैंगलोर की डेली फिलाइट नक्को । बैंगलोर जाके उधर से साढ़े तीन सौ किलोमीटर दूर मैंगलोर जाना पड़ता पण बैंगलौर का भी टिकट न मिला ।"

"तो...तो क्या किया ?"

"बैंगलोर में अपना एक खास आदमी । उसको फोन लगाया । उसका आगे मैंगलौर में एक खास आदमी । उसने उसको फोन लगाया । बोले तो तुम्हारा काम बराबर हुआ ।"

"कपिल कोठारी किधर खल्लास हुआ ?"

"मैंगलोर में ही । कोस्टल हाइवे पर ।"

"कैसे ?"

"एक्सीडेंट किया न !"

एक्सीडेंट ! सोनाटा ! हे भगवान !

"खबर चौकस है ?"

"सौ टांक ।"

"ठीक से बोलो, क्या हुआ ! क्या खबर है तुम्हारे पास एक्सीडेंट की ?"

"एकदम नवीं सोनाटा पर कोस्टल हाइवे पर जाता था । गाड़ी कन्ट्रोल से बाहर । रेलिंग तोड़कर नीचू । नीचू समन्दर से बाहर निकली बहुत बड़ी चट्टान । अपुन का भीड़ू बोलता है कि गाड़ी का फ्रंट खील खील हो गया ।"

"भीतर से कपिल कोठारी मरा हुआ निकला या बाद में मरा ?"

"निकला ही नहीं ।"

"क्या !"

"कार चट्टान से टकराई तो डिरेवर कार से फिंक गया और आगे समुद्र में बह गया ।"

हे भगवान ! ऐन डुप्लीकेट हादसा ! जो माहिम क्रीक के पुल पर डाक्टर सिंगला के साथ बीती ऐन वैसी ही मैगंलोर के कोस्टल हाइवे पर एडवोकेट कपिल कोठारी के साथ बीती ।

"लेकिन" - वो बोली - "जब लाश न मिली तो शिनाख्त कैसे हुई ?"

"उसके कोट से हुई जो उसने बोले तो गर्मी महसूस की तो कार की पिछली सीट पर डाल दिया । कोट में उसका ड्राइविंग लाइसेंस था । कई विजिटिंग कार्ड थे, दो क्रेडिट कार्ड थे ।"

"चिट्ठी !"

"अपना भीड़ू बराबर चौकस किया । और कुछ नहीं था ।"

उसने पढते ही जला दी होगी, जैसा कि उससे अपेक्षित था ।

या किसी और जेब में रखी होगी ।

लिहाजा चिट्ठी का सस्पेंस बरकरार था ।

"हल्लो !" - नाना मराठे की आवाज आयी - "लाइन पर है ?"

"हां ।"

"अभी तेरा काम तो हो गया, मेरा कब होगा ? मेरे को बासठ किलो वेट कब झेलने का है ?"

"बोलूंगी ।"

"और तू मुम्बई में है किधर ? क्या करती है ? शादी बनाया ?"

"सब बोलूंगी न !"

"ठीक है, बोलना । पण एक बात चौकस करके सुन ।"

"बोलो ।"

"मैंने तेरे से नहीं पूछा कोठारी कौन है जिसको तू चिट्ठी लिखा और क्यों तेरे को अपना ही चिट्ठी वापस मांगता था, पण तेरा काम बराबर करवाया । मैं पहले भी नहीं पूछा कि तेरे डॉक्टर करके भीडू को चकरी क्यों मांगता था पण बरोबर इन्तजाम कराया । अभी तू मेरे को धोखा दिया तो..."

"मेरी मजाल नहीं हो सकती ।"

"अब फोन नम्बर बोल ।"

"खेड आ के बोलूंगी । अभी प्रॉब्लम है !"

उसने लाइन काट दी ।

कांपते हाथों से उसने एक सिग्रेट सुलगाया ।

तौबा ! जो सिलसिला राई जान पड़ता था, वो पहाड़ बनता जा रहा था ।

सिग्रेट के दो कश लगा के ही उसने उसे ऐश ट्रे में झोंक दिया और उठ खड़ी हुई ।

फोन की घंटी बजी ।

अप्रसन्न भाव से उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया ।

"मिसेज पुणेकर ?"

"हां ।" - वो बोली - "कौन ?"

"भौंसले बोलता हूं..."

भौंसले ! सम्भाजी भौंसले ! जिसने शनिवार शाम को कोठारी के सिखाये पढ़ाये सदा को तूफान की चेतावनी दी थी ।

"...पेपर में पुणेकर साहब की बाबत पढ़ा । पढ़ कर बहुत अफसोस हुआ । बहुत हैरानी हुई ।"

"हैरानी !"

"स्टॉर्म वार्निंग के बावजूद पुणेकर साहब फिशिंग के लिये निकले !"

"अच्छा वो !"

"जी हां, वो ।"

"भई, मैं तो सोई पड़ी थी जबकि वो निकल लिये थे । हो सकता है उन्हें समुद्र शांत लगा हो या कोई टिप मिली हो कि तूफान टल गया था ।"

"टिप कहां से मिलती ! जब तूफान वाली कोई बात ही नहीं थी..."

"उनको तो नहीं मालूम था न !"

"मैं कुछ और कह रहा हूं ।"

"क्या ? क्या कह रहे हैं ?"

"जब तूफान वाली कोई बात ही नहीं थी तो उसके टल गया होने की टिप कौन देता ?"

"तो उन्होंने सुबह सवेरे समुद्र को देखकर अपने तजुर्बे से ये नतीजा निकाला होगा ।"

“लेकिन ये भी तो हैरानी की बात है कि आपने उन्हें जाने दिया । आपने तो बहुत जिद से कहा था कि नहीं जाने देंगी क्योंकि तूफान सुनामी जैसा हो सकता था ।”

पीछा छोड़ साले लसूड़े !

“मेरी बद्किस्मती” - उसने अपने स्वर को रुआंसा बनाया - “कि मैं सोई रह गयी, कि मुझे उनके जाने की खबर न लगी ।”

“बलमा निकल गये...”

“क्या !”

“मुझे फिर भी हैरानी है उनके जाने की । वो तो मेरे सामने ही खयाल छोड़ बैठे थे, कह रहे थे जब सुबह निकलना ही नहीं था तो ड्रिंक का मजा मिट्टी करने का क्या मतलब !”

“आप हैरान न होइये, मिस्टर भौंसले, मैं आपकी हैरानी दूर कर देती हूं ।”

“अच्छा !”

“जी हां ।”

“वो कैसे ?”

“आपको असलियत बता के ।”

“असलियत ?”

“वो फिशिंग के लिये नहीं निकले थे, मैंने उन्हें बोट में लादा था और ले जाकर समुद्र में धक्का दे दिया था ।”

“क.. .क्या कह रही हैं आप ?”

“ऐन यही किया मैंने । मेरी बचपन से नौजवानी में विधवा होने की अभिलाषा थी ।”

“आप.. .आप नाराज हो रही हैं ।”

“जी नहीं । मैं तो खुशी से पागल हुई जा रही हूं । यूं विधवा होना क्या सबको नसीब होता है !”

“मैं.. .बन्द करता हूं ।”

“नहीं, नहीं । जारी रखिये । वकील की तरह जिरह कीजिये । मुझे बहुत अच्छा लग रहा है ।”

“आई एम सारी, मिसेज पुणेकर, लग रहा है जो मैंने कहा, वो मुझे नहीं कहना चाहिये था ।”

“अच्छा लग रहा है ।”

“मैं शर्मिंदा हूं । माफी चाहता हूं । कट करता हूं ।”

लाइन कट गयी ।

सन आफ बिच ! - रिसीवर को क्रेडल पर पटकती वो गुस्से से बोली ।

फिर फौरन संजीदा हुई ।

जो कुछ भौंसले ने कहा था, क्या वो उसे किसी और के आगे दोहरा सकता था ।
उसकी मजाल नहीं हो सकती थी ।
कैसे वो किसी को ये कहना अफोर्ड कर सकता था कि उसने पुणेकर को तूफान की गलत, फर्जी चेतावनी दी थी ?
जमा बकौल कोठारी, वो उसका खौफ खाता था ।
ठीक ।
वो नीचे पहुंची ।
बार पर जाकर उसने वोदका का एक ड्रिंक तैयार किया और उसके साथ सोफे पर ढेर हुई ।
कैसे ? कैसे दो मुख्तलिफ जगहों पर उसके दो करीबी लोगों का एक ही अंजाम हो सकता था ?
डाक्टर सिंगला का उसे नहीं पता था लेकिन कोठारी बहुत दक्ष ड्राइवर था, वो ऐसा गैरजिम्मेदाराना एक्सीडेंट नहीं कर सकता था । वो दक्ष तैराक था, वो खामखाह समुद्र में डूब कर नहीं मर सकता था ।
कोई और कहानी थी । जरूर कोई और कहानी थी ।
और कहानी क्या ?
उसने वोदका का एक घूंट भरा । फिर उसे और कहानी सूझी ।
पुलिस को भरमाने के लिये, उनसे पीछा छुड़ाने के लिये कोठारी ने वो एक्सीडेंट स्टेज किया था । जब कार समुद्र में गिरी थी, जरूर तब वो उसमें नहीं था । जरूर उसने वो सब इसीलिये किया था कि पुलिस न सिर्फ सदा के केस में उसकी तलाश बन्द कर देती, उसकी तलाश हमेशा के लिये बन्द हो जाती ।
चिट्ठी !
चिट्ठी कोठारी के पास थी या वो उसने नष्ट कर दी थी । वो मिलनी होती तो कोट की किसी जेब में से मिलती जहां कि, नाना ने बोला था, नहीं मिली थी । पुलिस के हाथ पड़ने से तो हजार गुणा अच्छा था कि वो चिट्ठी - अगर उसने नष्ट नहीं की थी - कोठारी के पास थी ।
मनी बैल्ट की तरह ।
जिसे सदा की तरह अब वो अपनी कमर के गिर्द बांधे होगा ।
उसे तनिक राहत महसूस हुई ।
वोदका की हर चुसकी के साथ उसका ये विश्वास पक्का होता चला गया कि कोठारी को कुछ नहीं हुआ था, वो हरामी वकील जहां था, सही सलामत था ।
तभी फोन की घंटी फिर बजने लगी ।

उस फोन की एक पैरेलल लाइन नीचे ड्राइंगरूम में भी थी लेकिन वो उन दिनों खराब थी; सदा रोज ठीक कराने को बोलता था, भूल जाता था ।

भुनभुनाती हुई वो फिर ऊपर पहुंची और उसने काल रिसीव की ।

"मैं" - आवाज आयी - "गणपति आटोमोबाइल्स चैम्बूर से प्रोपराइटर अनूप दीक्षित बोलता हूं, मैडम ।"

"यस !"

"मिस्टर पुणेकर के बारे में पेपर में पढ़ा । बहुत अफसोस हुआ । अभी कोई खोज खबर मिली ?"

"नहीं ।"

क्या कहना चाहता था ? क्यों फोन कर रहा था ?

"मैडम, मैं आपको बिल्कुल डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था । मैं बहुत मजबूरी में फोन कर रहा हूं..."

"क्या चाहते हैं ?"

"मैं कार की बाबत जानना चाहता था ।"

"कार की बाबत क्या जानना चाहते हैं ?"

"पुणेकर साहब ने कहा था कि वो शनिवार तक खबर कर देंगे कि कार रखेंगे या नहीं, लेकिन अब तो मंगलवार हो गया है ।"

"रखेंगे या नहीं क्या मतलब ?"

"पुणेकर साहब ने कहा था कि कार आपके लिये थी और आप शनिवार तक उसका ट्रायल लेकर ही फैसला करेंगी कि वो आपको पसन्द थी या नहीं !"

"मुझे न पसन्द होती तो ?"

"तो शनिवार शाम तक वो कार लौटा देते ।"

"इतनी महंगी कार आप ऐसे ट्रायल पर दे देते हैं ?"

"हर किसी को नहीं, मैडम, हर किसी को नहीं । और फिर इसलिये भी दी कि नापसन्दगी की कोई वजह ही नहीं थी ।"

"आप.. .आप ये कहना चाहते हैं कि कार की पेमेंट नहीं हुई हुई !"

"जी हां । फुल पेमेंट तो क्या, कोई डाउन पेमेंट भी नहीं, है, कोई बुकिंग अमाउंट भी नहीं है । लेकिन कस्टमर अगर मिस्टर पुणेकर जैसा हो तो हमें पेमेंट की फिक्र नहीं होती ।"

"ओह !"

"साहब ने आपको इस बाबत कुछ नहीं बताया ?"

"कहां बताया ?"

"तो फिर ?"

"मैं आपको एक-दो दिन में जवाब देती हूं ।"

“एक-दो दिन में ? मैडम, मुझे जवाब अभी चाहिये, क्योंकि इस वक्त मेरे पास उसका कस्टमर है । आप कार रखना चाहती हैं तो पेमेंट का चैक भिजवाइये, लौटाना चाहती हैं तो मैं राजवानी, को जिसने कि कार डिलीवर की थी, भेजता हूं ।”

“आई एम सारी, लेकिन इस वक्त दोनों काम नामुमकिन हैं ।”

“क्या मतलब ?”

“चैक तो मिस्टर पुणेकर ही दे सकते हैं जो, आप जानते हैं कि...”

“यस ! यस !”

“और कार को लौटाना मुमकिन इसलिये नहीं है क्योंकि परसों वो कार साहब ने अपने एक दोस्त को इस्तेमाल के लिये दे दी थी ।”

“दोस्त को दे दी थी !” - दीक्षित हाहाकारी लहजे से बोला - “ग्यारह लाख की टोटली अनपेड कार दोस्त को लोन दे दी थी !”

“मेरे खयाल से उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था, लेकिन अब तो हो चुका ।”

“तो अब मैं क्या करूं ?”

“कार के लौटने का इन्तजार कीजिये ।”

“कहां से लौटेगी ?”

नमिता हिचकिचाई । जो बात वो दरयाफ्त करता तो उसे वैसे ही मालूम हो जाती, उसको छुपाने का कोई फायदा नहीं था ।

“मैंगलोर से ।” - वो बोली ।

“क.. .क्या !”

“मैंगलोर से ।”

“वो तो... वो तो मुम्बई से हजार किलोमीटर दूर है ।”

“अच्छा ! इतना है ?”

“आपने ट्रायल के लिये हासिल हुई कार दो हजार किलोमीटर के राउंड ट्रिप के लिये उधार दे दी ?”

“मैंने नहीं, पुणेकर साहब ने ।”

“उन्होंने भी ऐसा जुल्म क्यों किया ?”

“उनकी कार रखने की मर्जी होगी ।”

“तो पेमेंट ?”

“परसों तक इन्तजार कीजिये । या पुणेकर साहब लौट आयेंगे या कार लौट आयेगी ।”

“मैं दुआ करता हूं - आपके लिये भी और अपने लिये भी - कि पुणेकर साहब ही लौट आयें - दो हजार किलोमीटर से ज्यादा चली हुई कार ब्रैंड न्यू की कीमत में कौन लेगा ?”

नमिता चुप रही ।

“देवा ! ये तो हवन करते हाथ जलने वाली बात हो गयी । मैडम, कार जल्दी लौट आये, या पुणेकर साहब जल्दी लौट आयें, तो भगवान के लिये खबर कीजियेगा ।”

“जरूर ।”

सम्बन्ध विच्छेद हो गया ।

नमिता ने गहरी सांस छोड़ी और असहाय भाव से गर्दन हिलाई ।

कल तक मैंगलोर वाले एक्सीडेंट की खबर अखबार में होती, फिर अनूप दीक्षित फोन न करता, खुद वहां आ धमकता ।

क्या कमाल का गेम खेला था सदानन्द पुणेकर ने ! उसकी पांच करोड़ की लाइफ इंश्योरेंस पर झाड़ू फेर गया था वैसा ही झाड़ू अपनी असैट्स पर फेर गया था और उसके लिये छोड़ गया था - वो भी अगर मिलते तो - एक हजार बारह रुपये साठ पैसे जमा एक हजार चार सौ सत्तासी रुपये चालीस पैसे जमा दस हजार रुपये और देनदारी छोड़ गया था ग्यारह लाख की ।

और उसे गरूर था कि उसने मर्द को उल्लू बनाया था ।

फिर उसे एक सुखद खयाल आया ।

कार इंश्योर्ड होती थी ।

बिक्री के बाद !

बिक्री तो हुई ही नहीं थी ।

शायद उससे पहले भी इंश्योर्ड होती हो !

मालूम करना पड़ेगा ।

बहरहाल कार के मामले में वो जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ सकती थी ।

वो जिम्मेदारी या अनूप दीक्षित की थी या पुणेकर की थी ।

और उसके पल्ले दो कीमती आइटम अभी भी पड़ सकती थीं ।

मोटरबोट, जो बीस लाख से कम नहीं थी ।

और वो कॉटेज, जो करोड़ से ऊपर का तो बराबर था ।

फिर उसे एक नया खयाल आया ।

कैपीटल प्रापर्टीज के परांजपे ने फोन पर कहा था कि वो फिगारो आइलैंड का बंगला खास पुणेकर साहब के लिये होल्ड किये था । कोई प्रापर्टी डीलर बयाने के बिना तो यूं प्रापर्टी होल्ड करके नहीं रख सकता था । उस बंगले का बयाना कम-से-कम भी होता तो लाखों में होता जिसका कि उस प्रापर्टी डीलर ने - परांजपे ने - कोई जिक्र ही नहीं किया था ।

बयाने की बाबत उसे मालूम करना चाहिये था ।

कहां पाया जाता था ये परांजपे ?

उसने डायरेक्ट्री में कैपीटल प्रापर्टीज की एंट्री निकाली । एंट्री के आगे जो नम्बर नोट था, उसने उस पर फोन किया । बिजी टोन !

आइन्दा पन्द्रह मिनट में उसने दस बार वो नम्बर मिलाया ।

हमेशा बिजी टोन मिली ।

उसने नाम के आगे लिखा पता पड़ा ।

पता गायकवाड़ नगर का था ।

ज्यादा दूर नहीं था ।

***

एसीपी मनोहर पावटे अपने ऑफिस में वापिस लौटा ।

उसने नगरकर को अपनी आमद की खबर दी तो वो फौरन उसके पास पहुंचा ।

"क्या खबर है ?" - पावटे बोला ।

"है तो सही खबर ।" - नगरकर ने उत्तर दिया - "बल्कि खबरें ।"

"क्या ?"

"फिंगरप्रिंट्स वालों ने अपनी रिपोर्ट दी है । मैं खुद कोठारी के काटेज पर गया था । पुणेकर के काटेज का भी दोबारा चक्कर लगाया ।"

"उसका किसलिये ?"

"मैं इस ताक में था कि कभी बीवी वहां न हो । इस वजह से एक सिपाही को मैंने निगाहबीनी पर लगाया हुआ था । उसने खबर की थी कि बीवी, नमिता पुणेकर, अपनी कार पर कहीं के लिये निकल गयी थी तो मैं वहां पहुंच गया ।"

"नतीजा ?"

"बढ़िया निकला न !"

"क्या ?"

"तरतीब से बताता हूं । पहले बोट की सुनिये । फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट की रिपोर्ट है कि बोट पर से जो उंगलियों के निशान उठाये गये थे, वो सब के सब सदानन्द पुणेकर के थे ।"

"शिनाख्त कैसे हुई ?"

"उसके काटेज में कई ऐसी चीजें थीं जिनको सिर्फ वो ही इस्तेमाल करता था । जैसे शेव का सामान, दवा की शीशियां, रीडिंग ग्लासिज का केस वगैरह । उन पर से उठाये, प्रिंट्स को निर्विवाद रूप से उसके फिंगरप्रिंट्स मान लिया गया था । बोट पर से उठाये गये सब प्रिंट्स उन प्रिंट्स से मिलते पाये गये थे ।"

"बोट पर और कोई निशान थे ही नहीं ?"

"उठाये जाने लायक नहीं थे । एक्सपर्ट का कहना है कि और निशान जान बूझकर पोंछ कर मिटाये या बिगाड़े गये हो सकते थे, लेकिन इस बाबत वो कोई गारन्टी नहीं कर सकता ।"

“आई सी ।”

“यही हाल कोठारी के काटेज के फ्रंट और बैक डोर का था ।”

“वहां से भी निशान पोंछे गये थे ?”

“हां । खास तौर से अगले और पिछले दरवाजे के हैंडल पर से । एक्सपर्ट को वहां की गारंटी है कि दोनों हैंडल को रगड़ कर जानबूझ कर पोंछा गया था ।”

“इसका मतलब है कि ऐसा होने के बाद से वहां कोई आया गया नहीं था - काटेज का निवासी भी नहीं - वर्ना उसकी उंगलियों के निशान वहां बने मिलते ।”

“हां ।”

“यानी कि कोठारी की गैरहाजिरी में कोई वहां गया !”

“ऐसा ही जान पड़ता है ।”

“भीतर कैसे दाखिल हुआ ?”

“वो एक बद्हाल काटेज है जिसमें एक बैड, एक सोफासेट और एक राइटिंग टेबल के अलावा कुछ नहीं है । सब सामान ऐसा खस्ता है कि कोई कबाड़ी भी लेने से पहले दस बार सोचेगा ।”

“टाइपराइटर !”

“बस, वो ही एक आइटम है जो कदरन अच्छी हालत में है ।”

“मतलब क्या हुआ इसका ?”

“यही कि कोई बड़ी बात नहीं कि कोठारी ही काटेज को लॉक करना भूल गया हो ।”

“या उसने परवाह ही न की हो कि उसके पीछे कॉटेज लॉक्ड था या नहीं था !”

“वो भी ।”

“उसकी गैरहाजिरी में कौन वहां आया, इसका कोई सुराग मिला ?”

नगरकर मुस्कराया ।

“लगता है मिला ।”

“पुख्ता सुराग मिला जिससे उस शख्स की शिनाख्त भी हुई ।”

“दैट्स वैरी गुड । कौन था वो शख्स ?”

“थी । ये देखिये ।”

नगरकर ने उसके सामने एक सोने का लम्बा बुन्दा रखा जिसके नीचे को लटकते हिस्से में एक मोती टंका हुआ था ।

“कीमती आइटम जान पड़ती है ।” - पावटे उसका मुआयना करता बोला - “कहां से मिली ?”

“कोठारी के काटेज के सोफे पर से । सोफे की पीठ और गद्दी के बीच की झिरी में से ।”

“किसकी है ?”

"नमिता पुणेकर की ।"

पावटे ने सकपकाकर सिर उठाया ।

"कैसे मालूम ?" - फिर बोला ।

"पुणेकर के काटेज की पहली मंजिल के मास्टर बैडरूम के बाजू के छोटे बैडरूम में - जो कि मैडम के इस्तेमाल में आता है, जहां कि हमने मैडम के सौन्दर्य प्रसाधन देखे थे - ड्रैसिंग टेबल की एक दराज में इसका जोड़ीदार मौजूद था ।"

"पहुंच कैसे बनायी ?"

"मैंने बोला न मैं काटेज से मैडम की गैरहाजिरी की ताक में था । उसकी गैरहाजिरी में मैं वहां पहुंचा तो नौकरों पर मैंने यही जाहिर किया कि मुझे नहीं मालूम था कि मैडम पर पर नहीं थी । फिर मैंने रोब में ऊपरी मंजिल का एक चक्कर लगाने की इच्छा जाहिर की जिसकी मुखालफत की किसी की मजाल न हुई । खानसामा जरूर बोला दबे स्वर में कि ऐसे कामों के लिये सर्च वारन्ट दरकार होता था, मैंने उसे झिड़क के चुप करा दिया कि मैंने सर्च नहीं करनी थी, ऊपर महज एक निगाह डालनी थी जिसमें उसकी मैडम भी घर होती तो कोई हुज्जत न करती । ऊपर जो निगाह मैंने डाली, उसका हासिल मैंने अभी बयान किया ।"

"वो तो है लेकिन इससे नतीजा क्या निकला ? ये कि नमिता कोठारी की गैरहाजिरी में उसके काटेज में गयी और सोफे पर, कुशन के पीछे की झिरी में बुन्दा गिरा आयी ?"

"करैक्शन । गयी और बुन्दा गिरा आयी ।"

"तुम्हारा मतलब है जरूरी नहीं कि गैरहाजिरी में ?"

"हां । बल्कि जो नक्शा मेरे जेहन में है, उसके तहत जरूरी है कि हाजिरी में । तभी तो वो सब कुछ हुआ जिसके बाद हीरोइन को 'ढूंढ़ो ढूंढ़ो रे साजना मेरे कान का बाला' कहना पड़ता है ।"

"लिहाजा जिस बात का हमें शक है, इस बुन्दे ने उसकी गारन्टी कर दी ! गारंटी कर दी कि पुणेकर की बीवी में और उसके वकील में नाजायज ताल्लुकात हैं ! नमिता वहां अपने यार से छुप के मिलने जाती थी !"

"और जहां पुणेकर के कत्ल का षड़यंत्र रचा गया था ।"

"कैसे ?"

"यही तो समझ में नहीं आ रहा ।"

"काटेज के भीतर कहीं से बीवी के फिंगरप्रिंट्स मिले ?"

"नहीं ।"

"वजह ? अगर वो काटेज कोठारी और नमिता का प्रेम घरोंदा था तो क्यों न मिले ?"

"पोंछ दिये गये । जैसे दरवाजे के हैंडलों पर से पोंछे गये, वैसे भीतर से भी पोंछ दिये गये ।"

“किसने पोंछे ?”

“जाहिर है कि काटेज के मालिक ने । उसके अपने प्रिंट दरवाजों के हैंडलों को छोड़ कर काटेज में सब जगह - खास तौर से टाइपराइटर पर - थे ।”

“हूं ।”

कई क्षण खामोशी रही ।

“ये भी तो हो सकता है” - फिर पावटे बोला - “कि बुन्दा वहां किसी ने प्लांट किया हो ! आखिर वो काटेज, तुम खुद कहते हो कि, अक्सर अनलॉक्ड रहता था ।”

“क्यों प्लांट किया हो ?”

“शक की सूई उन दोनों की तरफ घुमाने के लिये ।”

“किसने प्लांट किया हो ? ऐसा कोई शख्स तो है ही नहीं हमारी निगाह में ।”

“क्यों नहीं है ? पुणेकर है न !”

“क्या कह रहे हैं ? वो तो...”

“कुछ नहीं वो तो । वो तो की अभी कोई गारन्टी नहीं । लाश की बरामदी के बिना निर्णायक तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता ।”

“सर, क्या कहना चाहते हैं ?”

“सुनो । पति नपुंसक हो, बीवी के साथ सैक्स करने के नाकाबिल हो, बीवी नौजवान घोड़ी हो, ब्यूटी क्वीन हो, उसकी पहुंच के भीतर नौजवान पट्ठा मौजूद हो तो जरा सोचो कि क्या सीनेरियो बनता है !”

“ओह ! ओह ! ये पुणेकर के नपुंसक होने वाली बात आपको कैसे पता चली ? डाक्टर देशपाण्डे से जानी जिससे कि आप मिलने गये थे ?”

“हां ।”

“और क्या जाना ?”

पावटे ने संक्षेप में सब कह सुनाया ।

“ओह !” - आखिर में नगरकर बोला - “तो ये बात है ?”

“हां ।”

“पुणेकर को कभी हार्ट अटैक नहीं हुआ था ?”

“डाक्टर गारन्टी करता है ।”

“वो अल्कोहलिक था, इम्पोटेंट था, इम्पोटेंट अल्कोहलिक था ?”

“हां । और जो नई थ्योरियां हमारे सामने हैं, इस बात से उनमें एक इस थ्योरी का इजाफा होता है कि पुणेकर को अपने वकील और अपनी बीवी के बीच के अफेयर की खबर थी, वो दोनों से बदला लेना चाहता था । उसने अपनी बीवी और उसके आशिक को अपने कत्ल के इलजाम में फंसाने की चाल चली और पीछे कत्ल की स्टेज सैट करके खुद फरार हो गया ।”

“क्या चाल चली ! ये कि बीवी का बुन्दा वकील के काटेज में प्लांट कर दिया, फिंगरप्रिंट्स यूं पोंछ दिये जैसे वकील या बीवी ने या दोनों ने मिटाने की कोशिश की हो, अपनी बोट को नोडल पॉइंट पर लंगर डाले डोलने दिया और उसकी रेलिंग पर खून का धब्बा छोड़ा ?”

“हां ।”

“कोई मजबूत चाल तो न हुई ये ! बीवी अगर बुन्दे की मिल्कियत से मुकर जाये और वो भी ये दुहाई दे कि बुन्दा उसकी ड्रैसिंग टेबल के दराज में प्लांट किया गया था तो और उसके खिलाफ क्या है हमारे पास ?”

“वकील के खिलाफ है ।”

“वो वकील है, लौटकर हर बात की सफाई देने में कामयाब हो गया तो ? तो आपकी इस नयी थ्योरी का क्या होगा ?”

“लौटेगा तो देखेंगे ।”

“आपको उसके लौटने की उम्मीद है ?”

“है तो सही ।”

“पुणेकर के ?”

“वो कैसे लौट आयेगा ? वो लौट आया तो उसकी साजिश का क्या होगा ? कैसे बीवी और वकील पर उसके कत्ल का इलजाम आयद होगा ?”

“लिहाजा वो हमेशा के लिये कहीं खिसक गया ?”

“मेरे ख्याल से हां ।”

“खाली हाथ ? खाली जेब ?”

“क्यों खाली हाथ ? क्यों खाली जेब ? उसके लाखों के शेयर भूल गये, जो गायब हैं । बीवी ने भरपूर टालमटोल के बाद साठ लाख रुपये उनकी फेस वैल्यू बताई थी । बेचेगा तो करोड़ों की उगाही हो सकती है ।”

“ठीक ।”

“आज तुम उसके आपरेटेबल बैंक अकाउंट या अकाउंट्स की बाबत जानकारी निकालने वाले थे ?”

“निकाली न !”

“गुड ! क्या ?”

“मालूम पड़ा है पुणेकर का एक फ्लैट तारदेव के आशा अपार्टमेंट्स में भी है और वहां के नैशनल बैंक की ब्रांच में उसका वैसा सेविंग अकाउंट है जैसे का कल शाम आपने जिक्र किया था ।”

“रेगुलर इस्तेमाल होने वाला ? रेगुलर जमा, निकासी वाला ?”

"हां । उसका वैसा ही, कदरन कम एक्टिव, एक दूसरा अकाउंट यूनियन बैंक की ग्रांट रोड ब्रांच में है ।"

"गुड । दोनों जगह से हालिया निकासी का क्या पता लगा ?"

"मैंने दोनों जगह सुबह दस बजे ही फोन खड़का दिया था । दोनों जगह से सदानन्द पुणेकर का अकाउंट वहां होने की तसदीक हुई थी, लेकिन दोनों बैंक वालों ने बैलेंस की बाबत या हालिया निकासी की बाबत कुछ बताने से इंकार कर दिया था ।"

"पुलिस को !"

"हां । दोनों जगह से मशीनी जवाब मिला कि कोर्ट ऑर्डर के बिना ऐसी जानकारी आम नहीं की जा सकती थी । पुलिस को भी नहीं ।"

"तो तुमने क्या किया ?"

"मैंने सब-इन्स्पेक्टर कदम को भेजा है, उम्मीद है कि कुछ करके ही लौटेगा ।"

"और ?"

"और आप बोलिये ।"

"ठीक है । सुनो । लैब वालों से पता करो कि क्या सूखे खून से उसके ब्लड ग्रुप का पता लगाया जा सकता है ?"

"आपके जेहन में वो खून का धब्बा है, जो बोट की रेलिंग पर लगा पाया गया था ?"

"हां, उसे वहां से खुरच कर महफूज कर लिया गया था न ?"

"जी हां, कर लिया गया था ।"

"रेलिंग के उस हिस्से को फोटोग्राफ कर लिये जाने के बाद ?"

"जी हां ।"

"अगर सूखे खून को एनेलाइज किया जा सकता है तो हमें मालूम होगा कि वो किस ब्लड ग्रुप का है । वो पुणेकर के ब्लड ग्रुप का हुआ तो मैं समझूंगा कि उसके साथ बोट पर एक दुर्लभ हादसा हुआ, जो हार्ट अटैक उसे कभी नहीं हुआ था, वो बोट पर हो गया, गिरते वक्त वो रेलिंग से टकराया..."

"वो टकराया, इस बात की तसदीक के लिये हमें उसका ब्लड ग्रुप मालूम होना चाहिये ।"

"हो जायेगा । बीवी से पता करो, उसे नहीं तो उसके डाक्टर को, डाक्टर देशपाण्डे को, मालूम होगा; इत्तफाक से उसे भी नहीं मालूम होगा तो उसका पर्सनल मेमोरंडम तलाश करेंगे जिसमें कि ब्लड ग्रुप का भी कालम होता है ।"

"ठीक ।"

तभी दरवाजा खुला और चौखट पर सब-इंस्पेक्टर कदम प्रकट हुआ ।

"मे आई कम इन, सर ?" - वो अदब से बोला ।

"अरे, आओ, भई ।" - नगरकर बोला - "बड़े मौके पर आये हो ।"

कदम भीतर दाखिल हुआ ।

“बैठो ।”

वो नगरकर की बगल में एक कुर्सी पर बैठ गया ।

“कुछ पता चला ?” - नगरकर उत्सुक भाव से बोला ।

“चला, सर, बहुत हुज्जत से चला लेकिन चला ।” - कदम बोला - “दोनों मैनेजर ताकत ही दिखाये जा रहे थे । मैंने कामन कमिश्नर साहब को रिपोर्ट करने की धमकी दी तो सीधे हुये ।”

“क्या पता चला ?”

“सर, नैशनल बैंक तारदेव से पता चला कि सदानन्द पुणेकर ने हाल ही में वहां से चालीस लाख रुपये निकाले हैं और अब पीछे उसके अकाउंट में सिर्फ एक हजार बारह रुपये साठ पैसे बैलेंस है ।”

“देवा !”

“ऐन वैसी ही बात यूनियन बैंक ग्रांट रोड से सुनने को मिली । वहां से सदानन्द पुणेकर ने इकत्तीस लाख रुपये निकाले हैं और वहां का मौजूदा बैलेंस एक हजार चार सौ सत्तासी रुपये चालीस पैसे है ।”

“दोनों जगह से” - पावटे ने पूछा - “एक ही दिन में रकमें निकालीं ?”

“जी हां । बुधवार को ।”

“यानी कि बुधवार को उसके कब्जे में इकहत्तर लाख रुपये थे ।”

“एक करोड़ इकहत्तर लाख रुपये थे ।”

“क्या !”

“यूनियन बैंक में उसकी कोई पौने तीन साल पहले कराई पांच करोड़ की एफडी थी, ब्याज लगकर जिसकी अपटूडेट वैल्यू छ: करोड़ पांच लाख पिच्चासी हजार रुपये हो चुकी थी । उसने वो एफडी उसी दिन क्लोज करा दी थी ।”

“तो बाकी पांच करोड़ रुपया कहां गया ?”

“उसी ब्रांच में ओमेगा इन्टरनैशनल का अकाउंट है, उसमें जमा करा दिया ।”

“ओह !”

“और...”

“अभी और भी ?”

“बैंक वालों के सहयोग से उसने सारी रकम को यूरो में ट्रांसफर करा लिया था । जब वो बैंक से निकला था तो कोई पौने दो करोड़ रुपयों की जगह उसके पास पांच सौ दो सौ और सौ के नोटों में तीन लाख सोलह हजार यूरो थे ।”

“जो कि” - नगरकर के मुंह से निकला - “बड़ी आसानी से मनी बैल्ट में समा सकते थे !”

पावटे ने सहमति में सिर हिलाया ।

"इतनी बड़ी रकम की एफडी" - फिर बोला - "और मूल रकम की ओमेगा के अकाउंट में वापिसी से अब मुझे बिल्कुल ही यकीन हो गया है कि सदानन्द पुणेकर माफिया था, वो किसी बड़े अन्डरवर्ल्ड डॉन का फ्रंट था, ओमेगा इन्टरनैशनल का वो सिर्फ केयरटेकर था, मालिक वो अन्डरवर्ल्ड डॉन है । उसने मलिक के, डॉन के, पांच करोड़ रुपये जाती इस्तेमाल के लिये सरका लिये और जब पोल खुली, हीट महसूस की तो एफडी क्लोज करा कर वापिस किये । अब इस केस का एक और नया ऐंगल निकल आया है । पैसा लौटाने से भी पुणेकर की जान बख्शी की गारन्टी न हुई तो वो जो माल-पानी हाथ लगा, उसे लेकर फरार हो गया ।"

"वो पांच करोड़ रुपया भी क्यों नहीं" - नगरकर बोला - "जिसको वापिस जमा करा देने की उसने शराफत दिखाई ?"

"बिकाज दैट वाज गैंगलैंड मनी । वो खुद गैंगस्टर है, वो जानता है कि ऐसी अमानत में खयानत करने का क्या अंजाम होता है ! वो जानता है कि वो डॉन का पैसा लेकर भाग जाता तो डॉन उसे पाताल से भी खोद निकालता और बुरी मौत मारता ।"

"अब ?"

"अब उसके लिये गुंजायश है । वो गायब हो जाये, किसी को ढूंढ़े न मिले तो हो सकता है डॉन उसकी तलाश को जहमत मानकर नजर अन्दाज कर दे ।"

"लेकिन सर, अगर वो किसी अन्डरवर्ल्ड बिग बॉस के खौफ से भागा है तो बाकी सारी थ्योरियां तो फेल हो गयीं ! फिर तो न उसका कत्ल हुआ, न उसने खुदकुशी की और न उसके साथ कोई हादसा गुजरा !"

"हां ।"

"तो फिर बोट को समुद्र में छोड़ने का क्या मतलब ? उसकी रेलिंग पर खून के उस धब्बे का क्या मतलब जिसको आपने उसका रेलिंग से सिर टकराया होने का सबूत माना; जिसकी वजह से आप धब्बे वाले खून का ब्लड ग्रुप जानना चाहते हैं, पुणेकर का ब्लड ग्रुप जानना चाहते हैं ?"

"क्या मतलब ?"

"आप बताइये ।"

पावटे खामोश रहा ।

"अगर असल बात ये है तो फिर तो इस बात की भी कोई अहमियत नहीं कि वकील कपिल कोठारी गायबशुदा शख्स की नयी नकोर सोनाटा के साथ गायब है । इस बात की भी कोई अहमियत नहीं कि पीछे वकील के काटेज के अगले पिछले दरवाजों के हैंडलों पर कोई फिंगरप्रिंट्स न मिले, भीतर कई जगह से फिंगरप्रिंट्स पुंछे हुए मिले । इस बात की भी कोई अहमियत नहीं कि कॉटेज के भीतर से नमिता पुणेकर का बुन्दा बरामद हुआ था, जो

कि उसके वकील से नाजायज ताल्लुकात की तरफ इशारा था । इस बात की भी कोई अहमियत नहीं कि मिसेज रोटोलो वकील के अपने कॉटेज में सारी रात टाइप करते रहे होने की गवाह है या बीच के कुछ वक्फे ऐसे हैं जिनमें उसकी गवाही में झोल है ।"

पावटे फिर खामोश रहा । उसकी सूरत से लग रहा था कि कोई निर्णायक बात कहने में सक्षम बनने के लिये वो अपने अन्तर को निरन्तर मथ रहा था ।

"एक मिनट हम इस अण्डरवर्ल्ड वाले नये ऐंगल को नजरअन्दाज करें तो देखिये कैसे शक की सूई बार-बार मिसेज नमिता पुणेकर की ओर घूमती है । सच पूछें तो मैं तो उसे हिरासत में लेने की तैयारी कर रहा था ।"

"कुछ हाथ न आता ।" - पावटे भुनभुनाया ।

"न आता तो छोड़ देते । वैसे हवालात के खयाल से ही औरतों के होश उड़ जाते हैं और वो खुद ही सब कुछ कह सुनाने को उतावली होने लगती हैं । सर, भले ही उस औरत के खिलाफ हमारे पास कोई ठोस सबूत नहीं है लेकिन बहुत बातें हैं जिनकी जवाबदारी उसे भारी पड़ सकती है । वो अपने बेवड़े खाविन्द से आजिज है" - नगरकर उंगलियों पर गिनने लगा - "अभी आपने इतनी इंकलाबी जानकारी बाजरिया डाक्टर देशपाण्डे हासिल की है कि खाविन्द नपुंसक है, बीवी के साथ सैक्स करने के नाकाबिल है । वो उम्रदराज है, बीवी जवान है, करेला और नीम चढ़ा कि बला की हसीन है और उसकी शारीरिक भूख को तृप्ति की जरूरत है । उस तृप्ति का उपलब्ध जरिया खाविन्द का वकील है । वो दोनों खाविन्द को रास्ते से हटाने की साजिश करते हैं जिसके तहत वो दोनों - या वकील अकेला - बोट पर या उससे पहले खाविन्द का कत्ल कर देते हैं । वकील पौने दो करोड़ रुपयों से भरी मनी बैल्ट, शेयर सर्टिफिकेट्स और ग्यारह लाख की नयी सोनाटा के साथ खिसक जाता है और बीवी को हमने थामा नहीं तो, देख लीजियेगा, वो भी खिसक जायेगी ।"

"खिसक के कहां जायेगी ?"

"वहीं जहां माल के साथ यार है ।"

"यार के वहां होने की क्या गारंटी है ?"

"आपका इशारा डबल क्रॉस की तरफ है ?"

"क्यों नहीं ? जब हम थ्योरियां ही टटोल रहे हैं तो क्यों न हो ?"

"वकील साझे के अभियान को अपनी सोलो अचीवमैंट बना देगा ?"

"क्यों नहीं ? आखिर वकील है । ऐसे कामों का बेहतर तजुर्बा और किसे होगा ?"

"हूं ।"

"सर" - सब-इन्स्पेक्टर कदम व्यग्र स्वर में बोला - "मेरी बात बीच में रह गयी ।"

"तुमने" - पावटे ने उसे घूरकर देखा - "अभी कुछ और कहना है ?"

"यस सर ।"

"किस बारे में ?"

“उस पांच करोड़ की एफडी के बारे में जो सदानन्द पुणेकर ने क्लोज कराई । उस एफडी में एक खास, गैरमामूली बात है ।”

“क्या ? और किस्तों में न बोलो । एक ही बार में सारी बात कहो ।”

“सर, वो एफडी बैंक की ट्रस्टीशिप के तहत थी, जो सदानन्द पुणेकर ने अपनी शादी के वक्त अपनी बीवी के नाम कराई थी और उसकी टर्म्स ऐसी थीं कि पुणेकर एफडी की उस रकम को हाथ भी नहीं लगा सकता था । वो एफडी तभी क्लोज हो सकती थी जबकि बीवी स्वेच्छा से पुणेकर को तलाक दे देती । लेकिन पुणेकर ने वो एफडी फिर भी क्लोज करा ली थी तो या तो एफडी की टर्म्स में कोई लूप होल था या ऐसा बैंक की किसी मिलीभगत से हुआ था । सर, एफडी क्लोज हो चुकी होने वाली बात की बीवी को भी खबर है और सुना है कि वो कल बैंक वालों को धमकी देकर आयी थी कि अगर तीन दिन में एफडी रिवाइव न हुई, रकम वापिस एफडी अकाउंट में न पहुंच गयी तो वो कहर ढा देगी ।”

“कमाल है ! तुमने पूछा नहीं कि एफडी क्योंकर क्लोज हो गयी ?”

“सर, मैंने पूछा था लेकिन जवाब न मिलने पर उस बात को मैंने ज्यादा अहमियत न दी थी क्योंकि जिस काम से मैं गया था, उसमें इस बात का कोई रोल नहीं था कि पुणेकर न क्लोज की जा सकने वाली एफडी को क्लोज कराने का करतब क्योंकर कर पाया था ! मुझे ये पता लगाने को बोला गया था कि हालिया निकासियों के तहत गायब हो जाने से पहले पुणेकर के पास कैश में कितना पैसा था !”

“मैं मालूम करूंगा” - नगरकर दृढ़ता से बोला - “एफडी की क्या कहानी है !”

“वो तो तुम करोगे ।” - पावटे बोला - “लेकिन कदम की कोशिश से जो जानकारी अभी उपलब्ध है, उससे एक बात तो उजागर होती है ।”

“क्या ?”

“बीवी को पांच करोड़ का चूना लग गया । जिस एफडी को खाविन्द छू भी न सकता था, उसने वो एफडी भुनवा भी ली और रकम कब्जा भी ली ।”

“सर, ये तो अपने आपमें कत्ल का उद्देश्य हो गया ।”

“बराबर हो गया ।”

“तो फिर थामें उस औरत को ?”

“शाम तक... शाम तक रुको । मुझे थोड़ा सोचने दो ।”

“जैसा आप कहें ।”

“इस दौरान उसकी निगरानी का इन्तजाम करो ताकि वो हिरासत में लिये जाने की नौबत आने से पहले ही कहीं खिसक न जाये ।”

“राइट, सर ।”

***

गायकवाड़ नगर में कैपीटल प्रापर्टीज का आफिस तलाश करने में नमिता को ज्यादा दिक्कत न हुई लेकिन वहां उसे मुलाकात से पहले पौना घंटा एड़ियां रगड़नी पड़ी क्योंकि वो अपने आफिस में नहीं था ।

आखिरकार मुलाकात हुई ।

"वैलकम ! वैलकम !" - परांजपे एक कान से दूसरे कान तक मुस्कुराता बोला - "कहिये, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं ?"

"आफिस में नहीं बैठते ?" - नमिता भुनभुनाई ।

"बराबर बैठता यूं लेकिन कस्टमर को प्रापर्टी दिखाने जाना पड़ता है न !"

"डायरेक्ट्री में आपका जो फोन नम्बर दर्ज है, वो मिलता नहीं ।"

"वो नम्बर ! वो नम्बर तो एमटीएनएल का है जो कि मैंने कब का छोड़ दिया है । अब तो यहां रिलायंस के दो नम्बर हैं । ये मेरा कार्ड रख लीजिये । इस पर मोबाइल का और घर का नम्बर भी दर्ज है ।"

नमिता ने कार्ड लेकर हैंड बैग में रखा ।

"लगता है आपका खयाल बदल गया है ।"

"खयाल ? किस बाबत ?"

"फिगारो वाले बंगले की बाबत ।"

"खयाल नहीं बदला है..."

"नहीं बदला है ! तो फिर आप यहां..."

"किसी और वजह से आयी हूं ।"

"और वजह ?"

"आपने कहा था कि आप उस बंगले को मिस्टर पुणेकर के लिये होल्ड किये हुये थे । ऐसा था तो उन्होंने कोई बयाना भी दिया होगा । मैं बयाने की रकम वापिस चाहती हूं ।"

"कोई बयाना नहीं था, मैडम ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ? बयाना लिये बिना कौन-सा प्रापर्टी डीलर प्राइम प्रापर्टी को होल्ड करके रखता है ?"

"कोई नहीं रखता लेकिन कस्टमर जब पुणेकर साहब जैसा हो तो रखना पड़ता है ।"

"आप ये कहना चाहते हैं कि मेरे हसबैंड के जुबानी कह देने भर से आपने इतना अरसा उस प्रापर्टी के लिये आल्टरनेट ग्राहक तलाश करने से परहेज रखा ?"

"जी हां । यही बात है ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"हुआ न ! मैं झूठ क्यों बोलूंगा ?"

"बयाना होता तो कितना होता ?"

"चार पांच लाख तो होता ही ।"

"बयाने की रकम आप हजम कर जाना चाहते हैं ।"

"क्या कह रही हैं आप ? ऐसा कहीं होता है ?"

"आप कर तो रहे हैं ।"

"अरे, मैडम, मेरा यकीन कीजिये, कोई बयाना नहीं है । मैं गणपति की कसम खा के कहता हूं, कोई बयाना नहीं है । पुणेकर साहब की हैसियत के रोब में मेरी हिम्मत ही नहीं हुई थी उनसे बयाना मांगने की ।"

नमिता को वो सच बोलता लगा ।

"आप कुछ पियेंगी ?"

"नहीं । हमारा काटेज.. .कितनी कीमत मिल सकती है उसकी ।"

"काटेजिज की इधर शार्टेज नहीं है, आज कल कई सेल पर हैं इसलिये कोई खास कीमत तो नहीं मिल सकती, लेकिन आपके काटेज की एक खूबी है जिसकी वजह से मिल भी सकती है ।"

"खूबी !"

"प्राइवेट बीच है न ! प्राइवेट पायर है न ! इसलिये मैं समझता हूं कि दो करोड़ का ग्राहक तो मैं लगवा सकता हूं ।"

दो करोड़ !

नमिता ने मन-ही-मन चैन की सांस ली ।

"लेकिन" - परांजपे बोला - "आप क्यों पूछ रही हैं ?"

"मेरे वहां अकेले रहने का कोई मतलब नहीं । आइन्दा दिनों में मैं वहां से शिफ्ट करना चाहती हूं इसलिये काटेज को बेच देने का खयाल है मेरे मन में ।"

"आप ऐसा कैसे कर सकती हैं ?"

"क्यों ?" - नमिता सकपकाई - "क्यों नहीं कर सकती ?"

"वो काटेज आपका तो नहीं ।"

"हो जायेगा न ! जब मेरे हसबैंड का है तो जल्दी ही वो..."

"पुणेकर साहब का भी कहां है ?"

"क्या !"

"वो काटेज तो ओमेगा इन्टरनैशनल का है ।"

"और ओमेगा इन्टरनैशनल किसका है ?"

"मैडम, होना तो पुणेकर साहब का ही चाहिये था, इसीलिये मैंने उनके सामने बयाने की मांग न रखी, लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"आज ओमेगा से किन्हीं मिस्टर वालसन का फोन आया था जिन्होंने कहा था कि कम्पनी काटेज को बेचना चाहती थी, कितना पैसा मिल सकता था ?"

"मैं जानती हूं वालसन को । मैनेजर है ओमेगा का ।"
"तभी मैंने उसे काटेज की अन्दाजन कीमत दो करोड़ बोली थी ।"
"उसके ये पूछने से आपने सोच लिया कि काटेज पुणेकर साहब का नहीं है, ओमेगा के मालिक पुणेकर साहब नहीं है ?"
"अब क्या बोलूं ?"
"लगता है अभी कुछ और भी है कहने को !"
"है तो सही ।"
"क्या ?"
"मिस्टर वालसन किसी ऐसे ब्रोकर की बाबत पूछ रहे थे, जो कि तीस फुट का, वाईट, ए क्लास कंडीशन वाला केबिन क्रूसर बिकवा सकता हो ।"
नमिता सन्नाटे में आ गयी ।
"शायद मरमेड नाम बताया था केबिन क्रूसर का ।"
"मिस्टर परांजपे" - नमिता आवेश से बोली - "वो मेरे हसबैंड की मोटरबोट है और आपकी जानकारी के लिये इस वक्त पुलिस कस्टडी में है ।"
"थी ।"
"क्या मतलब ?"
"पुलिस ने बोट रिलीज कर दी है ।"
"और आपके खयाल से वालसन को सौंप दी है ।"
"मालिकान के नुमाइन्दे को सौंप दी है जो कि मिस्टर वालसन हैं ।"
नमिता के मुंह से बोल न फूटा ।
"और बकौल मिस्टर वालसन कम्पनी को काटेज बेचने की इतनी जल्दी है कि वो कोई औनी-पौनी कीमत भी कबूल करने को तैयार है । इस बाबत उन्होंने मुझे दो हफ्ते का टाइम दिया है ।"
"द.. .दो हफ्ते का ?"
"जिसमें से दो दिन तो समझिये कि गुजर भी गये हैं । मैडम, इसीलिये मैंने फोन पर आपसे शिफ्ट करने की बाबत सवाल किया था ।"
"म.. .मुझे शिफ्ट करना पड़ेगा ?"
"नया मालिक पोजेशन ले लेगा तो कैसे आप वहां रह पायेंगी ?"
"ठीक । ओके मिस्टर परांजपे, मैं चलती हूं ।"
"कोई सेवा हो तो" - वो व्यग्र भाव से बोला - "बोलियेगा ।"
"बोलूंगी ।"
"कोई फ्लैट खरीदने का इरादा बने तो दो तीन बढ़िया डील मेरी निगाह में हैं ।"
"बोलूंगी न, मिस्टर परांजपे ।"

भारी कदमों से वो वहां से रुखसत हुई ।

सदा ! - दांत पीसते, नागिन की तरह फुफकारते उसने सोचा बहन... ! कुत्ते ! अभी और कितने जहर से बुझे तीर हैं तेरे तरकश में !

कल तक लाखों से खेलती, करोड़ों के खाब देखती वो तकदीर के - या सदा के - एक ही झटके से सड़क पर आ जाने की हालत में पहुंच गयी थी ।

पैसा गया, शेयर गये, सोनाटा गयी, यार गया और अब घर-बार भी जा रहा है ।

समझती थी उसने सदा को बेच खाया था, जबकि असल में सदा ने उसे बेच खाया था ।

वो एक नहीं, दो मर्दों से बेवकूफ बनी थी; एक ने छुपा के वार किये, दूसरा शरेआम अपना खेल खेल गया ।

अब उसके पास कुछ बाकी था तो एक उम्मीद थी कि शायद कोठारी ने उसे धोखा न दिया हो और वो सलामत हो ।

या अपना वजूद था जिस पर पुलिस की वजह से सवालिया निशान लगा हुआ था ।

***

एसएचओ विनोद नगरकर एसीपी मनोहर पावटे के आफिस में पहुंचा ।

"क्या बात है ?" - उसकी सूरत पर निगाह डालता पावटे बोला - "बड़े एक्साइटिड लग रहे हो ?"

"खास खबर है ।" - पावटे बोला - "ई-मेल से अभी आयी ।"

"क्या ?"

"एडवोकेट कपिल कोठारी के लिये हमने जो आल पॉइंट बुलेटिन इशु किया था, उसका नतीजा ।"

"क्या ? पकड़ा गया ?"

"नहीं ।"

"तो ?"

"आप सुनिये तो सही ।"

"और क्या कर रहा हूं ?"

"वो बुलेटिन हमने नेबरिंग स्टेट्स की पुलिस को भी भेजा था । उसी के फालोअप में ई-मेल से कर्नाटक पुलिस का जवाब आया है । हमारा जवान, एडवोकेट कपिल कोठारी मैंगलोर के कोस्टल हाइवे पर मोटर एक्सीडेंट में मारा गया है । वो नयी सोनाटा उसके कन्ट्रोल से निकल गयी और रेलिंग तोड़कर नीचे गिरी, समुद्र में निकली एक चट्टान से टकराई और उसका फुल कबाड़ा हो गया । इम्पैक्ट से कार का दरवाजा खुल गया, वकील बाहर जाकर गिरा और समुद्र में बह गया ।"

"कब का वाकया है ?"

"आज सुबह साढ़े नौ बजे के करीब का ।"
"लाश की बरामदी बिना शिनाख्त कैसे हुई ?"
"उसके ड्राइविंग लाइसेंस, क्रेडिट और विजिटिंग कार्ड्स जैसे पर्सनल पेपर्स से जो कि उसके उस कोट की जेबों में थे जिसे उसने उतारकर कार की पिछली सीट पर डाल दिया था ।"
"आई सी ।"
"उधर लाश की तलाश जारी है लेकिन शायद ही मिले ।"
"जैसे इधर डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला की लाश की तलाश है, लेकिन शायद ही मिले ।"
"हैरानी है कि दो मुख्तलिफ जगहों पर एक ही तरह के दो एक्सीडेंट हुए, दोनों ऐसे लोगों ने किये जिसके पुणेकर फैमिली से ताल्लुकात थे ।"
"मैंगलोर यहां से साढ़े नौ सौ किलोमीटर दूर है, ये हैरानी की बात नहीं कि इतना लम्बा फासला ड्राइव करके उसने तय किया ?"
"है तो सही ।"
"और बात तो बहुत ही खास है ।"
"एक्सीडेंट से ही ताल्लुक रखती ?"
"हां ।"
"वो क्या ?"
"कार में से एक ऐसा डाकूमेंट बरामद हुआ है जो एक तरह से वकील की मौत को सर्टिफाई करता है, जो किसी दूर-दराज के चांस से वकील ने अगर वो एक्सीडेंट स्टेज किया होता तो कार में हरगिज न मिलता ।"
"क्या ? क्या है वो डाकूमेंट ?"
"मेल से उसकी भी कापी भेजी गयी है । ये देखिये ।"
नगरकर ने कम्प्यूटर से निकाला प्रिंटआउट पावटे के सामने रखा ।
पावटे ने उसका मुआयना किया ।
"नगरकर" - फिर बोला - "आई एग्री विद यू । लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस कापी से हमारा काम चलेगा । तुम मैंगलोर पुलिस को फोन करो और बोलो कि लाइटनिंग स्पीड से वो ओरीजिनल हमें भेजें । ओरीजिनल मिल जाने के बाद ही मिसेज नमिता पुणेकर के खिलाफ हम अपना अगला, अहमतरीन कदम उठायेंगे ।"
"लिहाजा आज अरैस्ट का प्रोग्राम कैंसल ।"
"फिलहाल । ओरीजिनल डाकूमेंट हमें कल जरूर मिल जायेगा, उसके हाथ आते ही हम उसे थाम लेंगे ।"
"आप कहते हैं तो.. .मेरी मर्जी तो यही थी कि आज ही थामते..."
"ईजी डज इट, नगरकर । सहज पके सो मीठा होय ।"

"ठीक है ।"

"लेकिन उसकी निगरानी और मजबूत कर दो । निगरानी करने वालों को खास हिदायत दे दो कि वो उन्हें खिसकती लगे तो बिना अंजाम की परवाह किये उसे थाम लेना है । अब ठीक है ?"

"जी हां, अब ठीक है ।"

***

नमिता ग्रांट रोड पहुंची ।

पुणेकर के आफिस में रोशनी थी, वो आबाद था लेकिन भीतर जो आदमी बैठा हुआ था, धुंधले शीशे में से वो उसकी सूरत न देख पायी ।

बहरहाल ये उसके लिये शाकिंग बात थी कि पुणेकर की जगह कोई ले भी चुका था ।

उसे अभी भी यकीन नहीं आ रहा था कि पुणेकर ओमेगा का मालिक नहीं था । ओमेगा का मालिक नहीं था तो पन्द्रह नाइट क्लबों का भी मालिक क्योंकर होता ? अंधेरी की उस वाहिद नाइट क्लब का मालिक भी क्योंकर होता जहां कि उन दोनों की मुलाकात हुई थी ?

पुणेकर किसी और के माल का महज रखवाला था !

हे भगवान ! इतना बड़ा धोखा !

"वालसन है आफिस में ?" - वो चपरासी से बोली ।

"देखता हूं ।" - चपरासी बोला ।

"देखता है ! तेरे को मालूम नहीं कि वो आफिस में है या नहीं ?"

"बाई, पूछ के आने का है न !"

"क्या पूछ के आने का है ?"

"वो तुम्हेरे से मिलना मांगता है या नहीं !"

अपमान से उसका रोम-रोम जल उठा ।

"मेरे को जानता है ?" - वो बोली ।

"जानता है न ! तभी तो नाम नहीं पूछा । कारड नहीं मांगा । अपॉइंटमेंट नहीं पूछा । क्या !"

नमिता के मुंह से बोल न फूटा ।

"जा के आता है ।"

मशीन की तरह नमिता का सिर सहमति में हिला ।

चपरासी की जगह खुद वालसन वापिस लौटा । उसने नमिता की बांह पकड़ी और उसे अपने साथ चलाता आफिस से बाहर ले आया ।

"कैसे आयीं ?" - फिर बोला ।

"वालसन ।" - वो आहत भाव से बोली - "तेरे को आफिस में मेरे से मिलने में प्रॉब्लम ?"

"वो बात नहीं लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"वुई विल बी मोर कम्फर्टेबल हेयर ।"

"आन रोड ?"

"आई बिल बी मोर कम्फर्टेबल हेयर ।"

"ओह ! यानी कि मिस्टर पुणेकर की मिसेज के साथ देखे जाने में भी अब तेरे को लोचा ?"

"अब क्या बोलेगा ! हालात ऐसे रफ्तार से बदले हैं कि.. .क्या बोलेगा !"

"क्यों हालात बदले हैं ?"

"आपके हसबैंड को मालूम ।"

"माजरा क्या है ?"

"माजरा !"

"ये मैं क्या सुन रही हूं कि मिस्टर पुणेकर ओमेगा के मालिक नहीं हैं ?"

वो खामोश रहा ।

"जवाब दो । मैं जवाब सुने बिना नहीं जाऊंगी ।"

"मैडम, इन कांफिडेंस बोलता है..."

"अब कुछ कहो भी ।"

"मिस्टर पुणेकर को ऐसा बोलने का हुक्म था ।"

"कैसा बोलने का हुक्म था ?"

"कि वो पूछे जाने पर खुद को मालिक बतायें ।"

"किसका हुक्म था ?"

"बिग बॉस का ।"

"वो कौन है ? वो जो उनके आफिस में बैठा है ?"

"नहीं । वो तो इंतखाब खान है जिसने कि मिस्टर पुणेकर की जगह ली है ।"

"बिग बॉस के हुक्म पर ?"

"हां ।"

"बिग बॉस कौन है ? कहां पाया जाता है ?"

"दुबई में ।"

"है कौन ?"

वालसन ने उत्तर न दिया ।

"भाई है ? दाउद के माफिक बड़ा गैंगस्टर है ?"

“अब क्या बोलेगा ?”

“पुणेकर साहब उसका फ्रंट था ?”

“मैडम, किसी को बोलने का नहीं है पण हां ।”

“पुणेकर साहब की नाकद्री क्यों हुई ? क्या रंजिश हुई भाई को, बिग बॉस को उनसे ?”

“पंगा किया न ?”

“क्या ?”

“ओमेगा का पांच करोड़ रुपया सरका लिया ।”

“लेकिन” - नमिता के मुंह से अपने आप ही निकल गया - “लौटा दिया ।”

“लौटाने से माफी नहीं मिलती ।”

“अब.. .अब क्या होगा ?”

“मैडम, इन कंफीडेंस बोलता है...”

“एक ही बात बार-बार मत कहो । मैंने समझ लिया कि तुम अभी जो बोलता है इन कंफीडेंस बोलता है । नाओ, कम आन ।”

“खल्लास ! खल्लास करने का हुक्म दिया ।”

हे भगवान ! जो लोग - डिमोलिशन स्कवायड - पुणेकर के हुक्म पर औरों को खल्लास करते थे, अब वो उसे खल्लास करते !

कैसे करते ? पुणेकर तो पहले ही उसके और कोठारी के हाथों खत्म था ।

नहीं खत्म था तो डिमोलिशन स्कवायड के किये हो गया था ।

“इंतखाब खान ने” - वालसन बोला - “कुर्सी सम्भालते ही पहला काम ये किया है कि यूनियन बैंक से ओमेगा का खाता बन्द करा दिया है और नयी जगह खाता खुलवा लिया है...”

यानी कि - नमिता ने सोचा - उसकी बैंक को ये धमकी बेकार थी कि तीन दिन में पैसा - पांच करोड़ रुपया - वापिस एफडी अकाउंट में पहुंच जाये ।

सब तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा था, कहीं उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी ।

“...पुणेकर साहब का कहीं कोई दखल न रहे इसी वास्ते मोटरबोट डिसपोज करने का है, काटेज बेचने का है । बोट से तो आपको वान्दा नहीं पण काटेज बिकने से आपको प्राब्लम होगा ।”

“मैं उसी बाबत दरयाफ्त करने यहां आयी थी...”

“मैं भी आपको कांटेक्ट करने वाला ही था ।”

“तुम ! तुम किस वास्ते ?”

“वो.. .वो.. .आई एम सारी टू से.. .काटेज वैकेट करने को बोलने का था न ! बोले तो आपका वैसे भी उधर रहना ठीक नहीं ।”

"क्यों ?"

"पुलिस वाला भीडू बोलता है कि पुणेकर साहब धड़के से या एक्सीडेंट से लुढ़क गया, पण डैड बॉडी किधर है ? नहीं है । बिग बॉस को पुलिस वालों की स्टोरी में लोचा लगा तो उसका कहर तुम्हेरे पर गिर सकता है ।"

"इस वास्ते मेरा उधर रहना ठीक नहीं ।"

"इस वास्ते भी । काटेज जल्दी बिक गया तो आप वैसे भी उधर कैसे रह सकेंगी ?"

"हूं ।"

"आपके पास वन वीक है ।"

"क्या ?"

"वन वीक में आपको काटेज वैकेट करने का है ।"

"इतनी जल्दी !"

"मैक्सीमम टेन डेज ।"

सदानन्द पुणेकर, मादर. .. ! कंजर के बीज ! तेरी नापाक रूह जहन्नुम की आग में झुलसे ।

"अभी जाता है, मैडम ।"

"एक मिनट. ..एक मिनट और रुको ।"

"बोले तो ।"

"पुणेकर साहब की नाकद्री में शरद शिराली वाले किस्से का भी कोई रोल है ?"

"आपको शरद शिराली वाला किस्सा मालूम ?"

"बाई चांस मालूम ।"

"कैसे ? कैसे ?"

"साहब ने एक बार खुद बोला ।"

"नहीं बोलना चाहिये था ।"

"अरे, जो नहीं होना चाहिये था, उसको छोड़ो; मेरे सवाल का जवाब दो ।"

"पूरा रोल है । शिराली ने बहुत डैमेज किया । पुणेकर साहब न डैमेज रिपेयर कर सका, न शिराली को प्रापरली हैंडल कर सका ।"

"वो तो जेल में है ।"

"किधर भी । पुणेकर साहब को उसको प्रापरली हैंडल करना मांगता था । सब बंगल किया । वो जेल में सेफ । उधर मुंह फाड़ेगा तो कौन रोकेगा ? पुणेकर साहब का बिग मिस्टेक.. .रादर बिगेस्ट मिस्टेक आफ कैरियर । बिग बॉस वैरी एंग्री ।"

"इसलिये खल्लास ?"

"बोले तो हां ।"

"वो तुम्हारा.. .कौन सा खान ?"

“इंतखाब खान ।”
“वो सब ठीक-ठीक हैंडल कर लेगा ?”
“कर चुका है ।”
“अच्छा ! क्या किया उसने ?”
“कल का पेपर देखना । अभी जाता है ।”
नमिता को फुटपाथ पर खड़ा छोड़कर वो चला गया ।

***

वो थाने पहुंची ।
एसएचओ इन्स्पेक्टर नगरकर अपने आफिस में मौजूद था ।
उसने उठकर उसका स्वागत किया और कुर्सी पेश की ।
“मैं अपने हसबैंड के बारे में पता करने आयी थी ।” - वो बोली - “कुछ पता चला ?”
“अभी तो नहीं” - नगरकर ने जवाब दिया - “लेकिन कोशिश जारी है ।”
“वो तो सदा ही जारी होती है ।”
नगरकर ने आहत भाव से उसकी तरफ देखा ।
ड्रामा कर रहा था ।
“मेरी हार्ट अटैक वाली थ्योरी को आपने क्या अहमियत दी ?”
“पूरी पूरी अहमियत दी है । बिल्कुल हो सकता है कि पुणेकर साहब हार्ट अटैक से मरकर समुद्र में गिर गये हों या हार्ट अटैक के बाद समुद्र में गिरे हों और डूब के मर गये हों । असल में क्या हुआ, इसकी तसदीक तो पोस्टमार्टम से होती है जो कि मुमकिन नहीं क्योंकि लाश बरामद नहीं हुई ।”
“हूं । आप लोग बोट से फारिग हो गये हुए हैं ? बोट पर आप लोगों की जो तफ्तीश होनी थी, वो मुकम्मल हो चुकी है ?”
“जी हां ।”
“तो फिर बोट...”
“उसके मालिकान को सौंपी जा चुकी है ।”
“मालिकान...”
“ओमेगा इन्टरनैशनल ।”
“जिसका मालिक सदा है ।”
“हम भी यही समझते थे, लेकिन इतवार के हादसे के बाद ही सामने आया है कि ऐसा नहीं है । मैडम, ओमेगा में आपके हसबैंड की हैसियत मुलाजिम की थी, मालिक की नहीं ।”
यानी कि वो बात न सिर्फ पुलिस तक पहुंच चुकी थी, उन्हें उस पर यकीन भी आ चुका था ।

“क्या कह रहे हैं !” - प्रत्यक्षत: वो फिर भी बोली ।

“इससे हमारा ये शक और भी मजबूत होता है कि आपके हसबैंड के माफिया कनैक्शन थे, वो किसी अन्डरवर्ल्ड डान के फ्रंट थे । इसीलिये जो हैसियत उनकी जान पड़ती थी, उनकी सम्भावित मौत की खबर आम होने पर उसकी पोल खुल गयी ।”

“बात बोट की हो रही थी ।”

“बोट की ही हो रही है । बोट ओमेगा के प्रतिनिधि मिस्टर वालसन को, जो कि कम्पनी में मैनेजर हैं, सौंप दी गयी है ।”

“बहुत फुर्ती दिखाई !” - वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली - “वैसे तो सुपुर्दगी का माल थानों में महीनों पड़ा सड़ता रहता है, कोर्ट से ऑर्डर हो जाये तो सुपुर्दगी में रोड़े अटकाते हैं, अब बोट यूं सुपुर्द की जैसे मुस्तैदी का गोल्ड मैडल सारे थाने को इसी केस में मिलना हो ।”

“मैडम, आप ज्यादती कर रही हैं । ज्यादा बोल रही हैं ।”

“इस बाबत मेरे से पूछना तो दूर, आपने मुझे खबर तक करना जरूरी न समझा !”

“जब ओनरशिप की बाबत शक की कोई गुंजायश ही नहीं थी तो...”

“हो भी तो आपसदारी में रफा कर ली जाती है न ! ‘पुलिस पब्लिक साथ साथ’ इसीलिये तो स्लोगन है ।”

नगरकर ने असहाय भाव से कंधे उचकाये ।

“ठीक है ।” - वो उठ खड़ी हुई - “चलती हूं ।”

“मैडम, जब आप आ ही गयी हैं तो एकाध बात पूछने का मेरे को भी मौका दीजिये ।”

“क्या बात ?”

“आप बैठिये तो सही ।”

नमिता वापिस बैठ गयी ।

“मैं आपके लिये काफी मंगाऊं ?”

“नो ।”

“पैप्सी ! कोक !”

“नो, थैंक्स । आप पूछिये, क्या पूछना चाहते हैं ?”

“आपको अपने हसबैंड के ब्लड ग्रुप की खबर है ?”

“कहां है ! मुझे तो अपने ब्लड ग्रुप की खबर नहीं ।”

“आई सी ।”

“क्यों पूछते हैं ?”

“जब आप इस बाबत कुछ जानती ही नहीं तो कोई वजह नहीं । लेकिन शायद डाक्टर सिंगला जानते हों ?”

“डाक्टर सिंगला !”

“जो आपके फैमिली फिजीशियन हैं, ईवनिंग्स के कम्पैनियन हैं, जिनको आपने एलीबाई दी थी ।”

“लेकिन वो तो.. .वो तो...”

“ठीक । ठीक । क्लीनिक तो साथ न ले गये न ?”

“आप क्लीनिक से पता करना चाहते हैं ?”

“हां ।” - उसने उसके सामने एक पैड और बाल पॉइंट पैन रखा - “जरा इस पर डाक्टर साहब का नाम पता लिखिये ।”

“क्लीनिक दादर में है...”

“लिखिये । घर का पता भी ।”

उसने लिखा ।

“अब नीचे अपने तारदेव वाले फ्लैट का पता लिखिये ।”

उसकी भवें उठीं ।

नगरकर ने अपलक उससे निगाह मिलाई ।

नमिता ने एक आह भरी और फिर वो काम भी किया ।

नगरकर ने पैड वापस अपने कब्जे में कर लिया ।

“थैंक्यू ।” - वो बोला - “अब एक आखिरी सवाल और ।”

“वो भी पूछिये ।”

“आपको मालूम था आपके हसबैंड मनी बैल्ट पहनते थे ? मालूम ही होगा । आखिर आप उनकी बीवी थीं ।”

“मुझे तो मालूम है, लेकिन आपको कैसे मालूम है ? जब लाश बरामद हुई ही नहीं तो...”

“तफ्तीश से ऐसी बातें मालूम हो जाती हैं । जब सवाल करने वाली पुलिस हो तो लोग व्यग्रता से जवाब देते हैं, उन बातों का भी जवाब देते हैं जो उनसे पूछी नहीं गयी होतीं । मनी बैल्ट में मनी ही रखते होंगे ?”

“हां ।”

“एक टाइम में कितना पैसा मनी बैल्ट में रखते थे ?”

“मुझे नहीं मालूम ।”

“मनी बैल्ट पहनते क्यों थे ?”

“उनकी पसन्द । उनकी मर्जी ।”

“हर वक्त क्यों पहनते थे ?”

“ये भी कोई बोला ?”

“हां ।”

“कोई खास ही गवाह होगा - बीवी से भी खास - जो ऐसा बोला । मेरे हसबैंड की कोई माशूक तो नहीं खोज निकाली आप लोगों ने ? ऐसा है तो मुझे भी बताइये ताकि मैं उसका मुंह नोच के आऊं ।”

“जवाब दीजिये ।”

“जवाब वही है । उनकी पसन्द । उनकी मर्जी ।”

“इतवार सुबह फिशिंग के लिये निकलते वक्त भी वो मनी बैल्ट पहने होंगे ?”

“जब आप जानते हैं हमेशा पहनते थे तो पहने ही होंगे ।”

“लेकिन आप ये नहीं जानतीं कि तब उसमें कितना पैसा था ?”

“नहीं, नहीं जानती ।”

“जानना चाहिये तो सही आपको ।”

“क्यों भला ?”

“कल आप उन बैंकों में गयी थीं जिनमें आपके हसबैंड के अकाउंट हैं । नैशनल बैंक, तारदेव; यूनियन बैंक, ग्रांट रोड, जहां से उन्होंने बहुत बड़ी-बड़ी रकमें निकालीं...”

“बैंक से रकमें निकालने का ये मतलब तो नहीं कि वो उनकी मनी बैल्ट में थीं ?”

“...और बैंक वालों के सहयोग से यूरो में कनवर्ट कराईं । यूं रुपयों में टोटल अमाउंट का बल्क इतना घट गया कि वो मनी बैल्ट में समा सकता था । हमारा खयाल है कि बल्क घटाया ही इसलिये गया था - रुपयों को यूरो में कनवर्ट कराया ही इसलिये गया था - कि वो मनी बैल्ट में समा सकता । क्या खयाल है ?”

“मैं क्या खयाल जाहिर करूं ?”

“अगर लाश डूब गयी तो पैसा भी डूब गया ।”

“जब बन्दा ही न रहा तो पैसा क्या ? आप मरे जरा प्रलय ।”

“आप तो जिन्दा हैं ।”

“मुझे पैसे का ऐसा मोह नहीं ।”

“जबकि औरत हैं ।”

“क्या फरमाया ?”

“नान अर्निंग विधवा हैं । आपको तो अपनी आइन्दा जिन्दगी में पैसे की बड़ी अहमियत महसूस होनी चाहिये ।”

“आपने और कुछ पूछना है ?”

“नहीं । अभी आप काटेज पर जायेंगी ?”

“हां ।”

“बाकी का दिन वहीं रहेंगी ?”

“क्यों पूछते हैं ?”

“दिन में तो आप वहां नहीं थीं । दो बार कांस्टेबल भेजा, यही जवाब लेकर आया कि मैडम कहीं गयी हुई थीं ।”

“जब मैं यहां हूं तो काटेज पर कैसे हो सकती हूं ?”

“ठीक ।”

“क्यों भेजा कांस्टेबल को आपने ?”

“आपसे पूछताछ करनी थी ।”

“कीजिये ।”

“कर ली । थैंक्यू ।”

Chapter 3

नमिता काटेज पर लौटी ही थी कि कालबैल बजी ।

बैल बजने का अन्दाज ऐसा था जैसे कोई उसके वहां पहुंचने का ही इन्तजार कर रहा था ।

पुलिस !

पुलिस की हाजिरी तो वो भर के आयी थी । एसएचओ ने खुद कहा था कि जो पूछताछ उसने करनी थी, कर ली थी ।

उसने दरवाजा खोला ।

खीसें निपोरती, अभिवादन में झुकती एक अजनबी सूरत उसे दिखाई दी ।

"यस !" - वो शुष्क स्वर में बोली ।

"मैं बेलावाला ।"

"क्या मांगता है ?"

"मैं कल भी आया । आज भी दो टेम आया पण आप इधर नहीं था ।"

"अरे, मांगता क्या है ?"

"दोनों कारें ले के जाने का है न ?"

"क्या !"

"एम्बैसेडर । ओमनी । बोले तो मारुति वैन ।"

"तुमको ले जाने का है ?"

"यहीच बोला मैं ।"

"क्यों ? सर्विस ड्यू है ?"

"क्या बोला ?"

"सर्विस स्टेशन से आया ? ये कौन-सा टाइम है सर्विस के लिये गाड़ी ले जाने का ?"

"अरे, बाई, मैं क्या मकैनिक है ? डिरेवर है ?"

"तो ?"

"मैं परचेज किया न दोनों गाड़ी !"

"क्या !"

"कैश पेमेंट किया पुणेकर साहब को । पुणेकर साहब बोला डिलीवरी संडे के बाद । मैं संडे को इधर आया, आज भी दो टेम पहले आया । अभी दोनों कार ले के जाने का है न !"

"दोनों ?"

"बोले तो दूसरा भीड़ू है न !"

"भीतर आओ ।"

नमिता ने उसे ड्राइंगरूम में बिठाया, पैप्सी सर्व किया और धीरज से उसकी बात सुनी ।

बेलावाला ने वैसे ही धीरज से सब सुनाया, सबूत भी पेश किया कि वो दोनों गाड़ियां खरीद चुका था, रजिस्ट्रेशन ट्रांसफर की सहमति पर पुणेकर के साइन तक दिखाये ।

झटके पर झटका खाती नमिता अब उस स्टेज पर पहुंच गयी थी, जहां कि उसे कोई बात हैरान नहीं करती थी । अब तो कोई उसके तन के कपड़ों का क्लेमेंट भी पहुंच जाता तो उसे कोई हैरानी न होती ।

"मैं वैन कुछ दिन रखना चाहती हूं ।" - वो कातर भाव से बोली - "तुम एम्बैसेडर अभी ले जाओ, लेकिन मेरी रिक्वेस्ट है कि वैन वीकएन्ड पर ले जाना ।"

"बोले तो ?"

"इतवार शाम को ले जाना ।"

"पण..."

"इस मेहरबानी की कोई फीस, कोई खामियाजा, कोई जुर्माना चाहते हैं तो बोलो ।"

"नहीं, नहीं । वान्दा नहीं । चलेगा ।"

"थैंक्यू ।"

"एम्बैसडर ले के जाता है ।"

"ठीक है ।"

"वैन के लिये संडे को आता है ।"

"ओके ।"

"अभी जाता है ।"

"थैंक्यू ।"

बेलावाला रुखसत हो गया ।

उस रोज नमिता ने ड्राइवर समेत तमाम नौकरों की छुट्टी कर दी, उसने सब को ठीक से समझा दिया कि काटेज बिक रहा था जिसकी वजह से आइन्दा सात आठ दिन में उसको वहां से शिफ्ट करना था और शिफ्ट करके वो कहां जाती, इस बाबत अभी खुद उसको कोई जानकारी नहीं थी । उसने उनसे ये तक न छुपाया कि आइन्दा दिनों में वो सर्वेन्ट्स अफोर्ड ही नहीं कर सकती थी ।

नौकर मालिक का अफसोस करते और उससे हमदर्दी जताते रुखसत हुए ।

***

रात नौ बजे तक नमिता को पूरी गारन्टी हो गयी कि उसके काटेज की बारीक, चौतरफा निगरानी हो रही थी ।

थोड़ी देर पहले वो खामखाह नजदीकी फिश मार्केट तक गयी थी तो उसने सादे कपड़ों में दो जनों को पीछे लगा पाया था ।

अब उसे शिद्दत से ये अहसास होने लगा था कि उसे किसी भी क्षण हिरासत में लिया जा सकता था ।

क्या करे वो ?

कैसे वो उस दुश्वारी से पार पाये ?

दुश्वारियों का तो कोई ओर-छोर ही नहीं था, एक गयी नहीं होती थी कि दूसरी आ जाती थी, तीसरी आ जाती थी ।

कहीं खिसक जाना भी नामुमकिन जान पड़ता था ।

फिलहाल खिसकना तो वो चाहती ही नहीं थी क्योंकि वो काटेज ही कोठारी से उसका सम्पर्कसूत्र था जिसकी कभी भी कोई चिट्ठी वहां पहुंच सकती थी ।

तो क्या करे ?

उस घड़ी उसे गुंजन शाह की याद आयी ।

गुंजन शाह ! वो एडवोकेट पुणेकर से शादी के वक्त पांच करोड़ की एफडी को, उसकी ट्रस्टीशिप को, एग्रीमेंट वगैरह को उसने जिससे डबल चैक कराया था ।

उसके खयाल से ही उसको राहत महसूस होने लगी

उसने गुंजन शाह को फोन लगाया ।

***

साढ़े नौ बजे के करीब काल बैल बजी ।

कमाल ! - हैरान होते नमिता ने सोचा - बड़ा वकील साहब इतनी जल्दी पहुंच गया !

व्यग्र भाव से उसने दरवाजा खोला ।

चौखट पर सम्भाजी भौंसले खड़ा था ।

नमिता का मन वितृष्णा से भर उठा । क्या नामुराद वक्त चुना था उसने वहां आने का !

आदत से मजबूर उसने उसे मन-ही-मन दस गालियां बकी और फिर चौखट पर से हटी ।

“मैं आपसे माफी मांगने आया हूं ।” - भीतर दाखिल होता वो खेदपूर्ण स्वर में बोला - “न आता तो पश्चाताप में रात - भर मुझे नींद नहीं आने वाली थी ।”

“नैवर माइन्ड, मिस्टर भौंसले ।” - वो अनमने भाव से बोली ।

“मैं कबूल करता हूं कि मुझे वो बात नहीं कहनी चाहिये थी । कहनी भी चाहिये थी तो आपकी इस मातम की घड़ी में नहीं कहनी चाहिये थी ।”

“अब छोड़िये भी । खत्म हो गयी न वो बात !”

“मैं एक बात को लेकर बहुत कन्फ्यूजन में हूं । वकील साहब असल में क्या चाहते थे, आपके हसबैंड, पुणेकर साहब, परसों सुबह फिशिंग के लिये निकलते या न निकलते ।”

कुत्ता ! फिर शुरू हो गया !

"मेरे खयाल से तो चाहते थे कि न निकलते । अगर मेरा खयाल सही है तो उनकी मंशा पूरी तो न हुई ।"

"मेरे खयाल से इस बाबत आपका वकील साहब से ही बात करना ठीक होगा ।"

"वो भी तो नहीं मिल रहे । सुना है कहीं बाहर गये हैं ।"

"ठीक सुना है, लेकिन आ जायेंगे दो-तीन दिन में ।"

"गये कहां हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम ।"

"लेकिन ये मालूम है कि कहीं गये हैं ?"

"हां ।"

"कैसे ?"

नमिता ने आंखें तरेरी ।

"खैर ! खैर ! लौटेंगे तो देखेंगे । तब तक सस्पेंस रहेगा कि वकील साहब ने मेरे से झूठ क्यों बुलवाया और वो यूं क्या चाहते थे ?"

"ये पहले पूछना चाहिये था ।"

"हां, लेकिन मैंने उनका हुक्म माना न ।"

"हुक्म माना तो अब मीन-मेख क्यों निकाल रहे हैं ?"

"मीन-मेख नहीं निकाल रहा, हैरा..."

"हैरान भी क्यों हो रहे हैं ?"

"कोई खास वजह नहीं, यूं ही..."

"आपको यहां नहीं आना चाहिये था ।"

"क्या ! मेरे दोस्त की बीवी के साथ इतनी बड़ी ट्रेजेडी हुई, मैं उसको अफसोस जताने नहीं आ सकता ?"

"आ सकते हैं । रात के दो बजे तक आ सकते हैं । नो प्रॉब्लम ।"

"ओह ! ओह ! आई एम सारी अगेन । तो आपने मुझे माफ किया ?"

"जी हां । किया ।"

"जो मुझे नहीं कहना चाहिये था, वो आपने भुला दिया ?"

"हां । और, फार गॉड सेक, आप भी भुला दीजिये ।"

"जी हां । जरूर ।"

"ऐसा भुला दीजिये कि ताजिन्दगी ये मसला आपको दोबारा याद न आये ।"

"जी !"

"जी हां ।"

"ऐ.. .ऐसा क्यों ?"

“वजह आपको मिस्टर कोठारी लौटेंगे तो समझायेंगे, तब तक मुंह बन्द रखिये, अहसान होगा उन पर.. .मेरे पर भी ।”

“आप बड़ी अजीब बातें कर रही हैं ।”

जवाब में नमिता ने बनावटी जम्हाई ली ।

“मैं.. .चलता हूं । मुझे दिल से पुणेकर साहब की मौत का अफसोस है, आप मुझे अपने गम में शरीक समझिये और कभी भी, कोई खिदमत हो तो बेहिचक फरमाइयेगा ।”

“एक तो अभी है ।”

“क्या ?”

“गुड नाइट बोलिये ।”

“ओह ! गुडनाइट, मैडम । ईश्वर आपको ये दारुण दुख झेलने की शक्ति देगा...”

अब दफा भी हो ।

“...गुड नाइट ।”

***

दस बजे के करीब गुंजन शाह पहुंचा ।

वो बासठ साल का रोली पोली व्यक्ति था जिसके बाल उस उम्र में भी काले थे और जो बहुत सज-धज के रहने का आदी था ।

“मैं आइलैंड पर एक पार्टी में था” - उसने बताया - “इसलिये सोचा सुबह का क्या इन्तजार करना ! फोन पर क्या बात करना !”

“थैंक्यू ।” - नमिता इठलाती, मुस्कराती बोली ।

“तुम्हारे हसबैंड की बाबत पेपर में पढ़ा, अफसोस हुआ ।”

उसने तत्काल इठलाना, मुस्कराना बन्द किया ।

“यहां की निगरानी हो रही है । मालूम ?”

“मालूम ।”

“मतलब मालूम ?”

“मालूम । तभी तो आपको फोन लगाया ।”

“ये जगह बग्ड हो सकती है ।”

“क्या ?”

“पुलिस ने कहीं माइक्रोफोन फिट करवाया हो सकता है ।”

“ओह, नो ।”

“ओह, यस । बहुत बड़ी जगह है ये, यहां माइक्रोफोन तलाश करने में बहुत टाइम जाया होगा, जो मैं नहीं करना चाहता क्योंकि मैंने पार्टी में वापिस लौटना है ।”

“आई सी ।”

“टाइम की यहां मुझे और काम में भी जरूरत है ।”

“और काम ?”

“जो मैं करने आया हूं ।”

“ओह !”

“जो मैं करूंगा ।”

“थैंक्यू ।”

“तो कोई और जगह...”

“यस । यस । प्लीज कम ।”

वो उसे मास्टर बैडरूम के बगल के छोटे - उसके - बैडरूम में लेकर आयी ।

वहां शाह ने सबसे पहले चौतरफा मुआयना करके तसल्ली की कि वहां कोई माइक्रोफोन फिट नहीं था । फिर वो नमिता के सामने आ खड़ा हुआ । उसने आंख भरकर उसे देखा ।

“क्या है ?” - वो तनिक नर्वस भाव से बोली ।

“तीन साल गुजर गये ।” - शाह बोला - “कोई फर्क नहीं । कहीं कोई फर्क नहीं । सिवाय यहां से” - उसने हाथ बढ़ाकर उसके स्तनों को छुआ - “थोड़ी भारी हो गयी हो...”

“क्या करते हो !”

“लेकिन वो भी अच्छा ही हुआ है । क्योंकि अब कमर ज्यादा पतली लगती है और कूल्हे” - उसने थपकी दी - “कोई फर्क नहीं ।”

“वकील साहब...”

“ईडियट था तुम्हारा हसबैंड । तीन साल में तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सका । कोई दूसरा होता तो चूलें हिला देता, अंजर-पंजर ढीले कर देता । दो बच्चे खिला रही होतीं ।”

“मिस्टर शाह, शैल वुई कम टु दि पॉइंट ?”

“बट आई एम आलरेडी देअर । पॉइंट ! यस ।” - उसने उसका एक निपल मसला ।

“मिस्टर शाह, प्लीज...”

“ग्रेट पॉइंट । नाओ लैट्स सी दि अदर ।”

“मिस्टर शाह, फार गॉड सेक...”

“लगता है तुम्हें मेरी जरूरत नहीं है । मैं खामखाह यहां आया ।”

“मुझे सख्त जरूरत है ।”

“तो सख्त जरूरत वाला मिजाज किधर है ?”

“आप क्या चाहते हैं ?”

“वूमेन ! डू आई हैव टू ड्रा यू ए डायग्राम ?”

उसने उत्तर न दिया, बेचैनी से पहलू बदला ।

“पिछली बार जब मिली थीं - तीन साल होने को आये - और मैंने तुम्हारा काम किया था तो कोई फीस चार्ज नहीं की थी । बोला था फीस पैंडिंग । नो ?”

“यस ।”
“बोला था आगे फिर वास्ता पड़ेगा तो पिछली फीस भी वसूल कर लूंगा । नो ?”
“यस ।”
“तो फिर हुज्जत कैसी ? वसूली में फच्चर कैसा ?”
“लेकिन आप तो.. .आप तो...”
“हमारे में अभी फीस की कोई बात नहीं हुई । न करंट की, न पैंडिंग की ।”
वो सकपकाई ।
“आई कम एक्सपेंसिव । यू आलरेडी नो दैट । कैन यू अफोर्ड मी ?”
“वो... वो...”
“आई नो यू कैन नाट । सो स्टाप बिकरिंग ।”
वो खामोश हो गयी ।
शाह ने उसे अपनी बांहों में भर लिया । उसके हाथ उसके सारे जिस्म पर फिरने लगे ।
“नाइस । नाइस ।”
“कोई आ जायेगा ।” - वो फुसफुसाई ।
“कौन आ जायेगा ?”
“सर्वेंट ।”
“कितने हैं ?”
“एक मेड है ।”
“बस ?”
“हां ।”
“नौजवान है ?”
“हां ।”
“उसकी बिना बुलाये यहां आने की मजाल नहीं हो सकती ।”
“लेकिन...”
“एक्सपीरियेंस्ड मेड है ?”
“हां ।”
“तो उसे मालूम होगा कि जहां लेडी आफ दि हाउस मेल गैस्ट के साथ हो, वहां बिन बुलाये नहीं जाते । नो ?”
उसने उत्तर न दिया ।
“वैसे मुझे उम्मीद नहीं कि यहां मेड है ।”
उसकी भवें उठीं ।
“होती तो मेरी आमद पर दरवाजा उसने खोला होता ।”
“ऐसा ?”

"हां । सच पूछो तो मुझे यकीन है कि इस घड़ी यहां हम दोनों के अलावा कोई नहीं है ।"

"कैसे यकीन है ?"

"अपने आसपास किसी की मौजूदगी मैं हवा सूंघ के बता सकता हूं ।"

"क्या कहने ! कहीं इसी वजह से तो आप यहां इस वक्त नहीं आये ?"

"है तो सही ये भी वजह ।"

"यही वो और काम है जिसमें आपको टाइम की जरूरत है ?"

"कितनी समझदार हो !"

"लेकिन फिर भी ये..."

"हनी, फी कैन बी कलैक्टिड इन कैश ऑर इन काइन्ड । यू पे मी इन कैश, आई वोंट कलैक्ट इन काइन्ड । चायस इज युअर्स ।"

"अभी छोड़िये तो सही ।"

"किसलिये ? कैश में फीस लाने के लिये ?"

"दरवाजा बन्द करने के लिये ।"

"खामखाह ! जब यहां कोई है ही नहीं..."

"बत्ती बन्द करने के लिये ।"

"क्यों ? डण्डी मारना चाहती हो ? जो कि रोशनी में नहीं मार सकोगी ?"

"तौबा ! आप तो..."

"तुम चाहती हो केस में मेरी दिलचस्पी खत्म हो जाये ? मुझे पार्टी में अपनी मौजूदगी ज्यादा जरूरी लगने लगे ?"

"नहीं ।"

"तो फिर चुप हो जाओ ।"

उसने आदेश का पालन किया ।

"से, आई सबमिट माईसैल्फ टू दि डिस्क्रीशन आफ माई लीगल काउन्सल ।"

"आई" - नमिता के स्वर में से मद टपकने लगा - "सबमिट माईसैल्फ टू दि एनटायर डिस्क्रीशन आफ माई लीगल काउन्सल ।"

"यस । दैट्स लाइक ए गुड गर्ल ।"

***

बाद में नमिता ने बड़े वकील को सविस्तार सब कुछ बताया ।

सिवाय हत्या के षड़यंत्र के ।

सिवाय कोठारी की चिट्ठी के और चिट्ठी के अपने खतरनाक जवाब के ।

वो जानती थी कि वकील से कुछ छुपाना गलत होना था लेकिन उन दो बातों को वो जुबान पर न ला सकी । कैसे वो अपनी जुबानी अपने खाविन्द के कत्ल की साजिश में

शरीक होने की हामी भरती ! कैसे वो उस जहालतभरी चिट्ठी का जिक्र करती जिसमें उसने खुद अपने गुनाह की तहरीर को मोहरबन्द किया था !

दूसरे, वो उसे गुनहगार जानकर उसकी वकालत करने से इंकार कर सकता था ।

तीसरे, जिस बात की अभी किसी को भनक तक नहीं थी, उसकी बाबत खुद मुंह फाड़ने का क्या फायदा था !

उसने सोनाटा की बाबत सवाल किया कि कार कोठारी क्यों ले गया तो उसने यही जिद बरकरार रखी कि पुणेकर की मनुहार पर ले गया । उसने उसके कोठारी से किन्हीं खास ताल्लुकात की बाबत सवाल किया तो उसने सख्ती से जवाब दिया कि ऐसे कोई ताल्लुकात नहीं थे ।

"हूं ।" - शाह आखिर में बोला - "कुछ परिस्थितिजन्य सबूत तुम्हारी तरफ इशारा करते हैं, लेकिन उनमें पुख्ता कुछ नहीं है । ऐसा कुछ नहीं है जिसकी पालिश उतारना मेरी कूवत से बाहर हो । इसलिये वो तुम्हें गिरफ्तार करते हैं तो ये तुम्हारे फायदे की बात होगी ।"

"वो कैसे ?"

"गिरफ्तारी के चौबीस घंटों के भीतर मुलजिम को चार्ज लगाकर कोर्ट में पेश करना पड़ता है । वो नहीं करेंगे तो मैं उन्हें ऐसा करने के लिये मजबूर करूंगा । कोर्ट में मैं पुलिस के केस की धज्जियां उड़ा दूंगा । वहां उनकी रिमांड की अर्जी खारिज होगी और तुम्हें लैक आफ ईवीडेंस की बिना पर बरी कर दिया जायेगा ।"

"लेकिन चौबीस घंटे ! इसका मतलब है ओवरनाइट तो सलाखों के पीछे रहना पड़ेगा !"

"रिमांड मिला तो वो सैवरल नाइट्स होंगी । दो हफ्ते तक का रिमांड कोई बड़ी बात नहीं होगी । दैट बिल बी नाइटमेयर फार यू माई हनीचाइल्ड ।"

"ओह !"

"इसलिये मेरा एतबार है कि वो तुम्हें क्वेश्चनिंग के लिये हिरासत में लेंगे । तब वकील को अपने क्लायंट के साथ रहने का अख्तियार होता है । तब उनके केस की जो गत मैंने कोर्ट में बनानी होगी, वो मैं थाने में ही बना दूंगा ।"

"श्योर ?"

"ऐज श्योर ऐज युअर डिवाइन ब्यूटी, स्वीटहार्ट । नाओ रैस्ट अश्योर्ड एण्ड हैव फेथ इन मी ।"

नमिता ने उसकी दिखाने के लिये छाती फुलाकर मोरनी की तरह चैन की सांस ली ।

"ग्यारह बजने को हैं" - वो अपनी कलाई पर निगाह डालता बोला - "और अभी मैंने पार्टी में भी जरूर लौटना है..."

"पार्टी हो नहीं गयी आपकी !" - नमिता धूर्त भाव से बोली ।

“...सोशल पार्टी में जरूर लौटना है इसलिये आज तो मैं कुछ नहीं कर सकता लेकिन कल सुबह ही मैं उन तमाम लोगों से मिलूंगा जिनके तुमने नाम लिये । मसलन दोनों बैंकर्स से । स्टाक ब्रोकर संदीप नाडकर्णी से । प्रापर्टी डीलर परांजपे से । कार डीलर अनूप दीक्षित से । कांदीवली के छत्रपति बैंक वालों से जहां कि पुणेकर का लाकर था । कोई रह गया हो तो बोलो ।”

“सैकण्डहैंड कार डीलर बेलावाला ।”

“ही इज आफ नो कंसीकुएंस । फारगेट हिम ।”

“मिसेज रोटोलो । पड़ोस की गोवानी विडो ।”

“जिसे तुम कहती हो कि इनसोमनिया है ।”

“क्या है ?”

“अनिद्रा की बीमारी है ?”

“हां ।”

“अभी भी जाग रही होगी ?”

“उम्मीद तो यही है ।”

“मैं उससे अभी मिलने की कोशिश करूंगा ।”

“गुड ।”

“अभी जाता हूं ।”

“ओके ।”

“लेकिन एक बात ध्यान में रखना ।”

“क्या ?”

“अभी फीस की एक इंस्टालमेंट ही अदा हुई है । आइन्दा अदायगी के लिये तैयार रहना ।”

“जेल से दूर रखोगे तभी तो ?”

“रखूंगा न ! वकील अपनी फीस छोड़ता है ?”

“नहीं ।”

“सो देयर ।”

वो खामोश रही ।

“भई, वाह ! ब्यूटी क्वींस के पास ही ऐसा बैंक अकाउंट होता है जिसमें से जितनी मर्जी विड्रा कर लो, बैलेंस फिर भी बराबर रहता है । यू हैव इट, यू गिव इट टू समबाडी, यू स्टिल हैव इट । ग्रेट ।”

“आप तो.. .आप तो...”

“क्या मैं तो ? निसंकोच कहो जो कहना है ?”

“टॉप के हरामी हैं ।”

“मैं क्या अकेला ? घर घर, गली गली; बस्ती बस्ती, शहर शहर टॉप के हरामियो से भरे हैं । कोई बाटम का नहीं । कोई मिडल लैवल का नहीं । सब टॉप के । नो ?”

नमिता ने उत्तर न दिया ।

“फिर टॉप के हरामी तो तुम्हें पसन्द हैं ।”

“क्या ?”

“पुणेकर की मिसाल दी मैंने । टॉप का न होता तो तुम उससे शादी करतीं ?”

“मिस्टर शाह, ये ऐसी बातें करने का टाइम नहीं है ।”

“आई एग्री विद यू वन हण्ड्रेड पर्सेंट, माई डियर, सो आई टेक लीव ऑफ यू । गुड नाइट । स्वीट ड्रीम्स ।”

***

सुबह आठ बजे नमिता सोकर उठी ।

सबसे पहले उसे अखबार की याद आयी ।

वालसन की वजह से ।

कल का पेपर देखना ।

मेड को भेजती हूं मार्केट अखबार लाने ।

मेड ! मेड कहां रखी थी !

उसने गहरी सांस ली और उठकर खड़ी हुई ।

मार्केट जाने की जगह वो मिसेज रोटोलो के काटेज पर पहुंची ।

उसे देखते ही मिसेज रोटोलो के चेहरे पर हमदर्दी के भाव आये लेकिन इससे पहले कि वो हमदर्दी को अल्फाज में ढाल पाती, नमिता बोल पड़ी - “आज का अखबार आया, मिसेज रोटोलो ?”

“आया न ।”

उसने अखबार पेश किया ।

ऐन उसी हालत में जिसमें कि वो हाकर के पास होता था ।

“आपने नहीं पढा ?” - वो बोली ।

“अभी पढ़ेगा न ! तुम ले के जाओ ।”

“नहीं, मैंने बस जरा...”

वो खबर मुखपृष्ठ पर ही मौजूद थी जिसकी वजह से उसे अखबार खोलना तक न पड़ा । छपा था :

विचाराधीन कैदी की जेल में खुदकुशी

उसने जल्दी जल्दी नीचे छपी खबर पर निगाह दौड़ाई ।

खबर के मुताबिक शरद शिराली नाम के विचाराधीन कैदी ने, जो कि एक कत्ल के केस में गिरफ्तार था, पिछली रात को बैरेक के टायलेट के रोशनदान की ग्रिल से बंधी रस्सी

से झूलकर खुदकुशी कर ली थी ।

ओमेगा के नये बॉस की पहली उपलब्धि !

उसने अखबार मिसेज रोटोलो को लौटाया और चाय की मनुहार को नकारती वापिस लौटी ।

***

दोपहर के करीब लोकल थाने से सब-इन्स्पेक्टर कदम काटेज पर पहुंचा । वो नमिता से रूबरू हुआ तो उसने उसकी गिरफ्तारी की या उसके हिरासत में लिये जाने की कोई बात न की, उसने सिर्फ कहा - "एसएचओ साहब आपसे और पूछताछ करना चाहते हैं इसलिये आपको मेरे साथ थाने चलना होगा ।"

नमिता चुपचाप उसके साथ हो ली ।

थाने में उसे एसएचओ के आफिस में पहुंचाया गया लेकिन खुद एसएचओ - इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर - वहां मौजूद नहीं था ।

कोई और शख्स मौजूद था, जिसे कि वहां नहीं होना चाहिये था, जिसकी वहां मौजूदगी ने उसके सहमे हुए दिल को और सहमा दिया ।

सम्भाजी भौंसले !

सब-इन्स्पेक्टर वहां से चला गया तो वो भौंसले से मुखातिब हुई ।

"तुम !" - वो व्यग्र भाव से बोली - "तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

उसने असहाय भाव से कंधे उचकाये और खेदपूर्ण भाव से मुस्कुराकर दिखाया ।

"जवाब दो, भई !"

"कल जब मैं तुम्हारे काटेज से..."

"ठहरो ।"

वो ठिठका ।

नमिता को एकाएक सूझा था कि उसकी वहां मौजूदगी बेसबब नहीं हो सकती थी । उसने एक उड़ती निगाह बन्द दरवाजे की तरफ डाली और फिर सावधानी से निगाह सारे कमरे में दौड़ाई । उसने देखा परली दीवार में एक विशाल खिड़की थी जो बन्द थी और जिस पर मोटा पर्दा पड़ा हुआ था । वो उठकर वहां गयी और उसने इशारे से भौंसले को करीब बुलाया ।

अनिश्चित सा भौंसले कुर्सी पर से उठा और उसके करीब पहुंचा ।

"टेबल पर कहीं बग हो सकता है ।" - वो फुसफुसाई ।

"बग !" - भौंसले सकपकाया - "बोले तो ?"

"माइक्रोफोन ! जिसके जरिये यहां की बातें कहीं और सुनी जा सकती हैं । पुलिस ऐसे आले आम इस्तेमाल करती है ।"

"आले ?"

“ओफ्फोह ! बात तुम्हारी समझ में आयी या नहीं ?”
“आयी ।”
“तो फिर ?”
“कुछ नहीं ।”
“यहां कैसे पहुंच गये ?”
“मर्जी से तो न पहुंचा ।”
“मुझे दिखाई दे रहा है । क्या हुआ ?”
“रात को तुम्हारे काटेज से निकला...”
“धीरे बोलो । मेरी तरह फुसफुसा के ।”
“...तो पुलिस ने थाम लिया । मुझे क्या मालूम था पुलिस वाले काटेज की निगरानी कर रहे थे ।”
“क्यों थाम लिया ?”
“बोले, पूछताछ के लिये ।”
“कैसी पूछताछ ? एक ही बार में सब बोलो, अभी कोई आ जायेगा ।”
“पूछने लगे क्या करने आया था । मैंने कहा बीवी से हसबैंड की मौत का अफसोस जाहिर करने आया था । वजह पूछी तो मैंने बताया कि हसबैंड मेरा दोस्त था । फैलो ऐंगलर था । पूछने लगे कि क्या मैं शनिवार रात को काटेज पर गया था । मेरे को हां बोलना पड़ा । वजह पूछी गयी तो मैं बोला यूं ही । कर्टसी काल । पूछा गया क्या मुझे वहां होती बर्थ डे सैलीब्रेशन की खबर थी ? मैं बोला नहीं लेकिन बोला कि पहुंच ही गया था इसलिये मुझे शामिल कर लिया गया था । नतीजतन मैं एक-दो पैग पीकर वहां से चला गया था ।”
“क्या ?”
“मुझे दूसरी जगह काम था ।”
“तसदीक होगी ?”
“होगी । हो चुकी है ।”
“हूं । ये पक्की बात है कि शनिवार रात को काटेज पर पहुंचने की वजह कर्टसी काल बताई ?”
“हां ।”
“रात से यहीं हो ?”
“नहीं । सुबह फिर आने को बोला गया था, इसलिये आया ।”
“क्या ?”
“काटेज पर जाने की मेरी बताई वजह से तसल्ली नहीं हुई । जिद कर रहे हैं कि कोई और बात थी । असल वजह जानना चाहते हैं ।”
“तुमने बताई ?”

“नहीं ।”

“बताओगे ?”

“नहीं ।”

“कहीं, बता ही तो नहीं चुके हो ?”

भौंसले ने आहत भाव से उसकी तरफ देखा ।

“जवाब दो ।”

“बता चुका होता तो क्या मैं अभी भी यहां होता ?”

“बताना नहीं ।”

“बोला न, नहीं बताऊंगा ।”

“खरे रहना इसी बात पर । समझ लो ये कोठारी का हुक्म है ।”

“वो कहां है ?”

“कहीं बाहर गया है, बोला तो, आ जायेगा ।”

उसने इंकार में सिर हिलाया ।

“क्या हुआ ?”

“पुलिस कहती है नहीं आयेगा ।”

“खामखाह !”

“भाग गया । फरार हो गया । कहती है तुम्हारे हसबैंड के मर्डर में उसका हाथ है ।”

“नानसेंस ! सदा का एक्सीडेंट हुआ है । वो एक्सीडेंटल डैथ का केस है ।”

“पुलिस कहती है...”

“चोर बहकाती है । उनका कारोबार है । मैं फिर वार्न कर रही हूं । असल बात जुबान पर लाये तो बुरा होगा । तुम्हारे लिये । कोठारी...”

“होगा तो बुरा होगा न !”

नमिता ने घूरकर उसे देखा ।

भौंसले ने उससे निगाह न मिलाई ।

“तो तुम” - नमिता बोली - “ये पक्का किये भी बैठे हो कि आइन्दा कभी तुम कोठारी से रूबरू नहीं होने वाले ।”

“पुलिस कहती है...”

“हैल विद दि पुलिस । इस वक्त पुलिस की नहीं, तुम्हारी बात हो रही है । भौंसले, अगर असल बात जुबान पर लाये तो तुम साजिश में शरीक माने जाओगे ।”

“कैसी साजिश ?”

“तुम्हें मालूम है कैसी साजिश ! पुलिस ने इतना कुछ बताया तो ये भी बताया होगा कि कैसी साजिश !”

“वो कहते हैं मुझे कुछ नहीं होगा ।”

"चोर बहकाते हैं । झूठी तसल्ली देना पुलिस का कारोबार है । अपना मतलब हल करने के लिये वो कुछ भी कह सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं ।"

"मतलब ! उनका कौन-सा मतलब है ?"

"समझो ।"

"कैसे समझूं ?"

"अरे, मैं यहां हूं कि नहीं हूं ?"

"ओह !"

"सब पंगा तुम्हारे कल रात काटेज पर आने की वजह से हुआ । तुम्हें नहीं आना चाहिये था ।"

"अब मुझे क्या मालूम था कि..."

"ठीक है । ठीक है । बाहर कारीडोर में आहट हो रही है । शायद कोई इधर ही आ रहा हो । वापिस चलो ।"

दोनों टेबल पर पहुंचे और अपनी अपनी कुर्सी पर बैठ गये ।

सब-इन्स्पेक्टर कदम वहां पहुंचा ।

"भई" - नमिता तिक्त भाव से बोली - "तुम्हारे एसएचओ साहब..."

"अभी । अभी ।" - कदम बोला - "आप आइये ।"

भौंसले उठा और नमिता की चेतावनीभरी निगाह झेलता उसके साथ हो लिया ।

पीछे नमिता अकेली रह गयी ।

न जाने क्यों उसका दिल गवाही दे रहा था कि भौंसले ने असलियत बक के रहना था ।

काफी के साथ एक हवलदार वहां पहुंचा । वो काफी रख के जाने लगा तो नमिता ने एसएचओ की बाबत पूछा । जवाब मिला कि वो थाने के परिसर में तो था लेकिन किसी दूसरे केस के दूसरे गवाह के साथ बिजी था ।

एसीपी मनोहर पावटे के बारे में पता चला कि वो फील्ड में था ।

एक घंटे बाद हवलदार फिर काफी लाया ।

मेज पर अखबार पड़ा था । उसने अखबार उठा लिया और अनमने भाव से उस पर निगाह डाली । उसने नोट किया कि वो मिसेज रोटोलो वाले अखबार से जुदा अखबार था लेकिन शिराली की खुदकुशी की खबर उसके भी मुखपृष्ठ पर थी ।

तीसरे पृष्ठ की एक सुर्खी पर उसकी निगाह पड़ी तो वो सन्नाटे में आ गयी ।

कोठारी ! मैंगलोर में कार एक्सीडेंट में मारा गया ।

उसने जल्दी जल्दी सारी खबर पढ़ी ।

तो - असहाय भाव से गर्दन हिलाते उसने सोचा - ये वजह थी कि भौंसले के बदले मिजाज की । उसकी धृष्टता की । उसके इस बात पर जोर देने की कि कोठारी लौटकर नहीं

आने वाला था । लौटकर नहीं आने वाला था इसलिये उसका खौफ खाना उसके लिये जरूरी नहीं था ।

कैसी विडम्बना थी कि जिस खबर से हर कोई वाकिफ था, सिर्फ वो ही उससे वाकिफ नहीं थी । और ऐसा महज इसलिये हुआ था कि उनके यहां अखबार नहीं आता था ।

अब उसे यकीन होने लगा कि भौंसले पहले ही सब बक चुका था, वो खामखाह वहां मौजूद नहीं था, उसे बाकायदा वहां प्लांट किया गया था ताकि नमिता उससे बतियाती और ऐसी कई बातें अपनी जुबानी कहती जिसे वो वैसे कबूलने को तैयार नहीं थी । संयोग से ही वो उस जाल में फंसने से बच गयी थी । पिछली रात एडवोकेट गुंजन शाह ने काटेज में ऐसे किसी माइक्रोफोन के लगे होने की सम्भावना न जाहिर की होती तो उसे तो उसका खयाल तक न आता ।

देवा !

दो घंटे गुजरे ।

आजिज आकर उसने घोषणा की कि वो जा रही थी और तभी लौटकर आयेगी जबकि एसएचओ या एसीपी साहब उपलब्ध होंगे तो सब-इन्स्पेक्टर कदम ने आकर सख्ती से उसे बताया कि वो नहीं जा सकती थी ।

“मैं अपने आपको गिरफ्तार समझूं ?” - वो भड़की ।

“कुछ भी समझिये लेकिन एसएचओ साहब की इजाजत के बगैर आप यहां से नहीं जा सकतीं ।”

“मेरा वकील तुम्हारे एसएचओ साहब को ठीक कर देगा ।”

“वो ठीक हो जायेंगे । इट्स आल पार्ट आफ दि गेम, मैडम । यू विन सम, यू लूज सम ।”

नमिता खामोश हो गयी ।

उस लम्बे इन्तजार का उसने यही मतलब समझा कि उस पर जानबूझ कर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाया जा रहा था ।

उस इन्तजार की बाबत वो एक दूसरे तरीके से सोचती थी तो उसे लगता था कि जो हो रहा था, अच्छा हो रहा था क्योंकि गुंजन शाह भी तो अभी तक वहां नहीं पहुंचा था ।

आखिरकार दो बजे विनोद नगरकर ने अपने आफिस में कदम रखा ।

“आई एम सो सारी, मैडम” - वो खीसें निपोरता बोला - “दैट यू हैड टु वेट । बट यू नो हाउ इट इज !”

“हाउ इट इज ?” - नमिता भुनभुनाई ।

“आई वाज एंगेज्ड इन एनदर केस ।”

“सो दैट्स माई प्राब्लम !”

“नो, नॉट युअर प्राब्लम। आकुपेशनल हैजर्ड, यू नो ?”

“हूं।”

“आप और काफी पियेंगी ?”

“नहीं।”

“तो शुरू करें ?”

“क्या शुरू करें ?”

“तफ्तीश। आपसे जिन सवालों का जवाब हम चाहते हैं, वो मैं पूछूं ?”

“मिस्टर नगरकर, फॉर युअर काइन्ड इनफर्मेशन, आई हैव एंगेज्ड एन एडवोकेट।”

“अच्छा !”

“जिसकी मुझे हिदायत है कि मैं अपना मुंह बंद रखूं।”

“ऐसा कैसे हो सकता है ?”

“मैं उसकी मौजूदगी में ही मुंह खोलूं।”

“ओह ! कहां हैं आपके एडवोकेट साहब ?”

“आ जायेंगे।”

“उन्हें मालूम है कहां आना है ?”

“मालूम है।”

“कहीं मिस्टर कोठारी ही तो नहीं लौट आये और हमें उनकी वापिसी की खबर नहीं लगी !”

“वो कैसे लौट सकते हैं ? वो तो... वो तो...”

“हां हां।”

“आपकी मेज पर ये जो अखबार पड़ा है, अभी मैं वक्तगुजारी के लिये इसे पलट रही थी तो मैंने कपिल कोठारी की बाबत इसमें खबर छपी देखी थी।”

“ये पढ़ा कि वो मैंगलोर में कार एक्सीडेंट में मारे गये। आपकी नयी सोनाटा को कोस्टल हाइवे से समुद्र में गिरा दिया, कार का कबाड़ा हो गया और लाश समुद्र में बह गयी ?”

“ऐसा ही छपा है न्यूज में।”

“जो कि आपने यहां आकर पढ़ी क्योंकि आपके घर में अखबार नहीं आता ?”

“हां।”

“यहां से अखबार उठाकर न पढ़तीं तो आप अभी भी एडवोकेट कपिल कोठारी के, अपनी सोनाटा के अंजाम से बेखबर होतीं ?”

“हां।”

“ये अजीब बात नहीं कि आप के करीबी लोगों का जो भी एक्सीडेंट होता है, उसमें मौत की तसदीक तो होती है लेकिन लाश बरामद नहीं होती।”

“मेरे करीबी ?”

“बराबर आपके करीबी । आपके हसबैंड, हसबैंड के एडवोकेट, हसबैंड के डाक्टर । नो ?”

वो खामोश रही ।

“शुक्रवार रात को डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला ने माहिम क्रीक से अपनी कार समुद्र में गिरा दी तो कार मिली, लाश न मिली क्योंकि वो समुद्र में बह गयी । इतवार सुबह मिस्टर पुणेकर फिशिंग के लिये निकले तो बोट मिली, लाश न मिली क्योंकि वो समुद्र में बह गयी । कल किसी वक्त मैंगलोर में एडवोकेट कोठारी ने कार से एक्सीडेंट किया तो कार मिली, लाश न मिली क्योंकि वो समुद्र में बह गयी ।”

“इत्तफाक की बात है ।”

“होते हैं इत्तफाक । इत्तफाक को होने से कोई नहीं रोक सकता लेकिन हैरानी है कि इतने सारे एक ही टाइप के इत्तफाक इंटरकनैक्टिड लोगों के साथ हुए !”

“हैरानी की नहीं, ये भी इत्तफाक की बात है । इत्तफाक जब होने पर आते हैं तो होते ही चले जाते हैं ।”

“ऐसा ?”

“मेरे से क्या पूछते हैं ? सब आपके सामने है ।”

“ये भी इत्तफाक है कि मैं लेट हुआ तो आपके वकील साहब भी लेट हो गये ।”

“है तो सही ।”

“वैसे हैं कौन आपके वकील साहब ?”

“मैं खुद बताता हूं न !”

दोनों की निगाह दरवाजे की ओर उठी ।

काला कोट पहने और हाथ में ब्रीफकेस थामे बड़ी शान से गुंजन शाह ने एसएचओ के आफिस में कदम रखा ।

नगरकर के माथे पर बल पड़े ।

“आपकी तारीफ ?” - वो बोला ।

“खुद करनी पड़ी तो किस काम की ?” - शाह बोला ।

“नाम बोलिये अपना ।”

“नाम भी मुझे कभी किसी को खुद नहीं बताना पड़ा । खास तौर से किसी पुलिस आफिसर को । पूछ रहे हो तो बोलता हूं । मेरे को एडवोकेट गुंजन शाह कहते हैं ।”

“मैं.. .नाम से वाकिफ हूं ।”

“सूरत से वाकिफ नहीं हो इसलिये नहीं पहचाना । आई एम गुंजन शाह इन पर्सन । आई रिप्रेजेंट दिस यंग लेडी ।”

“आपने कैसे सोच लिया कि मैडम को किसी रिप्रेजेंटेशन की जरूरत है ?”

“मैंने नहीं सोच लिया, मैडम ने सोच लिया । इनके हसबैंड के साथ जो बीती और बाद में जो - नाजायज - नजरेइनायत आप लोगों की इन पर हुई, उसकी वजह से सोच लिया । आपने इन पर पहरेदारी बिठा दी तो क्यों ये एडवोकेट की रिप्रेजेंटेशन की जरूरत न महसूस करतीं ?”

“आप नाहक बात का बतंगड़ बना रहे हैं । इन्हें मामूली पूछताछ के लिये यहां तलब किया गया था ।”

“और मामूली पूछताछ की तैयारी में इन पर पहरा बिठाया गया था ।”

“इस वजह से नहीं ।”

“तो और क्या वजह थी ?”

“हमें शक है कि इनके हसबैंड का कत्ल हुआ है । इस वजह से हमें अन्देशा था कि इनकी जान को भी खतरा था, इस वजह से इनकी निगरानी का इन्तजाम किया गया था ।”

“जो कि इन्हें खबर करके नहीं हो सकता था !”

“हो सकता था लेकिन हमने सोचा था कि ये और डर जातीं, और घबरा जातीं ।”

“जिसकी जान पर खतरा मंडराता हो वो डरता घबराता ही है, लेकिन ये मैंने कभी नहीं सुना कि पुलिस किसी की जानकारी के बिना उसे प्रोटेक्शन मुहैया कराती थी ।”

“अब आपकी मर्जी क्या है ? यहां आप इनके माउथपीस का रोल अदा करेंगे ?”

“आई विल एडवाइज माई क्लायंट अबाउट हर राइट्स । खामोश रहना भी इनका अधिकार है । बाजरिया एडवोकेट बयान देना भी इनका अधिकार है । आप इन्हें इनके अधिकार के इस्तेमाल से रोकना चाहते हैं ?”

“नहीं ।”

“तो पूछिये क्या पूछना है । मैं आपको आश्वासन देता हूं कि ये आपके हर सवाल का सीधा सच्चा और सही जवाब देंगी ।”

“तोता रटंत करेंगी । शातिर एडवोकेट की सिखाई जुबान बोलेंगी ।”

“नो । नैवर ।”

“हमारे पास मैडम के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं ।”

“किस बात के ?”

“अपने खाविन्द का कातिल होने के या उसके कत्ल की साजिश में शामिल होने के ।”

“एक बात कहिये ।”

“कानूनन दोनों एक बात हैं । आपको मालूम होना चाहिये ।”

“मैडम बेगुनाह हैं ।”

“आपको क्या मालूम !”

“क्योंकि मेरी क्लायंट हैं । गुंजन शाह का क्लायंट हमेशा बेगुनाह होता है । सारी ज्यूडीशियरी इस बात को जानती है कि जो गुंजन शाह का क्लायंट है, वो बेगुनाह है ।”

“क्या कहने !”

“अब बताइये, क्या है आपके पास मेरे क्लायंट के खिलाफ ?”

“अभी । अभी । मैं एक मिनट में हाजिर हुआ ।”

पीछे नमिता और गुंजन शाह अकेले रह गये ।

“इतनी देर लगाई !” - वो शिकायतभरे लहजे से बोली ।

“इतने लोगों से मिलना था ।” - शाह बोला - “टाइम तो लगता है न !”

“सब से मिल लिये ?”

“हां । आखिरकार ।”

“क्या जाना ?”

“अभी मालूम पड़ जायेगा । पहले तुम मेरी एक बात सुनो । मैंने एक खास सवाल तुमसे कल रात भी पूछा था, अभी फिर पूछता हूं । कोठारी और तुम्हारे बीच कुछ था ? तुम्हारे लिये वो फैमिली फ्रेंड से ज्यादा कुछ था ?”

“नहीं ।”

“पुलिस का इस बात पर काफी जोर होगा !”

“मैं क्या कर सकती हूं ?”

“उसका तुम्हारे यहां काफी आना जाना था ?”

“हां, था । लेकिन मेरे से मिलने के लिये नहीं, मेरे हसबैंड से मिलने के लिये जिसका कि वो लीगल एडवाइजर था, बिजनेस एसोसियेट था, दोस्त था ।”

“दोस्त भी ?”

“जब आता था दोनों का ड्रिंकिंग सैशन चलता था । ड्रिंक डिनर के लिये आउटिंग्स भी अक्सर होती थीं ।”

“आजकल पड़ोस में बसा हुआ था !”

“बसा नहीं हुआ था, एक करीबी काटेज किराये पर लिया हुआ था, जहां वो जब खुला टाइम उसके पास होता था तो आता था ।”

“क्या करने ?”

“अपना नावल लिखने ।”

“क्या लिखने ?”

“नावल लिखने । पिछले कुछ महीनों से वो एक नावल लिख रहा था जिस पर पूरी तवज्जो देने के लिये उसको बिल्कुल शान्त, विघ्न के बिना, माहौल मांगता था । वो कभी-कभी इधर काटेज में आकर अपने नावल को लिखने की लम्बी शिफ्ट लगाता था ।”

“नावल, माई फुट । हंसी खेल है नावल लिखना ! कैसा नावल लिख रहा बताता था ?”

“जासूसी । आधे से ज्यादा लिख चुका था ।”

“नानसेंस । ये कोई स्टण्ट था उसका ।”

“कैसा स्टण्ट ?”

“उसे तुम्हारे करीब रहने का बहाना चाहिये होगा !”

“खामखाह !”

“आज सुबह ही मुझे उसके करीबी काटेज में बसे होने की खबर लगी - कल तुमने तो इस बाबत साफ-साफ कुछ कहा नहीं था - तभी मेरे जेहन में ये आइडिया फ्लैश किया था कि उसका उम्रदराज खाविन्द की हसीनतरीन बीवी से कोई चक्कर था ।”

“नहीं था ।”

“लिहाजा । तुम अपने खाविन्द से सन्तुष्ट हो ? कोई शिकायत नहीं ?”

“हां ।”

“तुम दोनों में नार्मल कन्जुगल रिलेशंस - शारीरिक सम्बन्ध - स्थापित हैं ?”

“हां ।”

“जैसे कि ऐसे आम मियां बीवी में होते हैं जिनकी शादी को मुश्किल से तीन साल हुए हों ?”

“हां ।”

“तो फिर काटेज में तुम्हारा बैडरूम अलग क्यों है ?”

“क्योंकि उन्हें मैसिव हार्ट अटैक होकर हटा था जिसकी वजह से उन्हें कम्प्लीट रैस्ट की जरूरत थी ।”

“कब हुआ ऐसा ?”

“एक साल पहले । उससे पहले भी एक अटैक आया लेकिन वो सीरियस नहीं था ।”

“एक साल से वो रैस्ट ही किये जा रहा था ?”

“अब मैं क्या बोलूं ? कुछ बतौर घर के मालिक उनकी ऐसी मर्जी, कुछ डाक्टर की हिदायत ।”

“पुलिस को ये बात मालूम है ?”

“मेरे खयाल से मालूम है, क्योंकि वो भी सैपरेट बैडरूम्स की वजह की बाबत सवाल कर रहे थे ।”

“इसी बात को आगे खींचेंगे तो कोठारी से तुम्हारे अफेयर की बाबत सवाल करने लगेंगे ।”

“इशारों से तो कर ही रहे हैं ।”

“डाक्टर कौन था तुम्हारे हसबैंड का ?”

"आजकल डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला था, लेकिन शुक्रवार रात को कार एक्सीडेंट कर बैठा ।"

"बचा या मर गया ?"

"मर गया ।"

"जिसकी लाश नहीं मिली थी ? कार माहिम क्रीक में गिरी थी ?"

"हां ।"

"मैंने अखबार में उसकी बाबत पढ़ा था । मैसिव हार्ट अटैक के वक्त भी वो ही पुणेकर का डाक्टर था ।"

"नहीं । तब वो डाक्टर देशपाण्डे नाम के कार्डियालोजिस्ट के ट्रीटमेंट में थे ।"

"कहां पाया जाता है ?"

"वो तो प्रैक्टिस वाइन्ड अप करके कैनेडा चला गया ।"

"जब यहां था तो कहां पाया जाता था ?"

नमिता ने बताया ।

"अब लाख रुपये का सवाल । मोती जड़े बुन्दे की क्या बात है ?"

नमिता चौंकी ।

"तुम्हें मालूम तो है न कि तुम्हारा एक कीमती मोती जड़ा बुन्दा गायब है ?"

"हां । लेकिन आपको.. .आपको कैसे मालूम हुआ ?"

"मालूम हुआ किसी तरीके से ।"

"फिर भी ?"

"पुलिस के घर में घात लगायी, किसी ने बुन्दे की बाबत भी बताया और बरामदी की जगह की बाबत भी बताया ।"

"बरामदी की जगह ?"

"कोठारी का काटेज । जिससे तुम्हारे कोई ऐसे-वैसे तल्लुकात नहीं । जिसके सोफे के कुशन के पीछे से बुन्दा बरामद हुआ । अभी देखना पुलिस इसको कैसा रंग देगी ! क्या जवाब दोगी ?"

उसने बेचैनी से पहलू बदला ।

"बुन्दे में जब मोती बहुत बड़ा, बहुत कीमती, बहुत फ्लालैस बताया जाता है । इसलिये ये भी नहीं कहा जा सकता कि गैरशादीशुदा कोठारी किसी ऐसे-वैसी लड़की को - मुम्बई में खूब मिलती हैं - सैक्स किक्स के लिये पकड़ लाया और सोफे पर हुई धींगामुश्ती में बुन्दा उसके कान से निकल गया ।"

"वो बुन्दा मेरा है ।" - नमिता दबे स्वर में बोली - "लेकिन हैरान हूं वो वहां कैसे पहुंच गया जहां से मिला आप बताते हैं ! मैं सिर्फ एक बार उसके काटेज में गयी थी जबकि वो फोन का जवाब नहीं दे रहा था और मेरे हसबैंड ने ही मुझे ये देखने के लिये वहां भेजा था

कि कहीं वो काटेज में छुपा बैठा खामोशी से अपना नावल तो नहीं लिख रहा था । मुझे दरवाजा अनलाक्ड मिला था इसलिये मैं भीतर सोफे पर जाकर बैठ गयी थी कि अभी लौटता होगा । थोड़ा अरसा मैंने उसका वहां इंतजार किया था और फिर लौट आयी थी । वो बुन्दा अगर मेरी वजह से वहां गिरा था तो तभी गिरा हो सकता था वर्ना...''

''वर्ना क्या ?''

''किसी ने चोरी किया और वहां प्लांट कर दिया ।''

''अच्छा आइडिया है । वजह बाद में सोचेंगे लेकिन आइडिया अच्छा है । अब पहले हम ये सुनेंगे कि बुन्दे के बारे में वो क्या कहते हैं, फिर उनके कहे से सजता हुआ कोई जवाब सोचेंगे ।''

तभी एसएचओ नगरकर वापिस लौटा ।

तब उसके साथ एसीपी पावटे भी था ।

''हल्लो, वकील साहब ।'' - वो बोला - ''कैसे हैं ?''

''हल्लो, पावटे । मुझे नहीं मालूम था एसीपी बन गये हो । बधाई ।''

''थैंक्यू ।''

''कब बने ?''

''हाल ही में । एक महीना हुआ ।''

''वर्दी की चमक बता रही है ।''

''जनाब, वर्दी तो वही है, सिर्फ सितारों की जगह त्रिमूर्ति लग गयी है ।''

''तो फिर तुम्हारे चेहरे की चमक बता रही है । पुराने इन्स्पेक्टर से तो नये एसीपी का चेहरा ज्यादा ही चमकता है न !''

पावटे हंसा ।

दोनों अधिकारी दो कुर्सियों पर बैठ गये ।

पावटे नगरकर की कुर्सी पर, नगरकर उसके करीब एक कुर्सी घसीट कर उस पर ।

''मैं'' - पावटे बोला - ''मैडम की सूझ-बूझ और रिसोर्सफुलनैस दोनों की दाद देता हूं कि इन्होंने अपने स्पोक्समैन के तौर पर आपको चुना ।''

''क्योंकि बेगुनाह क्लायंट्स की, सरकमस्टांशल ईवीडेंस के शिकार क्लायंट्स की, मैं फर्स्ट चायस हूं ।''

''आपने फैसला कर भी लिया कि ये बेगुनाह हैं, सरकमस्टांशल ईवीडेंस की शिकार हैं...''

''जो मेरा क्लायंट है, वो बेगुनाह है ।''

''स्लोगन अच्छा है । अपने विजिटिंग कार्ड और लैटरहैड पर भी छपवा के रखिये, बहुत असरकारक साबित होगा ।''

''वैसे ही असरकारक है । सच के असर को कोई झेल सकता है ?''

“सच मालूम पड़ गया आपको ? जबकि न अभी आपने इनके गुनाह की बाबत कुछ सुना है और न सरकमस्टांशल ईवीडेंस की बाबत ।”

“अब सुनूंगा न ! बोलिये, क्या चार्ज है मेरे क्लायंट के खिलाफ ?”

“अभी कोई फॉर्मल चार्ज नहीं है । इसी वजह से इनको हिरासत में नहीं लिया गया है, सिर्फ क्वेश्चनिंग के लिये तलब किया गया है ।”

“आई सी ।”

“इसलिये हम समझते हैं कि आपका इनकी हिमायत के लिये थाने दौड़े चले आना गैरजरूरी था ।”

“गैरजरूरी नहीं था । मेरी यहां हाजिरी की वजह से ही आप एक कामन क्रिमिनल में और रिस्पैक्टेबल बिजनेसमैन की रिस्टपैक्टेबल वाइफ में फर्क महसूस करेंगे । मेरी यहां हाजिरी ये सुनिश्चित करने के लिये है कि आप एक - हो चुकी या होने वाली - विधवा से अदब से पेश आयें । इस पर इसी वजह से अपना पुलिसिया कहर नाजिल न करने लगें क्योंकि बदकिस्मती से ये आपके काबू में आ गयी हैं और आपके किले में, थाने में, बैठी हैं ।”

“आप बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं ।”

“और” - नगरकर बोला - “हमें बिल्कुल ही विलेन साबित करने की कोशिश कर रहे हैं ।”

“जो बात पहले से साबित है, उसे साबित करने की कोशिश भला मैं क्यों करूंगा ? ये बात मैं भूल गया हूं या आप भूल गये हैं कि पुलिस को गुण्डों की आर्गेनाइज्ड जमात कहा गया है ।”

नगरकर के चेहरे पर गहन आवेश के भाव आये ।

तत्काल पावटे ने निगाहों से उसे शान्त किया ।

“अब बोलिये” - शाह दबंग आवाज में बोला - “क्या केस है मेरे क्लायंट के खिलाफ ? यू हैव ए केस ऑर यू आर आन ए फिशिंग एक्सपिडीशन ?”

“नो, सर” - पावटे बोला - “वुई आर नाट आन एन एक्सपिडीशन । वुई आलरेडी हैव ए कैच ।”

“बधाई ।”

“केस की हमारी धारणा ये है कि ये मर्डर और रॉबरी का केस है । सदानन्द पुणेकर को लूटने के लिये उसका कत्ल किया गया था या लूट चुकने के बाद हमेशा के लिये उसका मुंह बन्द कर देने के लिये उसे मार डाला गया था ।” - उसने एक उड़ती निगाह नमिता पर डाली और फिर बोला - “हमारी आगे धारणा ये है कि इस कारस्तानी को एडवोकेट कपिल कोठारी और मकतूल की बीवी नमिता पुणेकर ने सामूहिक रूप से अंजाम दिया था ।”

“आगे ?”

“आगे हमारी सोच ये कहती है कि इस इतवार की सुबह सदानन्द पुणेकर अपनी मोटरबोट पर पहुंचने से पहले ही या तो मर चुका था या बेहोश था । इन लोगों के पड़ोस में बसी मिसेज रोटोलो नाम की एक गोवानी वृद्धा ने उस सुबह मुंह अन्धेरे एक शख्स को कैनवस का बड़ा-सा बैग कंधे पर लादे काटेज के प्राइवेट बीच पर से चलते प्राइवेट पायर की ओर बढ़ते देखा था और सहज ही उसे सदानन्द पुणेकर समझ लिया था क्योंकि उसका कद-काठ मिलता था, सिर पर पहनी नेवी वालों जैसी सफेद पीक कैप मिलती थी, वो प्राइवेट बीच पुणेकर के काटेज का हिस्सा था और हर इतवार की सुबह मुंह अंधेरे फिशिंग के लिये वो ही निकलता था । हमारी धारणा ये है कि वो बैग इसलिये भारी था और कंधे पर लादा गया था क्योंकि उसमें - लाश बना या बेहोशी की हालत में - सदानन्द पुणेकर बंद था और उस बैग को जो शख्स अपने कंधे पर लादे था, वो कपिल कोठारी था । पुणेकर की मोटरबोट को समुद्र में कोठारी लेकर गया जहां कि उसने लाश से पीछा छुड़ाया, बोट को लंगर पर नोडल पॉइंट पर - जो कि पुणेकर की फिशिंग के लिये पसन्दीदा जगह थी - छोड़ा और तैरकर किनारे आ लगा जहां से आगे वो चुपचाप अपने काटेज पर पहुंचा और जाकर यूं अपना टाइपराइटर - पड़ोस की मिसेज रोटोलो को सुनाने के लिये - खटखटाने लगा जैसे कि वो सारी रात निरन्तर काम करता रहा था ।”

उसने रुककर नमिता की तरफ देखा ।

नमिता का मुंह खुला हुआ था और चेहरा फक था ।

हे भगवान ! - डूबते दिल से वो सोच रही थी - ये तो सब कुछ भांप गया । ऐन दुरुस्त भांप गया । कुछ न छोड़ा । मैं तो गयी काम से । कैसे कोठारी ने सोच लिया था कि हमारी करतूत को कोई नहीं भांप पाने वाला था !

“नैवर माइन्ड, माई हनीचाइल्ड ।” - शाह आश्वासनपूर्ण स्वर में नमिता से सम्बोधित हुआ - “ये पुलिस के आम हथकण्डे हैं । पहले कफन फाड़ते हैं, फिर उसके नाप का मुर्दा ढूंढ़ते हैं । ये लोग कहानी सुना रहे हैं, तुम सुनो । कहानी सुनने में क्या हर्ज है !”

बड़ी मुश्किल से नमिता ने अपने आप पर काबू पाया ।

“मैं आगे बढ़ूं ?” - पावटे तनिक धूर्त भाव से बोला ।

“यस ।” - शाह बोला - “प्लीज ।”

“या पहले रुककर मैडम से एक सवाल करूं ?”

“जो मर्जी करो लेकिन करो ।”

“मैडम, इतवार शाम को जब आपसे मुलाकात हुई थी तो आपने बताया था कि शनिवार को आपके यहां मिस्टर कोठारी के जन्मदिन के उपलक्ष में मिनी सैलीब्रेशन पार्टी थी जो कि वकील साहब ने खुद आर्गेनाइज की थी - लेकिन आपके काटेज पर आर्गेनाइज की थी - आपके हसबैंड ने आर्गेनाइज नहीं की थी क्योंकि उन्होंने इतवार को मुंह अंधेरे उठना होता था इसलिये पार्टी का आडम्बर वो भला क्यों करते ? ठीक ?”

"हां ।"
"मुंह अंधेरे क्यों उठना होता था ?"
"आपको मालूम है ।"
"क्योंकि उन्हें फिशिंग के लिये निकलना होता था ? क्योंकि ये उनकी हर इतवार की फिक्स्ड रुटीन थी ?"
"हां ।"
"पिछले इतवार को तो ऐसी बात नहीं थी ।"
"कैसी बात नहीं थी ?"
"उन्होंने मुंह अंधेरे नहीं उठना था ! उन्होंने फिशिंग के लिये नहीं जाना था !"
"आपको क्या मालूम ?"
"मालूम है न ! आपकी जानकारी के लिये शनिवार रात के दस मिनट के उस मेहमान की शिनाख्त हो चुकी है जिसका आपको नाम नहीं मालूम था और जिसका हुलिया आपने जानबूझ के गलत बयान किया था ।"
"ये मेरे पर बेजा इलजाम है ।"
"वो मेहमान कहता है कि आप उससे उतना ही वाकिफ थीं जितना कि आपके हसबैंड या मिस्टर कोठारी वाकिफ थे ।"
"गलत कहता है । ये उसकी खामखयाली है । बल्कि खुशफहमी है !"
"खुशफहमी !"
"मेरी ऐसी वाकफियतों में कोई दिलचस्पी नहीं ।"
"कम-से-कम ये तो पूछा होता कि वो शख्स कौन था !"
"कोई भी हो ।"
"उसका नाम सम्भाजी भौंसले है, वो इसी इलाके का बाशिन्दा है और वो आपके हसबैंड से इसलिये वाकिफ है कि क्योंकि दोनों के शौक एक हैं, वो भी फिशिंग का शौकीन है ।"
"होगा ।"
"आप उसे नहीं जानतीं ?"
"सूरत से जानती हो सकती हूं लेकिन नाम से वाकिफ नहीं हूं ।"
"वो मिस्टर कोठारी से भी पुराना वाकिफ है ।"
"होगा ।"
"इसलिये दावे के साथ कहता है कि मिस्टर कोठारी का बर्थ डे जनवरी में नहीं, जुलाई में होता है ।"
"आप ये कहना चाहते हैं कि कोठारी ने अपने बर्थ डे की बाबत झूठ बोला ?"
"हां ।"

“किस हासिल की खातिर ?”

“आप बताइये ।”

“मैं क्या बताऊं ? क्योंकर बताऊं ?”

“कुछ तो कहिये !”

“क्या कहूं ? सिवाय इसके कि उसने पच्चीस हजार रुपये विस्की की बोतल पर और पांच हजार रुपये केटरिंग की आइटम्स पर खामखाह बर्बाद किये ।”

“खामखाह तो कोई काम नहीं होता ।”

“फिर भी आप कहते हैं कि हुआ है !”

“हां ।”

“तो फिर इसकी सफाई मेरे से क्यों मांगते हैं, उससे मांगिये जिसने ये काम किया ।”

“आप जानती हैं ये मुमकिन नहीं ।”

“तो मैं क्या कर सकती हूं ?”

“आप इस बात की तसदीक तो कर सकती हैं कि कम-से-कम इस इतवार को आपके हसबैंड को सुबह मुंह अंधेरे नहीं उठना था ।”

“मैं कैसे ?”

“पिछली रात भौंसले से उन्हें समुद्री तूफान की वार्निंग मिली थी, उन्हें बताया गया था कि अगली सुबह समुद्र में जाने में गम्भीर खतरा था । भौंसले असल में शनिवार रात को आपके यहां आया ही हकीकतन इस वार्निंग की आपके हसबैंड को खबर करने था ।”

“मुझे नहीं मालूम ।”

“आपने उसे आपके हसबैंड को ऐसा कहते नहीं सुना था ?”

“नहीं सुना था । मैंने पहले ही बोला था कि तब मैं किचन में थी । मैंने पहले ही ये भी अर्ज किया था कि मुझे नहीं मालूम था कि उस मेहमान की आमद किस वजह से हुई थी ।”

“इसी वजह से हुई थी । वो आपके हसबैंड को, अपने फैलो एंगलर को, स्टॉर्म वार्निंग की खबर करने आया था ।”

“आप कहते हैं तो ऐसा होगा ।”

“मैं कहता हूं ।”

“शौक से कहिये ।”

“जब वो आपके हसबैंड को वार्न कर रहा था, तब आप किचन में थीं ?”

“हां । कितनी बार कहूं ?”

“जब किचन से लौटीं तो आपके हसबैंड ने आपको न बताया कि स्टार्म वार्निंग की वजह से उनका अगली सुबह जल्दी उठना जरूरी नहीं रह गया था ?”

“उन्होंने मुझे ऐसा कुछ नहीं कहा था ।”

"वैसे आप मानती हैं कि अगर स्टार्म वार्निंग थी तो अगली सुबह उन्हें फिशिंग के लिये नहीं निकलना चाहिये था ।"

"हां ।"

"वो उस वार्निंग को नजरअन्दाज कर सकते थे ?"

"क्या मतलब ?"

"वार्निंग के बावजूद फिशिंग पर जाने की जिद कर सकते थे ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

"ये तो खुदकुशी करने जैसा काम होता ।"

"मैडम, हमें भौंसले की गवाही पर एतबार है कि उसकी वार्निंग की रू में आपके हसबैंड शनिवार रात को ही अगली सुबह फिशिंग के लिये निकलने का आइडिया ड्राप कर चुके थे ।"

"तो ?"

"तो ये कि वो ड्रिंकिंग सैशन लम्बा चला होगा और उसके बाद आपके हसबैंड घोड़े बेचकर, लम्बी तानकर सोये होंगे ।"

"तो ?"

"तो आप इस बात की तसदीक कीजिये ।"

"मैं करूं ?"

"और कौन करे ? रात को काटेज में आप दो जने ही तो होते थे । आपको नहीं तो किसे मालूम होगा कि शनिवार रात को आपके हसबैंड कैसी नींद सोये थे ?"

वो चुप रही ।

"जवाब दीजिये ।"

"वैसी ही नींद सोये थे जैसी आप बता रहे हैं ।"

"आप ?"

"मैं भी ।"

"इसी वजह से आपको अपने हसबैंड के अगली सुबह निकल लेने की खबर न लगी ?"

"ह... हां ।"

"हं या हां ?"

"हां ।"

"सोये कितने बजे ?"

"क्या मतलब ?"

“वाट टाइम डिड ही रिटायर फार दि नाइट ? मिनी सैलीब्रेशन रिलेटिड ड्रिंकिंग सैशन कब तक चला ? बर्थ डे बाय कोठारी साहब आपके यहां से कब रुखसत हुए ?”

“मुझे.. .मुझे ध्यान नहीं ।”

“कोई अन्दाजा बताइये ?”

“मुझे टाइम का कोई अन्दाजा नहीं ।”

“गोल-मोल अन्दाजा बताइये !”

“आई एम सारी । कहते शर्म आती है लेकिन.. .आई वाज ड्रंक ।”

“हो जाता है ऐसा । ऐसी पार्टियां आपके यहां अक्सर होती हैं ?”

“हां ।”

“सभी तो शनिवार शाम को नहीं होती होंगी ?”

“हां ।”

“मिस्टर पुणेकर ही अवायड करते होंगे क्योंकि इतवार को उन्होंने जल्दी उठना होता है ?”

“हां ।”

“वीक डेज पर ऐसी पार्टी हो तो अमूमन कब तक चलती थी ?”

“लेट नाइट ।”

“कितना लेट ? आधी रात तक ?”

“हां ।”

“उसके भी बाद तक ?”

“कभी कभार ।”

“क्योंकि मेजबान को सुबह उठने की जल्दी नहीं होती ?”

“हां ।”

“स्टार्म वार्निंग की वजह से इस शनिवार भी नहीं थी ?”

“हां ।”

“इससे क्या ये अज्यूम करना, ये नतीजा निकालना गलत होगा कि शनिवार को भी मिनी पार्टी आधी रात तक चली !”

“नतीजा निकालना तो गलत नहीं होगा, लेकिन मैंने कहा न कि मुझे याद नहीं कि पार्टी कब तक चली !”

“क्योंकि आप टुन्न थीं ?”

“हां ।”

“हमारे पास इन बातों की तसदीक का एक और भी जरिया है ।”

“कौन सा ?”

“मिसेज रोटोलो ।”

“तो उसी से तसदीक कीजिये, मेरे साथ सिरखपाई क्यों कर रहे हैं ?”

“अब करेंगे । बहरहाल इस सिरखपाई के सदके जिस बात पर मैं जोर देना चाहता हूं वो ये है कि ये तमाम बातें पुलिस की इस अन्डरस्टैंडिंग की पुष्टि करती हैं कि इतवार सुबह कंधे पर बैग लादे फिशिंग के लिये निकलता जो शख्स देखा गया था, वो सदानन्द पुणेकर नहीं था, वो सदानन्द पुणेकर हो ही नहीं सकता था, क्योंकि वो घोड़े बेचकर सोया पड़ा था, क्योंकि उसके फिशिंग पर निकलने का कोई मतलब नहीं था ।”

“फिर भी कोई तो निकला ! जो खतरा उस सुबह मेरे हसबैंड के लिये था, क्यों वो उस ‘कोई’ के लिये नहीं था ?”

“उसके लिये नहीं था ।”

“क्यों ? क्यों ? क्यों ?”

“क्योंकि स्टार्म वार्निंग की खबर झूठी थी । क्योंकि वो खबर एक खास मकसद के मद्देनजर प्लांट की गयी थी । क्योंकि वो ‘कोई’ एडवोकेट कपिल कोठारी था ।”

“कौन कहता है खबर प्लांट की गयी थी ?”

“वो ही कहता है जिसने कि ये काम किया था । जिसे कि ये झूठ बोलने के लिये कहा गया था, बाकायदा ट्रेनिंग देकर तैयार किया गया था ।”

“कौन ?”

“अभी भी पूछती हैं कौन ? सम्भाजी भौंसले और कौन ? वो शख्स जिसे आप कहती हैं कि ठीक से जानती नहीं, जब कि वो आपके काटेज की पार्टियों में कई बार हाजिरी भर चुका है । वो शख्स जिसके नाम से आप वाकिफ नहीं लेकिन जिससे अभी थोड़ी देर पहले यहां घुट घुट के बातें कर रही थीं ।”

नमिता के मुंह से बोल न फूटा ।

“दैट्स एनफ !” - शाह बोला - “अभी तक मैंने दखलअन्दाज होने की कोशिश नहीं की थी क्योंकि...”

“अभी तक इनकी बोलती बन्द नहीं हुई थी ।”

“मिस्टर एसीपी, प्लीज कीप ए सिविल टंग इन युअर माउथ ।”

“आई एम सारी । दैट काइन्ड आफ स्लिप्ड ।”

“तो सम्भाजी भौंसले नाम के किसी शख्स को झूठ बोलने के लिये तैयार किया गया था ?”

“जी हां ।”

“किसी खास मकसद के मद्देनजर ?”

“जी हां ।”

“क्या था वो मकसद ?”

"ये कि स्टार्म वार्निंग की वजह से इतवार सुबह का प्रोग्राम टल गया जानकर पुणेकर छक के पीता, मुर्दों से शर्त लगाके सोता और यूं उसे खबर न लगती कि उसकी उस हालत में उसके साथ क्या बीती..."

"वो सब आपके तसव्वुर की उड़ान है ।"

"लेकिन भौंसले हकीकत है, उसका बयान हकीकत है ।"

"जो कहता है कि स्टार्म वार्निंग की झूठी खबर पुणेकर को देने के लिये उसे तैयार किया गया था ?"

"जी हां ।"

"क्यों तैयार हुआ वो ? क्या मजबूरी थी उसकी ?"

"वो जुदा मसला है ।"

"क्योंकि पुणेकर के साथ अगर कोई साजिश हुई थी तो वो उस साजिश में शरीक था ।"

"अब ये आपके तसव्वुर की उड़ान है ।"

"उसको ये झूठ बोलने के लिये किसने तैयार किया था ?"

"कोठारी ने ।"

"उसने साफ, दो टूक बोला, कोठारी ने ?"

"हां ।"

"या बोला नमिता पुणेकर ने ?"

"कोठारी ने ।"

"तो इस झूठ के जाल की जिम्मेदारी मैडम पर कैसे आयद होती है ?"

पावटे सकपकाया ।

"मैडम ने अभी कहा, शायद पहले भी कहा कि उस शख्स की काटेज पर मौजूदगी के दौरान तकरीबन टाइम ये किचन में थीं । इसका क्या साफ ये मतलब नहीं कि इन्हें खबर तक नहीं थी कि उस शख्स में और पुणेकर में क्या गुफ्तगू हुई थी ।"

"इन्हें वैसे ही सब खबर थी ।"

"क्यों भला ?"

"क्योंकि ये.. .ये..."

"साजिश में कोठारी की जोड़ीदार थीं । अगर ये कहने जा रहे थे तो सोच-समझ के कहना क्योंकि फिर साबित करना भारी पड़ेगा ।"

"मैं पहले अपनी बात मुकम्मल कर लूं फिर हो सकता है कि साबित करने की कोई जरूरत ही न रहे ।"

"करो ।"

"मैं बात वहां से आगे बढ़ाता हूं जहां मैंने कहा था कि हमारी धारणा है कि बैग में - लाश बना या बेहोशी की हालत में - सदानन्द पुणेकर बन्द था और उस बैग को जो शख्स धंधे पर लादे था वो कपिल कोठारी था ।"

"आके ।"

"हमारी तफ्तीश कहती है कि तब पुणेकर के कब्जे में कोई तीन लाख सोलह हजार यूरो के नोट थे - जो कि रुपयों में पौने दो करोड़ रुपये से ज्यादा होते हैं - और साठ लाख रुपये की फेस वैल्यू के शेयर सर्टिफिकेट थे । हो सकता है इसके अलावा भी कोई कीमती माल उसके कब्जे में हो, लेकिन इतने की गारन्टी है । कैश मनी यानी यूरो के नोट उस की मनी बैल्ट में थे जो कि - चौतरफा तसदीक हुई है - वो हमेशा पहन के रखता था और शेयर सर्टिफिकेट बोट के मास्टर केबिन में फिट सेफ में थे । ये कम से कम माल है जो कि कातिल के - कपिल कोठारी के - हाथ लगा । इसके अलावा वो ग्यारह लाख रुपये कीमत की नयी नकोर सोनाटा ले उड़ा..."

"उड़ा !"

"भाग गया । फरार हो गया । पीछे मिसेज पुणेकर को भी बाद में मौका ताड़कर अपने पास पहुंच जाने को बोल कर ।"

"क्यों ?"

"ये भी कोई पूछने की बात है ?"

"है न ?"

"क्योंकि दोनों में अफेयर था, अवैध सम्बन्ध स्थापित थे और जो क्राइम वाकया हुआ था, वो उनकी मिलीभगत का, आपसी षड़यंत्र का नतीजा था ।"

"आई सी ।"

"लेकिन इनकी बद्‌किस्मती कि बेल मुंडेर न चढ़ी, शाखेतमन्ना न फली, गुनाह का फल चखने को न मिला, ये मसल इन पर भी लागू हुई कि जुर्म का कोई हासिल नहीं । क्राइम डज नाट पे..."

"पावटे, प्लीज, प्लीज, प्लीज कट विद दि थियेट्रिकल्स ।"

"...कोठारी मैंगलोर में एक्सीडेंट कर बैठा जिसमें कार - नयी सोनाटा - कोस्टल रोड से समुद्र में जा गिरी और वो मारा गया जिस वजह से दोनों के - कोठारी और मैडम के - पुनर्मिलन का कोई मतलब ही न रहा ।"

"और ?"

"इतना काफी नहीं ?"

"मेरे लिये तो काफी है - दि लैसर दि बैटर - शायद तुम्हारे लिये काफी न हो !"

"हमारे लिये काफी है । अब आप कहिये, क्या कहना चाहते हैं ?"

“पहले तो मैं आप लोगों को बधाई देना चाहता हूं कि इतने उम्दा तरीके से आप लोगों ने बिट बाई बिट अपनी कहानी को परवान चढ़ाया है, मजबूत बनाया है । फिर आपकी इस धारणा से सहमति जताना चाहता हूं कि कपिल कोठारी ने सदानन्द पुणेकर का खून किया है ।”

दोनों पुलिस अधिकारियों के ही नहीं, नमिता के चेहरे पर भी हैरानी के भाव आये ।

“अच्छा !” - पावटे बोला ।

“हां । मैं कपिल कोठारी को फैलो एडवोकेट के तौर पर बाखूबी जानता हूं इसलिये जानता हूं कि वो कोई भूखा नहीं मर रहा था । लेकिन इंसानी फितरत को क्या कहें कि ऐसी दौलत की चाह या लालच आम आ जाता है जो कि बड़ी आसानी से हासिल होती जान पड़े । उसकी सदानन्द पुणेकर से लम्बी एसोसिएशन थी और पता नहीं उसने पुणेकर की कौन-सी कमजोर नस पकड़ी हुई थी कि वो उसकी हर बात को अहमियत देता था, हर बात मानता था । उसकी इस खूबी से पुणेकर ही मुतासिर नहीं था, वो मामूली कोशिश करता था तो कोई भी मुतासिर हो जाता था, जैसे कि प्रापर्टी डीलर परांजपे हुआ जिसका कि गायकवाड़ नगर में कैपीटल प्रापर्टीज के नाम से बिजनेस है, आफिस है । कोठारी के कहने पर उसने पुणेकर को बड़ी कामयाबी से ये ब्रिलियंट आइडिया सरकाया कि आजकल के प्रापर्टी बूम के जमाने में फिगारो आइलैंड पर प्रापर्टी खरीदना बहुत फायदे का धंधा था ।”

“क्या कह रहे हैं आप ?”

“लगता है आप लोग इस बात से वाकिफ नहीं कि, मार्फत प्रापर्टी डीलर परांजपे, पुणेकर फिगारो आइलैंड पर - जो कि गोवा में पणजी से पचास किलोमीटर के फासले पर है - एक कीमती बंगला खरीदने की तैयारी कर रहा था जिसे वो जाकर देख भी आया हुआ था और पसन्द भी कर आया हुआ था ।”

“नहीं, हमें ऐसी कोई जानकारी नहीं थी ।”

“कैसी कोई जानकारी नहीं थी ? शिफ्ट करने की या प्रापर्टी खरीदने की ?”

“प्रापर्टी खरीदने की । वहां शिफ्ट करने की बाबत भी मैडम ने बताया था कि ‘मिस्टर पुणेकर सोच रहे थे’ । ये नहीं कहा था कि वहां - रहने के लिये या इनवेस्टमेंट के लिये - प्रापर्टी खरीदने जा रहे थे ।”

“आई सी ।”

“पुणेकर के” - नगरकर अचरज से बोला - “वो प्रापर्टी खरीदने में कोठारी का क्या फायदा था ?”

“मैं समझाता हूं न ! वो दूर की कौड़ी है लेकिन समझाता हूं । आपकी जानकारी के लिये पुणेकर उतना पैसे वाला आदमी नहीं था जितना कि समझा जाता था । इतना

आपको जरूर मालूम होगा कि जिस बिजनेस का वो मालिक समझा जाता था, वो भी उसका नहीं था ।"

"पहले नहीं मालूम था, लेकिन अब मालूम है ।"

"यहां का काटेज उसका नहीं था, मोटरबोट उसकी नहीं थी, यहां तक कि तारदेव के आशा अपार्टमेंट्स में जो फ्लैट उसका बताया जाता है, वो भी उसका नहीं था ।"

"ये भी अब मालूम है ।"

"उसके पास जो अपना पैसा था, वो वही था जो उसका तार देव और ग्रांट रोड के दो बैंक एकाउंट्स में जमा था या वो शेयर थे जो वो बोरीवली वैस्ट वाले बैंक के लाकर में रखता था या कहीं भी रखता था । आम हालात में ये माल भी कम नहीं होता लेकिन कोठारी को कत्ल जैसे जघन्य अपराध के ईनाम के तौर पर बहुत कम जान पड़ता था । वो पुणेकर का राजदां था इसलिये जानता था कि इस परीचेहरा हसीना ने एक उम्रदराज शख्स से - सदानन्द पुणेकर से - शादी किन शर्तों पर की थी ।"

"किए शर्तों पर की थी ?"

"तुम्हें मालूम है । जब मुझे मालूम है तो पुलिस को क्यों न मालूम होगा ? बैंक से जाके पूछताछ ही तो करनी थी !"

"जवाब दीजिये ।"

"बीवी के नाम पांच करोड़ की एफडी । जो कि तुड़ाई न जा सके । जिसको पुणेकर छू भी न सके । ये थी शादी की शर्त । वो रकम एक ही सूरत में वापिस पुणेकर को मिल सकती थी कि बीवी अपनी मर्जी से उसे तलाक दे देती जैसा करने की नमिता की कोई मर्जी होने का सवाल ही नहीं पैदा होता था । लेकिन कोठारी की सुझाई तिगड़म से पुणेकर ने वो एफडी तुड़ा ली थी और एक करोड़ पांच लाख रुपये के करीब के कम्पाउन्डिड ब्याज पर काबिज हो गया था ।"

"कैसे तुड़ा ली ?"

"बोल दिया बीवी मर गयी । उसकी मौत का श्मशान घाट से जारी हुआ नकली मृत्यु प्रमाण पत्र जमा कर दिया ।"

"ओह !"

"क्या ओह ! तुम लोगों को ये बात मालूम है । मुझे यकीनी तौर पर मालूम है कि पुलिस यूनियन बैंक, ग्रांट रोड से एफडी की बाबत सब दरयाफ्त कर चुकी है ।"

"आगे बढिये ।"

"बहरहाल इम्पोर्टेन्ट बात ये नहीं है कि एफडी पर काबिज होने के लिये पुणेकर ने क्या तिगड़म की, इम्पोर्टेन्ट बात ये है कि कोठारी की चाल के तहत एक ऐसी बड़ी रकम पुणेकर के कब्जे में आ गयी जो कि नहीं आ सकती थी । अब अगर पुणेकर को लूटने के

लिये उसका कत्ल किया जाता तो मूल हासिल में वो छ: करोड़ से ऊपर की रकम भी शामिल होती ।"

"बैंक में होती तो कैसे लुट जाती ?"

"नहीं होती न ! बाकी रकमें भी उसने कहां बैंक में छोड़ी, जो वो इस इतनी बड़ी रकम को छोड़ता ! पुणेकर तमाम रुपया बैंक से निकलवा ले, ये चाल भी तो कोठारी ने चली ।"

"क्या किया ?"

"बिग बॉस को टिप दे दी कि पुणेकर के मन में बेईमानी आ गयी थी, वो कम्पनी का माल सरका रहा था । पुणेकर ने हीट महसूस की तो सबसे पहले उसने कम्पनी के ओमेगा इन्टरनैशनल के अकाउंट में पांच करोड़ रुपया जमा करा दिया जिसकी कि कोठारी को कतई उम्मीद नहीं थी लेकिन पुणेकर, जो कि खुद अण्डरवर्ल्ड का आदमी था, कोठारी से कहीं बेहतर जानता था कि वो ओमेगा का रुपया लेकर भागता तो बिग बॉस उसकी ऐसी सुपारी लगाता कि भाई लोग खल्लास कर देने के लिये उसे पाताल से भी खोद निकालते । रुपया जमा कर देने से उसकी सुपारी न लगती इसकी कोई गारन्टी नहीं थी, लेकिन रुपया न जमा करने के मुकाबले में फिर भी गारन्टी थी । पुणेकर की इस मूव से कोठारी की खीर में मक्खी तो पड़ी लेकिन मक्खी वाली खीर निकाल देने के बाद पीछे जो खीर बची - ब्याज का एक करोड़ पांच लाख रुपया - वो भी कम नहीं था । कोठारी की शातिर हरकतों से कत्ल के बाद हाथ आने वाले माल में एक करोड़ पांच लाख रुपये का इजाफा फिर भी हो गया था ।"

"लेकिन शाह साहब, जब आप मानते हैं कि कत्ल मैडम और कोठारी की कामन वेंचर था तो ये बातें मैडम को नहीं मालूम थीं ?"

"कुछ मालूम थीं, कुछ इत्तफाक से मालूम हो गयी थीं, कुछ नहीं मालूम थीं ।"

"सब क्यों नहीं मालूम थीं ?"

"क्योंकि कोठारी ऐसा नहीं चाहता था ।"

"वो क्यों नहीं चाहता था ?"

"क्योंकि वो पहले से ही मैडम को धोखा देने का मन बनाये बैठा था ।"

"कमाल है !"

"और वो धोखा वो दे चुका है । तमाम माल-पानी के साथ वारदात की सुबह ही चम्पत हो गया । एक्सीडेंट में मारा न गया होता तो मैडम को उसकी कभी खबर न लगती, वो ढूंढ़े न मिलता ।"

"हूं ।"

"मैडम की उस शख्स की करतूतों में बस सिर्फ इतनी हामी थी कि इसे ये मालूम था कि कोठारी पुणेकर को खत्म करने की फिराक में था और वो हामी इसलिये थी क्योंकि

पुणेकर की मौत की सूरत में एफडी का पांच करोड़ रुपया जमा अप टू डेट ब्याज की रकम इसे मिलती । और तो ये खुद कोठारी के षड़यंत्र की शिकार है ।''

''किसी के कत्ल की मंशा की खबर हो तो उस बाबत खामोश रहना भी तो अपराध है ! आप तो कानून के ज्ञाता हैं, बाखुबी जानते हैं कि 'टू एड एन्ड अबैट ए क्राइम इज आलसो ए क्राइम' ।''

''इसने क्राइम में कोई मदद नहीं की । की तो बताइये क्या मदद की ? और जहां तक क्राइम की जानकारी का सवाल है, इसने कोठारी की नशे में भीगी बातें ही सुनी थीं, कभी यकीन नहीं किया था कि नशे में जो कुछ वो कहता था, उसे कर भी गुजरने वाला था ।''

''आपने तो मैडम और कोठारी के बीच 'मैं उजली तू काला' वाली इक्वेशन खड़ी कर दी ।''

''जो हकीकत है, वो मैंने बयान कर दी ।''

''नहीं, हकीकत नहीं है, कहानी है जिसका ताना-बाना आपने निहायत खूबसूरती से बुना है । सर, आई ग्रांट इट टू यू दैट इट्स ए गुड स्टोरी, बट इट्स नाट ए ग्रेट स्टोरी ।''

''ऐसा ?''

''हां । अब आप वो सुनिये कि मैडम के खिलाफ हमारे पास क्या है । फिर शायद आप स्टोरी को रिवाइज करना चाहें या उससे किनारा करना चाहें ।''

''आपके पास जो कुछ भी होगा कोठारी की करतूत को अन्डरलाइन करने वाला होगा, उसका मैडम से रिश्ता जोड़ने वाला कुछ नहीं होगा ।''

''आप बेजान दारूवाला को शर्मिन्दा कर रहे हैं । भविष्य में इतनी दूर तक इतने निश्चित रूप से तो वो भी नहीं झांक सकता ।''

''मैं भविष्यदृष्टा नहीं हूं ।'' - शाह उखड़े स्वर में बोला ।

''लेकिन बनने की कोशिश बराबर कर रहे हैं ।''

''तुम जो कहना चाहते हो, वो कहो ।''

''मिस्टर शाह, ये कोर्ट नहीं है । यहां कुछ रिकार्ड नहीं किया जा रहा इसलिये इतना मैं कबूल करता हूं कि जो कुछ हमारे पास है, वो एक निगाह में कोठारी के खिलाफ ही जान पड़ता है ।''

''थैंक्यू ।''

''लेकिन ये कबूल नहीं करता कि मैडम का उससे कोई रिश्ता नहीं ।''

''अब कुछ कहो भी तो सही ।''

''पहले तो कार की बात है जिसकी बाबत मैडम कहती हैं कि उसे कोठारी पुणेकर की इजाजत से, बल्कि जिद से, लेकर गया । लेकिन हमारा एतबार इस बात पर है कि चुपचाप बिना बताये लेकर गया ।''

''चुराकर ले गया ?''

"हां ।"

"फायदा ?"

"दो हैं । एक तो जहां जाना था, वहां स्टाइल से पहुंच गया, नयी कार की वजह से जल्दी पहुंच गया । दूसरे ग्यारह लाख की नयी नकोर, शोरूम कंडीशन में, कार चोर बाजार में भी बिकती तो आधी कीमत में तो बिकती !"

"मुझे इस बात से इत्तफाक तो नहीं लेकिन खैर, आगे ?"

आगे पावटे ने उसे बोट की रेलिंग पर लगे खून के सूखे धब्बे की बाबत बताया ।

"खून !" - शाह संभलकर बैठा - "ऐसा कोई जिक्र तो मेरे सामने किसी ने नहीं किया था ?"

नमिता का दिल उछला ।

उसे करना चाहिये था - उसके दिल से आवाज आयी - धब्बे का नहीं, लेकिन बोट पर खून के वजूद का बराबर करना चाहिये था क्योंकि कोठारी ने अपनी डाक से आयी चिट्टी में लिखा था कि बोट पर सदा एकाएक होश में आ गया था और उस पर हमला कर बैठा था जिसमें सदा ने उसकी नाक तोड़ने में कसर नहीं छोड़ी थी ।

जरूर नाक से टपका खून ही रेलिंग पर गिरा था ।

"उस धब्बे की बाबत हमारा नतीजा ये है कि वो कपिल कोठारी का खून था । पुणेकर के मारे जाने से पहले बोट पर दोनों में हाथापाई हुई थी जिसकी वजह से कोठारी को कहीं चोट लगी थी और रेलिंग पर वो खून टपका था ।"

"कैसे मालूम कि खून कोठारी का था ?"

"रेलिंग पर टनका खून 'ओ' टाइप का था । कोठारी के आफिस में उसकी रिसैप्शनिस्ट से हमें मालूम हुआ है कि एक बार ब्लड डोनर के तौर पर उसने खुद को रजिस्टर कराया था । उसने एक ही बार ब्लड डोनेट किया था जबकि उसे एक कार्ड मिला था जिस पर उसका ब्लड ग्रुप दर्ज था । रिसैप्शनिस्ट निधि कमलानी कहती है कि कोठारी ने बड़ी शान से वो कार्ड उसे दिखाया था और तब उसने उस पर से उसके ब्लड ग्रुप की बाबत पढ़ा था जो कि 'ओ' टाइप का था । इस बात से साफ साबित होता है कि कोठारी बोट पर था ।"

"अकेला ?"

"अकेला काहे को ! पुणेकर के साथ ।"

"'ओ' सबसे कामन ब्लड ग्रुप होता है । फर्ज करो कि पुणेकर का ब्लड ग्रुप भी 'ओ' था तो फिर आपके 'साफ सबूत' की क्या कीमत होगी ?"

"हम पुणेकर के ब्लड ग्रुप की बाबत जानकारी निकालने की पूरी कोशिश कर रहे हैं । तब तो होगी जब उसका ब्लड अ 'ओ' नहीं पाया जायेगा ?"

"तब भी नहीं होगी ।"

“क्यों भला ?”

“तुम्हारी इस स्टार डिसकवरी से सिर्फ इतना साबित होता है कि बोट पर कोई ‘ओ’ ब्लड ग्रुप वाला शख्स मौजूद था ।”

“आप तो हमारे सारे किये-धरे पर पानी फेरे दे रहे हैं ।”

“आई कैन नाट हैल्प इट । दैट्स माई जॉब । जो बात मेरे क्लायंट के हित में है, उस पर जोर देना; जो उसके खिलाफ है, उस पर सवालिया निशान लगाना मेरा कारोबार है ।”

“बोट पर किसी और शख्स का क्या काम ?”

“क्यों नहीं काम ? तुम्हारी ये भी तो थ्योरी है कि बोट पर तनहा मौजूद पुणेकर को लूटने की कोशिश की गयी थी । ये भी तो थ्योरी है कि उसको अगवा करने की कोशिश की गयी थी । लूट क्या रिमोट कन्ट्रोल से वाकया होती है ? अगवा क्या समुद्र में तैरते होता है ?”

“खैर, छोड़िये इस बात को । मैं आपके सामने वो सबूत पेश करता हूं जो साबित करता है कि कत्ल की साजिश कोठारी की सोलो परफारमेंस नहीं थी ।”

“करो ।”

“उसने मैंगलोर से मैडम को चिट्ठी लिखी थी, जो स्पीड पोस्ट से भेजी गयी होने की वजह से अगले ही दिन मैडम को मिल गयी थी । पूछिये इनसे ।” - पावटे नमिता की ओर घूमा - “झूठ नहीं बोलना, मैडम, क्योंकि स्पीड पोस्ट का डाकिया इस बात का गवाह है ।”

“चिट्ठी पर” - नमिता के कुछ कह पाने से पहले शाह बोला - “भेजने वाले का नाम दर्ज था ?”

“नहीं, लेकिन ये दर्ज था कि चिट्ठी मैंगलौर से भेजी गयी थी । डाकिये ने मैंगलौर के जीपीओ का उस पर लगा स्टिकर साफ देखा था । आपकी जानकारी के लिये स्पीड पोस्ट का डाकिया अलग होता है और उसके पास इस इलाके की कोई सौ पचास चिट्ठियां नहीं थीं । सच पूछें तो स्पीड पोस्ट की वो आखिरी चिट्ठी थी, जो उसने मैडम को डिलीवर की थी ।”

“फिर भी ये कैसे साबित हो गया कि लिखने वाला कोठारी था ?”

“ये कहें नहीं था । मैं इनकी बात कबूल कर लूंगा । फिर इनसे सवाल करूंगा कि चिट्ठी लिखने वाला कोठारी नहीं था तो कौन था ! कौन वो शख्स था जो मैंगलौर में इन्हें जानता था और जिसकी स्पीड पोस्ट से भेजी चिट्ठी परसों, सोमवार इन्हें मिली थी ! नाम लें उस शख्स का । पता बोलें । बल्कि चिट्ठी ही दिखायें ।”

कोई कुछ न बोला ।

“आप कहते हैं कि कोठारी ने मैडम को डबल क्रॉस किया.. .जरा खामोश रहिये, मुझे बोलने दीजिये, मैं आप वाली बात पर भी आ रहा हूं.. .या इन्हें पता ही न लगने दिया कि उसकी असल मंशा क्या थी !.. .ओके नाओ ?.. .कत्ल के बाद, माल हाथ आने के बाद वो

चुपचाप खिसक गया तो उसने इन्हें चिट्ठी क्यों लिखी ? चुपचाप खिसकने के अपने मिशन को खुद ही क्यों बीट कर लिया ? है कोई जवाब इनके पास ? या आपके पास ?"

"चलो" - शाह दयानतदारी से बोला - "तुम्हारी खातिर मैं मान लेता हूं कि मैंगलोर से वो चिट्ठी नमिता को कोठारी ने भेजी ।"

नमिता के चेहरे पर हैरानी के भाव आये ।

दोनों पुलिस अधिकारी भी सकपकाये ।

"आप मान लेते हैं ?" - पावटे बोला ।

"मैं तसदीक करता हूं उस चिट्ठी के वजूद की क्योंकि मेरे क्लायंट ने खुद मुझे उस चिट्ठी की बाबत बताया था ।"

नमिता के चेहरे पर हैरानी के भाव दोबाला हो गये ।

"क्या था उस चिट्ठी में ?" - पावटे उत्सुक भाव से बोला ।

"ये था कि कोठारी ने अखबार में पुणेकर की बाबत पढ़ा था और वो महसूस कर रहा था कि पुलिस उससे भी सवाल करने की कोशिश करेगी क्योंकि वो पुणेकर की नयी कार ले गया था । उसने नमिता को लिखा था कि वो फौरन वापिस लौट रहा था ।"

"लौट रहा था ? लौट रहा था ?"

"हां ।"

"लेकिन कोस्टल रोड पर जब कार का एक्सीडेंट हुआ था, वो तो तब मुम्बई से उल्टी दिशा में जा रही थी !"

"कबूल ।"

"तो फिर वो लौट कैसे रहा था ?"

"नहीं लौट रहा था । इसका मतलब साफ है कि उसने चिट्ठी में झूठ लिखा कि वो लौट रहा था ।"

"क्या ?"

"जाहिर है कि नमिता को भरनाने के लिये, गुमराह करने के लिये, ताकि उसकी वापिसी से मुतमईन वो खामोश बैठ जाती और उसको ज्यादा से ज्यादा दूर निकल जाने का मौका मिलता । आखिर वो इसके हसबैंड का करीबी था इसलिये बेएतबारी की कोई वजह नहीं थी ।"

"इसलिये आराम से बैठकर इन्होंने उसके लौटने का इन्तजार किया ?"

"हां ।"

"क्योंकि उसने चिट्ठी में ऐसा लिखा था ?"

"हां ।"

"वो फौरन लौट रहा था ?"

"हां ।"

“तो” - पावटे का स्वर नाटकीय हो उठा - “इन्होंने उसे चिट्ठी क्यों लिखी !”

“क्या !”

“मार्फत जीपीओ मैंगलौर ऐसे शख्स को चिट्ठी क्यों लिखी जो कि आन रोड था ?”

“कौन कहता है इसने ऐसी चिट्ठी लिखी ?”

“हम कहते हैं । ये” - पावटे ने मेज के दराज से निकालकर एक पीला लम्बा 5 गुणा 9 का लिफाफा मेज पर डाला - “लिफाफा कहता है जो कि क्रैश्ड कार में पड़े कोठारी के कोट की जेब से बरामद हुआ और जिस पर मैडम के हैंडराइटिंग में कोठारी का नाम और मार्फत जीपीओ मैंगलौर का पता दर्ज है । पता बाल पॉइंट पैन से लिखा गया था इसलिये पानी से धुल नहीं पाया है, ये लिफाफा वाटरप्रूफ है इसलिये गल नहीं गया और इस बात की तसदीक हम कर चुके हैं कि इस पर लिखा पता मैडम के हैंडराइटिंग में है ।”

नमिता का दिल डूबने लगा, उसे चक्कर आने लगा । अब उसे इस बात की कोई उम्मीद दिखाई नहीं दे रही थी कि कोठारी ने मैंगलौर में कार एक्सीडेंट स्टेज किया था और वो जिन्दा था । वो एक्सीडेंट स्टेज करने के लिये कार में कोट छोड़ना और उसमें शिनाख्ती निशान - क्रेडिट कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस वगैरह - छोड़ना जरूरी था, लेकिन उसकी चिट्ठी कोट में छोड़ना गैरजरूरी ही नहीं था, बेवकूफी था । कोठारी कहां ऐसा बेवकूफ था कि उस खतरनाक चिट्ठी को अपने कोट में छोड़ता ।

या - वो सन्न रह गयी - उसने जानबूझकर ऐसा किया ।

उसे फंसाने के लिये क्योंकि वो चिट्ठी तो उसका मोहरबन्द इकबालिया बयान थी ।

उसका डैथ वारन्ट थी, जो कि उसके खास ने जारी किया था ।

कुत्ता ! शैतान की औलाद !

बेबसी में उसकी आंखें डबडबा आईं, बड़ी मुश्किल से उसने आंसुओं को बहने से रोका ।

शाह ने मेज पर से लिफाफा उठा लिया और उसका बारीक मुआयना किया ।

“बढ़िया !” - वो बड़बड़ाया - “बढिया !”

“क्या बढ़िया ?” - पावटे उसे घूरता हुआ बोला - “अब ये न कहियेगा कि मैडम का हैंडराइटिंग हूबहू नकल करने में किसी ने अपनी कलाकारिता दिखाई ।”

शाह ने उत्तर न दिया, उसने लिफाफे का मुंह खोलकर भीतर झांका ।

“ये तो खाली है !” - वो बोला - “चिट्ठी कहां है ?”

खाली है ! - नमिता को अंधेरे में रोशनी की किरण दिखाई दी ।

“चिट्ठी” - पावटे बोला - “नहीं है ।”

नहीं है ।

“नहीं है ?” - शाह की भवें उठीं - “नहीं है क्या मतलब ? बरामद ही न हुई ?”

“हां । चिट्ठी उसने पढ़ने के बाद शायद कहीं अलग - जैसे कि अपने बटुवे में - रख ली थी । और बटुवा, आप जानते ही हैं कि, लोग बाग पैंट की हिप पाकेट में रखते हैं ।”

“ये तो नुकसान हो गया !”

“हां । यकीनन हमारा...”

“मेरे क्लायंट का ।”

“जी !”

“चिट्ठी बरामद हो जाती तो मेरी क्लायंट शक से बिल्कुल ही बरी हो जाती ।”

“खामखाह !”

“नहीं खामखाह । तुम्हें नहीं मालूम उस गायबशुदा चिट्ठी में क्या दर्ज था, लेकिन मुझे मालूम है ।”

“आपको मालूम है ?”

“क्लायंट के जरिये । मेरे क्लायंट कभी मुझसे झूठ नहीं बोलते, कभी कुछ नहीं छुपाते इसलिये इसने जैसे मुझे हर बात बताई वैसे ये भी बताया कि इसने कोठारी को एक चिट्ठी लिखी थी और चिट्ठी में क्या लिखा था !”

“क्या लिखा था ?”

“वो नहीं लिखा था जिसकी तुम लोग उम्मीद कर रहे हो । चिट्ठी में ऐसी कोई बात दर्ज नहीं थी जिससे वारदात में इसकी कोठारी से मिलीभगत साबित होती ।”

“तो क्या था ?”

“एक पशेमान औरत की फरियाद थी; वो फरियाद नहीं थी जिसका अक्स तुम्हारे जेहन में है, कोई और ही फरियाद थी ।”

“अब कुछ कहिये भी तो सही ।”

“बाजरिया चिट्ठी उसने कोठारी से फरियाद की थी कि वो अपनी जुबान पर खरा उतरे, वापिस लौटकर आये और अपनी बेगुनाही को साबित करके दिखाये । साबित करके दिखाये कि सदानन्द पुणेकर के लिये उसकी दोस्ती और निष्ठा फर्जी नहीं थी, उसने पुणेकर के साथ विश्वासघात नहीं किया था ।”

“उसकी कोठारी पर - हसबैंड के खास पर, फैमिली फ्रेंड पर - एकाएक बेएतबारी की वजह ?”

“वजह तुम्हीं लोग हो ।”

“जी !”

“तुम्हीं लोग तो उसके एकाएक कहीं चले जाने को हाईलाइट करने लगे, उससे उलटे सीधे नतीजे निकालने लगे । माई डियर पावटे, जब एक ट्रेन्ड इनवेस्टिगेटिंग एजेंसी कोई नतीजा निकालती है तो उस नतीजे का दूसरों का रोब पड़ना, असर होना लाजमी होता है ।”

"आई सी ।" - पावटे आश्वासनरहित स्वर में बोला ।

"इसी वजह से इसकी तवज्जो शेयर सर्टिफिकेट्स की तरफ गयी, जो कभी कभी मास्टर बैडरूम में पुणेकर की राइटिंग टेबल के दराज में पड़े होते थे और इसी वजह से इसे हसबैंड के बैंक एकाउंट्स चैक करना सूझा । यूं इस बात की तसदीक होती कि कहीं पुणेकर की गुमशुदगी के पीछे पैसा तो वजह नहीं था ! इसे बैंक के लाकर से शेयर सर्टिफिकेट गायब मिले और दो बैंकों से लाखों की रकम गायब मिली । लिहाजा ये स्थापित हुआ कि पैसा ही वजह था । तब इस बात को इसने पुलिस के कोठारी पर शक को जोड़कर देखा तो सहज ही इसे भी कोठारी पर शक होने लगा । कोठारी पुणेकर का राजदां था इसलिये उसकी माली हैसियत से पूरी तरह से वाकिफ था । नमिता को पुणेकर के फिगारो आइलैंड पर बंगला खरीदने के इरादे की खबर थी, इसे ये भी मालूम था कि उस प्रापर्टी की खरीद के लिये पुणेकर को उकसाने वाला कोठारी था इसलिये बैंकों से मोटी निकासी की भी कोठारी ही वजह हो सकता था । इसे कार की बाबत भी मालूम था कि कोठारी ने खुद ऐसे हालात पैदा किये थे कि पुणेकर ही कहता कि वो अपनी ट्रिप पर उनकी नयी सोनाटा ले जाये । शक को पुख्ता करने वाली इतनी बातें इसके जेहन में थीं जबकि इसने कोठारी को चिट्ठी लिखी थी । लेकिन कोठारी क्योंकि 'घर का आदमी' था इसलिये ये उसे अपनी पोजीशन साफ करने का चांस देना चाहती थी । बस, इतनी-सी बात है चिट्ठी की जिसका तुम लोग अफसाना बनाये दे रहे हो । और इस लिफाफे को यूं पेश कर रहे हो जैसे कोई कहे कि उसने जंगल में पेड़ के पास खड़े शेर का शिकार किया और सबूत के तौर पर मरा हुआ शेर दिखाने की जगह वो पेड़ पेश करे जिसके पास कि शेर खड़ा था ।"

पावटे मुंह बाये वकील की सूरत देखने लगा ।

वैसा ही हाल नगरकर का था ।

दोनों पुलिस अधिकारियों की सूरत देखकर नमिता को बहुत सकून महसूस हुआ । इतने अरसे बाद उसके साथ ये एक पहली अच्छी घटना घटित हुई थी कि वो शाह की शरणागत बनी थी ।

"सो देयर ।" - शाह विजेता के से स्वर में बोला ।

"नो, वुई आर नाट देयर यैट ।" - पावटे सख्ती से बोला - "वुई विल बी देयर नाओ, दैट इज आफ्टर वुई हैव डिसकस्ड दि इयरिंग ।"

"वाट्स दैट ।"

पावटे ने नगरकर को इशारा किया ।

नगरकर अपने स्थान से उठा, उसने पावटे के परले पहलू में जाकर मेज का एक दराज खोला, उसमें से एक लिफाफा बरामद किया और उसका मुंह खोलकर उसे मेज पर उलट दिया ।

मेज पर मोती जड़ा बुन्दा आकर गिरा ।

“ये क्या है ?” - जानबूझ कर अनजान बनता शाह उलझनपूर्ण स्वर में बोला ।

“बुन्दा है ।” - नगरकर बोला - “कान में पहना जाता है । कोठारी के काटेज से सोफे और कुशन के बीच की झिरी में से बरामद हुआ । इसका जोड़ीदार मैडम के बैडरूम में, ट्रेसिंग टेबल के दराज में मौजूद है ।”

“तो ?”

“तो” - पावटे बोला - “आप बोलिये । क्योंकि मैडम को तो आप बोलने देंगे नहीं ।”

“मामूली बात है । ये एक बार अपने हसबैंड के भेजे कोठारी के काटेज में गयी थी, लेकिन कोठारी वहां नहीं था । इसने सोफे पर बैठकर कोठारी का इंतजार किया था, जब वो नहीं लौटा था तो ये लौट गयी थी । तभी किसी तरह से ये बुन्दा कान से निकल कर वहां गिर गया था ।”

“तो ये कबूल करती हैं कि ये कोठारी से मिलने उसके काटेज पर गयी थीं ?”

“अपनी जाती हैसियत में मिलने नहीं गयी थीं । अपने हसबैंड के भेजे उसके काम से वहां गयी थीं ।”

“किस काम से ?”

“पुणेकर को कोठारी फोन पर मिल नहीं रहा था, उसने नमिता को ये देखने भेजा था कि कहीं वो अपने नावल की फिराक में वहां तो नहीं छुपा बैठा था !”

“जबकि इस काम के लिये घर के नौकर-चाकर मौजूद थे ।”

“बेचारा जिन्दा होता तो बताता कि क्यों उसने इस काम के लिये किसी नौकर को भेजने की जगह बीवी को भेजा ! या खुद ही क्यों न चला गया !”

“बहरहाल ये कबूल करती हैं कि ये वहां गयीं ?”

“न कबूल करें तो और क्या करें ? इंकार करेंगी तो मिसेज रोटोलो को पेश कर दोगे ।”

“लिहाजा इसलिये कबूल करती हैं क्योंकि जानती हैं कि कोठारी के काटेज में इनकी विजिट का मिसेज रोटोलो की सूरत में हमारे पास एक गवाह है ।”

“बतौर गवाह मिसेज रोटोलो तुम्हारे काम की ही नहीं, मेरे काम की भी हैं ।”

“आपके काम की कैसे ?”

“उसकी गवाही से ये भी तो साबित होता है कि मेरी क्लायंट काटेज के आकूपेंट की गैरमौजूदगी में वहां गयी थी और जितना अरसा थे वहां ठहरी थी, उतने में कोठारी वहां नहीं लौटा था । इसलिये बुन्दे के वहां गिरने की बाबत तुम लोगों का कोई फाश इशारा नहीं चलने वाला । महज बुन्दे की बरामदी से तुम लोग न उस काटेज को इसका और कोठारी का लव नैस्ट साबित कर सकते हो और न ये कि इन दोनों ने पुणेकर के कत्ल की साजिश वहां रची थी । क्योंकि मैं ये क्लेम कर सकता हूं कि ये बुन्दा पुलिस ने वहां प्लांट किया ।”

“क्या !”

“प्लांट क्या किया, बस कह दिया कि ये फलां जगह से बरामद हुआ था ।”

“क्या कह रहे हैं आप ?”

“वही जो तुम सुन रहे हो । एसएचओ साहब, जरा इधर मेरी तरफ देखना ।”

नगरकर ने हड़बड़ा कर वकील की तरफ देखा ।

“मिसेज पुणेकर की गैरहाजिरी में तुम काटेज पर गये । गये तो गये, काटेज की पहली मंजिल पर कैसे पहुंच गये ? वहां भी पहुंच गये तो बैडरूम में क्यों घुसे ? वहां तलाशी क्यों लेने लग गये जिसके तहत तुमने ड्रैसिंग टेबल का दराज खोला और वहां दो बुन्दे पड़े देखे ?”

“दो !” - नगरकर हड़बड़ाया - “दो !”

“ये आइटम पेयर में ही होती है । जब भगवान ने दो कान दिये हैं तो बुन्दे भी तो दो ही होंगे न, जिनमें से एक तुम उठा लाये और दावा करने लग गये कि वो कोठारी के काटेज से बरामद हुआ ।”

नगरकर भौंचक्का सा उसका मुंह देखने लगा ।

“कोर्ट में केस लगा तो मैं तुम पर फ्रेम-अप का इलजाम लगाऊंगा, क्लेम करूंगा कि तुमने अपने रुतबे का, अपनी वर्दी का बेजा इस्तेमाल किया और बिना सर्च वारन्ट के मैडम के काटेज को सर्च किया ।”

“किसलिये ? मुझे क्या फायदा ?”

“क्यों नहीं फायदा ? तुम्हें मैडम पर शक है लेकिन हवाईयां उड़ाने के अलावा मैडम के खिलाफ तुम्हारे पास कोई ठोस सबूत नहीं है, इस बात को तुमसे बेहतर कौन जानता हो सकता है ? वो ठोस सबूत तुमने गढ़कर तैयार किया, मैडम की गैरहाजिरी में बैडरूम से एक बुन्दा चुराया और उसे कोठारी के काटेज में प्लांट कर दिया ।”

“मैंने ऐसा कुछ नहीं किया ।”

“कोर्ट में बोलना ।”

“ऐसी फर्जी बात कोर्ट में दोहराने की आपकी मजाल नहीं हो सकती ।”

“मजाल की तुम क्या जानो ? लेकिन हां, तुम मजबूर नहीं करोगे तो नहीं दोहराऊंगा ।”

नगरकर के चेहरे पर कई भाव आये, कई भाव गये ।

“काटेज पर” - फिर वो भड़ककर बोला - “अपनी एक विजिट कबूल करके ये पुलिस पर कोई एहसान नहीं कर रहीं । वो विजिट ये इसलिये कबूल कर रही हैं क्योंकि पड़ोस की मिसेज रोटोलो ने इन्हें देखा था, हकीकतन ये एक से ज्यादा बार वहां गयी हो सकती हैं और बाकी बार मिसेज रोटोलो ने इन्हें नहीं देखा था । इतवार सुबह या शनिवार रात को तो ये यकीनन वहां गयी थीं ।”

"इस यकीन की वजह ?"

"काटेज के अगले पिछले दरवाजों की डोर नॉब्स से फिंगरप्रिंट्स पोंछकर मिटाये गये थे, भीतर भी कई जगहों से फिंगरप्रिंट्स पोंछे गये थे ।"

"और ये काम मेरी क्लायंट ने किया ?"

"हां ।"

"क्यों ?"

"ताकि इनकी वहां विजिट का कोई सबूत बाकी न बचता ।"

"तुम सात जन्म साबित नहीं कर सकते कि ये एक से ज्यादा बार कोठारी के काटेज पर गयी थी और फिंगरप्रिंट्स इसने पोंछे थे ।"

"ये खुद कबूल करेंगी ।"

"तुम्हारी आवाज में धमकी का पुट है । जरूर तुम्हारा इशारा थर्ड डिग्री की तरफ है । लेकिन ऐसे किसी इकबालिया बयान का थाने में ही सुख पा सकोगे । कोर्ट में उसकी दो कौड़ी की कीमत नहीं होगी । कहो कि मैंने गलत कहा ?"

नगरकर से कुछ कहते न बना ।

"अपने बाकी वाहियात सबूतों की तरह बोट की रेलिंग पर मिले खून के धब्बे को लेकर भी तुम लोग बहुत उछल रहे हो । लेकिन इस बात को नजरअन्दाज कर रहे हो कि 'ओ' सबसे कामन ब्लड ग्रुप होता है । किसी एक्सपर्ट से मशवरा करोगे तो मालूम पड़ेगा कि मुम्बई की आधी से ज्यादा आबादी का ब्लड ग्रुप 'ओ' है । लिहाजा इस बिना पर तुम कभी साबित नहीं कर सकोगे कि कपिल कोठारी बोट पर मौजूद था ।"

"अब आप कोठारी को डिफेंड कर रहे हैं ।"

"नहीं । नहीं कर रहा । वो मेरा क्लायंट नहीं है । मैं सिर्फ ये कहने की कोशिश कर रहा हूं कि कि रेत में मछलियां पकड़ने की कोशिश करोगे तो तुम्हारे केस का वजूद ही खत्म हो जायेगा । वैसे फर्क तो अब कोई पड़ता नहीं है । जो पहले ही मर चुका है, उसे कानून तो मार नहीं सकता । मुर्दे को तो फांसी पर चढ़ाया नहीं जाता । कानून की तसल्ली के लिये वो भी किया जाये तो मुर्दा है कहां !"

कोई कुछ न बोला ।

"तुम लोग एक ऐसे काम में लगे हुए हो" - अपनी गर्जना से मिलती आवाज में शाह आगे बढ़ा - "जिसका हासिल सिफर है, लेकिन जो मेरे क्लायंट के साइकालोजिकल टार्चर की, मानसिक संताप की वजह बन रहा है । तुम लोग अपनी जुबानी इस बात को कभी कबूल नहीं करोगे इसलिये मैं इसे पुख्ता करने की, स्थापित करने की इजाजत चाहता हूं ।"

"ऐसा !" - पावटे सकपकाया ।

"हां ।"

"आप ये भी कर सकते हैं ?"

“बराबर कर सकता हूं । न कर सकता होता तो जिक्र क्यों करता ?”

“हूं ।”

“इंसाफ के नाम पर मेरी दुहाई है” - शाह नाटकीय अंदाज से बोला - “कि मेरे क्लायंट पर नाजिल पुलिसिया ज्यादतियों पर लगाम लगाई जाये । उसको और हलकान न किया जाये ।”

“प्लीज, मिस्टर शाह, मैं आपको फिर याद दिलाता हूं कि आप कोर्ट में नहीं खड़े हैं । यहां जो बातें हो रही हैं दोस्ताना माहौल में हो रही हैं ।”

“अच्छा !”

“जी हां । ऐसा न होता तो आपकी तकरीबन बातें सुनना हमारे लिये जरूरी नहीं होता ।”

“फिर तो मुझे शुक्रिया अदा करना चाहिये कि तुम लोग मुझे झेल रहे हो ।”

“अब बस कीजिये, क्योंकि ये भी थियेट्रिकल्स का ही हिस्सा है ।”

“ओके । ओके । तो मैं कुछ कहने की जगह पहले कुछ पूछता हूं । मुझे ये बताओ कि जब तुम लोगों को सदानन्द पुणेकर की गुमशुदगी की रिपोर्ट मिली और इस बाबत तुम लोगों ने बीवी से - मेरी क्लायंट से - बात की तो तुम लोगों ने क्या राय कायम की थी ? कौन सी थ्योरी, तुम लोगों को लगा था कि, गुमशुदगी को एक्सप्लेन कर सकती थी ?”

पावटे ने नगरकर की तरफ देखा ।

“हार्ट अटैक ।” - नगरकर बोला - “सडन हार्ट अटैक ! जब हमें मालूम हुआ कि गुमशुदा शख्स दो झटके पहले भी झेल चुका था तो मुझे ये ही सम्भावित बात लगी कि उसे फिर झटका लग गया था और तीन से ज्यादा झटके तो आज तक कोई नहीं झेल सका । हार्ट अटैक की वजह से वो बोट की रेलिंग पर से उलटकर समुद्र में जा गिरा और बह गया ।”

“ये तो शुरुआती थ्योरी थी लेकिन बाद में जाहिर है कि खयाल बदला, तभी तो तुम लोगों की तवज्जो कोठारी की तरफ गयी और तुम मेरी क्लायंट के पीछे पड़े । कैसे बदला ? किस वजह से बदला ?”

“कई वजह थीं । जैसे कि बोट की रेलिंग पर लगा खून, नयी सोनाटा जिसे कोठारी ले गया, इस बात पर बेएतबारी कि पुणेकर के इसरार पर ले गया, चिट्ठी. ..बल्कि दो चिट्ठियां, एक जो कोठारी ने मैडम को लिखी और दूसरी जो मैडम ने कोठारी को लिखी ।”

“एसएचओ साहब, खयाल बदलने की इतनी सारी वजह तुमने गिनाईं, लेकिन उनमें इस एक वजह को शुमार नहीं किया कि हकीकतन सदानन्द पुणेकर हार्ट का पेशेंट नहीं था, उसे पहले कभी कोई हार्ट अटैक नहीं हुआ था । क्या ये सच नहीं है कि असल में तुम लोगों का ओरीजिनल खयाल इस हकीकत ने बदला था ?”

नमिता इतनी हैरान हुई कि उठ के खड़ी हो गयी ।

“ये” - उसके मुंह से निकला - “ये आप क्या.. .क्या कह रहे हैं ?”

“बैठ जाओ ।”

“लेकिन...”

“सिट डाउन आई से ।” - शाह घुड़ककर बोला - “एण्ड कीप क्वाइट । एण्ड स्पीक वैन यू आर स्पोकन टु ।”

नमिता हौले से वापिस अपनी कुर्सी पर ढेर हो गयी, लेकिन उसके चेहरे से उत्कंठा और विरोध के भाव न गये ।

“कैसे जाना” - शाह वापिस पुलिस अधिकारियों की तरफ घूमा - “कि पुणेकर हार्ट पेशेंट नहीं था ? डाक्टर देशपाण्डे से ?”

पावटे ने सहमति में सिर हिलाया ।

“मैंने भी डाक्टर देशपाण्डे से जाना । आज सुबह ही जाना । डाक्टर से कौन मिला ? तुम या एसएचओ साहब ?”

“मैं ।” - पावटे बोला ।

“तो तुम्हें पता लगा कि सदानन्द पुणेकर गम्भीर कार्डियाक केस नहीं था, गम्भीर बेवड़ा था, अल्कोहलिक था ?”

नमिता ने आवेश में फिर कुछ कहने के लिये मुंह खोला, लेकिन शाह ने उसे निगाहों से घुड़ककर चुप करा दिया ।

“हां ।” - पावटे बोला ।

“तभी तुम्हें पुणेकर की बाबत कुछ और भी पता लगा ? उसके अल्कोहलिक होने के अलावा कुछ और भी पता लगा ?”

“हां । लेकिन उसका जिक्र किसलिये ? उसका केस से क्या ताल्लुक ?”

“शायद कोई हो इसलिये बोलो और क्या पता लगा ?”

सवाल पूछते ही शाह पावटे पर से निगाह हटाकर नमिता की तरफ देखने लगा ।

“और ये पता लगा कि” - पावटे बोला - “ओवरड्रिंकिंग ने पुणेकर को नपुंसक बना दिया था ।”

नमिता के नेत्र फट पड़े, उसका मुंह खुले का खुला रह गया ।

“ही वाज इम्पोटेंट ?” - शाह तब भी निगाहों से नमिता को खामोश रहने की चेतावनी देता बोला ।

“हां ।”

“क्या ये सच नहीं है कि इस रहस्योद्घाटन के बाद ही तुम लोगों की तवज्जो कपिल कोठारी की तरफ गयी थी और तुम्हें ये सूझा था कि कोठारी नमिता का यार था, दोनों का अफेयर था ?”

"सूझा था । साथ में हमने इस बात को भी जोड़ा था कि हसबैंड उम्रदराज था, बीवी जवान थी । दोनों में उम्र का पच्चीस साल से ज्यादा का फर्क था ।"

"इसमें ये भी जोड़ा होगा कि दोनों प्रेमी - अगरचे कि वो प्रेमी थे - हसबैंड के हैवी ड्रिंकर होने का, अल्कोहलिक होने का फायदा उठाते थे । जब वो पीकर होश खो देता था तो अक्सर ये रंगरेलियां मनाते थे ?"

"हां । ये बात भी बराबर हमारी निगाह में थी ।"

"और दोनों - कथित - प्रेमी ये भी उम्मीद करते थे कि हसबैंड - सदानन्द पुणेकर - पी पी के जान दे देगा ! इसलिये वो उसे ज्यादा से ज्यादा पीने को उकसाते थे ?"

हे भगवान ! - नमिता के मन से कराह निकली - ये वकील का बच्चा क्या नजूमी था ! कैसे भांप गया ! कैसे जान गया ! और क्या जानता था ! क्या सब कुछ !

"हां । ये बात भी हमें सूझी थी, लेकिन हम ये भी जानते थे कि इसे हम साबित नहीं कर सकते थे ।"

"लेकिन साबित करना बराबर चाहते थे । कोई बड़ी बात नहीं कि तुम्हारी अभी भी ये कोशिश हो ।"

"कोशिश करना हमारा फर्ज है, कारोबार है । कोशिश करना ये सोच के तो नहीं छोड़ा जा सकता न कि हर कोशिश कामयाब नहीं होती !"

"वैरी वैल सैड । लेकिन तब कोशिश ज्यादा शिद्दत से करनी पड़ती है जबकि सस्पैक्ट के खिलाफ कोई पुख्ता सबूत न हो । ऐसी शिद्दत सरकारी मुलाजिमों को - जो कि पुलिस है - भारी पड़ती है, इसलिये सबूत गढ़ने पड़ते हैं ।"

"यू आर टाकिंग नानसेंस !"

"ये नानसेंस है कि लाश की गैरबरामदी की रू में पुलिस कभी निर्विवाद रूप से ये जानती होने का दावा नहीं कर सकती कि सदानन्द पुणेकर अपने आखिरी अंजाम को क्योंकर पहुंचा ! ये नानसेंस है कि इस बात का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि कोई माल सच में लूटा गया था !"

"तो जो माल पुणेकर के कब्जे में था - यूरो के लाखों के नोट, शेयर - वो कहां गया ?"

"जहन्नुम में गया । कोई अपनी मिल्कियत किसी चीज को एक जगह से उठाये और दूसरी, नामालूम, जगह रख दे तो इसका मतलब चोरी हो गया ? लूट हो गया ?"

पावटे से जवाब देता न बना ।

"तुम्हारी थ्योरी से मैच करता एक ही सस्पैक्ट तुम्हारे पास है - कपिल कोठारी - और वो मर चुका है । तो कानूनन तुम्हारे हाथ क्या है ? साजिश का शिकार ? गायब है । उसकी नोटों और शेयरों की सूरत में अचल सम्पति ? गायब है । एक मर्डर सस्पैक्ट ? गायब है । इन हालात में ऐसी किसी कोशिश का क्या मतलब जिसका कोई हासिल मुमकिन ही नहीं । थाना खोल के बैठे हो । क्राइमरिडन महानगर में थाना खोल के बैठे हो । सारा साल एक ही

केस होगा तुम्हारे पास फालो करने के लिये ! पब्लिक तुम्हारी तनख्वाह भरती है । वो टैक्स देती है तो तुम्हें तनख्वाह मिलती है । तुम पब्लिक का पैसा यूं उजाड़ोगे ! कोशिश कोशिश भजते ऐसे केस को हल करने में लगे रहोगे जिस का कोई वजूद ही नहीं है ! जब केस नहीं है तो हल कहां से आएगा !"

"बहुत अच्छा लैक्चर दिया आपने ।" - पावटे बोला - "हमें ये बात भी समझा दी कि क्यों हम जनता के सेवक कहलाते हैं । क्योंकि जनता हमारी तनख्वाह भरती है इसलिये हमारी असल एम्पलायर है । अब ये बताइये कि इतना कुछ कहने के पीछे आपकी मंशा क्या है ?"

"मंशा एक ही है ।"

"क्या ?"

"मेरी क्लायंट का पीछा छोड़ो । अपने इन्स्पेक्टर को हिदायत जारी करो कि ये इसे हलकान करना छोड़े ।"

नगरकर के चेहरे पर क्रोध के भाव आये । पावटे ने उसे निगाहों से शांत करने की कोशिश की, लेकिन इस बार नगरकर ने उससे निगाह ही न मिलाई ।

"एडवोकेट साहब" - वो सख्त लहजे में बोला - "आपने यहां मेरे थाने में बैठकर मेरे मुंह पर बहुत कुछ कहा, जो मैंने इसलिये सुना क्योंकि मेरा आला अफसर यहां मौजूद है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि आप मेरी कमजोरी को अपनी ताकत बना लें और कुछ भी कहते चले जायें । कौन-सा पीछा पकड़ा हुआ है मैंने आपके क्लायंट का जो मैं छोड़ूं ? क्या हलकान किया है मैंने मैडम को ? ये नाम लें किसी बद्सलूकी का । मुझे किसी को शक की बिना पर गिरफ्तार करने का पूरा अख्तियार है, लेकिन पूछिये इनसे, मैंने अपना अख्तियार इन पर आजमाया ? इन्हें बाइज्जत थाने में तलब किया गया क्योंकि मैंने इनसे कुछ सवाल और पूछने हैं । ये साथ में आपको ले आयीं, खामखाह ले आयीं, तो भी हमने शिकायत नहीं की । आपने मजे ले लेकर हमारे केस की धज्जियां उड़ाई । हमने गिला नहीं किया, बाइज्जत न सिर्फ आपकी हर बात सुनी, हर बात को अहमियत दी । इसी वजह से आपकी मजाल हुई कि अब आप मुझे कारोबार सिखा रहे हैं । मुझे ये समझा रहे हैं कि मुझे थाना कैसे चलाना चाहिये ! मैं आपके आफिस में आकर आपको आपका धंधा सिखाऊं, आपको कानून पढाऊं, कानून की धारायें समझाऊं तो आप को कैसा लगेगा ? आप बड़े वकील हैं तो मुझे छोटा साबित करने के लिये कुछ भी करेंगे ? मेरे सिर पर नाचेंगे ? आर यू गॉड ? नो, यू आर नाट । यू आर नॉट ईवन जीसस क्राइस्ट ! बट यू डू थिंक यू आर टैन इंचिज हायर दैन गॉड ।"

पावटे नगरकर के उबाल पर मन-ही-मन खुश हो रहा था । उसने उसे तब तक न टोका, जब तक उसे ये न लगा कि उसने जो कहना था, कह चुका था ।

"नगरकर !" - तब वो बोला - "कन्ट्रोल युअरसैल्फ !"

"हमने जो पूछना था वो इनसे तो न पूछ सके, लेकिन आपकी जुबानी अपने सवालों के जवाब हमें मिल गये, इसलिये फिलहाल हमारी मैडम में कोई दिलचस्पी नहीं । ये जा सकती हैं । लेकिन आप मुझे हूल देंगे, ताकत बताएंगे तो ये यहीं रहेंगी ।"

"कैसे रोकोगे ?"

"आप देखना कैसे रोकूंगा ! आप छुड़ा के दिखाइयेगा ।"

"बेजा, नाजायज, घटिया, गैरकानूनी तरीके इस्तेमाल करोगे ?"

"देखना । साम दाम दण्ड भेद आप जैसा शातिर वकील इस्तेमाल कर सकता है तो मैं भी इस्तेमाल कर सकता हूं ।"

"शातिर गुंडे बदमाश होते हैं । वकील को फाजिल कहते हैं ।"

"मुझे कोई फर्क..."

"मिस्टर शाह" - एकाएक पावटे उठ खड़ा हुआ - "मैडम, आइये, मैं आपको बाहर छोड़के आऊं ।"

"थैंक्यू ।" - शाह भी उठा - "बाहर का रास्ता मुझे मालूम है । कम, माई डियर ।"

नमिता चुपचाप उसके साथ हो ली ।

***

दोनों शाह की कार में सवार थे ।

थाने के परिसर से काफी परे निकल आने के बाद गुंजन शाह ने एकाएक कार रोक दी ।

"क्या हुआ ?" - नमिता सकपकाई ।

शाह ने घूमकर अपलक उसकी तरफ देखा ।

"क्या है ?" - वो विचलित स्वर में बोली ।

"तुमने मुझे चिट्ठियों की बाबत क्यों न बताया ?"

"न.. .मुझे नहीं मालूम था कि उन्हें... चिट्ठियों की खबर थी ।"

"क्यों नहीं मालूम था, पुलिस को क्या समझती हो तुम ?"

"वो तो ठीक है लेकिन..."

"नहीं भी मालूम था तो बताने में क्या हर्ज था, जब हर बात बताई तो ये क्यों छुपा ली ?"

"स.. .सारी ।"

"जानती हो चिट्ठियों की वजह से ही सब उलटी पड़ सकती थी !"

"पड़ी तो नहीं । आपने तो उनका हुलिया ही तब्दील करके रख दिया । जिस बात को वो मेरे खिलाफ खड़ा कर रहे थे, ऐसा पलटवार किया कि वो मेरे हक में दिखाई देने लगी । मिस्टर शाह, यू आर ग्रेट । जस्ट ग्रेट ।"

"मसका मार रही हो ! अपनी बेजा हरकत से मेरा ध्यान बंटाने की कोशिश कर रही हो !"

नमिता ने आहत भाव से उसकी तरफ देखा ।

"कल मैंने सिर्फ बोहनी की थी, अपनी फीस की कई किस्तें अभी मैंने वसूलनी हैं इसलिये मैं तुम्हारे से नाराज नहीं हो सकता ।"

"एक बात कहूं मिस्टर शाह ?"

"कहो ।"

"बुरा तो नहीं मानेंगे ?"

"नहीं ।"

"टॉप के हरामी आप बराबर हैं इस उस में भी लेकिन आनेस्ट हरामी हैं । जो कहना होता है साफ कहते हैं ।"

वो हंसा ।

"अभी तुम्हारा खुद के बारे में क्या खयाल है ?"

"किस बाबत ?"

"जो मुसीबत गले पड़ी है, टल गयी ?"

"अभी तो टल ही गयी !"

"नहीं टल गयी । वो लोग तुम्हें कभी भी दोबारा पकड़ मंगवायेंगे ।"

"आप फिर छुड़ा लेंगे ।"

"फिर छुड़ाना इतना आसान न होगा । इस बार वो तैयार नहीं थे - मेरे लिये तो कतई तैयार नहीं थे - अगली बार थामेंगे तो पूरी तैयारी के साथ थामेंगे । और अगली बार, देख लेना, पूछताछ के लिये नहीं बुलायेंगे, बतौर सस्पैक्ट, हिरासत में लेंगे और रिमांड के लिये कोर्ट में पेश करेंगे । वहां डाक्टर देशपाण्डे की रिपोर्ट कि तुम्हारा हसबैंड नपुंसक था, कि तुम्हारे कोठारी से नाजायज ताल्लुकात थे, तुम्हारी ऐसी छवि बिगाड़ेगी कि मैजिस्ट्रेट बेहिचक तुम्हारी पुलिस कस्टडी के लिये हामी भर देगा ।"

"ओह !" - वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - "मुझे नपुंसकता वाली बात की कोई खबर नहीं थी ।"

"यही ये जाहिर करने के लिये काफी है कि तुम कैसी बीवी हो कि तुम्हें एक साल से ज्यादा वक्त तक अपने हसबैंड की इतनी बड़ी कमतरी की खबर न लगी । हांडी गर्म है या ठण्डी, छुए बिना तो पता नहीं लगता न ! कैसी बीवी हो तुम जिसने इतना अरसा एक बार भी हांडी को छूकर न देखा ?"

"देखा । देखना पड़ा । कभी-कभी वो नशे में बेहोश नहीं भी होता था, होता था तो जल्दी होश में आ जाता था, तब... तब उसे याद आ जाता था कि मैं उसकी बीवी थी,

उसकी प्रापर्टी थी । ऐसे किसी मौके पर हांडी मुझे गर्म न लगी तो बिल्कुल ठण्डी भी न लगी ।"

"आई सी ।"

"मैंने ऐसे मौकों पर हमेशा यही समझा कि उसकी खराब परफारमेंस की वजह नशा थी इसलिये उसकी तरफ तवज्जो न दी ।"

"तुम ये कहना चाहती हो कि अपनी राजी से बैडरूम अलग कर लेने के बावजूद, खुद ये बात स्थापित करने के बावजूद कि अपनी हार्ट कंडीशन की वजह से उसको सैक्स करने की मनाही थी, वो कोशिश करता था ?"

"कभी कभार ।"

"क्योंकि कभी कभार नपुंसक को भी होशियारी आ जाती है ।"

"अब मैं क्या कहूं ?"

"अपनी अक्षमता से कभी शर्मिन्दा होकर न दिखाया ?"

"काहे को ? जब वो ऐसा नहीं था, तब भी जानते हो क्या कहा करता था ?"

"क्या कहा करता था ?"

"वैन ए मैन इज फिनिश्ड, ए वूमेन इज लेड ।"

"माई डियर, दैट्स वाई दे से इट्स मैन्स वर्ल्ड आउट एन्ड आउट ।"

"मिस्टर शाह, थाने में आप ही इस बात को क्यों ले बैठे कि मेरा कोठारी से अफेयर हो सकता था ? आपने तो ये तक कह डाला कि हम दोनों सदा के बेवड़ा होने का फायदा उठाते थे, जब वो होश खो बैठता था तो हम रंगरेलियां मनाते थे ।"

"क्योंकि मैं न कहता तो पावटे कहता जो कि नपुंसकता वाली बात जान चुका था । मैंने पहले कह के यूं समझो कि उसके इस बमशैल का पलीता निकाल दिया । वो कहता तो - और यकीनन कहता - एक की आठ लगाता, तुम्हारे कैरेक्टर को इस बात को लेकर इतना काला रंगता कि तुम तड़पकर रह जातीं । उस सन्दर्भ में वो तुमसे ऐसे एम्बैरेसिंग सवाल पूछता कि तुम पनाह मांग जातीं । उसकी सारी कोशिश ये स्थापित करने की होती कि तुम एक कैरेक्टरलैस औरत थीं, जो कि किसी के भी सामने बिछ सकती थीं, तुम नपुंसक की बीवी थीं जिसका एक यार हो सकता था तो अनेक भी हो सकते थे । जितना ज्यादा वो इस बात को कुरेदता, उतना ही तुम इसे अवायड करतीं और जितना ज्यादा अवायड करतीं, उतना ही ज्यादा गिल्टी लगतीं । उस बात का उससे पहले जिक्र करना मेरी तुरुप चाल थी जिसने उसका बहुत बड़ा पत्ता पीट दिया । मेरे जिक्र से लगता था कि मैं एक सताई हुई औरत का जिक्र कर रहा था जो भर्त्सना के नहीं, हमदर्दी के काबिल थी और उन लोगों की सोच गन्दी थी जो कि एक सताई हुई औरत की दुश्वारियों का मजा ले रहे थे । अब आयी बात समझ में ?"

"हां । अब.. .अब वो क्या करेंगे ?"

“तुम्हारे खिलाफ इस्तेमाल करने के लिये कोई ज्यादा डैमेजिंग बात तलाश करेंगे ।” - शाह ने फिर अपलक उसकी तरफ देखा - “है कोई ऐसी बात ?”

“कैसी बात ?”

“किसी और से भी अफयेर है तुम्हारा ? या था ?”

नमिता के जेहन पर डाक्टर प्रफुल्ल सिंगला का अक्स उभरा ।

“मिस्टर शाह, अभी मैंने ये ही कब कबूल किया है कि मेरा कोठारी से अफयेर था ?”

“जरूरत भी नहीं है । तुम ऐसी कोई कोशिश करोगी तो वो दाई से पेट छुपाने जैसी होगी ।”

वो खामोश रही ।

“अब कुछ अरसा काबू में रखना अपने आपको । पति गया, यार गया, इसलिये जोश खा सकती हो ।”

“अब छोड़िये ये बदमजा किस्सा ।”

“छोड़ दिया । लेकिन मेरी वार्निंग स्टैण्ड करती है । गौर करना उस पर ।”

“पीछे थाने में आपने जो स्टोरी बनायी वो कमाल की थी, मैं उससे सन्तुष्ट हूं लेकिन कोठारी को कुछ ज्यादा ही स्याह रंग में नहीं रंग दिया आपने ?”

“जरूरी था । तुम्हें हंसिनी जैसी सफेद पेश करना था तो बगल में कोई कौवे जैसा स्याह दिखाई देना ही चाहिये था । ऐसा कौवा एक ही था मेरी निगाह में ।”

“कोठारी !”

“यकीनन कोठारी । ऊपर से मुर्दे नहीं बोलते । मैं उसे किसी भी रंग में रंगता, वो आकर मेरा मुंह नहीं पकड़ सकता था ।”

“बहन...” - वो प्रशंसात्मक स्वर में बोली ।

“करैक्शन, माई हनीचाइल्ड । क्लायंट...”

वो हंसी ।

शाह ने भी हंसी में उसका साथ दिया, फिर तत्काल संजीदा हुआ ।

“अब एक बात डैडी को सच सच बताओ ।” - वो बोला - “तुम्हारा कोठारी से अफेयर था या नहीं ?”

वो हिचकिचाई ।

“ओह, कम आन । क्लायंट का अपने वकील से झूठ बोलना मरीज का डाक्टर से झूठ बोलने की तरह होता है । मरीज के झूठ बोलने से डायग्नोसिस गलत हो सकता है, क्लायंट के झूठ बोलने से कोर्ट में उसका केस ढेर हो सकता है ।”

“था ।” - वो बोली ।

“कब से ?”

“शादी से पहले से ।”

"इतना पुराना ?"
"हां ।"
"मुहब्बत थी ?"
"बेहद । अभी भी है ।"
"फिर तो उसकी मौत का अफसोस होगा ?"
"बहुत ज्यादा । भीतर से दिल आठ आठ आंसू रोता है ।"
"ओह !"
"आपने मेरी दुखती रग को छेड़ दिया है । इस वक्त मेरी अपनी जान पर बनी हुई है इसलिये खामोश हूं वर्ना अकेले में हिचकियां ले लेकर रोती हूं । ताल्लुकात बनते बिगड़ते रहते हैं, लोग आते जाते रहते हैं, लेकिन ऐसी मुहब्बत जिन्दगी में एक ही बार होती है ।"
"ठीक ।"
"मैं उसे कोसती हूं, गालियां देती हूं, मरे की मौत की कामना करती हूं लेकिन दिल से नहीं निकाल सकती । सदा को अपने पर सवार मैं तभी बर्दाश्त कर सकती थी जबकि मेरे तसव्वुर में वो हो । जबसे मुझे उसके एक्सीडेंट की खबर लगी है, दिल एक ही दुआ करता है । मरा न हो । मरा नहीं होगा । एकाएक मेरे सामने आ खड़ा होगा और कहेगा 'सरपराइज ! सरपराइज !' ।"
वो रोने लगी ।
शाह ने उसके खामोश होने का इन्तजार किया ।
"शादी क्यों की ?" - फिर पूछा ।
"क्योंकि कोठारी की माली हैसियत कमजोर थी और मेरी शुरू से ही अभिलाषा नोटों के पहाड़ पर बैठने की थी जिसे मैं अपने जेहन से नहीं निकाल सकती थी । मैं फिल्मी हीरोइन नहीं बन सकती थी जो यार के झौंपड़े में रह सकती थी, रुखी-सूखी खाकर गुजारा कर सकती थी वगैरह । अपनी उस के लिहाज से इश्कियाई हुई मैं भी कम नहीं थी, लेकिन अपनी खास, इकलौती महत्वाकांक्षा से किनारा नहीं कर सकती थी ।"
"इसलिये पुणेकर से शादी की !"
"हां । लेकिन हकीकत बयान करके की । साफ, दो टूक बोल के कि वो शादी नहीं, एक सौदा था जिसके तहत वो मुझे नोटों के पहाड़ पर बिठाता और मैं उसे अपना जिस्म इस्तेमाल करने देती । इस सिलसिले में शादी से पहले मेरी उससे जो लिखत पढ़त हुई थी, उसकी आपको खबर तो है ! आप ही ने तो उसे ओके किया था !"
"हां । आगे बढो । सौदे को जरा और एक्सप्लेन करो ।"
"मैंने उसे कहा था कि मैं अच्छी बीवी बनने की कोशिश करूंगी, उससे मुहब्बत करना सीखने की कोशिश करूंगी लेकिन हकीकत यही है कि मैंने उससे कभी मुहब्बत नहीं की, उसके हुक्म पर उसकी फरमाइश पर सैक्स किया । ये उसके लिये परमानन्द था,

मेरे लिये ड्यूटी थी; जैसे हसबैंड के लिये चाय बनाकर लाने की होती है, उसके कपड़े निकालने की होती है, उसके मेहमानों के लिये पर्फेक्ट होस्टेस बनने की होती है वगैरह ।"

"मैं तुम्हारी साफगोई की दाद देता हूं । उसे तुम्हारे खयालात की खबर थी ?"

"इस बात की खबर थी कि मुझे उससे कोई मुहब्बत नहीं थी लेकिन इस बात की खबर नहीं थी - कम-से-कम मैं तो ऐसा समझती हूं - कि मेरा कोठारी से अफेयर था । खबर होती तो वो कोठारी की लाश का पता न लगने देता ।"

"शक तो होगा ?"

"शक से क्या होता है ? लेकिन मेरे खयाल से शक भी नहीं था । क्योंकि होता तो कोई बड़ा कदम वो कोठारी के खिलाफ भले ही न उठाता, ऐसे हालात जरूर पैदा कर देता कि वो मेरे करीब भी न फटक पाता ।"

"मसलन क्या करता ?"

"पहले तो उसके साथ उसका जो कारोबारी रिश्ता था, उसे खत्म कर देता, फिर पर बुलाना बन्द कर देता, फिर हो सकता है मेरे पर भी कोई विजिल बिठा देता ।"

"आई सी ।"

"और कुछ नहीं तो काटेज पर हम दोनों की एक्सक्लुसिव बैठक के दौरान बेहोशी की हद तक पीना तो यकीनन बन्द कर देता जिसके बाद कि हम दोनों की वहीं बन आती थी ।"

"बन आती थी ?"

"हां ।"

"पड़ोस की मिसेज रोटोलो की इस बाबत गवाही तुम्हारे लिये प्रॉब्लम बन सकती है ।"

"मुझे यकीन है कि आप कोई ऐसी सूरत निकाल लेंगे कि प्रॉब्लम न बने ।"

"तमाम सूरतें मैं ही निकालूंगा ?"

"और कौन निकालेगा ? फीस भी तो आप ही वसूलते हैं.. .निचोड़ते हैं !"

"हनी, यू आर ए विग केक, बीईंग एन ओल्ड मैन आई कैन कट ओनली ए स्माल पीस । नोबॉडी मिसिज ए स्माल पीस फ्रॉम ए केक दैट हैज बिन कट आलरेडी ।"

"सन ऑफ ए बिच !"

"एक बार संतरा छिल चुके तो उसमें से एक फांक की घट बढ़ का पता नहीं लगता ।"

"बहन..."

"अच्छा ! अंग्रेजी की बात तो अंग्रेजी में गाली ! हिन्दी की बात तो हिन्दी में गाली !"

वो हंसी ।

"वैसे मैंने तुम्हारी बात का बुरा नहीं माना । तुम्हारी गाली दुधारू गाय की लात की तरह है, दूध पीना हो तो लात खानी पड़ती है ।"

“कितनी औरतों का मान मर्दन कर चुके हो ?”

“हालिया या कुल जमा ?”

“क्या ?”

“आई मीन रिसेंटली या टोटली ?”

नमिता ने हैरानी से उसकी तरफ देखा ।

वो शान से हंसा । फिर संजीदा हुआ ।

“माई डियर, पाबन्दियों की जिन्दगी किस काम की ! जी मार के जीना क्या जीना ! खुदा ने आदम की पसली निकाली तो हौवा बनी । क्या उसकी रोटियां सेंकने को बनी ? वर्जित फल खाने को उकसाने को बनी । वर्जित फल आदम ने खाया, उसकी लज्जत उसकी औलाद आज तक नहीं भूली । न कभी भूलेगी । अंग्रेज का बच्चा आदम का ज्यादा करीबी था । जिसने ‘वाइन, वुमेन एण्ड परसुट आफ हैपीनैस’ का स्लोगन खड़ा किया । दो सौ साल जिस कौम ने हमारे पर राज किया, उसका कोई तो सबक गांठ बांधना था या नहीं ?”

“लगता है मरोगे भी किसी औरत के पहलू में ।”

“ऐसी ख्वाहिश है तो सही । क्योंकि मैं तो जब पैदा हुआ था तब भी एक औरत के पहलू में था ।”

“लानत !”

वो हंसा ।

फिर उसने इंजन स्टार्ट किया ।

***

नमिता की घर वापिसी तक वातावरण में अंधेरा छा गया था ।

वो काटेज के प्रवेश द्वार पर पहुंची और चाबी लगाकर उसे खोलने से पहले चौखट से टेक लगाकर खड़ी हो गयी ।

हे भगवान - उसने दिल से प्रार्थना की - मैंने कपिल के खिलाफ जो वाही तबाही बकी, उसकी मैं दिल से माफी चाहती हूं । प्रभु, बिछुड़ा यार मिला दो । मेरा रोम-रोम तुम्हें दुआयें देगा ।

कपिल, तुम्हारी तमाम खतायें माफ हैं । लौट आओ, प्लीज लौट आओ । जो होगा मिलकर भुगत लेंगे । प्लीज, प्लीज लौट आओ ।

दूसरी दुनिया में गया कहां कोई लौटता था !

उसने एक गहरी सांस ली, चौखट का सहारा छोड़ा और बिल्ट-इन लॉक में चाबी घुमाकर ताला खोला । उसने दरवाजे को धक्का दिया और भीतर कदम डाला ।

ड्राइंगरूम के टैरेस की ओर के ग्लास डोर्स का एक पर्दा तनिक सरका हुआ था जिसकी वजह से जो थोड़ी बहुत रोशनी बाहर बाकी थी, वो भीतर प्रतिबिम्बित हो रही थी ।

उस रोशनी में उसे वहां किसी की मौजूदगी का अहसास हुआ । उसने आंखें फाड़ कर सामने देखा तो पाया कि एक सोफे पर कोई बैठा हुआ था ।

कपिल !

हे भगवान ! इतनी जल्दी उसकी दुआ कबूल हो गयी !

बगुले की तरह वो ड्राइंगरूम के भीतर दाखिल हुई और उसकी तरफ लपकी ।

तभी एक झट की आवाज हुई और सोफे के पहलू में साइड टेबल पर रखा टेबल लैम्प जल उठा ।

वो थमककर खड़ी हो गयी ।

“कैसी है मेरी जान !” - सोफे पर से उठता हुआ सदानन्द पुणेकर बोला ।

उसे जवाब हासिल न हुआ ।

नमिता पहले ही होश खोकर धराशायी हो चुकी थी ।

Chapter 4

नमिता को जब होश आया तो उसने अपने आपको सोफे पर लेटा पाया । उसका मुंह गीला था और ठोड़ी के नीचे एक हैंड टावल पड़ा था ।

कोई उसकी हथेलियां मसल रहा था ।

उसने आंखें खोलीं और सिर उठाकर सामने देखने की कोशिश की लेकिन सिर ही न उठा पायी ।

किसी ने उसका सिर उठाकर उसके पीछे एक कुशन पर रखा और मुंह पर पानी का छींटा मारा ।

“रिलैक्स !” - बहुत दूर से आती आवाज उसे सुनाई दी - “रिलैक्स !”

तब उसे याद आने लगा कि क्यों वो उस हालत में पहुंची थी ।

वो एक झटके से उठकर बैठी, उसने अपनी टांगें यूं समेटी कि घुटने ठोड़ी में आ लगे । उसकी आंखें फिरकनी की तरह कटोरियों में घूमीं ।

ड्राइंगरूम में अब कई बत्तियां जल रही थीं जिनकी वजह से वहां खूब रोशनी थी ।

उसे वो बार पर उसकी तरफ पीठ किये खड़ा दिखाई दिया । जब वो घूमा तो उसके हाथ में ड्रिंक का गिलास था ।

“ले ।” - करीब आकर उसे गिलास थमाता वो बोला - “ब्रांडी है । अभी तबीयत ठीक हो जायेगी ।”

डरते सहमते सकुचाते नमिता ने उसके चेहरे पर निगाह डाली ।

सदा ! साक्षात !

जिसकी खोपड़ी पर उसने फूलदान का भरपूर वार किया था, जिसे कोठारी ने मारकर लाश समुद्र में बहा दी थी, वो उसके सामने खड़ा बड़े आश्वासनपूर्ण भाव ये यूं मुस्करा रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं था ।

कांपते हाथों से उसने गिलास थामा ।

“मुंह पोंछ ले ।” - वो पूर्ववत मीठे स्वर में बोला - “तुझे होश में लाने के लिये पानी के छींटे मारे थे ।”

खाली हाथ से उसने हैंड टावल काबू में किया और सप्रयास मुंह पोंछा । उसने गिलास में से एक घूंट भरा तो ब्रांडी उसके गले से पेट तक लकीर खींचती चली गयी । उसने कुछ बोलने की कोशिश की, लेकिन मुंह से आवाज न निकली ।

“रिलैक्स ! रिलैक्स !”

“क.. .क्या...” - बड़ी कठिनाई से वो बोल पायी - “क.. .कैसे ? क.. .कहां...”

असल में वो पूछना चाहती थी कि वो जीवित क्योंकर था !

“हौसला रख ! सब मालूम पड़ जायेगा ।”

हौसला रखूं । कैसे हौसला रखूं ! - उसके दिल से आवाज निकली - मुझे तो सामने खड़ा जल्लाद दिखाई दे रहा है जो अभी मुर्गी की तरह मेरी गर्दन मरोड़ देगा ।

था तो सदा ही ! कोई बहरूपिया तो नहीं था ! कैसे हो सकता था !

बिना फिर उसे मुंह लगाये उसने गिलास साइड टेबल पर रख दिया ।

वो एक कुर्सी सोफे के करीब घसीटकर उसके सामने बैठ गया ।

"अब कैसा लग रहा है ?" - उसने पूछा ।

वो क्या बताती ! कैसे बताती कि उसके खौफ से उसके प्राण निकले जा रहे थे ।

"डरने की कोई जरूरत नहीं ।" - वो बोला, उसके उस आश्वासन में भी क्रूरता का पुट था - "मेरा तेरे को टपकाने का कोई इरादा नहीं ।"

वो खामोश रही ।

"मैं चाहूं तो बड़े आराम से ऐसा कर सकता हूं । कोई नहीं बोलेगा कि तेरे को मैंने खल्लास किया । क्योंकि मैं तो हैइच नहीं । मैं तो मर चुका हूं ।"

"क.. .क्या.. .क्या हुआ ?"

"तेरा मतलब है कि मरा क्यों नहीं ?"

"क... क्या ?"

"चाल न चली । साजिश कामयाब न हुई । क्योंकि मेरे को सब खबर थी ।"

"स.. .सब.. .ख.. .खबर.. .थी ?"

"मैं चार दिन गैरहाजिर रहा, उतने में तू तोती बन गयी ! हकली तोती बन गयी !"

उसने जोर से थूक निगली ।

"तू समझ रही होगी तेरे यार से कोताही हुई ! उसने अपना काम ठीक न किया ! मेरे मर चुका होने की तसदीक किये बिना मेरे को समुद्र में फेंक दिया ! क्या !"

उसने बेचैनी से पहलू बदला ।

"ऐसा नहीं था । मैं साला उसके काबू में ही किधर आया ?"

"क्या ?"

"मेरे को सब मालूम । तेरा कोठारी से चक्कर.. .ये गारन्टी होते ही मेरे को सब मालूम । अब तू सोच रही होगी कि गारन्टी कैसे ! बोलता हूं न ! गारन्टी इत्तफाक से हुई । एक रात को जब मैं ऊपर बैडरूम में एकाएक जाग गया - तब मेरे को नहीं मालूम था कि मेरे टुन्न होने के बाद कोठारी मेरे को ऊपर पहुंचाता था - क्यों जाग गया ? क्योंकि साला जो तकिया मेरी मुंडी के नीचे होने का था, वो मुंह के ऊपर आ गया और उसकी वजह से मेरी सांस रुकने लगी । मैं उठकर बैठा, फिर खड़ा हुआ, फिर सोचा, टैरेस पर जा के ठण्डी हवा खाने का था, मैं ऊपर सीढ़ियों के दहाने पर पहुंचा तो मेरे को नीचे यहां से आती तेरी और कोठारी की आवाजें सुनाई दीं । मेरे को नहीं मालूम था कि सैक्स करते वक्त तेरे को गालियां बकना पसन्द था । मेरे साथ तो ऐसे कभी पेश न आयी तू !"

नमिता अपने आप में सिकुड़ गयी । अनजाने में उसने गिलास फिर उठा लिया ।

“हौसले की बात है खसम की ऐन नाक के नीचे मादरजात नंगी होकर गैरमर्द को सवारी कराना ।”

नमिता की उस घड़ी पेश चलती तो वो ब्रांडी में डूब जाती ।

“उस वक्त मैंने बेगैरत औरत का गैरतमन्द खाविन्द बन के दिखाया और वापिस जाके सो रहा वर्ना मेरे लिये तुम दोनों को उधरीच खल्लास कर देना क्या बड़ी बात थी ! सुबह जब मैं सो के उठा तो मुझे लग रहा था कि हकीकतन कुछ नहीं हुआ था । मैंने रात को एक सपना देखा था । वो सपना था या हकीकत, इस बात की तसदीक के लिये अगली रात मैंने बहाना हमेशा जितनी पीने का ही किया लेकिन असल में कम पी । तब तसदीक हुई कि जो पिछली बार देखा था, वो सपना नहीं था, हकीकत थी । उसके बाद और भी कई बार मैंने तुम दोनों पर जताया कि मैं ढेर पी रहा था लेकिन विस्की कभी रेलिंग के पार बहा दी या पास के गमले में डाल दी । पी मैंने बराबर लेकिन तुम लोगों को आठ पैग पीता दिखाई दिया तो दो पिये और यूं मैंने तुम लोगों की गुत्थमगुत्था कई बार देखी ।”

नमिता के गले की घंटी जोर से उछली ।

“पहले मेरा इरादा तुम लोगों के पीछे प्राइवेट डिटेक्टिव लगाने का बना था ताकि मुझे मालूम हो पाता कि तुम दोनों यहां महज मौके का फायदा उठाते थे या तुम्हारा रेगुलर अफेयर था ! लेकिन फिर सोचा क्या फायदा होता ! मुंह एक बार काला हो जाये तो और कालख पोतने से वो और काला तो हो नहीं जाता । प्राइवेट डिटेक्टिव तेरी बदअखलाकी के सबूत जुटाता तो तेरे को तलाक देने के अलावा वो मेरे किस काम आते ! लेकिन तलाक से तो तेरी चान्दी हो जाती । पांच करोड़ की जो रकम तेरे हाथ आते आते आती वो तभी आ जाती । नहीं ?”

नमिता उत्तर न दे सकी ।

“फिर एक रात मैंने तुम लोगों में अपने कत्ल का जिक्र सुना । वो ऐसी चौंकाने वाली बात थी कि उस रोज मैं बाहरी सीढ़ियां उतरकर काटेज से बाहर गया, घेरा काटकर फ्रंट में पहुंचा, अपनी चाबी से मेन डोर खोलकर भीतर आया और एक पर्दे के पीछे छुपकर तुम लोगों का डायलाग सुना । तब ये बात मेरी समझ में आयी कि विस्की से मेरी जान जाती न पाकर तेरे सब्र का प्याला लबरेज हो गया था और तू मेरे कत्ल की अपने यार की साजिश की हामी भरने लगी थी । तब मैंने तेरे को वो झटका देने का फैसला किया, जो मुझे मालूम है, मुझे मालूम है, तेरे यार को मालूम है कि तू झेल नहीं सकती थी ।”

“पैसा !” - नमिता के मुंह से अपने आप ही निकल गया ।

“हां । मैंने तेरा सबसे बड़ा सपना - पांच करोड़ की एफडी - तोड़ दिया, बैंकों से सारा पैसा निकाल लिया, सारे शेयर काबू में करके लाकर खाली कर दिया, दोनों कार बेच दीं,

तेरे मत्थे ग्यारह लाख की अनपेड कार थोप दी और तुझे फिगारो आइलैंड के कीमती बंगले की कहानी परोस दी । कैसी रही ?"

नमिता के मुंह से बोल न फूटा ।

"गिलास खाली कर, मैं तेरे लिये और ड्रिंक बनाता हूं ।"

"आ.. .आप.. .नहीं..."

"पियूंगा न ! इत्मीनान से पियूंगा । तेरे साथ किसलिये ! अब तेरा मेरा क्या सांझा है ? या हो सकता है ? तू तो मेरी विधवा है । विधवा ! हा हा ।"

"एक बात बता दो ।" - वो फुसफुसाई ।

"पूछ ।"

"को.. .कोठारी ! मर गया ?"

"मर गया न ! अखबार में नहीं पढ़ा ?"

"तुम्हारे हाथों ?"

"वो लम्बी कहानी है । मुझे कहने दे, फिर बीच में कहीं उसका भी जिक्र आयेगा । नहीं ?"

"ह.. .हा ।"

"अब शनिवार रात की सुन । इसमें कोई शक नहीं कि तुम दोनों ने साजिश बहुत उम्दा रची थी । कोठारी ने मेरे कत्ल का प्लान बहुत बढ़िया बनाया था, लेकिन वो नहीं जानता था कि वो प्लान उसने अपने इस्तेमाल के लिये नहीं, मेरे इस्तेमाल के लिये बनाया था । कत्ल की सजी सजाई योजना उसने मुझे थाली में परोसी थी और मैंने - उसने नहीं - उस पर अमल किया था ।"

नमिता के मुंह से सिसकारी निकली ।

"याद कर, शनिवार रात को उसने क्या किया था ! मुझे टुन्न होकर होश खो बैठा जान कर हमेशा की तरह मुझे उठाकर उसने ऊपर बैडरूम में पहुंचाया था, लेकिन हमेशा की तरह तेरा भोग लगाने के लिये नीचे यहां नहीं रुका था । वो यहां से निकलकर पेड़ों के बीच से गुजरते पगडण्डी के रास्ते अपने काटेज की ओर चल दिया था ।"

"आ.. .आपको.. .कैसे मालूम ?"

"मैं उसके पीछे था न ! ऊपर उसके बैडरूम से निकलते ही मैं भी उठा था और सीढ़ियों के दहाने पर पहुंच गया था । उसे ड्राइंगरूम में तुम्हारे साथ रुकता न पाकर बाहरी सीढ़ियों के रास्ते मैं यहां से बाहर निकला था और उसकी टोह में लग गया था । वो अपने काटेज में पहुंचा था, तो वहां मैंने उसकी वो गत बनायी थी, जो तुम्हारी योजना के मुताबिक मेरी बनने वाली थी । और जानती है ऐसा करने के लिये मैंने कौन सा हथियार इस्तेमाल किया था ?"

"क.. .कौन सा ?"

“तेरे वाला । पीतल का भारी गुलदस्ता । जिसे मैं यहां से निकल कर उसके पीछे लगते वक्त अपने साथ लेकर गया था ।”

नमिता मुंह बाये उसे देखने लगी, फिर एक सांस में उसने अपना गिलास खाली किया ।

“शाबाश ! अब हिम्मत आयेगी ।”

“अ.. .आप मेरा.. .म - मजाक उड़ा रहे हैं ?”

“और क्या कर रहा हूं ! इस वक्त और तू किस काबिल है ?”

हे भगवान !

उसने अपने सूखे होंठों पर जुबान फेरी ।

“बेहोश कोठारी को उठाकर मैं लौटा” - पुणेकर आगे बढ़ा - “और बाहर वाली सीढ़ियों के रास्ते वापिस बैडरूम में पहुंचा । वहां मैंने उसे पलंग पर अपनी जगह लिटाया और उसे माथे तक कम्बल से ढक दिया । ये देखकर मैं खुद हैरान हो गया था कि उस हालत में कितना ज्यादा वो मेरे जैसा लगता था । मेरे बालों में कहीं - कहीं सफेदी है लेकिन चान्द की रोशनी उसके बालों से यूं रिफ्लेक्ट हो रही थी कि वो भी कहीं-कहीं से चांदी की तार जैसे जान पड़े थे । जमा तेरे को तो गारन्टी थी कि कम्बल के नीचे मैं था इसलिये कहां तूने बालों की तरह तवज्जो दी होगी ! कहना न होगा कि फूलदान धो पोंछकर मैंने वापिस टीवी पर रख दिया । कैसा लग रहा है ये सुनके कि उस भारी फूलदान का वार तूने मेरे पर नहीं, अपने यार पर किया था ?”

उसे अपनी सांस रुकती महसूस हुई । तब कोठारी के लिये उसकी रही सही उम्मीद भी खत्म हो गयी । सदा इसलिये जिन्दा नहीं था क्योंकि कोठारी ने उसके मर चुका होने की तसदीक किये बिना उसे समुद्र में फेंक दिया था; वो इसलिये जिन्दा था क्योंकि बाजी पलट गयी थी, शिकार शिकारी बन गया था ।

“बाकी मैंने” - पुणेकर कह रहा था - “वही कुछ करना था जो तुम लोगों की स्कीम के मुताबिक कोठारी ने करना था । मैं चुपचाप उसके काटेज में पहुंच गया और सारी रात उसका टाइपराइटर खटखटाता रहा जिसमें कि कोई लोचा नहीं था । मैंने कुछ टाइप तो करना नहीं था, मिसेज रोटोलो को सुनाने के लिये खाली आवाज करनी थी । पांच बजने से थोड़ी देर पहले तक मैंने वो काम किया और फिर चुपचाप ऊपर बैडरूम में वापिस लौटा । वहां कैनवस का बैग तू पहले ही डाल गयी थी । मैंने कोठारी को उस बैग में ठूंसा, वो कपड़े, सफेद पीक कैप समेत, पहने जो मैं फिशिंग पर निकलते वक्त पहनता था और बैग उठाकर वहां से निकल पड़ा ।”

“उ.. .उस दौरान मैं.. .ऊ.. ऊपर आ जाती तो ?”

“मैं उसके लिये भी तैयार था । तेरे सीढ़ियां चढ़ने की आवाज मुझे जरूर सुनाई देती क्योंकि तेरी निगाह में ऊपर या कोठारी था या मैं था इसलिये तेरे दबे पांव ऊपर आने का

कोई मतलब ही नहीं था । मुझे लगता कि तू ऊपर आ रही थी तो मैं कोठारी पर एक वार और करता और उसे वहीं जान से मार डालता । तू उसे बैड पर मरा पड़ा पाती तो यकीनन यही समझती कि तेरा ही वार वजनी पड़ गया था ।"

"तु.. .तुम्हारे पर ।"

"तेरी निगाह में मेरे पर । लेकिन असल में कोठारी पर ।"

"मुझे तब भी मालूम न पड़ता ?"

"पड़ता न ! तू मुझे उसके सिरहाने जिन्दा खड़ा देखती तो मुझे ये समझाने कोई बाहर से आता कि असल में क्या हुआ था ?"

"ओह !"

"तब तू मेरे से ही दरखास्त कर रही होती कि मैं मुझे उस सांसत से निकालूं किसी तरीके से लाश ठिकाने लगाऊं । तब जो मिलीभगत तेरी और कोठारी की थी वो तेरी और मेरी बन जाती । तब जो कोठारी को करना था, वो तेरे पर अहसान करके तेरी खातिर मैं करता । उसे बोरे में लादकर बीच समन्दर लेकर जाता और बड़ी मछलियों का निवाला बनने के लिये कहीं डाल देता । लाश अव्वल तो मिलती नहीं, मिलती तो यही समझा जाता कि तैराकी का शौकीन वो समन्दर में कहीं दूर निकल गया और कहीं पानी में छुपी चट्टान से सिर टकरा बैठा ।"

"अ.. .असल में क्या किया ?"

"असल में मैं उसे समन्दर में ले के गया । नोडल पॉइंट से थोड़ा आगे मुझे एक ऐसी जगह मालूम थी, जहां बड़ी मछलियां पाई जाती थीं । मेरे वहां पहुंचने तक उसे होश आने लग गया । मैंने उसे बैग में से निकाला और उसके हलक में विस्की उंडेलकर उसको पूरा ही होश में लाया ।"

"क.. .क्यों ?" - नमिता सख्त हैरानी से बोली ।

"दो वजह से । एक तो मैं चाहता था कि उसे मालूम पड़ता कि कैसे उसे उलटी पड़ी थी, और एक सैडिस्ट की तरह मैं उसकी परेशानी का मजा लेता । दूसरे, मैं उससे कुछ लिखवाना चाहता था ।"

"क्या ?"

"जो साजिश उसने रची थी, जो प्लाट उसने गढा था, उससे ताल्लुक रखता उसका इकबालिया बयान । उसकी खुद की तसदीक कि उसकी मेरे खिलाफ साजिश में तू भी शामिल थी ।"

"उसने" - वो हौलनाक लहजे से बोली - "लिखा ?"

"उसके पास कोई चायस थी ? मैं उस पर गन ताने था । वो 'मरता क्या न करता' की हालत में था, उम्मीद के खिलाफ उम्मीद कर सकता था कि वो मेरा कहना मानता तो शायद मैं उसकी जान बख्श देता ।"

“इसलिये लिखा ?”

“बराबर लिखा । साइन करके लिखत को मोहरबन्द किया ।”

“फायदा ! वो बयान आप पुलिस को तो दिखा नहीं सकते थे क्योंकि तब आपको ये भी बताना पड़ता कि बयान किन हालात में लिया गया था और बयान लेने से पहले आपने उसकी क्या गत बनाई थी ।”

“वो बयान मेरा तुरुप का पत्ता था जिसको मैंने अपनी आस्तीन में छुपाके रखना था और तभी चलना था जबकि मेरे हाथ तेरे खिलाफ कुछ और न आता । तू तो कोठारी की कारस्तानी की बाबत कोई बात अपनी जुबान पर ला नहीं सकती थी क्योंकि मुझे मेरे कत्ल की साजिश की खबर होना अपने आपमें सबूत होता कि तू साजिश में शामिल थी । अलबत्ता मुझे अपनी नन्हीं सी नाजुक सी, जान की परवाह न रहती तो बात जुदा थी । तब भी कोठारी के साथ जो बीतती उसकी तोहमत मेरे पर नहीं आ सकती थी । मैं कह सकता था कि इकबालिया बयान लिख चुकने के बाद उसने मेरे से गन छीनने की कोशिश की थी और उसके हाथों - ऐसे शख्स के हाथों जो मेरे खून से अपने हाथ रंगने वाला था - मरने से बचने के लिये मुझे उससे भिड़ना पड़ा था, धींगामुश्ती में गोली चल गयी थी और उसकी जान चली गयी थी । वो मर गया और पीछे छोड़ा उसका इकबालिया बयान तेरा भी काम कर गया ।”

“म.. .मार डाला ?”

“गोली से नहीं ।”

“लेकिन.. .मार डाला ?”

“इकबालिया बयान हाथ में आते ही मैंने गन के दस्ते का भरपूर वार उसकी कनपटी पर किया, वो बेहोश हो गया तो उसको टांगों से पकड़कर रेलिंग पर से पानी में उलटा लटका दिया और तब तक लटकाये रखा जब तक कि वो डूबकर न मर गया । फिर मैंने उसकी टांगें छोड़ दीं और बड़े इत्मीनान से उसे समन्दर में बह जाते देखा । ठीक किया मैंने ?”

“जुल्म किया ।”

“और जो तुम दोनों मेरे साथ करने पर आमादा थे, वो क्या था ?”

“किया तो नहीं !”

“ऐसी नाजायज बात कोई औरत ही कह सकती है । कमीनी, कसर भी तो न छोड़ी ! किया नहीं क्योंकि हुआ नहीं ।”

“हे भगवान ! हे भगवान !”

“औरत को भगवान की याद तभी आती है जब वो शैतान से नाउम्मीद हो जाती है ।”

वो रोने लगी ।

“तू अभी भी समझती है कि तेरे नलके का मेरे पर कोई असर होगा ?”

उसने रोना बन्द कर दिया और हौले हौले सुबकने लगी ।

“बाकी स्टोरी नहीं सुनना चाहती ?”

उसने सहमति में सिर हिलाया, फिर एकाएक बोली - “मैंने टैरेस से उसे तैरकर लौटते देखा था ।”

“मुझे देखा था । बोट को क्योंकि नोडल पॉइंट पर लंगर डाले छोड़ना जरूरी था इसलिये तैरकर मैं लौटा था । तूने मेरी पीठ पर बंधी कपड़ों की गठरी को देखकर सोच लिया था कि वो कोठारी था ।”

“बोट छोड़ना क्यों जरूरी था ?”

“और कैसे दुनिया को यकीन आता कि बीच समन्दर में मेरे साथ कोई हादसा हुआ था जिसमें मैं डूब के मर गया था !”

“आप ऐसा क्यों चाहते थे ?”

“क्योंकि मैंने बिग बॉस से, ‘भाई’ से पीछा छुड़ाना था जिसने मेरी मौत का फरमान जारी कर दिया था । उसने क्यों ऐसा किया था ? क्योंकि मैंने अमानत में खयानत की थी । जो पांच करोड़ रुपया मुझे हासिल करने के लिये बतौर एफडी तेरे हवाले किया था, वो ओमेगा का था । मेरी पोल खोलने वाला कौन था ? यारमार कोठारी ! आस्तीन का सांप कोठारी ! बीवीकतरा कोठारी ! कैसा डबल गेम खेला हलकट ने । चोर को कहा चोरी कर ले, शाह को कहा खबरदार हो जा । मेरे को एफडी पर वापिस काबिज होने की तरकीब सुझाई और बिग बॉस को खयानत की टिप दे दी । वो तो अच्छा हुआ कि मैंने वक्त रहते पांच करोड़ रुपया ओमेगा के अकाउंट में जमा करा दिया वर्ना मेरे छुपने के लिये ये दुनिया बहुत छोटी होती ।”

“वालसन कहता है कि आप पर ये भी इलजाम था कि आपने शरद शिराली के बखेड़े को, उसकी गिरफ्तारी वगैरह को ठीक से हैंडल नहीं किया था ।”

“तू वालसन से मिली ?”

“हां ।”

“काहे ?”

“मुझे पता चला कि आप आमेगा के मालिक नहीं थे । ये काटेज आपका नहीं था, फ्लैट आपका नहीं था, मोटरबोट आपकी नहीं थी, कुछ आपका नहीं था । यकीन न आया । तसदीक के लिये ओमेगा में गयी तो आपके आफिस में किसी और को बैठे पाया ।”

“किसको ?”

“वालसन ने मुझे उसका नाम इंतखाब खान बताया था ।”

“अच्छा ! तो खान ने ली मेरी जगह !”

“कौन है वो ?”

“पूना वाली नाइट क्लब का मैनेजर । बहुत बड़ी तरक्की मिली भीडू को । खैर, तू अपनी बात कर । तू वालसन से मिली ?”

“हां ।”

“जिसने असलियत बताई ?”

“हां ।”

“और क्या बोला ? बोला होगा मैं खल्लास !”

“बोला तो यही ।”

“नादान है । वो क्या जानता है !”

“ऐसा ?”

“हां । शिराली का केस कोई बड़ी बात नहीं । ऐसे मामले में किसी का भी जजमेंट गलत हो सकता है, एक्शन में किसी से भी देर हो सकती है, कोताही हो सकती है । बड़ी बात अमानत में खयानत थी जिसे कि मैंने वक्त रहते दुरुस्त किया ।”

“यानी कि बख्श दिये जाओगे ?”

“उम्मीद कर सकता था, मैंने ओमेगा की बहुत खिदमत की है, लेकिन मेरी उम्मीद झूठी निकल सकती थी इसलिये मैंने दूसरा इन्तजाम किया था ।”

“जाहिर किया था कि मर चुके थे ?”

“हां ।”

“लौटे क्यों ?”

“तेरी खबर लेने के लिये ।”

“क्या करोगे ?”

“जान से मार दूंगा ।”

“अभी तो आपने कहा था कि आपका मेरे को टपकाने का कोई इरादा नहीं था !”

“अच्छा ! ऐसा कहा था मैंने ?”

“हां ।”

“वान्दा नहीं । समझ ले मेरा इरादा बदल गया । समझ ले मैंने अपने लफ्ज वापिस लिये । अभी कोई प्रॉब्लम ?”

एकाएक वो सीधी होकर बैठी और बड़े चित्ताकर्षक भाव से मुस्कराई ।

उसने एक तौबाशिकन अंगड़ाई ली और मोरनी की तरह अपने वक्ष को फुलाया ।

“तुम मुझे नहीं मार सकते ।” - मुस्कराती हुई वो बोली - “तुम्हारे हाथ कांप जायेंगे । तुम्हारा कलेजा लरज जायेगा । मैं तुम्हारी तमन्ना हूं, मैं तुम्हारी जिन्दगी का सबसे बड़ा हासिल हूं; अपनी तमन्ना का, अपने हासिल का तुम अपने हाथों गला नहीं घोट सकते । तुमने जिस औरत को गैर की बांहों में देखा था, वो कोई और थी । मैं नित नयी दुल्हन हूं ।

मेरे साथ गुजरी हर रात सुहागरात है । तुम मुझे सलेट पर लिखा नाम मिटा देने की तरह नहीं मिटा सकते । अब बोलो, क्या कहते हो ?"

वो अनिश्चित दिखाई देने लगा ।

"अभी कुछ कहने में टाइम है" - फिर बोला - "क्योंकि अभी तूने बाकी की स्टोरी सुननी होगी ।"

"तुमने सुनानी होगी !"

"वो बात भी है ।"

"अपनी जीत को महिमामंडित करने के लिये ? मेरी हार पर हंसने के लिये ?"

"हां ।"

"ठीक है, मैं सुन रही हूं ।"

"कोठारी के काटेज में लौटकर मैंने उसके टाइपराइटर पर तेरे लिये दो चिट्ठियां टाइप कीं ।"

"दो !"

"दो मिलीं न तेरे को !"

"जो डाक से मिली, वो भी पहले से तैयार की हुई थी ?"

"बराबर ।"

"और ? और क्या किया ?"

"और वहां सोफे में तेरा मोती जड़ा बुन्दा छुपाया ।"

"ओह ! तो वो भी तुम्हारी कारस्तानी थी ?"

"क्या मुश्किल काम था ? तुम्हारी ड्रैसिंग टेबल का दराज ही तो खोलना था ।"

"बुन्दे वहां न होते तो ?"

"कोई तो ऐसी आइटम होती तो तेरे यार के काटेज में तेरी हाजिरी की - खास हाजिरी की - तसदीक करती ।"

"ओह !"

"मकसद क्या था ?"

"तुम लोगों से जुदा तो न था !"

"जवाब दो ।"

"मुझे हैरान करना, परेशान करना, हलकान करना, इस हालत में पहुंचाना कि तू अपनी सफाइयां देती फिरे और किसी को तेरी किसी बात पर यकीन न आये ।"

"और खुद खुश होना !"

"बराबर ।"

"खैर, फिर ?"

“फिर मैंने पहली चिट्ठी गैराज में वैन की छत पर एक पत्थर के नीचे दबाकर रखी और नई सोनाटा के साथ निकल लिया । नई कार में लम्बी ड्राइव का मजा आ गया ।”

“इतनी दूर जाने का क्या मतलब ?”

“मैं जितना ज्यादा दूर जाता, उतना ही ज्यादा पुलिस को इस बात का एतबार आता कि कोठारी की असल मंशा फरार हो जाने की थी ।”

“हूं ।”

“मैंगलौर से मैंने तेरे को दूसरी चिट्ठी भेजी । मेरे को मालूम था मनी बैल्ट का कीड़ा तेरे जेहन में कुलबुला रहा होगा इसलिये मैंने उस चिट्ठी में उसका भी जिक्र किया हुआ था । मेरे को अन्देशा था कि बोट पर गन के दस्ते का जो वार मैंने कोठारी पर किया था, जिससे कि उसकी कनपटी खुल गयी थी, उसकी वजह से बोट पर कहीं खून टपका हो सकता था । उस बात को कवर करने के लिये मैंने चिट्ठी में लिखा था कि ‘उसे एकाएक होश आ गया था, वो मेरे पर हमला कर बैठा था और उसने मेरी नाक तोड़ने में कसर नहीं छोड़ी थी’ । लेकिन दूसरी चिट्ठी भेजने के पीछे मेरा असल मकसद कोई और था ।”

“मुझे जवाब लिखने के लिये उकसाना था ! ऐसा जवाब लिखने के लिये उकसाना था जो ये साबित करता कि तुम्हारे कत्ल की साजिश में मैं भी शरीक थी !”

“हां । और क्या उम्दा जवाब लिखा तूने ! सब कुछ कबूल कर लिया । उस जवाब ने तो कोठारी के उस इकबालिया बयान को भी मात कर दिया था जो मैंने उससे जबरदस्ती हासिल किया था ।”

“वो चिट्ठी कोठारी के नाम थी, जीपीओ से तुमने कैसे हासिल की ?”

“ड्राइविंग लाइसेंस दिखाया न !”

“कोठारी का !”

“क्लर्क के सामने पूरे कन्फीडेंस के साथ मेज पर फेंका, साथ में दो क्रेडिट कार्ड फेंके, विजिटिंग कार्ड फेंका, सबका इकट्ठा असर ऐसा हुआ कि क्लर्क ने एक भी आइटम को गौर से न देखा, कुछ देखा तो वो नाम लिखा देखा जो कि चिट्ठी पर दर्ज था ।”

“गौर से देखता तो ?”

“तो चिट्ठी न देता । वो फिर दस बजने के बाद नोटिस बोर्ड पर लगी होती, मैं तब वहां से निकाल लेता ।”

तब तो न निकाल पाते - नमिता ने मन - ही - मन सोचा - तब तो वो पहले नाना मराठे के आदमी के हाथ आ गयी होती ।

“या” - वो कह रहा था - “क्लर्क को गांधी पेश करता ।”

“हूं ।”

“बहरहाल कोठारी का इकबालिया बयान, वो चिट्ठी, मैंने दोनों को सम्भाल के रखा हुआ है ।”

“कहां ?”

“जहां माल है । मनी बैल्ट है । शेयर सर्टिफिकेट हैं । सब सामान किसी के पास महफूज है । साथ में एक चिट्ठी है कि अगर मेरा खून हो जाये तो चिट्ठी समेत वो सब कुछ पुलिस के हवाले कर दिया जाये ।”

“सब कुछ सोच के रखा है !”

“बहुत टाइम था न मेरे पास ! एक ही बात तो थी मेरे जेहन में हर घड़ी कि कैसे तू ज्यादा से ज्यादा फंसे ! कैसे तेरे लिये ज्यादा से ज्यादा पंगा हो !”

“इसीलिये नयी सोनाटा का कबाड़ा किया ?”

“जरूरी था न ! कोठारी को एक्सीडेंट में मर गया जान कर ही तो पुलिस उसकी तलाश बंद करती ।”

“मेरी चिट्ठी कार से बरामद उसके कोट की जेब में क्यों छोड़ी ?”

“चिट्ठी कहां छोड़ी ! सिर्फ लिफाफा छोड़ा । उसका भी आइडिया तब आया जबकि देखा कि वाटरप्रूफ था । जैसे लिफाफा बच गया, वैसे चिट्ठी न बचती । कार के समन्दर से निकाली जाने तक चिट्ठी गल गयी होती । दूसरे उस चिट्टी की तहरीर की वजह से उसकी मेरे को ज्यादा जरूरत थी । जो काम तेरे यार ने गन पॉइंट पर किया था, तूने तो वो खुद, अपनी राजी से कर दिया था ।”

वो खामोश रही ।

“लेकिन लिफाफे ने भी तेरे लिये कम प्रॉब्लम न की होगी ?”

“बहुत की ।”

“कैसे बची ?”

“बचाया किसी ने ।”

“किसने ?”

“एडवोकेट गुंजन शाह ने ।”

“क्या किया उसने ?”

“चिट्ठी की मेरे हक में ऐसी कहानी की कि पुलिस चित्त हो गयी ।”

“मैं जानता हूं उसे । बहुत काबिल वकील है । तेरे लिये तो और भी ज्यादा काबिलियत दिखाई होगी ! लेकिन वो तो बोरे में नोट चार्ज करता है । फीस कैसे भरी उसकी ?”

वो परे देखने लगी ।

“मैं समझ गया ।”

“क्या समझ गये ?”

“वैसे भरी जैसे कोई औरत ही भर सकती है ।”

“तुम.. .तुम क्या समझते हो मुझे ?”

“मैंने क्या समझना है ! तू क्या है वो तो तू खुद ही साबित कर चुकी है ।”

“अब जबकि तुम्हारा मिशन ही मेरे पर जुल्म ढाना बन गया है तो ये भी तुम्हारे जुल्म की मिसाल है कि तुम समझ रहे हो कि मैं अपना जिस्म बेचने के लैवल पर उतर आयी हूं ।”

“नहीं समझता । तू बता, तूने गुंजन शाह की फीस कैसे भरी और कितनी भरी ? मैंने तेरे पास कुछ न छोड़ा; एफडी शेयर, बैंक बैलेंस, ये काटेज, बोट, सोनाटा, तारदेव का फ्लैट, गैराज में खड़ी दोनों कारें, सब तेरी पहुंच से बाहर कर दिये । कैसे भरी फीस तूने ?”

“म.. .मेरे पास.. .नौकरी के टाइम के कमाये हुए पचास हजार रुपये थे ।”

“जो तूने वकील को दे दिये ?”

“हां ।”

“अब खुद झुनझुना बजायेगी ?”

“देखूंगी, क्या करूंगी !”

“क्या देखेगी ?”

“अब तुम लौट आये हो, अब मुझे किस बात की फिक्र है ?”

“ऐसा ?”

“हां ।”

पुणेकर ने कुछ क्षण उस बात पर विचार किया और फिर बोला - “शनिवार रात के बाद से मैंने विस्की की एक बूंद हलक से नहीं उतारी, सोचता हूं मुंह जूठा कर ही लूं ।”

वो उठकर बार की ओर बढ़ा ।

पीछे नमिता सोचने लगी ।

कोठारी का इकबालिया बयान - अगर सच में सदा ने वो उससे लिखवाया था - और उसकी खुद की चिट्ठी निर्विवाद रूप से ये साबित कर सकती थी कि वो सदा के कत्ल की साजिश में शरीक थी । ये बात गम्भीर थी क्योंकि कानून की निगाह में कातिल का मददगार होना या खुद कत्ल करना एक ही बात थी, लेकिन पुलिस को इस बात में कोई शक नहीं जान पड़ता था कि कोठारी सोनाटा से किये एक्सीडेंट में मारा जा चुका था । कोई बयान देने के लिये न कोठारी उपलब्ध था और न सदा उपलब्ध हो सकता था ।

तो फिर खतरा किस बात में था ?

किसी बात में नहीं । सदा का मौजूदा राज राज बना रहता, वो जब मरता स्वाभाविक मौत मरता तो उसे कोई खतरा नहीं था । कैसी विडम्बना थी ! पहले उसने सदा के कत्ल की साजिश में शिरकत की थी, अब इस बात की दुआ करनी थी कि उसका कत्ल न हो जाये ।

अगर वो उसे कोठारी के कातिल के तौर पर गिरफ्तार करा दे !

नहीं, नहीं । तब तो इकबालिया बयान और चिट्ठी पुलिस के हाथ न लगती भी लगती । तब सदा असलियत बयान कर देता कि उसका कोठारी से अफेयर था, दोनों ने मिलकर उसे लूटने और मार डालने की साजिश रची थी और सबूत के तौर पर वो दोनों डाकूमेंट पेश कर देता । पुलिस को उसकी बात पर यकीन न आने की कोई वजह न होती कि उसे मर गया जानकर समुद्र में फेंका गया था, लेकिन पानी में गिरते ही उसे होश आ गया था और वो तैरकर किनारे जा लगा था ।

चार दिन कहां रहा ? फौरन क्यों न पेश हुआ ?

वक्ती तौर पर याद्दाश्त चली गयी ।

या इस खौफ ने सामने न आने दिया कि उसकी जान लेने की कोशिश फिर हो सकती थी ।

या उसमें बदले की भावना प्रबल हो उठी थी और उसने अपने अपराधियों को खुद सजा देने का फैसला किया था । वो चोरी चोरी चुपके चुपके कोठारी को तलाश कर रहा था । वो ये स्टैंड लेता तो कोठारी का इकबालिया बयान नहीं पेश कर सकता था । क्योंकि वो इस बात की पोल खोल देता कि कोठारी मैंगलौर में कार एक्सीडेंट में मरा था ।

यानी कि सदा के पास हर बात का जवाब होता ।

वो ओमेगा के बिग बॉस के खौफ से छुपा रहता तो बात जुदा थी, वर्ना पुलिस से डरने वाली कोई बात नहीं थी ।

और वो पूरी तरह से उसके कब्जे में थी । सदा जैसे चाहता, उसे नचा सकता था ।

दो ड्रिंक्स के साथ वो वापिस लौटा । उसने एक गिलास नमिता को थमाया ।

"चियर्स !" - वो बोला ।

"चियर्स !" - नमिता मरे स्वर में बोली ।

"ये जाम, यारमार यार के नाम !"

नमिता से कुछ कहते न बना ।

"खुदा करे उसकी आत्मा जहन्नुम की आग में झुलसे और तू आग भड़काने के लिये पंखा झले । बोल, आमीन ।"

"वापिस कैसे लौटे ?" - उस बात को टालने के लिये उसने सवाल किया ।

उसने भी बात पर जोर न दिया ।

"सुनेगी तो हैरान होगी ।" - वो बोला ।

"कैसे लोटे ?"

"कार चोरी की ।"

"हे भगवान !"

"जो मौत का निवाला बनने से बाल बाल बचा हो, उसे छोटा मोटा खौफ नहीं सताता ।"

वो खामोश रही ।

पुणेकर ने एक घूंट हलक से उतारा और आह भरकर बोला - “छुटती नहीं है काफिर मुंह की लगी हुई । कोई मेरी जान का दुश्मन बने तो मैं जमीन आसमान हिलाने में कसर नहीं छोड़ता । ऐसे जान जाती है तो जाये ।”

“और भी जो जाता है तो जाये ।”

वो सकपकाया । उसने घूरकर नमिता की तरफ देखा ।

“क्या कहना चाहती है ?” - फिर बोला ।

तब नमिता के चेहरे पर से पहली बार भय के बादल छंटे और उनकी जगह कुटिलता ने ली ।

“क्या मतलब है तेरा ?”

“कुछ नहीं । वैसे एक खबर है तुम्हारे लिये ।”

“क्या ?”

“डाक्टर देशपाण्डे कैनेडा से लौट आया है ।”

“तो ?”

“अभी भी तो ?”

“हां । तो ?”

“जब पुलिस ने उसे बताया कि तुम मर चुके हो तो उसने तुम्हारी सब पोल पट्टी खोल दी ।”

“कौन सी पोल पट्टी खोल दी ?”

“बतौर डाक्टर वो तुम्हारी कोई सौ पचास पोल पट्टी तो नहीं जानता होगा !”

“पहेलियां मत बुझा, साफ बोल क्या कहना चाहती है ?”

“उसने पुलिस को तुम्हारे मेरे साथ न सोने की असल वजह बताई ।”

“असल वजह ?”

“हां ।”

“तो ये बात है !”

“हां ।”

उसने अपना विस्की का गिलास खाली किया ।

“गिलास खाली कर ।” - फिर बोला ।

“क्या ?”

“सुना नहीं !” - वो घुड़ककर बोला ।

उसने आदेश का पालन किया और गिलास एक ओर रखा ।

“उठ के खड़ी हो । इधर आ ।”

“क्या चाहते हो ?”

"अभी मालूम पड़ता है ।"

वो उठी और उसके सामने आ खड़ी हुई ।

"कपड़े उतार !"

"क्या !"

"मेरा हर हुक्म मानना तेरी मजबूरी है । अब ज्यादा मजबूरी है । मेरा नहीं मानेगी तो, सोच ले, पुलिस का मानेगी ।"

"तुम सच में..."

"हां, सच में ।"

"ऊपर बैडरूम में चलो ।"

"नहीं, स्टाइल से नहीं । मर्यादा से नहीं । वैसे, जैसे मैंने मुझे और कोठारी को देखा । यहां कालीन बिछे फर्श पर । तेरे कपड़े सोफे की पीठ पर । जल्दी कर ।"

नमिता ने उसके चेहरे पर दृढ़ता के ऐसे भाव देखे कि हैरान होने की जगह वो भयभीत होने लगी ।

क्या करे !

उसकी पोल से उसे शर्मिंदा करे ? बोले कि वो तो नपुंसक था ?

नहीं । झपट पड़ेगा । ठौर मार देगा । आखिर सदानन्द पुणेकर था ।

"तुम" - वो हिम्मत करके बोली - "मुझे जलील कर रहे हो ।"

"हुक्म दे रहा हूं । हुक्म देना मेरा हक है, हुक्म मानना तेरा फर्ज है । क्या ?"

कोई बात नहीं । अभी खुद जलील होगा ।

एक काम उसने फिर भी किया । एक टेबल लैम्प को छोड़कर, जिसे उसकी आमद पर सदा ने आन किया था, उसने सारी बत्तियां बुझा दीं ।

फिर एक-एक करके उसने अपने तन के कपड़े उतारकर सोफे की पीठ पर डाले और कालीन पर बैठ गयी ।

"लेट ।"

उसने आदेश का पालन किया ।

पलक झपकते ही वो उस पर सवार था ।

ज्यों ज्यों वक्त आगे बढ़ता गया, उसके नेत्र फैलते गये । डाक्टर देशपाण्डे ने उसकी बाबत जो कहा था, गलत कहा था । वो तो शैतान की तरह उस पर हावी था और यूं उसके अंजर पंजर हिलाये दे रहा था जैसे कभी कोठारी ने नहीं हिलाये थे ।

कब की कसर निकाल रहा था कमबख्त !

आखिरकार वो उसके ऊपर से उठा । उसने सिग्रेट सुलगाया और ढेर सारा धुंआ उगलता बोला - "अब क्या कहती है ?"

"डाक्टर देशपाण्डे ने" - वो दबे स्वर में बोली - "जो कहा, गलत कहा ?"

“नहीं, ठीक कहा । मैंने ही उसकी बात पर एतबार न किया कि मेरी प्रॉब्लम साइकालोजिकल थी । नतीजतन न मैंने ओवरड्रिंकिंग छोड़ी न रेगुलर साइकालोजिस्ट के पास गया । मैंने सच में शनिवार रात से विस्की नहीं पी और साइकालोजिकल इलाज मैंने अपना खुद कर लिया ।”

“क्या ? कैसे ?”

“तेरा मोह छोड़ दिया । अपनी कमजोरी पर फतह पायी और तेरे सम्मोहन से मुक्त हो गया । अभी मैंने तेरा भोग लगाया तो ये समझ के लगाया कि तू आम जनाना जिस्म थी जो, किसी को भी हासिल था । नतीजतन सब ठीक हो गया । तू खुद गवाह है कि सब ठीक हो गया । है न ?”

नमिता ने उत्तर न दिया ।

“इतना तो कबूल कर कि मैंने तेरे यार से बेहतर नहीं तो उससे बद्तर परफार्म नहीं किया ।”

वो खामोश रही ।

उसने इत्मीनान से अपना सिग्रेट खत्म किया और फिर वहां से रुखसत हो गया ।

पीछे नमिता ने अपने आपको काबू में किया और जैसे तैसे सोफे की पीठ पर से उठाकर कपड़े अपने जिस्म पर पहुंचाये और ऊपर जाने को कदम बढ़ाया । तभी उसकी निगाह जलते टेबल लैम्ब के करीब पड़े एक लिफाफे पर पड़ी जिसकी बाबत उसे यकीन था कि वो पहले वहां नहीं था । उसने लिफाफा वहां से उठाया तो पाया कि वो बन्द नहीं था ।

उसने टेबल लैम्प की रोशनी में उसके भीतर झांका ।

भीतर हजार हजार के तीन नोट मौजूद थे ।

सदानन्द पुणेकर उसे पीछे सलामत तो छोड़ गया था, लेकिन उसके मुंह पर थूक कर गया था ।

***

एसीपी मनोहर पावटे होटल कोकोनट ग्रोव के रूफ टॉप रेस्टोरेंट में समुद्र की ओर की रेलिंग के करीब एक टेबल पर बैठा धूप और बीयर का आनन्द ले रहा था । वो छः मंजिला होटल ऐन बीच पर ऐसी पोजीशन पर था कि पावटे अपनी टेबल पर बैठे-बैठे सदानन्द पुणेकर की टैरेस का, उसके प्राइवेट बीच का और प्राइवेट पायर का नजारा कर सकता था ।

वो उस वक्त सादे कपड़ों में था, वहां उसे कोई जानता नहीं था इसलिये वो दिन दहाड़े बीयर का घूंट लगाना अफोर्ड कर सकता था ।

उसकी उस पोजीशन से उसे टैरेस ही दिखाई दे रही थी, काटेज पेड़ों की ओट में छुपा हुआ था, लेकिन भीतर मौजूद एक तनहा औरत का तसव्वुर वो बाखूबी कर सकता था

जिसको एक काइयां वकील अपनी जुबानदराजी के बलबूते पर पुलिस के चंगुल से निकालकर ले गया था ।

जो कायदे-कानून की सजा से बच गयी थी, लेकिन प्रारब्ध की सजा झेल रही थी ।

खुशगवार विधवा सोगवार थी क्योंकि उसका खाविन्द लापता था ।

क्या वाकई !

तभी इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर वहां पहुंचा ।

दोनों में अभिवादनों का आदान प्रदान हुआ । नगरकर उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया ।

"आज यहां कैसे डेरा जमाया ?" - वो बोला ।

"तफरीह के मूड में हूं ।" - पावटे मुस्कराता हुआ बोला ।

"वो तो दिखाई दे रहा है ।"

"बीयर ?"

"नहीं, बीयर नहीं ।"

"तो विस्की ?"

"विस्की मैं पीता यूं लेकिन लेट लेट नाइट ।"

उसने नगरकर के लिये पैप्सी मंगाया ।

"बड़ी मुद्दत के बाद ऐसा इत्मीनान नसीब हुआ है ।" - वो बोला - "सोच रहा हूं तफरीहन कुछ दिन की छुट्टी ले लूं ।"

"पुणेकर के केस को मंझधार में छोड़कर ?"

"सरकारी तौर पर ।"

"क्या मतलब ?"

"वो केस तो, यार, निकलता ही नहीं मेरे जेहन से । हर बात हैरान करने वाली है । डाक्टर सिंगला अभी भी गायब है, उसका एक्सीडेंट अभी भी मिस्ट्री है । ऐन वैसा ही, ऐन कार्बन कापी, एक्सीडेंट जो एडवोकेट कोठारी का मैंगलोर में हुआ, वो उससे भी बड़ी मिस्ट्री है । कैसे हजार किलोमीटर के फासले पर दो, एक दूसरे से परिचित व्यक्तियों के ऐन एक जैसे एक्सीडेंट हो सकते हैं ? जैसे दो दोस्त हूबहू एक जैसे सूट सिलाते हैं, वैसे दो हूबहू एक जैसे एक्सीडेंट कैसे हो सकते हैं ?"

"दर्जी का कमाल !"

"क्या ?"

"हूबहू एक जैसे सूट दर्जी सीता है । क्या पता ये एक्सीडेंट भी टेलरमेड हों !"

"हुए नहीं, कराये गये ?"

"तभी तो एक जैसे हैं ! कामयाब कारनामे को ही तो दोहराया जाता है ।"

"टेलर कौन ? किसने दोहराया ?"

“मेरी तवज्जो तो एक ही शख्स की तरफ बार-बार जाती है ।”

“किसकी तरफ ?”

“बड़े खलीफा सदानन्द पुणेकर की तरफ ।”

“कैसे हो सकता है ? तुम समझते हो वो जिन्दा है ?”

“आप क्या समझते हैं ?”

जवाब देने की जगह पावटे ने बीयर का एक घूंट भरा ।

“आपकी इजाजत के बिना मैंने एक काम किया है ।”

“क्या ?” - पावटे की भवें उठीं ।

“सदानन्द पुणेकर की खबर मिसिंग पर्सन्स ब्यूरो में की है और उस पर आल पॉइंट बुलेटिन जारी किया है ।”

“लिहाजा तुम्हें पुणेकर के जिन्दा निकल आने की उम्मीद है ?”

“उम्मीद के खिलाफ उम्मीद है, लेकिन है । जब बाकी तमाम रास्ते बन्द दिखाई दिये तो सोचा इस एक रास्ते को भी आजमा लेने में क्या हर्ज था !”

“कोई हर्ज नहीं । सच पूछो तो अब मुझे भी अहसास हो रहा है कि हमने जोर गलत दिशा में रखा । हमने अपनी तवज्जो का वाहिद मरकज एडवोकेट कोठारी को और नमिता पुणेकर को बना लिया और सदानन्द पुणेकर के मामले में हालात को जस-का-तस कबूल कर लिया । इसी वजह से तुम्हारे आफिस में हमें एडवोकेट गुंजन शाह से मुंह की खानी पड़ी और ये न सोचा कि हमारे कई अहम सवालों के जवाब सदानन्द पुणेकर के पास हो सकते थे ।”

“अब तो आप साफ जाहिर कर रहे हैं कि आपको उसकी मौत पर एतबार नहीं ।”

“मैं इस बात को दूसरे तरीके से कहना चाहता हूं । मैं कहना चाहता हूं कि अगर सदानन्द पुणेकर जिन्दा होता तो हमने यकीनन उससे दो एक्सीडेंटों की बाबत बेतहाशा सवाल किये होते । दोनों विक्टिम उसके वाकिफ थे, उसके करीबी थे, क्योंकर दोनों एक ही तरीके से एक ही तरह से एक्सीडेंट के शिकार हुये ?”

“सवालों से कुछ हासिल होता ?”

“भले ही न होता लेकिन जवाब सुनना दिलचस्पी से खाली न होता ।”

“अगर हम पुणेकर को जिन्दा मान के चलें तो उसकी बोट के रेलिंग पर मिले खून के धब्बे पर भी हमें फिर से विचार करना होगा ।”

“हां । हम उसे कपिल कोठारी के जिस्म से टपका खून साबित न कर सके, लेकिन कम-से-कम इतना इशारा तो उससे मिलता ही है कि सदानंद पुणेकर के अलावा भी बोट पर कोई था ।”

“कोठारी था । मेरा एतबार अभी भी इसी बात पर है कि वो खून कोठारी का था ।”

“इसी वजह से तो पुणेकर की मौत की स्टोरी पर शक होता है । तुम बात को यूं समझो कि बोट पर पुणेकर को होशियारी आ गयी थी और वो कोठारी पर हमला कर बैठा था जिसकी वजह से कोठारी का.. .कोठारी का खून रेलिंग पर टपका था । लेकिन कोठारी को अपने हमले से आउट आफ एक्शन वो नहीं कर सका था, कोठारी ने ही उसे आउट आफ एक्शन किया था और मछलियों का भोजन बनने के लिये समुद्र में फेंक दिया था । उसके पास मौजूद कैश और शेयर सर्टिफिकेट वो पहले ही कब्जे में कर चुका था जिसके साथ तैरकर वो किनारे पहुंचा और आगे अपनी टाइपराइटर की ठक ठक वाली एलीबाई को जारी रखने के लिये अपने काटेज में पहुंचा । थोड़ा अरसा उसने नावल लिखते होने का अपना ड्रामा चालू रखा, फिर पुणेकर के काटेज पर जाकर उसकी नयी कार उठाई और माल के साथ चम्पत हो गया । पीछे नमिता पुणेकर को खामोश रखने के लिये, आश्वस्त रखने के लिये उसने उसे चिट्ठी लिखी और फिर जाकर समुद्र में डूब मरा । क्यों भई ! जिस शख्स ने हजार किलोमीटर की ड्राइव में एक्सीडेंट न किया वो मैंगलौर में दिनदहाड़े एक्सीडेंट क्यों कर बैठा ? डाक्टर सिंगला के एक्सीडेंट की बाबत आम धारणा ये थी कि वो नशे में था इसलिये कार उसके कन्ट्रोल से निकल गयी और वो एक्सीडेंट कर बैठा । कोठारी का एक्सीडेंट तो दिनदहाड़े दोपहर से पहले हुआ बताया जाता है । इतनी सुबह कोई इतनी पिये कैसे हो सकता है कि एक्सीडेंट कर बैठे ?”

“आपने कहा कि नमिता को चिट्ठी उसने उसको खामोश रखने के लिये लिखी !”

“हां । उसे खामोश रखना जरूरी था । कोठारी ने उसे डबल क्रॉस किया था और ये बात नमिता को जितनी देर से सूझती, उतनी ही कोठारी के हित में होती । नमिता के जेहन में डबल क्रॉस वाला आइडिया फौरन आ जाता तो वो तो कहर ढा देती, कोठारी की ऐसी पोल खोलती कि वो मैंगलौर के रास्ते में ही पकड़ा गया होता ।”

“ठीक ।”

“अब जरा बोट एक्सीडेंट - कथित बोट एक्सीडेंट - से पहले की घटनाओं की कल्पना करो । एक्सीडेंट के कथित शिकार सदानन्द पुणेकर ने इतवार से पहले क्या किया ? शेयर और नोटों की सूरत में उसने अपनी सारी चल सम्पति को कब्जे में कर लिया । वो सारा माल - सवा लाख के करीब के यूरो और साठ लाख के शेयर सर्टिफिकेट - उसने कहां रखा ? या अपने पास या बोट में । जो कि एक रिस्की - बल्कि बेवकूफाना - काम था ।”

“उसकी बीवी कहती थी कि वो फिगारो आइलैंड पर प्रापर्टी खरीदने वाला था ।”

“यूरो से ? पौने दो करोड़ रुपयों के बराबर के यूरो से ? शेयरों से ?”

“बड़ी रकमें पास रखने की उसकी आदत बताई जाती है । शेयर सर्टिफिकेट इत्तफाकन, वक्ती तौर पर पास होंगे ।”

“कबूल । अब सवाल ये है कि बैंक से इतनी बड़ी-बड़ी निकासियों की बाबत उसने अपनी तीन साल की ब्याहता बीवी को क्यों न बताया ? और निकासियां भी झाड़ूफेर ।

पीछे कुछ भी न छोड़ा ।”

“बहुत लोग होते हैं, जो अपने माली हालात में अपनी बीवियों को राजदां नहीं बनाते ।”

“तुम तो अब एडवोकेट गुंजन शाह की तरह बोल रहे हो ।”

नगरकर सखेद मुस्कराया ।

“मेरा पॉइंट ये नहीं है, नगरकर, मैं असल में किसी और बात को हाईलाइट करने की कोशिश कर रहा हूं ।”

“और कौन-सी बात ?”

“ये कि उसने इरादतन बीवी को कंगाल करके छोड़ा । जरा सोचो, बीवी के पैरों के नीचे से जमीन न निकल गयी होगी, जब उसे पता लगा होगा कि जिस कीमती काटेज में वो रह रही थी, वो पुणेकर का नहीं था, मोटरबोट पुणेकर की नहीं थी, बैंक के लाकर में से शेयर सर्टिफिकेट गायब थे और दो बैंक एकाउंट्स से सारा पैसा विड्रा कर लिया गया था, दोनों कारें बेच दी हुई थीं, एक नयी अनपेड कार की देनदारी उसके मत्थे मंढ दी गयी हुई थी और सौ बातों की एक बात, जाली डैथ सर्टिफिकेट की बिना पर उसने पांच करोड़ की वो एफडी तुड़ा ली हुई थी जो कि नहीं टूट सकती थी । मेरा सवाल ये है कि उसने बीवी पर ऐसा जुल्म क्यों ढाया ?”

“क्योंकि बीवी अपने यार के साथ मिलकर...”

“यार ! एडवोकेट कोठारी ?”

“और कौन ! बीवी कोठारी के साथ मिलकर उसका खून करने को आमादा थी ।”

“और सदानन्द पुणेकर नाम का गैंगस्टर इतना पिलपिला गया था कि अपने स्टाइल से उस सिचुएशन का मुकाबला करने की जगह दुम दबा के भाग गया ।”

“ऐसा मुमकिन तो नहीं लगता ।”

“बात यहीं खत्म नहीं है । अभी आगे कोढ़ में खाज भी है । वो ये कि पेश उसकी फिर भी न चली । बीवी के यार ने उसका काम तमाम कर दिया, उसका सब माल-पानी समेट लिया और मिलीभगत के मुताबिक बीवी से शेयर करने की जगह खुद कब्जा कर, ग्यारह लाख की नयी सोनाटा भी कब्जा कर भाग गया ।”

“लिहाजा माल पानी के मामले में बीवी ने एक से नहीं, दो मर्दों से करारा झटका खाया !”

“बराबर । अब बोलो पहला झटका, जो उसने हसबैंड से खाया, इत्तफाक था या यूं हसबैंड ने उसे सजा दी थी ?”

“अगर सजा दी थी तो मैं यही कहूंगा कि लिहाज किया बीवी का । बहुत कम, बहुत हल्की सजा दी ।”

"लेकिन दी । अगर दी तो इसका मतलब है पुणेकर का हर कदम प्रीप्लांड था, पूर्वनियोजित था । क्यों था ? क्योंकि उसे मालूम था उसकी बीवी उसके यार के साथ सोती थी । अगर उसे ये मालूम था तो हम ये मान सकते हैं कि उसकी उन दोनों पर निगाह हो । अगर निगाह थी तो क्या बड़ी बात है कि उसे इस बात की भी खबर हो कि दोनों उसके कत्ल की योजना बना रहे थे !"

"कैसे ?"

"कभी दोनों को इस बाबत कोई बात करते सुन लिया होगा । जब वो उनकी टोह में था तो क्या बड़ी बात है ?"

"इरादायेकत्ल एक गम्भीर मसला है । पुलिस को खबर क्यों न की ?"

"दो वजह से । एक तो वो खुद 'भाई' था, वो पुलिस के पास जाकर अपनी कमजोरी उजागर नहीं कर सकता था कि वो उन्हें खुद सजा नहीं दे सकता था या नहीं देना चाहता था । दूसरे, सबूत कहां था ? कैसे साबित कर सकता था कि उसके कत्ल की साजिश रची जा रही थी ? उसका कुछ सुना होना सबूत का दर्जा नहीं रखता । या रखता है ?"

नगरकर ने इंकार में सिर हिलाया ।

"फिर हसीनतरीन बीवी का मामला था, उसके मन में खुद बदला लेने की भावना जरूर पनपती होगी । बीवी दगाबाज निकले तो हर हसबैंड के जेहन में पहले यही खयाल आता है कि बीवी का गला घोंट दूं यार को गोली मार दूं वगैरह ।"

"पहल, कामयाब पहल दूसरी तरफ से भी तो हुई हो सकती है !"

"क्या मतलब ?"

"हसबैंड सोचता ही रह गया कि ये करूंगा, वो करूंगा, यार ने पहले ही सब कुछ कर डाला ।"

"ऐसा ?"

"हां ।"

"मुझे इस बात से इत्तफाक नहीं । क्योंकि हमारे सामने कुछ बातें ऐसी हैं, तुम्हारी ही खोज का नतीजा कुछ बातें ऐसी हैं, जो तुम्हारी इस सोच को सपोर्ट नहीं करतीं । जो जाहिर करती हैं कि पहला कदम हसबैंड ने - सदानन्द पुणेकर ने - उठाया । याद करो कि तुमने पाया था कि कोठारी के काटेज के सामने के और पिछले दरवाजे की मूठों पर से उंगलियों के निशान पोंछ दिये गये हुये थे । अब अपने ही घर से अपनी ही उंगलियों के निशान कोठारी भला क्यों पोंछेगा ?"

"क्यों पोंछेगा ?"

"कोई वजह नहीं । इसलिये जाहिर है कि ये काम किसी दूसरे जने ने किया ।"

"आप ये भूल रहे हैं कि उन मूठों पर बीवी की - मिसेज नमिता पुणेकर की - उंगलियों के निशान भी हो सकते थे ।"

"हो सकते थे । मान लो थे । इसीलिये पोंछ दिये गये कि बीवी की वहां आमद छुपी रहे । तो फिर कातिल जब बोट पर अपने कारनामे को अंजाम देकर वापिस लौटा तो पोंछ दी गयी हुई मूठों पर नये प्रिंट क्यों न बने ? इस बात की तो गारन्टी है कि कोई लौटा, बराबर लौटा । क्योंकि मिसेज रोटोलो ने किसी को फिर काटेज में विचरते देखा था । अब जैसे कि वो बड़ा वकील फुरैरी छोड़ गया कि 'ओ' बहुत कामन ब्लड ग्रुप था, किसी का भी हो सकता था, इसलिये बोट पर जो कुछ भी हुआ, उसके लिये कोई तीसरा, बाहरी आदमी जिम्मेदार हो सकता था, तो मेरा सवाल ये है कि वो बाहरी आदमी अपने काम को अंजाम दे चुकने के बाद वापिस कोठारी के काटेज में क्यों लौटा और क्यों वहां मंडराता रहा ? उसे तो बोट की वारदात के बाद फौरन खिसक जाना चाहिये था और अपनी हवा नहीं लगने देनी चाहिये था ।"

"ठीक ।"

"इसलिये मेरा एतबार इस बात पर है कि जो काटेज पर लौटा था वो पुणेकर था ।"

"कोठारी क्यों नहीं था ?"

"अरे, भई, हम शुरू में ही तो मान के चले हैं कि वार करने में पहल पुणेकर ने की थी ।"

"बोट पर वो कोठारी पर हावी हो गया था और उसने कोठारी को खल्लास कर दिया था ?"

"या कोठारी उसके बोट पर पहुंचने से पहले ही सामान के तौर पर उसके कब्जे में था । या तो कोठारी पहले ही, खुश्की पर ही मर चुका था या वो बेहोश था और बाद में बोट पर उसको खत्म किया गया था ।"

"मिसेज रोटोलो ने उसके कंधे पर लदा जो कैनवस का बैग देखा था, उसमें खाने-पीने का डिब्बाबन्द सामान नहीं, बेहोश या मुर्दा कोठारी था ?"

"हमें बोट पर खाने-पीने के सामान का कोई स्टॉक मिला था ?"

"नहीं ।"

"तो फिर ?"

"बीवी ने कहा था कि बैग में खाने-पीने का डिब्बाबन्द सामान था क्योंकि बोट पर वो चीजें खत्म हो चुकी थीं ।"

"कंधे पर ढोये जाने लायक भारी बैग की उसने कोई तो वजह बतानी थी !"

"असल में बैग में मानव शरीर था ?"

"हां । हमारी पहली धारणा ये थी कि बैग में पुणेकर बन्द था और कोठारी पुणेकर बना उस बैग को ढो रहा था ताकि मिसेज रोटोलो ये समझती कि पुणेकर हमेशा की तरह इतवार की सुबह मुंह अंधेरे फिशिंग के लिये निकल रहा था । उसने ऐसा बराबर समझा, लेकिन इसलिये न समझा क्योंकि कोठारी पुणेकर जैसे कपड़े पहने, उसकी सफेद पीक

कैप सिर पर लगाये पुणेकर का बहुरूप धारण किये था, वो काटेज की टैरेस पर से उतरकर, प्राइवेट बीच पर चलता प्राइवेट पायर की ओर जा रहा था तो पुणेकर ही हो सकता था, बल्कि इसलिये समझा कि वो पुणेकर ही था जो कि बैग में कोठारी के बेहोश या मुर्दा किस्म को ढो रहा था ।"

"तैर कर बोट से किनारे तक पुणेकर लौटा ?"

"हां ।"

"कोठारी के काटेज में क्यों गया ?"

"कोठारी ने अपने लिये जो एलीबाई गढ़ी थी, जिसकी पुणेकर को खबर थी, उसको आगे बढ़ाने के लिये । मिसेज रोटोलो को वहां चलता फिरता दिखाई दे कर ये स्थापित करने के लिये कि कोठारी सही सलामत अपने काटेज पर मौजूद था ।"

"रात से ही ! अपने नावल की स्क्रिप्ट टाइप करता !"

"बिल्कुल ।"

"इसका मतलब तो ये हुआ कि सोनाटा भी कोठारी नहीं, पुणेकर लेकर गया !"

"हां ।"

"उसके पास कार की चाबी कहां से आयी ?"

"बीवी कहती है कि चाबी उससे इग्नीशन में छूट गयी थी ।"

"न छूट जाती तो ?"

"तो तुम भूल रहे हो कि सोनाटा का खरीदार कौन था ! पुणेकर था । उसके लिये नयी खरीदी कार की एक एक्स्ट्रा चाबी का इन्तजाम पहले से करके रखना क्या मुश्किल काम था ?"

"कोई मुश्किल काम नहीं था । अब आप इस थ्योरी पर काम कर रहे हैं तो मैं मानता हूं कि उसका कोट कब्जा लेना, उसके ड्राइविंग लाइसेंस, क्रेडिट कार्ड वगैरह जैसे कागजात भी कब्जा लेना कोई मुश्किल काम नहीं था ।"

"बिल्कुल ! या ये चीजें कोठारी के किस्म पर थीं या उसने उसके काटेज से चुरा ली थीं ।"

"लेकिन वो वाटरप्रूफ लिफाफा ! जो दुर्घटनाग्रस्त सोनाटा में पड़े कोट में से बरामद हुआ ? जिस पर नमिता पुणेकर के हैण्डराइटिंग में कोठारी का नाम पता दर्ज था ?"

"वो पुणेकर की सबसे करारी चाल थी । उससे तीन बातें स्थापित होनी थीं ।"

"तीन !"

"नम्बर एक, उसमें जो चिट्ठी मौजूद थी और जो लिफाफा प्लांट करने से पहले निकाल ली गयी थी, उसमें जरूर ऐसा कुछ दर्ज था जो ये स्थापित करता था कि अपने हसबैंड के कत्ल की साजिश में नमिता पुणेकर भी शामिल थी । वो चिट्ठी बीवी के कस बल निकालने के लिये बाद में पुणेकर के काम आ सकती थी । नम्बर दो, लिफाफा जो बरामद

हुआ, उस पर उसके हैण्डराइटिंग में कोठारी का नाम पता दर्ज था और इस बात ने उसको पुलिस को जवाबदेय बना दिया ।"

"वो बात तो गयी ! आपने देखा ही था कि गुंजन शाह ने कैसे उस चिट्ठी वाली बात की हवा निकाली थी !"

"कबूल ! लेकिन अगर असली चिट्ठी बरामद हो जाये तो क्या होगा ?"

"तो वकील साहब की खुद की कहानी की हवा निकल जायेगी ।"

"सो देयर ।"

"आप समझते हैं कि चिट्ठी बरामद होगी ?"

"हो सकती है । चिट्ठी को लिफाफे में से निकाल लिया जाना ही जाहिर करता है कि वो महफूज है । जो चीज महफूज है, वो बरामद भी हो सकती है ।"

"नम्बर तीन ?"

"नम्बर तीन, लिफाफे की बरामदी ये स्थापित करती है कि कोठारी तमाम माल पानी के साथ फरार होने की अपनी कोशिश में एक्सीडेंट का शिकार हुआ । हम ये समझ ही रहे थे कि अगर वो एक्सीडेंट स्टेज किया गया था तो वो लिफाफा कोठारी ने बरामदी के लिये कार में न छोड़ा होता । क्यों भला यूं वो साजिश में शरीक अपनी जोड़ीदार पर फोकस बनाता ! लेकिन पुणेकर की ऐसी मंशा हो सकती थी जिसने अपनी बीवी को कंगाल बना दिया था, उसके यार को खत्म कर दिया था और खुद अपने ही माल के साथ फरार हो गया था ।"

"ओह !"

"क्या खयाल है ? जंचती है ये बात ?"

"बहुत जंचती है । मेरे को तो सुनते ही यकीन आने लगा कि ऐन यही हुआ होगा ।"

"आगे सब गुंजन शाह सुनेगा तो वो क्या कहेगा ?"

"तो वो साबित कर दिखायेगा कि असल में ये सब पुलिस का खेल था जिसे हममें से किसी ने उसकी क्लायंट को फंसाने के लिये अंजाम दिया था ।"

पावटे हंसा ।

"अब सवाल ये पैदा होता है" - नगरकर बोला - "कि अगर सदानन्द पुणेकर जिन्दा है तो कहां है ?"

"इसका जवाब मेरे पास नहीं है ।"

"फिगारो आइलैंड की बाबत क्या खयाल है ?"

"उसके वहां बंगला खरीदने के इरादे का इतना चर्चा हो चुका है कि मुझे उम्मीद नहीं कि उसने जाकर कैश पेमेंट पर वो बंगला खरीद लिया होगा और अब वो वहां छुपा बैठा होगा । फिर भी हम इस बाबत गोवा पुलिस को लिख सकते हैं ।"

"मैं लिखूंगा ।"

“एक बात मुझे और सूझी है ।”

“क्या ?”

“मुझे मालूम पड़ा है कि संदीप नाडकर्णी सदानन्द पुणेकर का स्टीक ब्रोकर ही नहीं था, उसका करीबी भी था । पूछे जाने पर नाडकर्णी ने खुद कहा था कि उसकी पुणेकर से पुरानी वाकफियत थी । पुणेकर की इनवेस्टमेंट्स को और दूसरे फाइनांशल मैटर्स को वो ही हैंडल करता था । ऐसे शख्स को कांटेक्ट करने की कोई जरूरत पुणेकर महसूस कर सकता था ।”

“क्या जरूरत महसूस कर सकता है ?”

“मसलन अपना सब कुछ समेट लेने के बावजूद हो सकता है कुछ बाकी हो जो कि उसको याद न आया हो या किसी वजह से समेटा न गया हो । मेरी मानो तो हमें नाडकर्णी पर नजर रखनी चाहिये ।”

“आप ही की मानेंगे, जनाब, क्यों नहीं मानेंगे ?”

“सतपुरा इनवेस्टमेंट्स के नाम से कान्दीवली ईस्ट में दत्तानी पार्क रोड पर उसका आफिस है, घर मुझे नहीं मालूम कहां है !”

“मैं मालूम कर लूंगा ।”

“गुड ।”

“आपका छुट्टी लेने का इरादा पक्का है ?”

“अरे, नहीं यार, वो तो मैं ख्वाब देख रहा था । अभी जितनी तफरीह हो गयी, वो ही काफी है ।”

“जानकर खुशी हुई, क्योंकि मैं चाहता हूं जब तक ये केस हल नहीं हो जाता, तब तक मुझे आपकी सरपरस्ती हासिल रहे ।”

“मस्का मार रहे हो ! अभी कल तक मैं खुद तुम्हारे जैसा तीन सितारों वाला इन्स्पेक्टर था, मैं क्या सरपरस्ती दूंगा तुम्हें !”

“ये आपका बड़पन है जो...”

“अब बस भी कर, यार !”

नगरकर हंसता हुआ खामोश हुआ ।

***

अगली रात वो फिर आ गया ।

वो ड्राइंगरूम में बैठी वोदका चुसक रही थी जबकि टैरेस के रास्ते - जहां कि वो जरूर बाहर पेड़ों के बीच से गुजरती पगडण्डी पर चलता पहुंचा था - प्रेत की तरह वो उसके सामने आ खड़ा हुआ ।

“हल्लो !” - वो मुस्कराता हुआ बोला ।

“तुमने तो” - नमिता शिकायतभरे लहजे में बोली - “मुझे डरा ही दिया ।”

“अपने खाविन्द की आमद से डर गयी !”
“मुझे क्या पता तुम थे !”
“तुझे किसी और का इन्तजार था ?”
“नानसेंस !”
“शायद यार का ?”
“क्या यार यार भजते रहते हो !”
“शायद श्रीमन्त कपिल कोठारी एलएलबी साहब का ?”
“मैं ड्रिंक बनाऊं तुम्हारे लिये ?”
“नहीं । छोड़ दिया पीना ।”
“क्या कहने ! अभी कल तो...”
“एक पैग । तेरे साथ आखिरी बार चियर्स बोलने के लिये ।”
“ओह !”
“मेरी आमद पर अभी तेरे चेहरे पर कैसे भाव थे ?”
नमिता की भवें उठीं ।
“जैसे उम्मीद कर रही हो कि जैसे मैं एकाएक तेरे सामने आन खड़ा हुआ था वैसे एकाएक एक दिन कोठारी आन खड़ा होगा ।”
“कैसे होगा ? जिस शख्स को तुमने अपने हाथों से मार डाला, वो अब कैसे लौट आयेगा ?”
“ये भी ठीक है ।”
फिर पिछली रात की तरह वो उसके सोफे के सामने कुर्सी घसीट कर बैठ गया ।
“जो लिफाफा” - वो बोली - “कल तुम टेबल लैम्प के करीब छोड़कर गये थे, वो मुझे मिल गया था ।”
“बढ़िया ।”
“मतलब क्या था उसका ?”
“सोच । समझ ।”
“आइन्दा हमारे ताल्लुकात यूं चलेंगे ?”
“क्या हर्ज है ?”
“क्या हर्ज है ! पूछते हो क्या हर्ज है ! मैं.. .मैं बाई हूं ?”
“वो तो तू बराबर है । कोई फर्क है तो ये है कि अपनी फीस खुद मुकर्रर नहीं कर सकती । वो मैं करूंगा । जैसे पिछली रात की । तू अपने आपको ज्यादा कीमती बाई समझती है तो भी इस कस्टमर से यही रेट मिलेगा ।”
“यू यू...”
उसके मुंह से गाली निकलने लगी थी, लेकिन वो डरकर खामोश हो गयी ।

"तो" - फिर बोली - "ये तरीका निकाला है तुमने मुझे जलील करने का ?"

"और क्या चन्दा दिया ! तेरी खाली जेब की फिक्र की !"

"ऐसे कब तक चलेगा ?"

"जब तक मैं चलाऊंगा ।"

"कब तक चलाओगे ?"

"ज्यादा देर नहीं ।"

"क्योंकि आजिज आ जाओगे ?"

"क्योंकि मेला पहले ही चुक जायेगा ।"

"मेला ! कौन-सा मेला ?"

"तेरे नाम मेरी एक वसीयत है जो कि एकाध दिन में तुझे हासिल हो जायेगी । एकाध दिन में पुलिस भी मेरी बाबत अपना फैसला सुना देगी कि मैं मर चुका था । फिर तू उस वसीयत को प्रोबेट के लिये कोर्ट में पेश करेगी ताकि मुझे मेरा वारिस करार दिया जा सके ।"

"किस हासिल के लिये ?" - वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली - "एक हजार बारह रुपये साठ पैसे जमा एक हजार चार सौ सत्तासी रुपये चालीस पैसे जमा दस हजार रुपये कुल जमा बारह हजार पांच सौ रुपये के लिये ?"

"जरूरी है ।"

"क्यों जरूरी है ?"

"दो वजह हैं ।"

"क्या ?"

"एक तो ये कि मेरी एक लाइफ इंश्योरेंस है जिसको क्लेम करने के लिये तेरे को मेरा वारिस करार दिया जाना जरूरी है ।"

"मेरा क्यों ?"

"क्योंकि मेरा कोई और करीबी इस दुनिया में नहीं है ।"

"इंश्योरेंस में कोई नामिनी भी दर्ज कराना होता है ।"

"वो भी तू ही है ।"

"फिर क्या प्रॉब्लम है ?"

"नामिनी का रोल तब शुरू होता है जबकि पालिसी होल्डर का रोल खत्म होता है । क्या समझी ?"

"समझी तो सही ।"

"इंश्योरेंस कम्पनी मेरे मर गया होने का सबूत मांगेगी, जो तू नहीं दे सकेगी । तू प्रोबेट के लिये वसीयत कोर्ट में पेश करेगी, कोर्ट मुझे मेरा वारिस करार देगा तो कोर्ट का ऑर्डर ही मेरी मौत का सबूत बन जायेगा ।"

“कोर्ट सबूत नहीं मांगेगा कि जिस शख्स की वसीयत को कोर्ट में प्रोबेट के लिये पेश किया जा रहा था, वो मर चुका था ?”

“वो सबूत पुलिस देगी, उनकी रिपोर्ट देगी कि मैं हादसे का या कत्ल का शिकार हो गया था और लाश समुद्र में बह गयी थी । हाई सीज पर लाश की बरामदी के वो रूल लागू नहीं होते, जो खुश्की पर होते हैं । कोर्ट के लिये पुलिस की ये रिपोर्ट काफी होगी कि लाश बरामद न हो सकी ।”

“हूं । कब कराई ये इंश्योरेंस ?”

“जब नामिनी तू है तो शादी के बाद ही कराई होगी !”

“पहले से कराई इंश्योरेंस का नामिनी बाद में भी तब्दील किया जा सकता है ।”

“पहले तो मुझे कभी इंश्योरेंस का खयाल तक नहीं आया था ।”

“कितनी रकम की है ?”

“पचास लाख की । डबल इनडेमनिटी वाली ।”

“वो क्या हुआ ?”

“मौत हादसे की सूरत में हो तो मुआवजा डबल !”

एक करोड़ रुपया ! - नमिता के खुराफाती दिमाग की गरारियां फिर हरकत में आ गयीं - नामिनी वो !

“शार्टक्लोज क्यों न की ?” - प्रत्यक्षत: वो बोली ।

“उससे क्या हाथ आता ? अभी तीन तो किस्तें भरीं ।”

“पालिसी कहां है ?”

“वो मुझे वसीयत के साथ हासिल होगी ।”

“एकाध दिन में बोला तुमने ?”

“हां ।”

“कैसे ?”

“दोनों डाकूमेंट नाडकर्णी के पास हैं ।”

“संदीप नाडकर्णी ! तुम्हारा स्टॉक ब्रोकर !”

“हां । वो एकाध दिन में तेरे पास आता ही होगा ।”

“अभी तक आया क्यों नहीं ?”

“मैंने बोला नहीं ।”

“यानी कि वो भी तुम्हारा राजदां है ! उसे भी मालूम है कि असल में तुम मरे नहीं हो !”

“यही समझ लो ।”

“दूसरी वजह बोलो ।”

“तू वसीयत को प्रोबेट के लिये कोर्ट में पेश नहीं करेगी तो पुलिस को शक होगा । वो समझेगी कि तुझे कोई इनसाइड इंफर्मेशन है, फर्स्ट हैण्ड इंफर्मेशन है कि मैं मरा नहीं हूं । एक बार उन्हें ये शक हो गया तो वो फिर तेरे पीछे पड़ जायेंगे और तेरे से पहले से दस गुणा ज्यादा सवाल पूछेंगे ।”

“मैं उन्हें ढूंढ़े नहीं मिलूंगी ।”

“अच्छा !”

“शायद तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारी कम्पनी ओमेगा ये काटेज बेच रही है...”

“तो तुझे ये भी मालूम हो गया कि ओमेगा का मालिक मैं नहीं ? ओह, आई एम सारी.. हो तो गया । वालसन ने बताया ।”

“वैसे भी तुम्हारे इतने करतबों के बाद क्या न मालूम होता ? ग्रांट रोड वाले बैंक में जो कुछ तुमने किया...”

“छोड़ ।”

“अच्छा उल्लू बनाया मुझे ! शादी के वक्त भी और अब उस एफडी को तुड़ाकर...”

“छोड़ न ! अब वो बातें करने का वक्त नहीं वर्ना नयी ही कथा शुरू हो जायेगी । तेरी इतनी बड़ी मनमानी के जवाब में मैंने तो बहुत छोटी मनमानी की वर्ना...”

“कथा तो शुरू हो भी गयी ।”

“इसीलिये तो बोला, छोड़ । वही बात कर जो कर रही थी ।”

“कम्पनी काटेज बेच रही है । मुझे दस दिन में काटेज खाली कर देने का हुक्म हुआ है ।”

“वान्दा नहीं । इतना वक्त आइन्दा जिन्दगी को माफिक आने वाला सही फैसला कर लेने के लिये काफी होता है ।”

“कौन सा फैसला ?”

“ये फैसला कि तेरी गति सिर्फ और सिर्फ मेरे साथ है कि तेरा मरद, तेरा लीज होल्डर मैं हूं ।”

“क्या कह रहे हो ? तुम्हारा मतलब है तुम अभी भी उस औरत के साथ रहने को तैयार हो जिसने तुम्हें.. .तुम्हें खत्म कर देने की साजिश रची ! अपनी पोल खुली जानकर जिसे कल अपनी जान का भरोसा नहीं था, उसे फिर अपनी जान बनाना चाहते हो ?”

“है न अजीब बात ! लेकिन इतनी अजीब नहीं है जितनी सुनने में लगती है । इस फानी दुनिया में लाखों-करोड़ों शादीशुदा मर्द औरत ऐसे हैं, जो एक दूसरे की सूरत से बेजार हैं, जो एक दूसरे की मौत की कामना करते हैं । तू उनसे जुदा सिर्फ इसलिये है कि मेरी जान लेने का षड़यंत्र तूने खुद न रचा, यूं जो दौलत मुझे हासिल होती, उसके मद्देनजर किसी और ने रचा और मुझे गुमराह करके, बल्कि सम्मोहित करके, बाकायदा तेरे पर थोपा । लेकिन अब वो कहानी खत्म हो चुकी है, मेरे कत्ल का हासिल सिफर हो चुका है और तेरा

सम्मोहन टूट चुका है क्योंकि जिसने जैसे झाड़-फूंक कर मुझे वश में किया हुआ था, वो मर चुका है । अब हम दोनों अपनी खामियां को, अपनी गलतियों को, अपनी खताओं को भुलाकर एक दूसरे को रीडिसकवर कर सकते हैं, फिर से पा सकते हैं ।"

"ये खता भुलाना आसान होगा कि मैंने बेवफाई की, मैंने खून से हाथ रंगने का सामान किया ?"

"नहीं, भुलाना आसान नहीं होगा । तेरे लिये भुलाना आसान होगा भी तो मेरे लिये माफ कर देना आसान नहीं होगा ।"

नमिता का वक्ती तौर पर आश्वस्त हुआ दिल फिर लरजा ।

"क्या करोगे ?" - वो फुसफुसाती सी बोली ।

"समझूंगा कि तू थोड़ी देर के लिये पागल हो गयी थी, जब तेरा दिमाग ठिकाने आया तो तेरा पश्चाताप ही तेरी सजा बन गया ।"

"पश्चाताप ! तुम समझते हो कि मुझे है ?"

"तू बता ? नहीं है ?"

"कहते हैं इंसान कत्ल पर तब आमादा होता है, जब नफरत की इन्तहा हो जाती है । उस इन्तहा के बाद मेरे मन में तुम्हारे लिये कोई भावना फिर पैदा हो सकेगी ?"

"क्यों नहीं हो सकेगी ? मैं - सदानन्द पुणेकर, जिसके नाम से लोग कांपते हैं - बदला या नहीं ? कल दो बहुत बड़ी तब्दीलियां तूने अपनी आंखों से देखीं । मैंने पीना छोड़ दिया और.. .और वो काम करके दिखाया जो मेरा डाक्टर भी कहता था कि मैं नहीं कर सकता था ।"

"कमाल करके दिखाया ! अभी भी खयाल उस तरफ जाता है" - उसने क्षण-भर को आंखें बन्द कीं - "तो यकीन नहीं आता कि वो तुम्हीं थे ।"

"अच्छा लगा ?"

"हां, बहुत अच्छा लगा । सच बताओ, असल में ये करिश्मा क्यों कर हुआ ?"

"तू समझती है कि जो वजह मैंने बयान की, उनके अलावा भी कोई वजह है ?"

"मैं समझती नहीं हूं । मुझे गारन्टी है ।"

"हूं ।"

"अब बोलो, और क्या वजह है ?"

"है तो सही और वजह ।"

"क्या ?"

"जिस पर न मुझे यकीन आयेगा और न मुझे सुनना पसन्द आयेगा ।"

"अब कह भी चुको । बोलो, ये करिश्मा कैसे हुआ ?"

"यहां सोफों के बीच कालीन पर तेरे को कोठारी के साथ देख कर हुआ ।"

"हे भगवान ! सच में देखा ?"

“हां ।”

“मैंने तो समझा था कि फेंक रहे थे ।”

“कई बार देखा । पहली बार ही दिल चाहा कि दौड़कर सीढ़ियां उतरूं, जाकर कोठारी को परे धकेलूं और उसकी जगह ले लूं ।”

“शुक्र है कि ले न ली ।”

“तेरा लिहाज किया । अपना भी ।”

“अपना भी ?”

“तेरी उस वक्त की खुशी झेली जो न गयी !”

“ओह !”

“बाकी की रात मैं सोचता रहता था कि वो नहीं, मैं तेरे पर सवार था और हमेशा महसूस करता था कि मैं ऐसा कर सकता था । मैं अपने यारमार यार से बढ़िया परफार्म कर सकता था । मैं और किसी बात के लिये कोठारी को याद रखूं या न रखूं इस बात के लिये हमेशा याद रखूंगा कि उसकी वजह से मेरी मर्दानगी वापिस लौट आयी । इस अहसास ने मुझे फिर मर्द बना दिया कि मेरी नामर्दी की वजह से मेरी बीवी पर कोई और सवार था ।”

“तौबा !”

“फिर आगे जब मैंने तुम लोगों की चाल को पूरी तरह से पीट दिया तो मैं अपने आपको और ताकतवर महसूस करने लगा । जिस बात को मैं नजरअन्दाज करता जा रहा था, जिसे मैं इरादतन भूलता जा रहा था, वो फिर सिर उठाने लगी । मुझे फिर से अहसास होने लगा कि खूबसूरत औरत की नवाजिशों को मैंने उसका गुलाम बनके नहीं, उसका मालिक बनके हासिल करना था । लेकिन इसका मतलब ये नहीं था कि तेरी करतूत माफ हो गयी थी । उसकी सजा अपनी जगह बरकरार थी ।”

“इसलिये मुझे खड़े पैर कंगाल बना दिया ?”

“जाहिर है । वार वहीं तो किया जाता है, जहां वो सबसे ज्यादा तकलीफ पहुंचाये । सबसे ज्यादा डैमेज करे ।”

“और” - नमिता एकाएक मुस्कराई - “हथियार वो ही अजमाया जाता है जिसका वार खाली जाना नामुमकिन हो ।”

“जाहिर है ।”

“फिर तो ये भी जाहिर होगा कि ऐसा एक हथियार मेरे पास भी है ।”

“कौन सा ?”

“अभी पेश करती हूं ।”

उसने गिलास को तिलांजलि दी और उठकर खड़ी हो गयी । फिर स्ट्रिपर के अन्दाज से उसने जिस्म का एक-एक कपड़ा उतार कर सोफे पर फेंकना शुरू किया ।

वो मन्त्रमुग्ध सा उसे देखता रहा ।

आखिर में वो मादरजात नंगी उसके सामने खड़ी थी ।

“कैसी लग रही हूं ?” - वो वासना से डूबे स्वर में बोली ।

“कमाल !”

“कल जो हुआ, एकाएक हुआ । जो नहीं हो सकता था, उसे होता पाकर मैं ऐसी सकते में आ गयी थी कि अपना कोई कमाल तो मैं दिखा ही नहीं सकी थी । कल तुमने मुझे हैरान किया था, आज मैं तुम्हें हैरान करूंगी । तैयार हो जाओ ।”

जैसे चोरों की तरह वो वहां पहुंचा था, वैसे ही चोरों की तरह वो वहां से रुखसत हुआ ।

उस रोज भी पीछे लिफाफा छोड़कर जिसमें हजार हजार के तीन नोट बन्द थे ।

***

नमिता कान्दीवली ईस्ट और आगे सतपुरा इनवेस्टमेंट्स के आफिस में पहुंची ।

संदीप नाडकर्णी बहुत अदब से, बहुत प्रेम भाव से उसे मिला ।

“कैसे आयीं ?” - फिर बोला ।

“वो सदा की वसीयत” - वो संकोच के भाव से बोली - “इंश्योरेंस पालिसी...”

“अच्छा, वो ! सच पूछो तो आजकल में मैं खुद तुम्हारे पास आने की सोच रहा था ।”

“आये तो नहीं ।”

“पुलिस के चक्कर परेशान कर रहे हैं न ! तुम्हें भी कर रहे होंगे ?”

“वो तो है ।”

“खाना खाया ?”

वो हिचकिचाई ।

“पास ही एक बार-कम-रेस्टोरेंट है । वहां चलते हैं, बात भी हो जायेगी और लंच भी जायेगा ।”

“बात करने तो मैं आयी ही यूं लंच से मुझे कोई एतराज नहीं, लेकिन मुलाहजे में भी बिल भरने की आकर की मेरे से उम्मीद न करना ।”

उसकी भवें उठीं ।

“मैं आजकल चैरिटी केस हूं ।”

“ऐसा ?”

“सच कह रही हूं ।”

“चलो, उठो । बिल की भली फिक्र की ! जेंट्स के साथ होते लेडीज को कहीं बिल भरना पड़ता है !”

दोनों शीतल नाम के बार-कम-रेस्टोरेंट में पहुंचे । वहां ड्रिंक्स की पेशकश हुई तो नमिता ने प्रत्यक्षत: झिझकते हुए लेकिन दिल से राजी से हामी भरी ।

नाडकर्णी ने अपने लिये बीयर और नमिता के कहने पर उसके लिये ब्लडी मेरी का आर्डर दिया ।

दोनों ने चियर्स बोला ।

कुछ क्षण खामोशी रही जिसके दौरान नाडकर्णी ने जी भर के दोस्त की बीवी के सौन्दर्य का रसपान किया । वो सदा की ही उम्र का आदमी था, लेकिन सदा से कहीं बेहतर तन्दुरुस्ती का मालिक था और विधुर था । औलाद के नाम पर उसका एक ही लड़का था, जो कि सिंगापुर में नौकरी करता था और वहीं सैटल्ड था ।

सच में विधवा होती - उसने मन-ही-मन सोचा - तो जरूर क्लेम लगाता ।

“ये” - फिर वो बोला - “चैरिटी वाली बात सच कही तुमने ?”

जवाब देने से पहले दो किस्तों में सदा से मिले छ: हजार रुपये की बाबत उसने सोचा ।

चिकन फीड !

“हां ।” - वो बोली - “तुम तो सदा के करीबी हो, उसके हर फाइनांशल इन एण्ड आउट से वाकिफ हो, तुमसे क्या छुपा होगा कि सदा कैसे पीछे अपनी हर असैट पर झाड़ू फेर कर गया !”

“छुपा तो नहीं” - वो सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला - “लेकिन इतना भी अन्दाजा नहीं था कि.. .बिल्कुल ही, तुम्हारी जुबान में, झाड़ू फेर गया । तुम चाहो तो मेरे से...”

“नहीं, नहीं । आई विल मैनेज ।”

“तकल्लुफ न करना । मेरे को खुशी होगी तुम्हारी कोई मदद करके ।”

“मेरे को जान के खुशी हुई और तसल्ली हुई । जरूरत होगी तो बोलूंगी ।”

“जरूर बोलना ।”

“मैं एक बात जानना चाहती थी ।”

“क्या ?”

“किसी के शेयर सर्टिफिकेट खो जायें या नष्ट हो जायें तो क्या होता है ?”

“कुछ नहीं होता । शेयर रजिस्ट्रार के पास रिकार्डिड होते हैं । खो जायें या नष्ट हो जायें तो उन शेयरों को कैंसल कर दिया जाता है और उनकी जगह नये सर्टिफिकेट जारी कर दिये जाते हैं ।”

“दैट्स गुड न्यूज । बाई दि वे, साठ लाख शेयरों की परचेज वैल्यू है । बेचे जायें तो कितने में बिकेंगे ?”

“भई, पैनिक सेल भी हो तो भी तीन करोड़ तो कहीं नहीं गये ।”

तीन करोड़ !

“हूं । इंश्योरेंस की क्या पोजीशन है ?”

"ठीक पोजीशन है । मैं तुम्हारा मतलब समझ के बोलूं तो लैप्स हो जाने का कोई अन्देशा नहीं ।"

"मैंने सुना है इंश्योरेंस के खिलाफ कर्जा मिल जाता है । शेयरों के खिलाफ भी कर्जा मिल जाता है ।"

"ठीक सुना है ।"

"मुझे मिल सकता है ?"

"कैसे मिल सकता है ? दोनों में से कोई चीज तुम्हारे नाम तो है नहीं !"

"शेयर कम्यूनिटी प्रापर्टी हैं । सदा की मौत की रू में मैं उनकी मालकिन हूं ।"

"वो जिन्दा निकल आया तो ? मेरा मतलब है उसने जिन्दा निकल आने के हक में फैसला किया तो ?"

"तो वो कर्जे को या अपने नाम करा लेगा या अदा कर देगा । ऐसा न हुआ तो मैं उसकी वारिस हूं ही । वसीयत में यही दर्ज है न ?"

"हां, यही दर्ज है ।"

"तो..."

"कर्जे की कोई रकम तुम्हारे जेहन में है ?"

"मौजूदा हालात में तो जो मिल जाये वैलकम है । उसकी इंश्योरेंस पचास लाख की है न ?"

"हां ।"

"और साठ लाख की फेस वैल्यू के शेयर ! सुना है यूं कर्जा अस्सी पर्सेंट तक मिल जाता है ।"

"बमय व्याज चुकाना भी तो पड़ता है ।"

"वो जुदा मसला है । कर्जा मिल कितना सकता है ?"

"समझ लो पिचहत्तर लाख तक ।"

पिचहत्तर लाख काबू में और मैं गायब ।

"दिलाओ ।"

"दिलाऊं ?" - वह हड़बड़ाया ।

"हां, भई ।"

"लेकिन..."

"तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि मैं बहुत अहसान मानने वाली औरत हूं ।"

"मालूम तो नहीं है.. .कैसे मानोगी अहसान ?"

"वक्त आने दो, फिर देखना ।"

"ऐसा ?"

"हां ।"

“मैं वहीं समझ रहा हूं न जो तुम कह रही हो !”

“मुझे नहीं पता तुम क्या समझ रहे हो ! लेकिन ये बराबर पता है कि मैं क्या कह रही हूं !”

“क्या कह रही हो ?”

“सितारों से आगे जहां और भी हैं । अभी आयी बात समझ में ?”

“हां ।”

“तो फिर ?”

“इतनी बड़ी रकम का तुम क्या करोगी ?”

“मैं सड़क पर आ गयी हूं । आइन्दा दिनों में मेरे सिर पर छत तक नहीं रहने वाली । मेरे लिये पेट भरना मुहाल हो सकता है । ऐसे माहौल में जो भी रकम हासिल हो, वो कम है । मुझे घर खरीदना होगा, उसे फर्निश करना होगा, गाड़ी खरीदनी होगी और आइन्दा रेगुलर, स्टेडी इन्कम का कोई इंतजाम करना होगा ।”

“लेकिन पिचहत्तर लाख !”

“अरे, चालीस पैंतालीस लाख तो ढंग का फ्लैट खरीदने में ही लग जायेंगे ।”

“फ्लैट आजकल किस्तों में मिलते हैं और किस्तें भी बैंक फाइनांस करता है ।”

“बैंक मोटा ब्याज भी तो चार्ज करता है ! ब्याज की रकम मेरे पर तो बोझ ही बनेगी !”

“वो तो शेयर और इंश्योरेंस के खिलाफ हासिल हुए कर्जे पर भी लगेगा ।”

“तुम मुझे उलझाओ मत । इन दो मद के खिलाफ अगर कर्जा मिल सकता है तो मैं चाहती हूं कि वो मैक्सीमम हो ।”

“सदा क्या कहेगा ?”

“कुछ नहीं कहेगा । तुम भूल रहे हो कि मैं उसके दिलोजान की जीनत हूं ।”

“फिर उससे गिला क्यों कि उसकी वजह से सड़क पर आ गयी हो !”

“गिला अपनों से ही किया जाता है । गैर गिला सुनता है ? उसे खातिर में लाता है ?”

“जवाब अच्छे हैं तुम्हारे पास लेकिन व्यावहारिक नहीं हैं । तुम जो कुछ कह रही हो एक बड़ी अहम बात को नजरअन्दाज करके कह रही हो कि जब तक सदा को कानूनन मरा न मान लिया जाये, उसकी वसीयत को प्रोबेट के लिये कोर्ट में न पेश कर दिया जाये और तुम्हारा विरसा मोहरबन्द न हो जाये, तब तक डुप्लीकेट शेयर सर्टिफिकेटों पर या उसकी इंश्योरेंस पर तुम्हारा कोई दावा नहीं बनता । और ये सब होते-होते महीनों लग सकते हैं ।”

“मैंने सुना है कि पैंडिंग जजमेंट दावेदार को कोई रकम एडवांस में हासिल करने का अख्तियार होता है ।”

"ठीक सुना है लेकिन वो मैजिस्ट्रेट की मर्जी पर मुनहसर होता है । मैजिस्ट्रेट की मर्जी तुम्हारे हक में हो, इसकी कोई वजह होनी चाहिये । सूझती हो तो बताओ ।"

वो खामोश रही ।

"दूसरे, एडवांस की वो रकम पिचहत्तर लाख तो क्या, उसके दूर दूर कहीं नहीं ठहरती होगी । कोई रकम अगर तुम्हारे लिये मंजूर होगी तो तुम्हारी इस दुहाई के तहत मंजूर होगी कि तुम चैरिटी केस बन गयी हो, सड़क पर आ गयी हो और यकीन जानो, वो तुम्हें चिड़िया का चुग्गा जान पड़ेगी ।"

"तुम कुछ करो ।"

"क्या करूं ?"

"खुद सोचो । तजुर्बेकार आदमी हो, बहुत कुछ कर सकते हो । बहुत कुछ करा सकते हो ।"

"करा सकता हूं ?"

"प्रोबेट कोर्ट का मैजिस्ट्रेट क्या बहुत बड़ी हस्ती होता है ?"

"नमिता, नार्मल केस में ऐसे मजिस्ट्रेट को किसी खास फेवर के लिये अप्रोच किया जा सकता है, इस बात से मुझे इंकार नहीं, लेकिन ये केस नार्मल कहां है ! तुम जानती हो कि इसमें पेच ही पेच हैं ।"

वो खामोश हो गयी ।

"और फिर मैं तुम्हें जानता हूं ।"

उसने सकपकाकर सिर उठाया ।

"तुम भागते भूत की लंगोटी की फिराक में हो । लंगोटी बड़े वाला लंगोट बन जाये तो बात ही क्या है !"

"क्या मतलब ?"

"मतलब अभी सुनोगी या ड्रिंक खत्म करके ?"

नमिता ने अपना ब्लडी मेरी का गिलास खाली किया ।

नाडकर्णी के इशारे पर नया जाम उसे तत्काल सर्व हुआ ।

नमिता ने उसमें से एक घूंट भरा ।

"बोलो ।"

"देखो, नाराज न होना ।"

"अरे, बोलो भी । वैसे मैं नाराज होऊं या न होऊं, यूं तुम मुझे जरूर नाराज कर दोगे ।"

"पिचहत्तर लाख रुपया हाथ में आते ही" - वो धीरे से बोला - "तुम यूं गायब होवोगी कि तुम्हारी हवा नहीं मिलेगी ।"

नमिता सन्नाटे में आ गयी ।

हे भगवान ! क्या उसके सामने बैठा वो शख्स माइन्ड रीडर था ?

उसने गिलास उठाकर मुंह से लगाया ।

“अरे, काकटेल है” - वो बोला - “धीरे-धीरे पियो ।”

“वसीयत को” - वो उठ खड़ी हुई - “प्रोबेट के लिये पेश करने की बाबत जो किया जाता है, जैसे किया जाता है, वो करना और मुझे खबर करना, मैं चली ।”

“अरे खाना...”

“भूख नहीं रही । ड्रिंक्स का शुक्रिया ।”

वो वापिस लौटी ।

वापिसी के सारे रास्ते वो रुपये आने पाइयों के उधड़ेबुन में ही लगी रही ।

क्या नाडकर्णी चाहता तो उसे पिचहत्तर लाख रुपया मुहैया करा सकता था ?

पिचहत्तर नहीं तो साठ !

पचास !

पिचहत्तर ही करा सकता था - उसके दिल ने गवाही दी - लेकिन वो सदा का ज्यादा सगा जान पड़ता था ।

उसका बन सकता था । वो बना सकती थी ।

कोशिश करे वो !

सोचना पड़ेगा । क्योंकि उसकी कोशिश की सीधी रिपोर्ट सदा के पास पहुंच सकती थी और उसकी पहले से ही बिगड़ी छवि और बिगड़ सकती थी ।

लेकिन कोई बड़ी रकम उसके हाथ में न आती तो कैसे वो अपने पर से ‘थ्री थाउ पर ट्रिप’ का प्राइस टैग हटा सकती थी ?

साठ लाख शेयरों की फेस वैल्यू थी न कि सेल प्राइस, ये बात उसे पहले क्यों नहीं सूझी थी ।

तीन करोड़ !

या और भी ज्यादा ।

लेकिन बकौल नाडकर्णी तीन करोड़ तो यकीनन ।

जमा पौने दो करोड़ के ऊपर से यूरो ।

जमा एक करोड़ की लाइफ इंश्योरेंस ।

वो सदा की कानूनी वारिस करार दी जाये तो वो पौने छः करोड़ की मालकिन ।

लेकिन सदा तो जिन्दा था ।

जिन्दा क्या, पहले से ज्यादा जिन्दा था, वर्ना दो रात लगातार वो करतब न कर सका होता जो कि उसने कर के दिखाया था ।

अगर उसे मालूम पड़ जाता कि वारिस करार दिये जाने के बाद फिर उसने उसे डबलक्रास करने की जुगत करने लगना था तो मुर्दा जिन्दा हो जाता और उसके नये सपने

को ही चकनाचूर न करता, उसे जेल की हवा खिलाने का भी इन्तजाम करता ।

हे भगवान ! क्यों कदम कदम पर तकदीर दगा दे रही थी ?

कुछ काबू में आता दिखाई देता था तो काबू में आने से पहले ही मुट्ठी में रेत की तरह खिसक जाता था ।

अब अपनी पिछली ऐशोआराम की जिन्दगी को वापिस लौटाने का उसके सामने वो एक ही तरीका था, जो सदा ने पेश किया था ।

वो उसकी निष्ठावान लौंडी बन के रहती और स्वाभाविक तौर पर विधवा होने का इन्तजार करती ।

ऐसा कब होता ?

सदा ने ड्रिंक करना छोड़ दिया था । वो दस साल और जी सकता था, बीस साल और जी सकता था, तीस साल और जी सकता था ।

तब वो कितने साल की होती ?

खयाल से ही उसकी रूह कांप गयी ।

लिहाजा स्वाभाविक तौर से कुछ होने का इन्तजार करना मूर्खता थी ।

फिर एक खयाल बिजली की तरह उसके जेहन में कौंधा ।

अगर वो किसी तरीके से कोठारी का उससे जबरन लिखवाया गया इकबालिया बयान और अपनी चिट्ठी को नष्ट करने में कामयाब हो जाये तो ?

तब तक उसने उन दोनों दस्तावेजों की बाबत सोचा था तो यही सोचा था कि उन दोनों का नष्ट हो जाना उसे जेल जाने से बचा सकता था, लेकिन अब उनका नष्ट हो जाना पौने करोड़ की धनराशि की तरफ नया रास्ता खोलता लग रहा था । उनके नष्ट हो जाने का मतलब था कि सदा का उस पर कोई होल्ड न रहता, अल्कोहलिक और इमपोटेंट होने की वजह से वो सदा को तलाक देने के लिये आजाद होती । साथ में एक की चार लगाती कि मारता था, दुर्ष्यवहार करता था, सताता था जिसकी मिसाल थी कि सब कुछ अपने कब्जे में कर लिया था और उसे दाल रोटी तक का मोहताज बना दिया था । सबसे बड़ी वजह उसकी नपुंसकता थी जो कि डाक्टर देशपाण्डे के रिकॉर्ड में थी । उसके अल्कोहलिक होने की तो सारी दुनिया गवाह थी, किसी को क्या पता था कि उसने पीना छोड़ दिया था । किसी को क्या पता था कि किसी करिश्माई तरीके से पुंसत्व के मामले में अब वो रेस का घोड़ा बन गया था ।

बढ़िया !

वो कोठारी का जिक्र करता तो वो भी उसके खिलाफ जाता क्योंकि भले ही आत्मरक्षा में किया था, उसने उसका खून किया था । उसके एक खूनी की बीवी बने रहने का क्या मतलब ?

यूं सैटलमेंट में उसे आधी रकम भी मिल जाती तो वो रकम और उसकी आजादी कोई छोटी उपलब्धि न होती ।

कोर्ट में उसके कत्ल की साजिश में शरीक होने की बाबत वो कुछ कहता तो वो जुबानी जमा खर्च ही होता । वो एक बेवड़े का शक और हसद के मारे, दिमागी तौर से हिले हुए शख्स का प्रलाप ही समझा जाता ।

यूं जो भी रकम उसे हासिल होती वो पिचहत्तर लाख की उस रकम से तो यकीनन कहीं बड़ी होती जिससे नाडकर्णी ने इतना बेमुरब्बत होकर उसे नाउम्मीद किया था ।

लेकिन ये सब कुछ तभी तो हो सकता था जब इकबालिया बयान और चिट्ठी तक वो अपनी पहुंच बना पाती ।

कहां रखा होगा सदा ने उन दोनों कागजात को ?

और कहां रखे हुए था वो खुद अपने आपको ?

दूसरी बात के जवाब में यकीनन पहली बात का जवाब भी शामिल था । आजकल जहां भी उसने डेरा डाला हुआ था, उनके वहीं होने की सबसे ज्यादा सम्भावना थी । वहीं तो वो कागजात हो सकते थे जहां वो रात को उसके पहलू से उठकर जाता था ।

कहां ?

क्या पता कहां ?

उसे तो ये भी नहीं मालूम था कि वो कौन-सी दिशा में जाता था ?

कहीं करीब जाता था, दूर जाता था या और दूर - मुम्बई से बाहर कहीं - जाता था ? किसी घर में रह रहा था, फ्लैट में रह रहा था या होटल में रह रहा था ! अकेला रह रहा था या किसी से पनाह पाये था ?

मसलन नाडकर्णी से ही जो कि उसका करीबी था ।

गोरई में तो यकीनन नहीं हो सकता था । पुलिस की ऐन नाक के नीचे मौजूद रहने का क्या मतलब ?

जगह तो बहुत ही खुफिया होनी चाहिये थी क्योंकि उसे बिग बॉस का कहर अपने पर टूटने का भी खतरा था ।

यातायात का साधन क्या इस्तेमाल करता था ?

बस ! टैक्सी ! लोकल !

नामुमकिन ! अपने मौजूदा हालात में वो इतना एक्सपोजर अफोर्ड नहीं कर सकता था ।

तो !

वो कहता था उसने मैंगलोर में एक कार चुराई थी जिसको चलाता वो मुम्बई लौटा था ।

चोरी वाली बात पर उसे कतई यकीन नहीं था । ऐसा करने की कोई जरूरत ही नहीं थी । उसके कब्जे में अन्धा पैसा था । जरूर कोई सैकंडहैंड कार उसने खरीदी थी ।

वो बात उसे जंची ।

दो बार रात को वो काटेज पहुंचा । कहां खड़ी की ? काटेज तक तो यकीनन न लाया । रात के सन्नाटे में उसे करीब पहुंचती कार की आवाज जरूर सुनाई दी होती ।

तो कहां ?

जाहिर था कि काटेज से दूर कहीं ।

मालूम करने का एक ही तरीका था ।

अगली बार वो आया - उसी रोज आ सकता था - तो उसके लौटने के वक्त वो उसके पीछे लगेगी ।

यूं कार का ही नहीं, उसकी मौजूदा पनाहगाह का भी राज फाश होगा ।

उस खयाल से ही उसके शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी ।

***

रात सवा ग्यारह के करीब सदानन्द पुणेकर टैरेस के रास्ते खामोशी से काटेज में दाखिल हुआ ।

उस रोज उसके मिजाज में उखड़ापन था और चेहरे पर विषाद के भाव थे ।

आ कर वो उस सोफे के आगे बेचैनी से टहलने लगा था जिस पर कि नमिता बैठी हुई थी । नमिता ने जबरन अपने लहजे में मिठास घोलकर उसे अपने पहलू में बैठने को कहा लेकिन उसने ऐसी कोई कोशिश न की ।

“क्यों परेशान हो ?” - उसने पूछा - “फिर कुछ हो गया ?”

वो उसके सामने ठिठका, दो बार थूक निगली जिस की कोशिश में उसके गले की घंटी उछली ।

“नहीं, कुछ नहीं हुआ ।” - फिर बोला - “मैं भगोड़े के रोल से आजिज आ गया हूं ।”

“भगोड़े तुम अपनी मर्जी से बने हुये हो ।”

“ऐसा ?”

“हां । सवाल हो तो बोल देना याद्दाश्त चली गयी । एकाएक लौट आयी तो तुम भी लौट आये ।”

“और तू ? तू क्या बोलेगी ?”

“हम दोनों एक साथ होंगे, एक दूसरे का साथ देंगे तो मेरे खास कुछ बोलने की जरूरत नहीं पड़ेगी ।”

“क्या मतलब हुआ इसका ? आखिरकार फैसला कर लिया कि मेरे साथ ही रहेगी ?”

“मैं” - वो सावधान स्वर में बोली - “कोशिश कर देखने को तैयार हूं ।”

“कोशिश !”

"तुम इतने बदल जो गये हो ! तुम वो सदा कहां जान पड़ते हो जिससे मैंने शादी की ! जिसके साथ मैंने तीन साल गुजारे !"

"तू वो ही नमिता है ? तेरे में कोई तब्दीली नहीं ?"

"ऐसा तो नहीं है । मेरे में भी तब्दीली है, लेकिन उस तब्दीली की वजह तुमने खुद ही बयान की थी । तुमने खुद कहा था कि मैं.. .सम्मोहन में जकड़ी हुई थी । थी ! थी बोला मैंने ।"

"सुना मैंने । और जो काम एक बार हुआ, वो दोबारा तो हो नहीं सकता ! क्या !"

"तुम्हारे में आयी इंकलाबी तबीली की रू में नहीं हो सकता ।"

वो उसके पहलू में बैठ गया, उसने अपलक उसकी तरफ देखा ।

"क्या देखते हो ?" - वो विचलित भाव से बोली ।

"वजह" - वो बोला - "मेरे में आयी तब्दीली है या वो होल्ड है जो मेरा तेरे पर बन गया है ?"

"आजमा के देखो ।"

"कैसे ?"

"इकबालिया बयान और चिट्ठी फाड़ दो, पता चल जायेगा कि मेरे में तब्दीली उस वजह से आयी या किसी और वजह से ।"

"क्या कहने !" - वो उठ खड़ा हुआ - "बिल्कुल ही घौंचू समझती है मेरे को ? इतनी मुश्किल से हाथ आया तुरुप का पत्ता मैं खुद पीट लूं ! औरत की फितरत यूं बदलती है ? एक बार तेरे सिर पर लटकती वो तलवार हटी नहीं कि तू मेरी वाट लगा देगी । और फिर वो ही सपना देखने लगेगी जो हमेशा से देखती चली आ रही है ।"

"कौन-सा सपना ?"

"तेरे को नहीं मालूम कौन-सा सपना ? एक ही तो पसन्दीदा सपना है तेरा । ये सा सपना ।"

उसने अंगूठे और तर्जनी उंगली से सिक्का उछालने का अभिनय किया ।

"ये झूठ है ।" - वो गुस्से से बोली, अपने गुस्से के अभिनय को मजबूत करने के लिये वो उछल कर खड़ी हुई - "सरासर झूठ है ।"

"क्या झूठ है ? नहीं था तेरा सपना कि तू नोटों के पहाड़ पर बैठी हो ?"

"था, लेकिन एक सपने की बिना पर जिन्दगी नहीं चलती । सपने कौन नहीं देखता ! सब देखते हैं । लेकिन सपने टूटते भी तो हैं । समझ लो कि मेरा सपना भी टूट गया ।"

"मैं उसके टुकड़े बीनकर जोडूंगा और शिनाख्त करूंगा कि वो तेरा ही सपना है, तब तक" - एकाएक बिना किसी चेतावनी के वो टैरेस के ग्लास डोर की ओर बढ़ चला - "चलता हूं ।"

ज्यों ही वो टैरेस पर पहुंचा, उसने पैरों में से हील वाली सैंडल उतारीं और पहले से ही सोफे के पीछे छुपाकर रखे अपने वाकिंग शूज पहने । फिर दबे पांव वो टैरेस के ग्लास डोर पर पहुंची ।

वो उसे टैरेस से परे पेड़ों के बीच की पगडण्डी पर दिखाई दिया ।

दरवाजा खोलकर वो बाहर निकली और टैरेस से नीचे उतरकर आगे उस पगडण्डी के दहाने पर पहुंची ।

आगे सदा गायब हो चुका था ।

दबे पांव, कैसी भी आवाज न होने देने का भरसक प्रयत्न करती वो पगडण्डी पर आगे बढ़ी ।

वातावरण में उस वक्त चांद की रोशनी छिटकी हुई थी, लेकिन पेड़ों की ओट की वजह से वो सीधे पगडण्डी पर नहीं पड़ रही थी ।

खामोशी से वो पगडण्डी पर चलती रही ।

एकाएक वो यूं ठिठकी कि जड़ हो गयी ।

कोई पचास गज आगे वो वहां ठिठका खड़ा था जहां कि पगडण्डी सड़क से मिलती थी ।

एकाएक वो घूमा और पगडण्डी पर वापिस उसकी तरफ चलने लगा ।

बड़ी मुश्किल से वो अपनी जगह से हिली और उसने पगडण्डी छोड़ कर एक पेड़ के तने की ओट ली ।

वो उससे नौ दस गज दूर आकर खड़ा हुआ, उसकी गर्दन यूं तनी और टेढ़ी हुई जैसे कोई आहट लेने की कोशिश कर रहा हो ।

उस वक्त वातावरण में कोई आवाज थी तो वो हवा की वजह से पत्तियां सरसराने की थी या एक बार दूर कहीं कुत्ता भौंका था, वर्ना लगभग आधी रात को सर्वत्र सन्नाटा व्याप्त था ।

फिर उसकी तन्द्रा टूटी, उसके जिस्म में हरकत आयी और वो पगडण्डी से पार पेड़ों के झुरमुट में दाखिल हो गया ।

परे अंधेरे में उसके पांव के नीचे आ के कोई टहनी टूटी, उसके किस्म ने किसी झाड़ी से रगड़ खा के आवाज की ।

लगता था वो सड़क से समानान्तर पेड़ों के बीच से आगे बढ़ रहा था ।

वो क्या करे ?

पीछे जाने की हिम्मत करे या लौट जाये ?

उसने हिम्मत ही की लेकिन उसके पीछे जाने की जगह वो पगडण्डी के दहाने पर पहुंची और सड़क के किनारे उस दिशा में चलने लगी, जिधर पेड़ों के बीच सदा बढ़ रहा था

। उसे कोई आहट नहीं मिल रही थी लेकिन वो जानती थी कि उसकी मंजिल उधर ही आगे कहीं थी ।

सड़क पर बिजली की रोशनी थी जिसकी वजह से वो अपने आपको बुरी तरह से एक्सपोज्ड महसूस कर रही थी । फिर भी उसने आगे वहां तक जाने का दृढ़ निश्चय किया जहां कि होटल कोकोनट ग्रोव की छ: मंजिला इमारत खड़ी थी ।

क्या पता वो वहीं ठहरा हुआ हो !

होटल के ऐन पहले के आखिरी क्रासिंग पर वो ठिठक गयी ।

अगर वो होटल में ठहरा हुआ तो उस क्रासिंग को पार करना उसके लिये अवश्यम्भावी था ।

तभी वो उसे दिखाई दिया ।

जहां पेड़ खत्म होते थे, वहां एक पतली सड़क थी । उस पर एक कार खड़ी थी जिसमें कि वो सवार हो रहा था । कार किसी गहरे रंग की जेन थी जिसकी हैड और टेल लाइट्स जली तो उसने देखा कि उस पर कर्नाटक की नम्बर प्लेट थी । हैडलाइट्स जलते ही वो एक बिजली के खम्बे की ओट में हो गयी ।

कार हिचकोले लेती चौराहे पर पहुंची और आगे मेन रोड की ओर बढ़ चली ।

खम्बे की ओट से ही वो तब तक उसका नजारा करती रही, जब तक कि वो निगाहों से ओझल न हो गयी ।

तब उसने चैन की लम्बी सांस ली और खम्बे की ओट से निकली ।

उसकी मेहनत जाया नहीं गयी थी, अब वो जानती थी कि जो कार सदा के कब्जे में थी, वो कैसी थी और वो उसे कहां खड़ी करता था ।

कल उसके काटेज से पांव पांव रुखसत होने के बाद अपनी वैन पर सवार होकर वो उससे पहले वहां पहुंच सकती थी और फिर खामोशी से उसकी कार के पीछे लग सकती थी ।

***

अगले रोज सूरज डूबने के बाद ही वातावरण में धुंध छाने लगी जो कि और दो घंटों में काफी गहरी हो गयी । उस रात सदा जब काटेज से रुखसत हुआ तो उसका पीछा करने में उस धुंध ने भी उसका साथ दिया ।

साइड रोड से निकलकर केन ने वो मेन रोड पकड़ी जो चर्च रोड कहलाती थी और जिससे आगे मनोरी गोरई रोड थी ।

शायद धुंध की वजह से ही उस रोज वो जल्दी - नौ बजे - आया था और जल्दी - दस बजे से थोड़ी देर पहले - रुखसत हुआ था । उसके पीछे लगते ही उसने अपनी वैन के स्पीडोमीटर की रीडिंग नोट कर ली थी ताकि उसे अन्दाजा रहता कि वो कितनी दूर तक उसके पीछे गयी थी ।

सड़क पर ज्यादा ट्रैफिक नहीं था लेकिन इतनी खाली भी नहीं थी कि उसे खबर लग जाती कि कोई गाड़ी उसके पीछे लगी थी, या वो उसकी वैन को पहचान लेता । पीछा करना नमिता को इसलिये भी सुविधाजनक लग रहा था क्योंकि उस माहौल में गाड़ी तेज चलाना सम्भव नहीं था ।

कोई छ: किलोमीटर गाड़ी यूं ही चली ।

आगे उसने मनोरी मर्वे रोड पकड़ी ।

उससे वो थोड़ा ही आगे बड़ा तो उसने जेन को एक तंग, अंधेरी साइड रोड पर उतार दिया । उसके पीछे नमिता ने अपनी गाड़ी डाली तो देखा उसके दहाने पर बोर्ड लगा था - विट्ठल राव रोड ।

उस सड़क पर क्योंकि ट्रैफिक नहीं था इसलिये जेन और अपने बीच फासला रखना उसकी मजबूरी था । इसीलिये थोड़ी देर बाद जब उस सड़क में एक खम आया तो खम से पार निकलने के बाद उसे अगली कार की टेल लाइट न दिखाई दी ।

हड़बड़ाकर उसने रफ्तार बढ़ाई ।

कोई फायदा न हुआ ।

जेन आगे से गायब थी ।

उसने अपनी वैन को रोका और सोचने लगी ।

कहां गयी ?

एक ही जवाब था ।

रास्ते में कहीं कोई साइड रोड थी जो कि अंधेरे और धुंध में उसे दिखाई नहीं दी थी ।

बड़ी मुश्किल से उसने अपनी वैन को यू टर्न दिया और मंथर गति से उसे वापिस चलाने लगी । कहीं से आती कार के इंजन की आवाज के लिये उसके कान खड़े थे ।

आगे बाईं तरफ से कहीं से उसे आहट मिली ।

उसने अपनी कार को रोका, इग्नीशन आफ किया और कान लगाकर सुनने लगी ।

लो गियर में हिचकोले लेती चलती कार की मद्धम-सी आवाज उसे सुनाई दी ।

वो उस बात का सबूत था कि आगे कोई साइड रोड बराबर थी और वो कच्ची सड़क थी जिस पर हाई गियर में रफ्तार से कार चलाना सम्भव नहीं था ।

उसने इंजन स्टार्ट करके कार को आगे बढ़ाया तो थोड़ी देर में उसे वो सड़क दिखाई दे गयी । उसके दहाने पर झाड़ियों का ऐसा झुरमुट था कि सड़क से नावाकिफ शख्स उसे दिन में भी मिस कर सकता था ।

उसने फिर इंजन बन्द किया और कान लगाकर सुनने लगी ।

जो मद्धम-सी आवाज उसे सुनाई दी उससे साफ जाहिर होता था कि जेन उसी सड़क पर गयी थी और जैसी वो सड़क थी उससे लगता नहीं था कि आगे वो बहुत दूर तक जाती थी ।

क्या वो पीछे जाये ?

उसके दिल ने गवाही न दी ।

रात की उस घड़ी उस उजाड़ सड़क पर उसकी मौजूदगी छुपना नामुमकिन था । ऊपर से उस ऊबड़-खाबड़ सड़क पर उसकी झोल-झाल वैन का बिगड़ जाना बिल्कुल ही तबाही का आलम पैदा करता । जमा वो सदा को वहां अपनी मौजूदगी का क्या जवाब देती !

उसने लौट जाना ही मुनासिब समझा ।

दिन में वो वहां फिर आ सकती थी । तब वो अपनी उस सड़क पर मौजूदगी की कोई वजह भी बयान कर सकती थी; सबसे आसान ये होती कि भटक गयी थी । मनोरी मर्वे रोड की बाबत उसे मालूम था कि वो आगे फैरी स्टेशन पर, जहां से कि मनोरी क्रीक पार करने के लिये स्टीमर चलते थे, जाकर खत्म होती थी । दिन में वो कह सकती थी कि फैरी स्टेशन जाना चाहती थी लेकिन उधर भटक गयी थी ।

दिन में उसे उस सड़क की शिनाख्त कैसे होगी ?

उसने स्पीडोमीटर पर निगाह डाली ।

नौ पॉइंट तीन किलोमीटर ।

दोहरी शिनाख्त के लिये उसने वहां कोई निशानी लगाने का फैसला किया ।

निशानी !

क्या ?

उस पड़ी एक ही निशानी उसे सूझी ।

उसने अपने हैंडबैग में से अपनी लिपस्टिक निकाली, कार के डैशबोर्ड के खाने में से एक टोर्च बरामद की और बाहर निकली । उसने कार की रोशनी 'टी' के आकार के तिराहे पर डाली तो पाया कि झाड़ियों में घुसती कच्ची सड़क वाकई कच्ची थी, लेकिन जिस सड़क पर उसकी कार खड़ी थी वो तारकोल की थी और कदरन बेहतर हालत में थी ।

उसने नीचे झुककर सड़क के झाड़ियों की ओर वाले किनारे पर लिपस्टिक से एक-एक फुट के फासले पर तीन लम्बी लकीरें खींचीं । उस प्रक्रिया में उसकी कीमती लिपस्टिक पूरी-की-पूरी चुक गयी ।

उसे यकीन था कि दिन में वो वहां लौटती तो सूरज की रोशनी में सड़क पर समानान्तर खिंची वो तीन लाल लकीरें उससे छुपी न रहतीं ।

वो कार में सवार हुई ।

उसने बड़ी पर निगाह डाली तो पाया साढ़े दस बजने को थे ।

उसने इग्नीशन आन किया और वापिसी का सफर शुरू किया ।

सदा का मिजाज उस रोज भी अनमना था लेकिन उसका भोग लगाने में उसने उस रोज गुरेज नहीं किया था । बाद में उसने आइन्दा ताल्लुकात की बाबत संजीदा बात करने की भी कोशिश की थी और संकेत दिया था कि उन्हें भारत से बाहर किसी नामालूम जगह

पर शिफ्ट कर जाना चाहिये था । उसने कहा था कि वो उस बाबत विचार करेगी । जैसे कि उसके पास चायस हो ।

अभी तक वो यही सोच सोचकर कोठारी को कोसती रही थी कि उसने उसे धोखा दिया था लेकिन अब उसे अहसास हो रहा था उस पर शक करके, उस पर अविश्वास जाहिर करके उसने कोठारी को धोखा दिया था । इसका सबूत ये भी था कि वो निगाहों से दूर हो गया था तो सदा के सामने समर्पण करते वक्त उसे वो विरक्ति नहीं हुई थी, जो कि होनी चाहिये थी; आखिर सदा को रास्ते से हटाने के पीछे ये भी तो मिशन था कि वो हमेशा के लिये कोठारी की हो पाती ।

इसका क्या मतलब था ?

क्या ये कि उसकी सैक्स की भूख सर्वोपरि थी, भले ही वो किसी के साथ हो ? भले ही सदा के साथ हो, कल तक वो जिसकी सूरत से बेजार थी ?

पहली बार कोठारी को लेकर पश्चाताप की भावना महसूस करती वो काटेज पर वापिस लौटी ।

उसकी वैन सामने कम्पाउन्ड में दाखिल हुई तो एकाएक उसके जिस्म में ठण्डक की लहर दौड़ गयी ।

कम्पाउन्ड में, उसकी अपनी हैडलाइट से रोशन, पुलिस की जीप खड़ी थी ।

कार को गैराज में खड़ा करके वो वापिस लौटी तो उसने इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर को जीप से बाहर उसके पहलू से टेक लगाये खड़ा पाया ।

“अरे ! इन्स्पेक्टर साहब” - अन्दर से हिली हुई प्रत्यक्षत: सन्तुलित भाव से वो बोली - “आप यहां क्या कर रहे हैं ?”

“मैं बस जा ही रहा था ।” - नगरकर बोला ।

“लेकिन आये कैसे ?”

“आपसे एक-दो बातें पूछनी थीं ।”

नमिता ने बड़े नुमायशी अन्दाज से कलाई घड़ी पर निगाह डाली ।

“रात के ग्यारह बजे ?” - वो बोली ।

“अच्छा ! बज गये ग्यारह ?”

“बड़ा अच्छा टाइम चुना पूछताछ का !”

“क्या करें ? पुलिस की नौकरी ही ऐसी है । टाइम देखकर कहां चलती है ?”

“मैं इस वक्त तक सो चुकी होती हूं ।”

“शुक्र है कि आज ऐसी कोई बात नहीं ।”

“वो.. .क्या है कि.. .आज मेरा मन खिन्न था इसलिये ड्राइव के लिये निकल गयी थी ।”

“आई सी । तो फिर मैं अपने सवाल...”

“आप जब चाहें चले आ सकते हैं ? आने से पहले फोन करने की कर्टसी दिखाना तक जरूरी नहीं समझते ?”

“मैडम, एडवोकेट शाह से मुलाकात होने से पहले तक तो आप ऐसी जुबान नहीं बोलती थीं !”

“मैंने कुछ गलत कहा ?”

“नहीं, गलत तो नहीं कहा...”

“आइये, भीतर चलते हैं ।”

“नहीं, यहीं ठीक है । मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा । बस एकाध सवाल ही पूछना है मैंने ।”

“पूछिये ।”

“आपको अपने पति की कोई खोज खबर है ?”

“पति की खोज खबर ! कैसे होगी ! होती तो इस बाबत मैंने आप लोगों को खबर न की होती ?”

“उम्मीद तो है कि की होती ।”

“ते फिर ऐसा मूर्खों जैसा सवाल पूछने का क्या मतलब ?”

“आप मुझे मूर्ख कह रही हैं ?”

“आपके सवाल को ।”

“मैडम, न मैं मूर्ख हूं न मेरा सवाल मूर्खों जैसा है । सवाल इसलिये है क्योंकि हमें इस बात की सम्भावना दिखाई दे रही है कि आपके पति अभी भी जिन्दा हैं ।”

नमिता हकबकाई, उसने जोर से थूक निगली, फिर अपने आपको काबू में किया ।

“यानी कि अब आप पलटी मार रहे हैं !” - वो बोली - “अपने आफिस में एडवोकेट गुंजन शाह के सामने तो आपका स्टैण्ड कुछ और ही था । तब तो आपका ऐसा खयाल था कि मेरे पति का कत्ल हो गया था और मैं कत्ल की साजिश में शरीक थी ।”

“मेरी राय में केस का दूसरा पहलू भी गौरतलब है ।”

“आपकी राय में !” - नमिता के स्वर में व्यंग्य का पुट आ गया - “आपका मतलब है आपके एसीपी मनोहर पावटे की राय में !”

“हमारी राय में । हम दोनों की राय में । महकमे की राय में ।”

“मुझे आपकी राय से इत्तफाक नहीं । कैसे सोच लिया आपने कि मेरे पति अभी भी जिंदा हो सकते हैं ? अब क्या आप ये कहना चाहते हैं कि एडवोकेट कपिल कोठारी बेगुनाह है !”

“नहीं । हमें यकीन है कि आपके पति के कत्ल की साजिश में एडवोकेट कोठारी का हाथ बराबर था, लेकिन लगता है कि आपके पति उसके घातक वार से बाल-बाल बच गये ।”

“बच गये तो कहां हैं ? वापिस क्यों नहीं लौटे ? लौट के अपने हमलावर की खबर क्यों न ली ? उसे गिरफ्तार क्यों न कराया ?”

“क्योंकि हो सकता है कि जो वार उन पर हुआ, उसमें उनकी याददाश्त चली गयी हो । ऐसा हो जाता है । सिर पर वार पड़े तो वक्ती तौर पर याददाश्त चली जाने की मिसाल हमने देखी हैं । इसीलिये हमने सोचा कि आखिरकार शायद उन्होंने आपसे सम्पर्क किया हो !”

“मेरे से !” - नमिता के स्वर में फिर व्यंग्य का पुट आ गया ।

“हां ।”

“जिसने कि उनके कत्ल की साजिश में शिरकत की !”

“जरूरी नहीं कि आपके रोल की उन्हें खबर हो ।”

“इन्स्पेक्टर साहब, ये तमाम बातें आपके आफिस में हमारे बीच पहले भी हो चुकी हैं ।”

“हो चुकी हैं, मैडम, लेकिन ऐसा तो कोई नियम नहीं होता न कि जो बात पहले हो चुकी हो, वो दोबारा नहीं हो सकती ! या होता है ?”

“वो तो ठीक है लेकिन...”

“तो आपका कहना है कि आपको अपने पति की कोई खोज खबर नहीं ?”

“हां ।”

“होती तो फौरन पुलिस को इत्तला देतीं ?”

“हां ।”

“होगी तो देंगी ?”

“हां । बराबर । विदाउट फेल ।”

“शुक्रिया । फिलहाल इतना ही काफी है । नमस्ते ।”

वो जाकर जीप में सवार हो गया । उसके ड्राइवर हवलदार ने तत्काल जीप आगे बढ़ा दी ।

भीतर से आन्दोलित नमिता वहीं जड़-सी खड़ी जीप को वहां से जाता देखती रही ।

रात की उस घड़ी, उस इनक्वायरी के साथ पुलिस का वहां आना बुरी खबर थी । सदा अपने पहले फेरे वाले टाइम पर आया होता तो वो अभी वहीं होता । पुलिस की वो आमद खतरे की घंटी थी । सदा का वहां आना बन्द होना जरूरी था । पुलिस के हाथ जरूर कोई खास ही जानकारी लगी थी जिसका कोई हिंट इन्स्पेक्टर नगरकर ने नहीं दिया था लेकिन जिसकी वजह से वो वहां आया था । उससे इस बात की भी सम्भावना प्रबल होती थी कि काटेज की निगरानी हो रही थी ।

अब उसने किसी तरह से सदा को चेतावनी देनी थी कि उसका काटेज पर आना खतरे से खाली नहीं था और ऐसा उसने उसकी खातिर नहीं, अपनी खातिर करना था । वो

वहां पकड़ा जाता तो यकीनन यही समझता कि उसने, उसकी बीवी ने, उसकी मुखबिरी की थी । नतीजतन बदले की भावना से प्रेरित होकर वो कोठारी का इकबालिया बयान और उसकी चिट्ठी पुलिस को सौंप देता ।

अब और भी ज्यादा जरूरी था कि उन कागजात का वजूद जल्द-अज-जल्द खत्म होता ।

***

अगले रोज दोपहरबाद इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर की एसीपी मनोहर पावटे से मुलाकात हुई । उसने पिछले रोज की रिपोर्ट अपने आला अफसर को पेश की ।

"हूं ।" - पावटे ने विचारपूर्ण हुंकार भरी ।

"ये औरत यकीनन किसी फिराक में है ।" - नगरकर तनिक उत्तेजित स्वर में बोला - "वर्ना क्यों वो इतनी रात गये, धुंध के माहौल में उस वाहियात जगह गयी ?"

"वहां न गयी । कहीं भी गयी । तुमने खुद तो कहा वो कह रही थी कि उसका मन खिन्न था इसलिये ड्राइव के लिये निकल गयी थी । यूं ड्राइव के लिये निकले शख्स का कोई लक्ष्य थोड़े ही होता है ! जिधर सींग समायें, निकल पड़ता है ।"

"वीरान सड़क पर भी ! जहां धुंध में कुछ दिखाई न दे रहा हो !"

पावटे सोचने लगा ।

"सब-इन्स्पेक्टर कदम ने मनोरी मर्वे रोड तक उसका पीछा किया । उसके बाद उसे पता ही न चला कि वो कहां गायब हो गयी !"

"किसी साइड रोड पर उतर गयी होगी जिसकी कि धुंध में कदम को खबर नहीं लगी होगी !"

"हो सकता है, लेकिन ये हैरानी की बात नहीं कि ऐसी धुंध ने, जहां कि कोई व्हीकल ड्राइवर गुम हो सकता हो, उसे विचलित न किया ! लौट पड़ने की जगह वो पता नहीं आगे कहां चली गयी !"

"लौटी तो बराबर वर्ना वो तुम्हें काटेज पर न मिली होती !"

"फौरन न लौटी । कदम कहता है उसने काफी देर उसके सड़क पर वापिस दिखाई देने का इन्तजार किया, जब ऐसा न हुआ तो वापिस थाने लौटा ।"

"वापिसी में कोई और रास्ता पकड़ लिया होगा !"

"हां । शायद ।"

"तुम इतनी रात गये उसके कॉटेज पर क्यों गये ?"

"उस पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने के लिये । उसको ये जताने के लिये कि गुंजन शाह से मात खाकर हमने बिल्कुल ही उसका पीछा नहीं छोड़ दिया था । मेरा खयाल था कि उससे कुछ चौंकाने वाले, हिलाने-डुलाने वाले सवाल पूछे जाते तो वो कोई गलती कर

सकती थी, गलतबयानी कर सकती थी । इसीलिये मैंने उससे पूछा था कि क्या उसे अपने पति की कोई खोज-खबर थी !"

"क्या फायदा ?"

"क्यों नहीं फायदा ? हम सदानन्द पुणेकर को मरा तसलीम तो नहीं कर चुके ! अभी भी हमारे पास उसकी बतौर मिसिंग पर्सन ही रिपोर्ट है ।"

"वो तो ठीक है लेकिन.. .मुझे लगता है तुम्हारे खयाल से वो अपना मूड बदलने के लिये ड्राइव पर नहीं निकली थी, किसी नामालूम खुफिया जगह पर अपने पति से मिलने निकली थी ।"

"मेरा ये खयाल तो नहीं है, क्योंकि ये बहुत दूर की कौड़ी है, हमारे सामने ऐसा कोई क्लू नहीं है जो ये स्थापित कर सकता हो कि सदानन्द पुणेकर जिन्दा है । फिर भी अगर वो जिन्दा है और ये बात बीवी को मालूम है तो उसे ये भी बराबर मालूम है कि वो उसके यार का कातिल है । इस बात में ये बात जोड़िये कि पुणेकर उसे पीछे कंगाल छोड़कर गया है । अब जो नतीजा निकलता है, वो ये है कि कल रात अगर वो पुणेकर से मिलने निकली थी तो उसका एक ही मिशन था ।"

"कत्ल !"

"बराबर ।"

"बदला लेने के लिये ?"

"और किसलिये ?"

"बदला ये कि उसको कंगाल छोड़ने वाले का, उसके यार को खल्लास करने वाले का बेड़ा गर्क हो ?"

"हां ।"

"इसके लिये उसे अपने हाथ खून से रंगने की क्या जरूरत है ? वो हमारे पास आती, उसे गिरफ्तार करने में हमारी मदद करती तो उसका ये काम तो हमारे जरिये ही हो जाता ! एडवोकेट कोठारी के कत्ल के इलजाम में सदानन्द पुणेकर फांसी चढ़ जाता तो वो तब भी उसकी बीवी होती और फिर दौलतमन्द बेवा होती ।"

"फांसी न होती तो ?"

"तो उसे तलाक दे देती । एक कातिल से तलाक हासिल करना क्या मुश्किल काम होता ! तब भी प्रापर्टी सैटलमेंट में उसके हाथ ढेर माल लगता ।"

"यूं उसे कबूल करना पड़ता कि कोठारी उसका यार था । यूं वो एक चरित्रहीन बीवी करार दी जाती ।"

"वो क्यों कबूल करती कि कोठारी उसका यार था ? उसने ये नहीं कहना था कि पुणेकर उसके यार का कातिल था, उसने कहना था कि वो कातिल था । बस ।"

"पुणेकर इस बात की दुहाई देता तो ?"

“तो वो हसद के मारे एक ऐसे शख्स का प्रलाप समझा जाता जो कि अपना दिमागी तवाजन खो बैठा था ।”

नगरकर लाजवाब हो गया ।

“आप चिट्ठी को भूल रहे हैं ।” - फिर एकाएक बोला ।

“चिट्ठी !”

“वो चिट्ठी जो वाटरप्रूफ पीले लिफाफे में बीवी ने मैंगलोर भेजी ।”

“अच्छा, वो चिट्ठी ! मेरा ध्यान दूसरी तरफ था । जो उसने कोठारी को भेजी !”

“अपनी तरफ से कोठारी को भेजी लेकिन फर्क कीजिये किसी तरीके से पड़ वो सदानन्द पुणेकर के हाथ गयी । उसने चिट्ठी अपने कब्जे में की और लिफाफे को सोनाटा में प्लांट करके सोनाटा का एक्सीडेंट स्टेज कर दिया । अगर चिट्ठी में वो बातें दर्ज थीं, जो हम समझते हैं कि दर्ज थीं तो वो इस बात का सबूत थी कि बीवी अपने पति के कत्ल की साजिश में बराबर की हिस्सेदार थी । अगर वो चिट्ठी पुणेकर के पास है तो यूं समझिये चिट्ठी उसकी पकड़ में न आयी, अपनी बीवी की मुंडी उसकी पकड़ में आयी । जहां तक चिट्ठी का वजूद है, बीवी पुणेकर के बारे में अपना मुंह नहीं खोल सकती । फिर वो हमारे पास कैसे आ सकती थी ?”

“दम है तुम्हारी बात में ।”

“लिहाजा उसका खुद खून से हाथ रंगना जरूरी है, अगर उसने अपनी जान बचानी है तो उसे अपने पति की जान लेनी होगी क्योंकि ऐसा किये बिना चिट्ठी उसके हाथ नहीं लगने वाली ।”

“ठीक । इसी बात को हम आगे बढ़ायें तो कह सकते हैं कि जब तक वो चिट्ठी पुणेकर के कब्जे में है, तब तक वो पकड़ा भी जाये तो कानून उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता । चिट्ठी से साबित होता था कि उसकी जान लेने की साजिश रची गयी थी जिससे अपने आपको बचाने का उसे अख्तियार था । वो चिट्ठी बीवी की साजिश में बराबर की पार्टनरशिप भले ही साबित न कर सके, ये तो स्थापित कर सकती थी कि बीवी ने कोठारी को कत्ल के लिये मोटीवेट किया था, उकसाया था । कोठारी की मौत के बाद गुनाह का फोकस तो अब बीवी पर ही बनता है । जैसे अभी हमने कहा कि बीवी अपने कातिल पति को तलाक दे सकती थी और सैटलमेंट में मोटा माल हासिल कर सकती थी, वैसे अब ये भी तो कह सकते है कि पति कत्ल की साजिश रचने वाली खतरनाक बीवी से हफ्ते-खर्चे का एक काला पैसा भी अदा किये बिना तलाक हासिल कर सकता था ।”

“फिर जेल भी वो नहीं, उसकी बीवी जाती !”

“बिल्कुल ! वो चिट्ठी सामने आयी तो देख लेना एडवोकेट गुंजन शाह भी, जिसने कि हमारी बोलती बन्द कर दी थी, बीवी की हिमायत करना छोड़कर भाग जायेगा ।”

"सर, बीवी की तो मजबूरी है चिट्ठी की बाबत खामोश रहने की, क्योंकि वो उसे ही फंसा देगी, पुणेकर की क्या मजबूरी है ? अगर ऐसी विस्फोटक चिट्ठी उसके पास है, जो कि उसे बेगुनाह और उसकी बीवी और उसके यार को गुनहगार साबित कर सकती है तो वो सामने क्यों नहीं आता ? एक भगोड़े की तरह छुपते फिरने की जगह वो क्यों सामने आकर चिट्ठी को हजार मन के पत्थर की तरह अपनी बीवी के सिर पर नहीं मारता ?"

"क्योंकि उसकी हालत सांप छछूंदर जैसी है ।"

"क्या मतलब ?"

"वो गौस्टर है जो बिग बॉस की, 'भाई' की, निगाहों में गिर चुका है । अन्डरवर्ल्ड में ऐसे शख्स की एक ही सजा होती है । मौत । उसका सामने आना खुदकुशी करना होगा ।"

"ऐसा कैसे चलेगा ? कब तक चलेगा ?"

"क्या पता ?"

"हमारा केस कैसे हल होगा ? हमें असलियत की खबर कब लगेगी ? जो खाका आप खींच रहे हैं, उससे तो लगता है कि कभी लगेगी ही नहीं । साजिश करने वाले दो जनों में से एक मर गया, दूसरे की जुबान को ताला है और जिसके खिलाफ साजिश थी, वो जुदा वजुहात से सामने नहीं आ सकता तो हम इस केस में क्या कर रहे हैं ?"

"हम बीवी पर निगाह रख रहे हैं ।" - पावटे हंसता हुआ बोला - "क्योंकि समझते हैं कि हम बीवी के जरिये पति तक पहुंच जायंगे ।"

"इसका मतलब तो ये हुआ कि वो दोनों एक दूसरे के कांटेक्ट में हैं ।"

"तुम्हें मालूम है कि हुआ वर्ना क्यों तुमने सब-इन्स्पेक्टर कदम को बीवी के पीछे लगाया होता, वर्ना क्यों तुम उसकी नाकामी की खबर पाकर खुद बीवी की फिराक में निकल पड़े होते ? बकौल अपने उसे कोई साइकालोजीकल ट्रीटमेंट देने के लिये ।"

"खुश्की उड़ा रहे हैं ?"

"अरे, नहीं, भई ।"

"पति का ऐसी बीवी से अभी भी ताल्लुक बनाये रखने का क्या मतलब ?"

"एक मतलब मुमकिन है तो सही ।"

"क्या ?"

"दिल के हाथों मजबूर होगा । देखा नहीं बीवी कितनी हसीन है ! वो उसकी कमजोरी होगी । वो उसे हर हाल में अपना बनाकर रखना चाहता होगा ।"

"आस्तीन में नागिन पालना चाहता होगा !"

"मर्द के मिजाज का क्या पता लगता है ! समझ लो ये भी एक किस्म की एडवेंचर है । एडवेंचर्स के लिये तुम जानते ही हो कि लोग बाग कैसे कैसे जान के खतरे मोल लेते हैं !"

"हूं ।"

"अब तुम क्या करोगे ?"

“क्या करूंगा ? आपने तो मुझे कनफ्यूज कर दिया ।”

“फिर भी ?”

“फिर भी फिलहाल तो मैं ये ही मान के चलूंगा कि बीवी के लिये वो चिट्ठी जीवन-मरण का सवाल है । वो उसे हर हाल में हासिल करने की कोशिश करेगी इसलिये कैसे न कैसे उस तक पहुंच बनायेगी जिसके पास कि चिट्ठी है ।”

“पुणेकर !”

“और कौन ? मैं और ज्यादा शिद्दत से बीवी की निगरानी शुरू करता हूं । मेरा दिल गवाही देता है कि कोई नतीजा निकलेगा तो बीवी की निगरानी से निकलेगा, वर्ना निकलेगा ही नहीं ।”

“गुड । मैं तुम्हारी बात से इत्तफाक जाहिर करता हूं । बाई दि वे, तुमने संदीप नाडकर्णी की निगरानी का इन्तजाम किया ?”

“हां । आपका हुक्म हुआ था तो करना ही था ।”

“अब ये बात कनफर्म हो चुकी है कि पुणेकर के कब्जे में साठ लाख रुपये की फेस वैल्यू के शेयर थे जिनकी सेल प्राइस साठ लाख से कई गुणा ज्यादा होगी । पुणेकर अगर जिन्दा है तो वो नाडकर्णी के जरिये उन शेयरों को बेचने की कोशिश कर सकता है । अगर ऐसा होता है तो दोनों की कम-से-कम दो मुलाकात होना जरूरी है; एक सर्टिफिकेट्स एनडोर्स करके सौंपने के लिये और दूसरी पेमेंट हासिल करने के लिये ।”

“बढ़िया । फिर तो उसकी निगरानी का जरूर कोई नतीजा निकलेगा ।”

***

दोपहर के करीब नमिता विट्ठल राव रोड पहुंची ।

उस वक्त चमकीली धूप निकली हुई थी, लेकिन तेज हवा चल रही थी । वो सुबह से ही चल रही थी और सुबह सवेरे कोहरे के जल्दी उठ जाने में वो भी वजह थी ।

पिछली रात की इन्स्पेक्टर नगरकर की काटेज पर आमद ने उसे काफी आन्दोलित किया था तो काफी सावधान भी किया था, इस वजह से वो वहां सीधे पहुंचने की जगह कई और सड़कों के चक्कर काटकर और फैरी स्टेशन तक जाकर वहां से उलटे लौटकर पहुंची थी । इस वजह से ये जानकारी उसके किसी काम की नहीं रही थी कि कॉटेज से झाड़ियों में छुपी उस कच्ची सड़क का फासला - जिस पर कि सदा की कार गायब हुई थी - नौ पॉइंट तीन किलोमीटर था ।

क्या फर्क पड़ता था ! - उसने सोचा - सड़क पर लिपस्टिक से निशानी भी तो लगाई थी ।

सड़क पर खिंची लाल रंग की तीन समानान्तरर लकीरें ।

जो कि उसे न मिलीं ।

खूब फाटकने के बावजूद न मिलीं ।

वजह यही हो सकती थी कि वो लकीरें मिट चुकी थीं ।

रात को ओस पड़ी थी, सुबह से तेज हवा चल रही थी जिससे धूल उड़ी थी और उसने ओस से नम हुई लकीरों को ढक दिया था ।

उसका मन वितृष्णा से भर उठा ।

पिछली रात की सारी मेहनत बेकार चली गयी थी ।

लेकिन शायद दिन की रोशनी में वो कच्ची सड़क को ढूंढ़ ले । आखिर उस पर टायरों से बने निशान भी तो हो सकते थे ।

वो खूब भटकी, कई झाड़ियां उसने टटोली, कच्चे रास्ते - कोई पगडण्डी से बड़ा तो कोई और बड़ा - भी उसे मिले लेकिन ऐसा कोई रास्ता न मिला जिस पर कार के टायरों के निशान बने हों । वहां जमीन भुरभुरी थी, मुमकिन था तेज हवा ने उन निशानों को भी हमवार कर दिया था ।

अब ?

अब उस रात फिर सदा की कॉटेज पर आमद का इन्तजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था ।

वो लौट पड़ी ।

***

इन्स्पेक्टर नगरकर अपने आफिस में बैठा उस रिपोर्ट पर मनन कर रहा था जो उसे सब-इन्स्पेक्टर कदम से हासिल हुई थी ।

पिछली रात धुंध की वजह से कदम को पता नहीं चला था कि मनोरी मर्वे रोड पर नमिता पुणेकर कहां गायब हो गयी थी, लेकिन आज उसे मालूम था कि वो उस वीरान साइड रोड पर उतर गयी थी जो कि विट्ठल राव रोड कहलाती थी ।

कदम की रिपोर्ट के मुताबिक आज भी वो विट्ठल राव रोड पर, कभी कार पर सवार तो कभी पैदल, भटकती रही थी और फिर वापिस लौट आयी थी ।

क्या था उस सड़क पर ?

कुछ था तो उस तक उसने अपनी पहुंच क्यों नहीं बनायी थी ?

नमिता नहीं जानती थी कि सड़क पर से लिपस्टिक के निशान मिट जाना, कच्ची सड़क उसे न मिलना, उसके लिये कितना हितकर साबित हुआ था !

बल्कि सदानन्द पुणेकर के लिये कितना साबित हुआ था !

अगर वो सड़क उसे मिल जाती तो कोई बड़ी बात नहीं कि पुणेकर अब तक गिरफ्तार हो चुका होता ।

खुद वो भी ।

***

नौ बजे तक वो न आया तो नमिता के सब्र का बांध टूटने लगा ।

वो जानती थी कि वो ग्यारह तक भी आ सकता था, उसके बाद भी आ सकता था, नहीं भी आ सकता था, फिर भी उतावली होने लगी ।

वो टैरेस पर जाकर चहलकदमी करने लगी लेकिन उसके मिजाज में तब भी कोई फर्क न आया तो वो ड्राइंगरूम में दाखिल हुई और सीधे बार पर पहुंची ।

उसने अपने लिए वोदका का जाम तैयार किया और उसके साथ वहीं एक बार स्टूल पर बैठ गयी ।

तब उसे पहली बार खयाल आया कि सदा ने उसके लिये जो चिड़िया का चुग्गा छोड़ा था, उसमें एक आइटम और भी जमा थी ।

बार का लिकर स्टॉक !

विस्की, रम, जिन, वोदका, वगैरह की बीस के करीब बोतलें अभी भी वहां मौजूद थीं जिन्हें उसके अलावा पीने वाला कोई नहीं था ।

आधे घंटे में उसने दो जाम हलक से नीचे उतारे और दो सिग्रेट पिये ।

फिर एकाएक वो उठ खड़ी हुई ।

वो काटेज से बाहर निकली और उसने पेड़ों के बीच का वो रास्ता पकड़ा जिस पर पिछली रात उसने सदा का पीछा किया था ।

वो आखिरी क्रासिंग पर पहुंची ।

वहां से उसे उस पतली सड़क का दहाना दिखाई दे रहा था जिस पर कि उसने सदा की कार खड़ी देखी थी और उसे उस पर सवार होते देखा था ।

वो अपने स्थान पर ठिठकी खड़ी अपना अगला कदम निर्धारित करने की कोशिश करने लगी ।

क्या वो पतली सड़क पर जाये और देखे कि आगे कार खड़ी थी या नहीं !

कैसे खड़ी हो सकती थी ?

वहां कार होती तो सदा उसे रास्ते में मिला होता ।

उसने जैसे-तैसे दस मिनट वहां गुजारे ।

फिर एकाएक उसे पतली सड़क की तरफ से आहट मिली ।

जैसे किसी के पांव के नीचे आ के कोई टहनी टूटी हो ।

फिर वो उसे दिखाई दिया ।

सिर्फ साया ।

लेकिन जो यकीनन सदा था ।

उसने हौले से उसे नाम लेकर पुकारा ।

साया ठिठका, फिर उसकी तरफ लपका ।

वो करीब पहुंचा ।

सदा ही था ।

पुणेकर ने भी उसे पहचाना ।

"अरे !" - वो हैरानी से बोला - "तू यहां क्या कर रही है ?"

"वापिस जाओ !" - वो सस्पेंसभरे लहजे से बोली ।

"वापिस जाऊं ! क्यों ?"

"पुलिस कॉटेज की निगरानी कर रही है ।"

"क्या !"

"मैं सच कह रही हूं ।"

"अभी कर रही है ?"

"नहीं, अभी तो नहीं कर रही ।"

"तुझे कैसे मालूम ?"

"मैंने यहां आने से पहले तसदीक की थी ।"

"निगरानी की बाबत मुझे मालूम कैसे है ?"

"कल रात लोकल थाने का एसएचओ इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर खुद काटेज पर आया था । वो मेरे से पूछ रहा था कि क्या मुझे तुम्हारी कोई खोज खबर थी !"

"अच्छा !"

"ये तक पूछ रहा था कि तुम कहां हो सकते थे !"

"क्या मतलब हुआ इसका ?" - उसके स्वर में चिंता का पुट आया - "वो समझते हैं कि मैं जिन्दा हूं ?"

"मुझे नहीं मालूम वो क्या समझते हैं लेकिन जो उसने कहा, मैंने बोल दिया ।"

"पुलिस वाले तुक्के मार रहे हैं । अंधेरे में तीर चला रहे हैं ।"

"अब मैं क्या बोलूं ? इन्स्पेक्टर का केस के किसी दूसरे पहलू पर जोर था, जो कि उन लोगों को हाल में ही सूझा था ।"

"दूसरा पहलू ! कौन-सा दूसरा पहलू ?"

"मुझे क्या मालूम !"

"उसने कुछ न बताया ?"

"वो क्यों बताता ? वो कुछ बताने नहीं, कुछ जानने आया था । बार बार पूछ रहा था कि क्या मुझे तुम्हारी खोज खबर थी ?"

"हूं ।"

"अब तुम क्या करोगे ?"

"कुछ तो करना ही होगा ।"

"क्या ?"

"सोचूंगा ।"

"जो सोचना है, अभी सोचो । देर करोगे तो पछताओगे । सच पूछो तो तुम्हारा यहां खड़े रहना भी ठीक नहीं । पुलिस की गाड़ी इस चौराहे से भी गुजर सकती है । अगर उन लोगों ने हम दोनों को साथ देख लिया तो मेरी भी शामत आ जायेगी ।"

"तेरी किसलिये ?"

"वो इलजाम लगायेंगे कि मैंने झूठ बोला था, मुझे तुम्हारी कोई खोज खबर नहीं थी ।"

"हूं । तो क्या करूं मैं ?"

"यहां से जाओ ।"

"कहां जाऊं ?"

"जहां से आये हो और कहां ! जो भी तुम्हारा खुफिया ठिकाना है, वहां जाओ और तब तक टिक के बैठो, जब तक पुलिस का निगरानी का शौक पूरा नहीं हो जाता ।"

"पता नहीं कब होगा ?" - वो बड़बड़ाया - "होगा भी या नहीं !"

"कभी तो होगा ।"

"मैं तब तक छुपा नहीं रह सकता ।"

"तो क्या करोगे ?"

"निकल लूंगा । तू साथ चल ।"

"क्या !"

"साथ चल मेरे । हां बोल ।"

"बोला ।"

"क्या ? क्या बोला ?"

"मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं ।"

"बढ़िया । मेरे को थोड़ा टाइम दे, मैं सब सैट करता हूं और फिर तेरे से कांटेक्ट करता हूं ।"

बिना किसी वार्निंग के वो एकाएक घूमा और तेज कदमों से चलता हुआ वहां से रुखसत हो गया ।

उसके निगाह से ओझल होते ही वो पूरी रफ्तार से पगडण्डी पर वापिस लौटी ।

सदा का गंतव्य स्थल क्योंकि उसे मालूम था इसलिये ऐन उसके पीछे लगना उसके लिये जरूरी नहीं था । पीछे लगने का वस्तुत: उसका इरादा भी नहीं था, वो तो उससे पहले विट्ठल रोड पहुंचना चाहती थी ।

उसके देर से रवाना होने से कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि पुलिस का जिक्र आया होने की वजह से सदा से उसे उम्मीद थी कि वो सीधा रूट छोड़ कर कोई गोलमोल रूट अख्तियार करके वहां पहुंचता ताकि उसे गारन्टी हो जाती कि कोई उसके पीछे नहीं लगा

हुआ था । वो इस बाबत सावधान होता इसलिये वो जानती थी कि उसका उसके पीछे लगना वैसे भी गलत था । वो यकीनन उससे पहले विट्ठल राव रोड पहुंचती ।

वापिस लौटकर वो अपनी वैन में सवार हुई और उसने कार को पिछली रात वाले रास्ते पर दौड़ा दिया ।

विट्ठल राव रोड पर पहुंचकर उसने कार को सड़क से उतारकर झाड़ियों की ओट में खड़ा कर दिया और उसकी सारी बत्तियां बुझा दीं ।

वो प्रतीक्षा करने लगी ।

थोड़ी देर बाद सदा की जेन सड़क पर प्रकट हुई । कार बहुत धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी और उसकी हैडलाइट्स लो बीम पर थीं ।

वो धीरे से अपनी कार से बाहर निकल आयी और सांस रोके एक पेड़ की ओट में खड़ी प्रतीक्षा करने लगी ।

सदा की कार उसके सामने से गुजरी ।

पेड़ों की ओट लेकर चलती वो उसके पीछे हो ली ।

कोई पांच सौ गज आगे पहुंच कर कार को ब्रेक लगी, वो दायें घूमी और झाड़ियों के एक झुरमुट में घुस गयी ।

नमिता ने कुछ क्षण प्रतीक्षा की और फिर लपककर झुरमुट के दहाने पर पहुंची । हाथ से एक झाड़ी की टहनियां बाजू करके उसने आगे झांका तो डगमगाती, हिचकोले लेती, आगे बढ़ती सदा की कार की टेल लाइट दिखाई दी ।

गुड !

कदम गिनती वो वापिस लौटी ।

इस बार भी वो उन झाड़ियों को न पहचान पाती तो वो अपनी कार की वर्तमान पोजीशन से वहां तक कदम गिनकर झाड़ियों में छुपी उस कच्ची सड़क का पता पा सकती थी ।

लेकिन इस बार ऐसा न हुआ ।

अपनी कार पर वो ऐन सही जगह पर पहुंची ।

उसने कार को कच्ची सड़क पर डाल दिया । कार पार्किंग लाइट्स पर, लो गियर में चलती आगे बढ़ी ।

क्या था आगे ?

जरूर कोई इमारत थी जिसे सदा ने अपनी खुफिया पनाहगाह बनाया हुआ था । लेकिन लाख रुपये का सवाल ये था कि इकबालिया बयान और चिट्ठी भी वहीं थी या नहीं थी ! थी तो वो उसके कब्जे में आ सकती थी या नहीं !

एक अन्देशा उसे और भी था ।

क्या पुलिस उसके पीछे लगी हो सकती थी ?

जब काटेज के आसपास कहीं नहीं थी तो कैसे लगी हो सकती थी ?

वो थोड़ा आगे पहुंची तो कच्ची सड़क आगे 'वाई' की सूरत में दो रास्तों में बंट गयी ।

किधर गया होगा !

हैडलाइट्स जलाती तो शायद सड़क पर उसे टायरों के निशान दिखाई दे जाते, लेकिन ऐसा करने की उसकी हिम्मत न हुई । हैडलाइट्स दूर तक चमकती, सदा समझ सकता था कि पुलिस आ गयी थी, तब कोई ऐसा कदम उठा सकता था - जैसे कि गोली चला सकता था - जो कि नमिता का खेल बिगाड़ देता ।

हिचकिचाती हुई वो 'वाई' की बाईं बांह पर चल दी ।

आगे वो सड़क संकरी होती चली गयी और आखिरकार इतनी संकरी हो गयी कि उस पर से कार का गुजरना नामुमकिन था ।

शायद कार वहीं छोड़कर आगे पैदल गया हो ।

उसने कार से निकलकर दायें बायें कार तलाश की लेकिन वो उसे कहीं न मिली ।

वो वापिस कार में सवार हुई ।

अब एक बहुत कठिन काम को उसने अंजाम देना था ।

उस जगह से कार को यू टर्न दे पाना नामुमकिन था । वहां से लौटने का यही तरीका था कि वो कार को बैक गियर में चलाती ।

जो कि उसके लिये आसान नहीं था । उसे पहले कभी यूं लम्बा फासला बैक गियर में गाड़ी नहीं चलानी पड़ी थी ।

जैसे तैसे वो वापिस वहां लौटी जहां से कि वो उस सड़क पर चली थी । उस कोशिश में कई बार कार उसके काबू से बाहर हुई, दो तीन बार ठुकी लेकिन गनीमत रही कि टेल लाइट न टूटी ।

अब उसने दूसरा, दाईं ओर जाता रास्ता पकड़ा ।

बाईं ओर वाला रास्ता गलत था तो यकीनन वो ही सही रास्ता था ।

उस रास्ते पर बहुत ही कम रफ्तार से कार आगे बढ़ती रही ।

एकाएक उसे आगे पेड़ों का साया खत्म होता दिखाई दिया ।

सड़क से आगे एक छोटा सा मैदान था जिस पर जाकर वो रास्ता खत्म होता था । उस मैदान के सिरे पर पेड़ों का एक झुरमुट था जिसके बीच में पता नहीं क्या था !

एक स्थान पर झाड़ियों में इतनी जगह थी कि कार उसमें दाखिल हो पाती । सावधानी से उसने कार को झाड़ियों में डाल दिया तो पाया कि अगर वो कार को वहां छोड़ती तो वो यकीनन सड़क से न दिखाई देती ।

वो कार से निकली और वापिस सड़क पर लौटने की जगह झाड़ियों और पेड़ों की ओट से आगे बढ़ी । उधर भी आगे मैदान ही था लेकिन मैदान में उतरने की जगह वो मैदान का घेरा काटकर आगे बढ़ी ताकि उसे ओट हासिल रहती ।

आखिरकार वो मैदान के सिरे के झुरमुट पर पहुंची तो उसे एक एकमंजिला इमारत का नजारा हुआ जो कि उनके बीच छुपी हुई थी ।

तो ये थी सदा की पनाहगाह ।

सबूत के तौर पर सदा की जेन इमारत के पहलू में खड़ी थी ।

उसी पहलू की एक खिड़की में रोशनी दिखाई दे रही थी ।

दबे पांव वो खिड़की के करीब पहुंची । पंजों पर उचक कर उसने खिड़की से भीतर झांका ।

वो एक बड़ा सा कमरा था जिसमें एक स्कूल पर रखा पैट्रोमैक्स जल रहा था । उसकी रोशनी में वहां उसे एक दीवार के साथ लगी एक दराजों वाली मेज, उसके आगे एक बांहों वाली लकड़ी की कुर्सी, एक दूसरी दीवार के साथ लगा एक दीवान और कमरे के बीच में एक गोल मेज और दो ईजी चेयर पड़ी दिखाई दीं । सदा दीवार के साथ की दराजों वाली मेज के करीब यूं खड़ा था कि नमिता की तरफ उसकी पीठ थी ।

उसके हाथ में एक गिलास था जिसे वो अपने मुंह तक ले के गया ।

फरेबी !

कहता था पीनी छोड़ दी ।

उसने गिलास मेज पर रखा तो उसे अहसास हुआ कि उसने जो सोचा था, वो गलत था ।

फासले से भी साफ पता चल रहा था कि गिलास में पानी था ।

कमरे के पार एक बन्द दरवाजा था जिसकी तरफ वो बढ़ा और फिर उसके पीछे गायब हो गया ।

कहां गया था ?

क्या था उस दरवाजे के पीछे ?

कोई और कमरा ?

किचन ?

या बाथरूम ?

कुछ क्षण बाद वो वापिस लौटा और फिर दराजों वाली मेज के करीब पहुंचा । उसने झुककर फर्श पर बिछी खस्ताहाल दरी का एक कोना थामा और उसे गोलाई में लपेटने लगा । यूं जब काफी सारा फर्श नंगा हो गया तो वो घुटनों के बल नीचे बैठ गया । उसने एक हाथ से वहां कुछ टटोला तो फर्श पर से एक ढक्कन सा उठ गया जिसके नीचे से एक आयताकार छेद प्रकट हुआ ।

खुफिया खाना !

सांस रोके उसने सोचा ।

फर्श में।

ऊपर ढक्कन !

ढक्कन पर दरी !

कोई चीज छुपा कर रखने की उससे उम्दा जगह और क्या हो सकती थी !

उसका दिल गवाही देने लगा कि कोठारी के इकबालिया बयान और उसकी चिट्ठी का वो ही मुकाम था । वहीं वो...

एकाएक किसी ने पीछे से उसे दबोच लिया । किसी की एक शक्तिशाली बांह उसकी कमर से लिपट गयी और वैसा ही शक्तिशाली हाथ उसके मुंह पर पड़ा । वो उस फौलादी पकड़ में छटपटाने लगी, आजाद होने के लिये हाथ-पांव पटकने लगी, लेकिन उसकी पेश न चली । जितनी ज्यादा वो कोशिश करती थी, उतना ही ज्यादा वो शिकंजा मजबूत होता जाता था जिसकी गिरफ्त में कि वो थी ।

फिर जमीन पर से उसके पांव उखड़ गये ।

कोई वैसे ही उसे दबोचे इमारत के अग्रभाग की ओर चल दिया ।

वो मेनडोर पर पहुंचा तो दरवाजा खुला और चौखट पर सदा प्रकट आ ।

जो नजारा सामने उसे हुआ, उसने उसे भौंचक्का कर दिया । भय, क्रोध, हार, बेबसी जैसे कई भाव उसके चेहरे पर आये गये ।

फिर वो पीछे हट गया ।

नमिता के आक्रमणकारी ने उसे कमरे में इतनी जोर से धकेला कि वो धराशायी होने से बाल बाल बची । फिर कोई कर्कश आवाज में

बोला - “अब यकीन आया मेरी बात पर ?”

वो आवाज उसने साफ पहचानी ।

अब वापिस घूमे बिना भी उसे मालूम था कि उसका आक्रमणकारी कौन था !

संदीप नाडकर्णी !

“हालात से कुछ न सीखा इसने ।” - नाडकर्णी फिर बोला - “ये इसके लालच की इन्तहा है कि ये यहां पहुंच गयी । अब इसे कुछ नहीं, सब कुछ चाहिये ।”

दराजों वाली टेबल का सहारा लेकर वो सीधी हुई । बड़े यत्न से वो वापिस घूमी । उसने निगाह उठाई तो उसे नाडकर्णी दिखाई दिया, सदा की तलाश में निगाह कमरे में भटकी तो बन्द प्रवेश द्वार से पीठ लगाये खड़ा सदा दिखाई दिया । फिर वो खुद ही सफाई देने लगी ।

“म.. .मेरा...क. ..कोई गलत...मतलब नहीं था ।” - वो हकलाती सी बोली ।

कोई कुछ न बोला ।

“मैं तो बस तुम्हारी मदद करना चाहती थी.. .तुम्हारे किसी काम आना चाहती थी.. .क्योंकि.. .क्योंकि समझती थी कि मौजूदा हालात में तुम्हारी कोई मदद मैं ही कर सकती

थी । मुझे क्या मालूम था कि ये. ..ये. ..तुम्हारा इतना बड़ा राजदां था ! मुझे क्या मालूम था कि इसकी वजह से तुम्हें मेरी कोई जरूरत नहीं थी ।"

"ठीक कहा ।" - वो उदासीन भाव से बोला ।

"क.. .क्या ?"

"मुझे तेरी कोई जरूरत नहीं । कभी थी भी नहीं । कभी होगी भी नहीं ।"

"तुम खफा हो, इसलिये ऐसा कह रहे हो, वर्ना कभी न कहते, 'साथ चल मेरे' ।"

"आ साथ चल" - नाडकर्णी विषभरे स्वर में बोला - "कि हसरते दिलेमहरूम से निकले, आशिक का जनाजा है जरा धूम से निकले ।"

"इसे चुप कराओ ।" - वो रुआंसे स्वर में बोली ।

सदा खामोश रहा ।

"मैं तुम्हारे साथ हूं । मैं सदा तुम्हारे साथ हूं । दिल से कहा था । दिल से कहती हूं । मैंने दिल से तुम्हारे साथ चलने को हामी भरी थी ।"

"ये भी दिल से कहा था" - नाडकर्णी बोला - "कि पुलिस को तुम्हारी मौत का यकीन नहीं था, वो तुम्हारी ताक में थी । क्यों कहा था ? ताकि खिसक जाने की तैयारी में तुम यहां पहुंचते और ये तुम्हारे पीछे लगी यहां पहुंच जाती, जैसे कि पहुंची । अब पूछो इससे क्यों पहुंची ? ये नहीं बताती तो मैं बताता हूं । तुम्हें लूटने पहुंची । एक बार माल इसके हाथ लगने की देर होती कि तुम्हें इसकी हवा न मिलती ।"

"ये झूठ है ।"

पुणेकर फिर भी खामोश रहा । उसके चेहरे पर गहन अनिश्चय के भाव थे ।

"तुम" - वो नाडकर्णी से बोली - "तुम यहां कैसे पहुंच गये ?"

"तुम्हारे साहब ने बुलाया" - जवाब मिला - "इसलिये पहुंचा ।"

"यहां ?"

"और कहां ?"

"कब ?"

"तुम्हारे से मिल के लौटने के फौरन बाद ।"

"इसका मतलब है तुम... तुम वाकई सब कुछ जानते हो । शुरू से ही हर बात से वाकिफ हो ।"

"शुरू से नहीं ।" - पुणेकर ने तुरंत प्रतिवाद किया - "लेकिन मेरी वापिसी के बाद से - उस रात के बाद से जब मैं कॉटेज में लौटा था ...हर बात से वाकिफ है ।"

"तब से भी क्यों वाकिफ है ?"

"सोच !"

"क्योंकि तुमने इसके जरिये शेयर कैश करने थे ?"

“हां । मेरा मुल्क छोड़ जाने का इरादा था । परदेस में कहीं वो शेयर मेरे किस काम आते !”

“मेरे को उम्मीद क्यों बंधाई ?”

“तेरे को न बंधाई, खुद उम्मीद बांधी ।”

“खजूर के दरख्त से ।” - नाडकर्णी बोला - “इसी वास्ते बोला ‘चल अकेला’ ।”

“तुम इन्हें बहका रहे हो” - नमिता गुस्से से बोली - “गुमराह कर रहे हो ।”

“इसकी उस है बहकने की ! गुमराह होने की !”

“उम्र का हवाला दिया तो जान लो, इस उम्र में बीवी से सगा कोई नहीं होता ।”

“बीवी, जैसी सीता माता थीं, जो चौदह बरस के लिये पति के साथ वनवास गयीं ? ऐसी बीवी हो तो मैं नमन करता हूं । दण्डवत् प्रणाम करता हूं ।”

“तुम.. .तुम...”

“बैठ जाओ ।”

“तुम क्या समझते हो अपने आपको ?”

“बैठ जा ।” - पुणेकर बोला ।

नमिता धम्म से एक ईजी चेयर पर ढेर हुई ।

पुणेकर गोल मेज के पार उसके सामने बैठ गया ।

“अब बोल ।” - वो बोला - “क्यों आयी ?”

“उस वजह से न आयी” - वो बोली - “जो तुम्हारा जिगरी कहता है ।”

“साफ बोल । पहेलियां न बुझा ।”

“तुम्हारे माल की वजह से न आयी ।”

“अरे, क्यों आई बोल !”

“इसके सामने बोलूं ?”

“हां ।”

“सोच लो ।”

“अब कह भी चुक ।”

“कोठारी के इकबालिया बयान और अपनी चिट्ठी की वजह से आयी ।”

“साथ चलना भी इसीलिये कबूल किया ?”

“हां । जब तक उन दो चीजों का वजूद रहता, तुम्हें कभी यकीन न आता कि मैं राजी से तुम्हारे साथ थी । तुम यही समझते कि तुम्हारी ब्लैकमेल के तहत मैंने हामी भरी थी क्योंकि उन दो चीजों का मेरे पर दबाव था । मैं चाहती थी कि तुम मेरे पर, मेरी निष्ठा पर एतबार लाते इसलिये उन दो चीजों का वजूद खत्म होना जरूरी था । तभी तुम्हें यकीन आता कि मैं बिना किसी मुलाहजे के, बिना किसी दबाव के तुम्हारे साथ थी ।”

"ये तुम्हारे साथ नहीं" - नाडकर्णी बोला - "किसी भी मर्द के साथ हो सकती है, अगरचे कि इसका उससे कोई मतलब हल होता हो । पिचहत्तर लाख के हासिल के मद्देनजर ये मुझे भी शीशे में उतारने की कोशिश करने लगी थी ।"

"झूठ ! बिल्कुल झूठ !"

"ऐसी औरत का कैसे यकीन कर सकते हो कि ये तुम्हारे माल के पीछे नहीं है ?"

नमिता का ये देखकर दिल डूबने लगा कि पुणेकर यार की बातों से प्रभावित दिखाई दे रहा था ।

"सदा" - उसने फरियाद की - "तुम्हारा यार झूठ बोल रहा है । ये खामखाह एक की आठ लगा रहा है ।"

"तू मेरे साथ है" - पुणेकर अपलक उसे देखता बोला - "भले ही मुझे काला पैसा देखना नसीब न हो ?"

"हां ।"

"क्यों ? माथा फिरेला है ? भेजे में भूसा ? अभी कल जो औरत पांच करोड़ की गारन्टी हासिल किये बिना मेरे को अपनी परछाई छूने देने को तैयार नहीं थी, वो अब यूं ही मेरे साथ चलने को तैयार है ? क्यों भला ?"

"मैं बदल गयी हूं । जैसे...जैसे तुम बदल गये हो ।"

"जैसे मैंने दारू के नशे से किनारा किया, वैसे तूने दौलत के नशे से किनारा कर लिया ?"

"हां । हां ।"

"इसकी बातों में आना बेकार है ।" - नाडकर्री आवेश में बोला - "ये अभी फंसी हुई है, अपनी जान सांसत से निकालने के लिये ये इस घड़ी कुछ भी कह देगी । तुम्हारा इसकी बातों में आना जरूरी नहीं । तुम्हारा कहीं खिसक जाना भी जरूरी नहीं ।"

"क्या बोला ?"

"ठीक बोला । तुम बिना वजह भगोड़े बने हुए हो और बने रह कर अपनी पोजीशन खराब कर रहे हो । तुम्हारे खिलाफ कोई पुख्ता केस नहीं । तुम मजे से अपनी वापिसी कर सकते हो, बोल सकते हो कि तुम पर हमला हुआ था जिसकी वजह से तुम पगला गये थे । जब होशोहवास काबू में आये तो तुम्हें सब याद आ गया । सब याद आ गया तो वापिस लौट आये । मैं तुम्हारी कहानी को सपोर्ट करूंगा । मैं तुम्हारी हर बात को सही ठहराऊंगा । देख लेना, पुलिस तुम्हें छू भी नहीं सकेगी । एक बार तुम सोसायटी में फिर से स्थापित हो जाओगे तो इस फरेबी औरत का किरदार अपने आप सामने आ जायेगा । फिर तुम जो चाहोगे, इसकी गत बना सकोगे । इसके खिलाफ तुम्हारे पास - या यूं समझो कि मेरे पास - पुख्ता सबूत हैं । इसे कुछ साल जेल में एड़ियां रगड़ने दो । इसके लिये बड़ी सजा यही होगी कि ये उस चीज की पालिश उतरती देखे जिस पर इसे नाज है, जो इसकी ताकत है, ये

तिल-तिल करके अपनी जवानी हाथ से निकलती देखे, आठ-आठ आंसू रोये और सबक ले कि 'सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं, गया वक्त फिर लौट आता नहीं' । ये जेल में अपनी नयी जिन्दगी जिये... या मरे. ..तुम आजाद पंछी अपनी नयी जिन्दगी जियो ।"

"मेरी और भी तो प्राब्लम है ।" - पुणेकर बुदबुदाया ।

"एक बार फैसला तो करो नयी जिन्दगी की बाबत फिर उस प्राब्लम का भी कोई हल निकल आयेगा ।"

"तुम दूसरी प्राब्लम को कम करके आंक रहे हो । उसका हल आसानी से निकलने वाला नहीं । उसका हल ही नहीं निकलने वाला । और फिर..."

"और क्या ?"

"मैं इसकी इतनी दुरगत नहीं कर सकता ।"

"क्या कह रहे हो !"

"ये मेरा खास पसंदीदा खिलौना है, मैं इसे अपने हाथों छिन-भिन्न नहीं कर सकता ।"

"इसका किरदार जान चुकने के बाद ऐसा कह रहे हो ?"

"हां । मैंने इसकी हर बात जानी, समझी; एक बात न जानी न समझी ।"

"कौन-सी बात ?"

"शी इज टू मच आफ ए वूमेन फार वन मैन । खुदा ने इसे बनाया ही ऐसा है कि इसकी प्यास कोई एक मर्द नहीं बुझा सकता । ये नगरवधु है । ये जगतपत्नी है । ये विषकन्या है । इसकी ख्वाहिश जो कोई भी करेगा, जान से जायेगा । जैसे डाक्टर सिंगला गया, जैसे एडवोकेट कोठारी गया, जैसे मैं गया । ये जिन्दा रहे, सलामत रहे, मुझे कोई एतराज नहीं । और किसी तरीके से तो मुल्क की आबादी कम होती नहीं, शायद यूं हो जाये ।"

अपमान से नमिता का तन बदन जल गया ।

"ठीक है ।" - नाडकर्णी बोला - "जो तुम मुनासिब समझना, करना । अभी वो काम करो जिसके लिये मैं यहां आया हूं ।"

उसने जेब से दोहरे किये कागजों का पुलिंदा निकाला, उन्हें सीधा किया और मेज पर रखा ।

"लो" - उसे एक बाल पैन थमाता वो बोला - "साइन करो । हर शेयर सर्टिफिकेट पर ।"

उसने पैन ले लिया और मशीनी अन्दाज से सारे सर्टिफिकेट एंडोर्स किये ।

नाडकर्णी ने उन्हें मेज से उठाकर फिर पूर्ववत् दोहरा किया, वापिस अपने कोट के भीतर कहीं पहुंचाया और फिर पुणेकर की तरफ आकर्षित हुआ ।

"अब" - वो संजीदगी से बोला - "ड्रामेटिक्स को और सेंटीमेंट्स को दरकिनार करके सोचो और बोलो इसका" - उसने एक सर्द निगाह नमिता पर डाली - "क्या करना है ?"

“भाई लोगो” - एक सन्तुलित आवाज कमरे में गूंजी - “इस बात में मेरा भी दखल है ।”

सबकी निगाहें दरवाजे की तरफ उठीं, जिधर से आवाज आयी थी ।

नमिता को सबसे पहले गन दिखाई दी जिसकी नाल पैट्रोमैक्स की कर्कश रोशनी में चमक रही थी और जिसका रुख पुणेकर की खोपड़ी की तरफ था ।

फिर गन से छिटककर निगाह गन वाले के हाथ से होती उसके चेहरे पर पड़ी ।

उसे अपनी सांस रुकती महसूस हुई ।

“सारे मुर्दे” - दरवाजे की चौखट से टेक लगाये खड़ा कपिल कोठारी सहज भाव से बोला - “कब्रों से उठके खड़े हो गये ।”

Chapter 5

इन्स्पेक्टर नगरकर की फोन काल पावटे के पास तब आई, जब वो सोने की तैयारी कर रहा था ।

"हमारा एएसआई प्रधान, जो स्टाक ब्रोकर संदीप नाडकर्णी की विजिल पर लगाया गया था, बड़ी दिलचस्प बात रिपोर्ट करता है ।"

"क्या ?" - पावटे ने अनमने भाव से पूछा ।

"पिछली रात नाडकर्णी पर से निकला था तो वो उसके पीछे लगा था । कल उसने इसे इत्तफाक माना था कि वो कोहरे की वजह से विट्ठल राव रोड पर नाडकर्णी को खो बैठा था, लेकिन आज भी जब यही हुआ तो उसे लगा कि वो इत्तफाक नहीं था ।"

"क्या मतलब ? आज भी वो नाडकर्णी के पीछे लगा विट्ठल राव रोड पहुंचा और नाडकर्णी कहीं गायब हो गया ?"

"हां ।"

"कहां गायब हो गया ?"

"उसने सड़क का एक किलोमीटर का एरिया पिनपॉइंट किया है जहां कहीं झाड़ियों में छुपी कोई कच्ची सड़क है जिस पर कि वो गुम हो गया ।"

"कैसे मालूम कि कच्ची सड़क है ?"

"सर, कार पर सवार आदमी धुंध में मिल गया तो हो नहीं सकता । वो सड़क कोई आम रास्ता भी नहीं जहां से कि कोई रोज रोज गुजरता हो । प्रधान को वो सड़क पर आगे मिला नहीं, वापिस लौटा नहीं तो और कहां गया ?"

"आई सी । फर्ज करो वहां कोई कच्ची सड़क है और वो उस पर गया । क्यों गया ?"

"सदानन्द पुणेकर से मिलने गया । इसके अलावा और कोई वजह मुझे नहीं दिखाई देती । आगे कहीं कोई ऐसी जगह है जिसे कि पुणेकर छुपने के लिये इस्तेमाल कर रहा है और जहां दोस्त दोस्त से मिलने जाता है । मुझे और कोई वजह नाडकर्णी की उस उजाड़ सड़क पर मौजूदगी की नहीं दिखाई देती । मनोरी के उस इलाके में ही मौजूदगी की नहीं दिखाई देती ।"

"लेकिन पुणेकर अपने पर से - काटेज से - इतना करीब किसलिये ? अगर मुद्दा खुफिया तरीके से अपने स्टाक ब्रोकर यार से मिलना ही है तो उसे तो वो कहीं भी बुला सकता है । मुम्बई से बाहर भी बुला सकता है ।"

"बीवी के करीब रहना चाहता होगा ।"

"क्यों ? क्योंकि बीवी है ?"

"क्योंकि उसे सजा देना चाहता है ।"

"ये सब कुछ तुम ये मान के कह रहे हो कि पुणेकर जिन्दा है ?"

"हां, ये मान के कह रहा हूं ।"

"काटेज की क्या पोजीशन है ? उसकी निगरानी जारी है ?"

"हां । बीच में थोड़ा अरसा जारी नहीं रखी जा सकी थी, लेकिन अब जारी है ।"

"बीच में क्यों जारी नहीं रखी जा सकी थी ?"

"स्टाफ की शार्टेज है । नया केस आ जाता है तो फील्ड के लोगों को इधर-उधर करना पड़ता है । आपको सब मालूम ही है ।"

"इस वक्त वो औरत - मिसेज नमिता पुणेकर - काटेज पर है ?"

"मालूम नहीं ।"

"मालूम करो । मैं थाने पहुंचता हूं ।"

"ठीक है ।"

***

करिश्मा !

करिश्मा हो गया था ।

जो नहीं हो सकता था, वो हो गया था ।

वो कुर्सी पर बैठी पत्थर हो गयी थी; न हिल सकती थी, न बोल सकती थी ।

क्या वो सपना देख रही थी ?

कैसे वो शख्स उसके सामने साक्षात खड़ा हो सकता था जिसे उसके पति ने डुबो के मार डाला था और लाश को मछलियों का भोजन बनने के लिये समुद्र में छोड़ दिया था ।

"ये क्या हो रहा है ?" - पुणेकर असहाय भाव से गर्दन हिलाता बोला ।

"कोई गलत हरकत न करना, कोठारी" - नाडकर्णी चेतावनीभरे स्वर में बोला - "वर्ना पछताओगे ।"

"वार्निंग का शुक्रिया" - कोठारी बोला - "लेकिन मैं पहले बॉस की बात का जवाब देता हूं । खुदाई इंसाफ हो रहा है, बॉस !"

नमिता हिम्मत करके अपने स्थान से उठी और लपककर कोठारी के पास पहुंची ।

"कपिल !" - उसके कंधे से लगती वो बोली - "कपिल !"

कोठारी ने उसे धंधा झटककर परे किया, भीतर कदम डाला और पांव की ठोकर से अपने पीछे दरवाजा बन्द किया ।

"लेकिन तुम.. .तुम..." - एकाएक वो पुणेकर की तरफ घूमी और गुस्से से बोली - "तुम्हें मालूम था ये जिन्दा है ! शुरू से मालूम था !"

"हां ।" - पुणेकर लापरवाही से बोला ।

"मुझे स्टोरी सुनाई !"

"हां ।"

“ताकि” - कोठारी बोला - “तुम मेरी तरफ से पूरी तरह से नाउम्मीद होकर फिर एक बार इसे ही अपना सब कुछ मान लेतीं । ये तुम्हारे पास तुम्हारा सगा बनके नहीं लौटा था, अपनी मुर्गी हलाल करने लौटा था । फोकट की राइड मारने लौटा था ।”

फोकट की तो नहीं - नमिता ने सोचा - लेकिन बाकी बातें ठीक हो सकती थीं ।

“पुणेकर साहब, इस बार कैसी लगी मेरी जान ?”

“कमीने !” - पुणेकर दांत पीसता बोला - “कमीने !”

“कपिल !” - नमिता व्यग्र भाव से बोली - “प्लीज ! जीज पंगा नहीं ।”

“रिलैक्स, माई डियर । इस वक्त मैं पंगा करूं या इसकी वाट लगाऊं, ये कुछ नहीं कर सकता । मैंने गलत कहा, बॉस ?”

पुणेकर ने कहरभरी निगाहों से उसकी तरफ देखा ।

“अब बीवी का सस्पेंस दूर करो और अपने काउंटरप्लान पर रोशनी डालो जिस पर कि तुमने अमल किया ।”

वो खामोश रहा ।

“शायद ऐसे तुम्हारी जुबान नहीं खुलेगी । शायद घूंट लगा के बेहतर बोल पाओगे ।” - वो नमिता की तरफ घूमा - “बाहर जा । बाजू में मेरी कार खड़ी है । नीली जेन के पीछे । उसमें विस्की की बोतल है । निकाल के ला ।”

“ये नहीं पीते ।”

“अब पियेगा न !”

“नहीं पी सकते । छोड़ दी ।”

“पी तो कभी भी नहीं सकता था । लेकिन पीता था । छोड़ता नहीं था । हमारे लिये पीता था । आज भी हमारे लिये पियेगा । जा, बोतल ले के आ ।”

वो बाहर गयी और दो बोतलों के साथ वापिस लौटी । एक बोतल रायल चैलेंज की थी और दूसरी पीटर स्काट की थी ।

“गाड़ी में दो बोतलें थीं ।” - वो बोली - “तुमने बोला नहीं था कौन-सी लानी थी इसलिये मैं दोनों ले आयी ।”

“नो प्राब्लम ।” - कोठारी बोला - “रख दे ।”

“बल्कि तीन थीं । एक खुली हुई थी और आधी खाली थी इसलिये मैंने उसे...”

“आई सैड नो प्राब्लम । जो किया, ठीक किया ।”

उसने दोनों बोतलें साइड टेबल पर रख दीं ।

“हमेशा स्काच पीने वाले ग्रेट सदानन्द पुणेकर की नाक के नीचे तो दोनों में से कोई भी नहीं आने वाली लेकिन क्या करें ! मजबूरी है ।” - वो पुणेकर की तरफ घूमा - “हाजिर को हुज्जत नहीं, बॉस । क्या !”

पुणेकर खामोश रहा ।

"अभी सब जने चियर्स बोलते हैं । गिलास कहां हैं ?"

"इतना ड्रामा किसलिये ?" - पुणेकर गुस्से से बोला - "गोली मारनी है तो मार । मारता क्यों नहीं ?"

"हुक्म नहीं, बॉस । दस साल मैंने तुम्हारा हुक्म माना, अभी एक दिन तो मेरे को हुक्म देने का है न !"

"मेरे को पानी चाहिये ।"

"अरे बॉस ! नीट वाटर कभी पिया नहीं, पता नहीं तुम्हें हजम होगा या नहीं !"

"मैंने गोली खानी है ।"

"गोली !"

उसने जेब की तरफ हाथ बढ़ाया ।

"खबरदार !"

"गोलियों की शीशी निकालनी है ।"

"ओके । हाथ बाहर आये तो उसमें शीशी ही हो ।"

उसने जेब से शीशी निकाली और एक गोली अपनी हथेली पर पलट कर शीशी को बन्द करके सामने गोल मेज पर रख दिया ।

"कैसी गोली है ?" - कोठारी तनिक उत्सुक भाव से बोला - "क्यों खाते हो ?"

"टांक्विलाइजर्स की गोलियां हैं । विस्की छोड़ने पर विड्राल सिम्पटम्स बन गये थे, उनकी वजह से खानी पड़ती है ।"

"यानी कि सच में छोड़ दी ?"

पुणेकर ने जवाब न दिया ।

कोठारी ने नमिता को इशारा किया ।

नमिता पिछले दरवाजे पर पहुंची । उसने उसे खोला तो पाया वो किचन थी । वो भीतर दाखिल हो गयी ।

पीछे कोठारी ने रायल चैलेंज की बोतल खोली ।

पानी के जग और चार गिलासों के साथ नमिता वापिस लौटी । उसने सब सामान खुली बोतल की बगल में मेज पर रख दिया ।

"बना ।" - कोठारी ने आदेश दिया ।

नमिता ने तीन गिलासों में विस्की डाली और जग से चारों गिलासों में पानी डाला ।

"कैसी वाइफ है ! हसबैंड का जाम नहीं बनाया ! बना ।"

नमिता ने इंकार में सिर हिलाया ।

"सुना नहीं !"

नमिता खामोश रही ।

दांत भींचे कोठारी आगे बढ़ा और उसने पानी वाला गिलास जग में पलट कर खाली किया, उसमें विस्की डाली और वापिस पानी डाला ।

“ऐसी जबरदस्ती मूर्खता है ।” - नाडकर्णी धीरे से बोला ।

“तुमने मुझे मूर्ख कहा ?”

“अगर वो नहीं पीना चाहता तो...”

“इस वक्त यहां इसकी मर्जी चलेगी ?”

“फिर भी...”

“फिर भी ये ।” - कोठारी ने गन पुणेकर की तरफ यूं तानी कि नाल का रुख उसकी आंखों के बीच था - “गिलास उठाओ, बॉस, और खाली करो वर्ना भेजा उड़ा दूंगा ।”

पुणेकर ने मेज पर से गिलास उठाया और आंखें मींचकर एक सांस में उसे खाली कर दिया ।

“गुड !” - कोठारी बोला - “एक और । पुरानी यादों के नाम ।”

गिलास अभी पुणेकर के हाथ में ही था, कोठारी ने उसमें विस्की डाली और पानी मिलाया ।

बाकी तीन जाम तिरस्कृत से मेज पर पड़े थे ।

उसने बायें हाथ से एक गिलास उठाया और उसे पुणेकर के गिलास से टकराता हुआ बोला - “चियर्स ! तुम्हारी बची-खुची तन्दुरुस्ती और जिन्दगी के नाम !”

पुणेकर हिचकिचाया ।

कोठारी के जबड़े भिंचे, हौले से उसने गन का कुत्ता खींचा ।

“कम आन !” - वो बोला - “बाटम्स अप !”

पुणेकर ने जबरन विस्की हलक से उतारी ।

कोठारी ने भी अपना गिलास खाली किया ।

अगला जाम चारों के हाथ में था लेकिन इस बार उसने इसरार न किया कि पुणेकर पहली बार की तरह उसे एक बार में खत्म करे ।

उसने मेज पर से शीशी उठाई और उसका मुआयना किया ।

“हर चार घंटे बाद ।” - उस पर से उसने पढा - “या जब जरूरत हो । अब जरूरत है न ! लेकिन गोली और विस्की का क्या मुकाबला ! मेरे को कोई गोली और जाम में से चायस दे तो मैं क्या कबूल करूंगा ? यकीनन जाम । इस कारोबार में जिसकी शागिर्दी मैंने सबसे ज्यादा की, उसे क्या कबूल करना चाहिये ? काम । तो इसका क्या मतलब हुआ ? इसका मतलब हुआ कि जाम को वो सम्मान दिया जाये जिसका कि वो हकदार है । अभी सम्मान कौन देगा ? बॉस देगा ।”

कोई हलचल न हुई ।

"सुना नहीं !" - कोठारी कर्कश स्वर में बोला - "बाटम्स अप ! विस्की अन्दर वर्ना दम बाहर ।"

पुणेकर ने फिर जैसे तैसे गिलास खाली किया । उस कोशिश में इस बार उसकी आंखों से आंसू निकल आये और चेहरे पर तीव्र वेदना के भाव आये ।

नमिता हैरान थी, परेशान थी ।

क्या वो पागल हो गया था ? क्यों ऐसी जिद कर रहा था ? बदला लेना चाहता था तो उसका ये कौन सा तरीका था ? कैसे वो जिस शख्स का जिन्दगी भर अदब करता रहा था, उसके साथ ऐसे पेश आ सकता था ?

"ब्यूटीफुल !" - कोठारी प्रशंसात्मक स्वर में बोला - "दैट्स लाइक ए ब्रेव मैन । अब" - उसने गन नाडकर्णी की ओर घुमाई - "दीवान पर जाकर बैठो ।"

उसने आदेश का पालन किया ।

"तू" - वो नमिता से बोला - "इस कुर्सी पर बैठ ।"

दराजों वाली मेज के सामने पड़ी कुर्सी का रुख कमरे के मध्य की ओर करके नमिता उस पर बैठ गयी ।

"अब तेरा लार्ड एन्ड मास्टर तेरे को अपने उस काउंटरप्लान की बाबत बतायेगा जिस पर कि इसने पूरी कामयाबी से अमल किया और हमारे प्लान को पीट दिया । शुरू हो जाओ, बॉस ।"

पुणेकर ने अपने सूखे होंठों पर जुबान फेरी, फिर अप्रत्याशित हरकत की ।

उसने खुद ही बोतल को काबू में किया, अपने लिये ड्रिंक बनाया और गटागट पी गया ।

उसके उस एक्शन पर कोठारी भी हैरान हुए बिना न रह सका ।

नाडकर्णी दोस्त के लिये चिन्तित था और नमिता के चेहरे पर गहन उत्कंठा के भाव थे ।

"तो अब शुरू होती है काउंटरप्लान की कहानी ।" - कोठारी बोला - "बॉस को क्लू मैं देता हूं । नमिता, बॉस ने तेरे को क्या कहा था ? यही न कि मैं मर चुका था ?"

नमिता बड़ी कठिनाई से सहमति में सिर हिला पायी ।

"इसने मेरे को डुबो के मार दिया और समुद्र में फेंक दिया । ठीक ?"

"ये भी कहा" - नमिता व्यग्र भाव से बोली - "कि मैंने बैडरूम में फूलदान से जिसके सिर पर वार किया था, वो तुम थे । इसने कहा, ये रास्ते में छुपा हुआ था । ये तुम्हारे पीछे तुम्हारे काटेज में पहुंचा और तुम्हें बेहोश करके वापिस अपने बैडरूम में ले आया ।"

"ठीक कहा । यही किया इसने । आखिर सदानन्द पुणेकर है । कैनवस के बैग में इसे होना चाहिये था और बैग मेरे कंधे पर लदा होना चाहिये था लेकिन ऐन उलट हुआ । बैग में मैं था और बैग इसके कंधे पर लदा था ।"

"तो.. .तो.. .तुम बच कैसे गये ?"

"इसी से पूछो ।"

"ये बच कैसे गया ?" - उसने पुणेकर से सवाल किया ।

तब तक नशे से पुणेकर का चेहरा तमतमाने लगा था और आंखें बिलौरी हो गयी थीं । बोतल तब भी उसकी पहुंच में थी । उसने उसे उठाकर विस्की गिलास में डालने की जगह उसी को मुंह से लगाया ।

"बस करो ।" - नमिता झल्लाई ।

उसने बोतल वापिस रख दी ।

"मेरी बात का जवाब दो । ये बच कैसे गया ?"

"क्योंकि मैंने इसे न मारा ।"

"क्यों ?"

"पिलपिला गया हूं ।"

"क्या !"

"ओमेगा में नाकद्री के बाद, बिग बॉस के सिर पर मंडराते खतरे के बाद मेरा मनोबल टूट गया है । मैं बौना हो गया हूं । मेरे में कोई ताकत बाकी नहीं रही है । खुद मौत की कगार पर खड़ा कोई क्या किसी को मार सकता है ?"

"कमाल है !"

"इसीलिये मैंने डाक्टर की भी जानबख्शी कर दी ।"

"क्या !"

"मैं उसे न मार सका । हालांकि वो मौत की सजा का ही हकदार था ।"

"माहिम काजवे के पुल पर हुए कार एक्सीडेंट में वो नहीं मरा था ?"

"हां ।"

"जब कार समुद्र में जाकर गिरी थी, वो उसमें नहीं था ?"

"हां ।"

"तो कहां गया ?"

"पनवेल गया । वहां डाक्टर एसके जसवाल के नर्सिंग होम में नौकरी कर रहा है ।"

"कमाल है !"

"बात कुछ और हो रही थी ।" - कोठारी सख्ती से बोला ।

"इसलिये तुमने" - नमिता बोली - "इसकी भी जानबख्शी कर दी ?"

"हां । जो कि अब दिखाई दे रहा है कि मैंने गलत किया । जो एडवांटेज मुझे बोट पर थी, वो मैंने खो दी ।"

"क्योंकि तुम पिलपिला गये हो ! पहले वाले सदा नहीं रहे हो !"

"हां । तेरे से बेहतर कौन जानता है, मैं पहले वाला सदा नहीं रहा ।"

“जो मैं जानती हूं वो किसी और फील्ड की बात है । तुम कोठारी की बात करो ।”

“अपनी बदअक्ली की बात करूं ?”

“वाट ऐवर ।”

“इसे बोट पर लादकर जब मैं बीच समुद्र में पहुंचा था तो इसे होश आने लगा था । मैंने इसके हलक में विस्की उड़ेली तो ये बिल्कुल ही सचेत हो गया । मैंने इसकी खोपड़ी को फर्स्ट एड तक दी ।”

“क्यों ? जैसा था, वैसे ही क्यों न खत्म कर दिया ?”

“क्योंकि मैं चाहता था ये होश में आता ।”

“क्यों ?”

“मैं. ..मैं इससे बात करना चाहता था ।”

“क्या बात करना चाहते थे ? कम ऑन, फार गॉड सेक ।”

“ये होश में आया तो मैंने इसे बताया कि अपने कत्ल की साजिश की बाबत मैं सब कुछ जानता था । मैं एक अरसे से तुम दोनों को वाच कर रहा था, तुम्हारी बातें सुन रहा था ।”

“मैं सिर पर हुए वार से तो नहीं मरा था” - कोठारी बोला - “लेकिन इसकी बात सुनकर हार्ट फेल हो जाने में कोई कसर नहीं रही थी ।”

“तुम चुप करो । सदा को बोलने दो ।”

“मैंने इस पर गन तानी हुई थी ।” - पुणेकर बोला - “हम नीचे केबिन में थे और ये एक बर्थ पर पड़ा था । मैं बोला मैं इसे शूट करने जा रहा था । ये बुरी तरह से डर गया और मेरे से जिन्दगी की भीख मांगने लगा । कहने लगा, कसमें खा खाकर वादे करने लगा कि ये हम दोनों से दूर, बहुत दूर चला जायेगा । बोला, ये बाकी जिन्दगी कभी तुमसे मिलने की, तुम्हारे करीब भी फटकने की, कोशिश नहीं करेगा ।”

नमिता की गिला करती निगाह कोठारी पर पड़ी ।

“और क्या करता ?” - कोठारी बोला - “और क्या करता ? ट्रीगर पर पड़ी इसकी उंगली कांप रही थी । इसे पता भी न चलता कि गोली चल जाती । उस नाजुक हालत में मैं और क्या कहता ?”

“मैंने” - पुणेकर बोला - “इसके कहे पर कोई विश्वास नहीं किया था, लेकिन क्योंकि जान लेने के खयाल से मेरा ही कलेजा लरज रहा था इसलिये मैंने इसे कहा कि ये मेरी जान लेने की अपनी साजिश को मुकम्मल, तहरीरी तौर पर दर्ज करे और उस पर साइन करे । इसको वो बात कबूल न हुई । बोला, ये उसकी जान लेने का ही दूसरा तरीका था, क्योंकि किनारे पर पहुंचते ही मैं इसके इकबालिया बयान को पुलिस को सौंप देता । मैंने इसे समझाया कि मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं थी लेकिन इसे यकीन न आया । उस दौरान मैं इसे गन से भी बराबर धमकाता रहा...”

"लेकिन" - कोठारी बोला - "अपनी खौफजदा हालत में भी तब तक मैं भांप चुका था कि इसकी गोली चलाने की कोई मंशा नहीं थी । तब तक मैं अपनी चोट से काफी हद तक उबर चुका था और किसी मौके की तलाश में था जबकि मैं इस पर टूट पड़ता और बाजी पलट देता ।"

"नहीं पलट पाता । मुझे मालूम था ये ऐसा कर सकता था । मैं पूरी तरह से चौकन्ना था ।"

"आगे ?" - नमिता उतावले स्वर में बोली - "आगे ?"

"मैंने इसे प्लेन टिकट दिखाया ।"

"प्लेन टिकट ! कैसा प्लेन टिकट ?"

"काठमांडू का प्लेन टिकट । इसके नाम का । ताकि ये मुम्बई से दूर कहीं दफा होता । मेरी ख्वाहिश तो इसे और भी दूर दफा करने की थी लेकिन उसके लिये इसका पासपोर्ट दरकार होता इसलिये मैंने काठमाण्डू के टिकट से ही सब किया जहां जाने के लिये इन्डियन सिटीजन को पासपोर्ट की जरूरत नहीं होती । इसको कोई शर्म लिहाज होता, ये तेरे से दूर चला जाने की बाबत सच बोल रहा होता तो आगे ये खुद ही निकल जाता ।"

"तुम इसे यूं जबरन काठमाण्डू भेजते तो ये वहां टिका रहता ?"

"कहां टिका रहा ! खड़ा तो है तेरे सामने ! लेकिन उस वक्त मेरे पास दो ही चायस थीं । इस पर यकीन करता कि ये तेरे से दूर रहेगा और परदेस में टिका रहेगा या इसे शूट कर देता । मैंने पहली चायस पर अमल किया जो अब मुझे दिखाई दे रहा है कि मेरी कितनी बड़ी गलती थी !"

उसने फिर बोतल की तरफ हाथ बढ़ाया ।

"खबरदार !"

उसने जैसे सुना ही नहीं । उसने बोतल से एक घूंट भरा और उसे वापिस मेज पर रखा ।

विस्की से किनारा करने वाले हैवी ड्रिंकर्स की वो भी ट्रेजडी थी; एक बार शुरू हो जायें तो शुरू हो ही जाते थे ।

"मेरे पास इसका इकबालिया बयान था" - पुणेकर फिर बोला - "मेरी इसको वार्निंग थी कि अगर इसने आइन्दा कभी मेरे पर छुपकर वार करने की कोशिश की और कामयाब हो गया तो बयान सीधा पुलिस कमिश्नर के पास पहुंचेगा । दूसरे, मैंने इसे चारा डाला ।"

"चारा !" - नमिता सकपकाई - "कैसा चारा ?"

"वही जो इसे खास पसन्द आने लगा है । तेरी सोहबत की वजह से ।"

"पैसा ?"

"और क्या ?"

"दस लाख रुपये ।" - कोठारी वितृष्णापूर्ण भाव से बोला ।

"हे भगवान !"

"जो मैंने किया" - पुणेकर अब फुल नशे में था - "मैंने बोल दिया ।"

"क्यों किया ? इसे जाने देते । तुम्हारे पास इसका इकबालिया बयान था । ये कहीं भी जाता - या न जाता - तुम्हें क्या फर्क पड़ता था ? इसे दूर भेजना ही क्यों जरूरी था ?"

"वजह थी ।" - वो दबे स्वर में बोला ।

"क्या ?"

"मैं समझता था तुझे सबक मिल चुका था । तेरा दिमाग ठिकाने आ चुका था । तेरे भेजे से मेरे खिलाफ खुराफात का कुलबुलाता कीड़ा निकल चुका था ।"

"क्या मतलब हुआ इसका ?"

"समझ ।"

"हे भगवान ! है भगवान !"

"मैं मुझे वापिस चाहता था ।" - नशे में उसका स्वर दयनीय हो उठा - "तेरी इतनी बड़ी खता माफ करके मैं मुझे वापिस चाहता था..."

"माफ करके नहीं, सजा दे के । एफडी को भूल गये !"

"कैसे भी वापिस चाहता था लेकिन इसके इर्द गिर्द मंडराते रहने पर ये मुमकिन नहीं हो सकता था । इसने तेरे पर जादू किया हुआ था जो ये करीब रहता तो फिर सिर पर चढ़के बोलता । इसलिये मैं इसे तेरे करीब नहीं रहने देना चाहता था ।"

"जैसे कहीं जाके लौटना मुहाल होता ! जैसे दस लाख रुपया पैरों में बेड़ियां डाल देता !"

"उम्मीद तो थी न ! और फिर..."

"और क्या ?"

"मैं रकम बढ़ा सकता था । इसे नहीं मालूम लेकिन मैं इसे पचास लाख तक दे सकता था । एक करोड़ तक दे सकता था ।"

"तुम पागल हो ! तुम अपनी ही चीज की कीमत अदा करना चाहते थे ? मुझे इससे वापिस खरीदना चाहते थे ?"

"कहां है तू मेरी चीज ? होती तो डाक्टर के साथ सोती ? इस यारमार को सवारी कराती ?"

"शटअप !" - कोठारी भड़का ।

"सिंगला ने जो कुछ तेरे साथ किया, वो मैंने देखा तो नहीं । लेकिन इस कमीने के साथ जो कुछ तूने किया, वो तो मैंने आंखों से देखा ।"

"जो बात खत्म हो चुकी है, उसे क्यों उठाते हो ?"

"मैं तो नहीं उठाता ।"

“तुमने मुझे कम बेइज्जत किया ! तीन हजार रुपये का जूता जो तुम रोज मेरे मुंह पर मार के जाते थे, वो क्या उन तमाम बातों से भारी नहीं था, जो मैंने तुम्हारे खिलाफ कीं ?”

“बात तूने शुरू की थी । तूने पूछा था कि क्यों मैं अपनी चीज की कीमत अदा करना चाहता था !”

“ये नोट्स एक्सचेंज करना बन्द करो ।” - कोठारी दखलअन्दाज हुआ - “अब कोई किसी की चीज नहीं, सब कुछ मेरा है । जो इसने मुझे दिया, वो भी; जो देने का इरादा किया, वो भी; और जो नहीं दिया, वो भी । जो दिया” - उसने आंख भरकर नमिता को देखा - “और छीन लेने का अरमान बनाया, वो भी ।”

“तुम लौटे क्यों ?” - नमिता बोली ।

“ये भी कोई पूछने की बात है ! मेरा इतना कीमती माल जो पीछे रह गया था ।”

“कब लौटे ?”

“जब पहली बार इसने काटेज में वापिस कदम रखा था ।” - उसके चेहरे पर विद्रुपपूर्ण मुस्कराहट आयी - “मैंने सब देखा था । ड्राइंगरूम के फर्श पर.. .सोफे के बीच... तुम्हारे कपड़े एक सोफे की पीठ पर.. .एक्शन रीप्ले जैसा. ..खाली एक किरदार बदला हुआ था ।”

नमिता के गले की घंटी जोर से उछली, उसने बेचैनी से कई बार पहलू बदला, फिर अपने विस्की के गिलास में पनाह पाने की कोशिश की ।

“मैं मजबूर थी ।” - आखिरकार बोली - “मेरे पास कोई चायस नहीं थी ।”

“मालूम है । होता है ऐसा । बोट पर जब ये मेरी खोपड़ी पर गन ताने था तो मेरे पास भी कोई चायस नहीं थी । लेकिन यकीन जानो, जो नजारा मैंने किया था, उसे करने की मेरी कोई मंशा नहीं थी । इत्तफाक से मैं लौटा ही ऐसे वक्त कि.. कि...”

“छोड़ो । बस करो ।”

“इसने मेरा प्लेन टिकट ही बुक नहीं कराया हुआ था, काठमाण्डू में सोल्टी में मेरे लिये कमरा भी बुक कराया हुआ था ताकि बीच बीच में फोन पर ये चैक करता रहता कि मैं वहां था या नहीं । वो कमरा अभी भी मेरे नाम बुक है । यहां आने से पहले मैंने उन लोगों को बोला था कि मैं सैर करने पोखरा जा रहा था...”

“मैंने फोन किया था” - पुणेकर बोला - “मुझे यही जवाब मिला था ।”

“यहां आ के छुपता फिरना मेरी मजबूरी थी । इसे मालूम पड़ जाता कि मैं लौट आया था तो मेरा इकबालिया बयान पुलिस के हाथों में होता । मैं अपनी मजबूरी को झेल रहा था, लेकिन तुम तो अपनी मजबूरी को एनजाय कर रही थीं । अपनी टॉप की परफारमेंस दे रही थीं ड्राइंगरूम के कार्पेट पर । नहीं ?”

नमिता के मुंह से बोल न फूटा ।

“हां ।” - पुणेकर संतोषपूर्ण स्वर में बोला - “बिल्कुल ! ऐन यही बात थी ।”

"मैं सिर्फ तुम्हें चाहती यूं कपिल ।" - बड़ी मुश्किल से नमिता बोल पायी - "मैं फिर कहती हूं वो मेरी मजबूरी थी ।"

"फारगेट इट । ये सिर्फ खीर चख सकता है, खा नहीं सकता । मैं क्या जानता नहीं !"

वो कैसे बताती कि अब खा भी सकता था ।

"अब क्या करोगे ? क्या इन्हें.. .इन्हें..."

"मार डालूंगा ? नहीं । मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं । मैं सिर्फ इसका सारा माल हथियाऊंगा और फिर हम निकल लेंगे । यहां से काठमाण्डू आगे सारी दुनिया ।"

"अपने" - नाडकर्णी त्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - "इकबालिया बयान को भूल गये ?"

"और मेरी चिट्ठी !" - नमिता व्याकुल भाव से बोली ।

"चिट्ठी !" - कोठारी सकपकाया - "कैसी चिट्ठी ? कौन-सी चिट्ठी ?"

नमिता ने बताया ।

सुनकर उसके चेहरे पर शिकन न आयी ।

"नो प्रॉब्लम ।" - वो बोला - "ये कुछ भी कह ले लेकिन मुझे यकीन है कि मेरा इकबालिया बयान, तुम्हारी चिट्ठी और इसका माल सब एक ही जगह होंगे । जब एक चीज हाथ आयेगी तो हर चीज हाथ आ जायेगी ।"

एकाएक नमिता उत्तेजित हो उठी ।

"वहां" - उसने फर्श पर एक जगह इशारा किया - "दरी के नीचे एक खुफिया जगह है । मैं सदा को दरी हटाकर, ढक्कन उठाकर उसके भीतर झांकते देखा था । जो कुछ होगा वहीं होगा ।"

कोठारी ने इंकार में सिर हिलाया ।

"क्या मतलब ?" - नमिता सकपकाई ।

"मुझे उस खुफिया जगह की खबर है ।" - कोठारी बोला - "वहां कुछ नहीं है । कत्ल रात इसकी गैरहाजिरी में मैंने यहां के चप्पे-चप्पे को टटोला था । तब मुझे वो खुफिया जगह भी दिखाई दी थी । वहां सिर्फ चालीस पैंतालीस हजार रुपये हैं, और कुछ नहीं हैं ।"

"ओह !"

"मौजूदा हालात में मुझे लगता है कि हमारी चीज नाडकर्णी के कब्जे में है । ये अपने घर में या आफिस में सदा के शेयर सर्टिफिकेट्स के साथ छुपाये होगा ।"

"शेयर सर्टिफिकेट तो यहीं हैं ।"

"क्या !"

"इसने सदा से अभी उन पर साइन कराये । तमाम के तमाम शेयर सर्टिफिकेट इसके कोट की जेब में हैं ।"

"जरूर होंगे । लेकिन हमें उनकी जरूरत नहीं ।"

"क्यों ?"

“क्योंकि पेमेंट हमें नहीं हो सकती । पेमेंट क्रास्ड चैक से होगी जो कि इसके बैंक अकाउंट में ही जमा कराया जा सकता है । हमें कैश से ही सब्र करना होगा ।”

“ओह !”

“बॉस” - वो पुणेकर से सम्बोधित हुआ - “समझ लो कि तुमने अपनी असैट्स का बंटवारा अपनी बीवी के साथ किया । शेयर तुम्हारे, कैश इसका । तुम भी खुश, हम भी खुश । तुम भी चुप, हम भी चुप । क्या खयाल है ?”

“तुम” - नाडकर्णी बोला - “अपने इकबालिया बयान को फिर भूल रहे हो ।”

“नहीं भूल रहा । अपने बयान को और मैडम की चिट्ठी को तो मैं माचिस दिखाकर ही यहां से जाऊंगा ।”

“सदा फिर भी पुलिस के पास जा सकता है ।”

“जाये । खुशी से जाये । तुम्हारी जानकारी के लिये काफी अरसा हम दोनों इकट्ठे नहीं रहने वाले । इसी की मेहरबानी से मैं उन्हें ढूंढ़े नहीं मिलूंगा और नमिता यहीं होगी, डाइवोर्स सैटलमेंट में शेयरों की कमाई का भी एक बड़ा हिस्सा इससे झटक लेने के लिये । इसकी यहां मौजूदगी की वजह से ही हर किसी की इससे हमदर्दी होगी कि इसके बेरहम, खुन्दकी खसम ने ऐसी चाल चली कि इसके जिन्दा होते इसे विधवा बना दिया । ये पड़ा दुहाई देता रहे कि बीवी ने इसे लूटने की और मार डालने की कोशिश की थी, कोई यकीन नहीं करेगा । इस बात की असलियत के सामने, कि ये बीवी को कंगाल करके छोड़ गया, ये इसकी गढ़ी हुई बात लगेगी ।”

“मैं असल माजरे का चश्मदीद गवाह हूं ।”

“गवाह होने से पहले सोचो कि तुम हो क्या चीज ! सदा के दोस्त । हिमायती । राजदां । चमचे । जब इसने अपनी मौत का ड्रामा स्टेज किया, तुमने सब जानते बूझते अपनी जुबान बन्द रखी और इसके माल की रखवाली की । मुंह फाड़ोगे तो क्या ये बात छुपी रहेगी ! पुलिस - या कोई भी - इससे क्या नतीजा निकालेगी ? ये कि बीवी को बर्बाद करने की इसकी साजिश में तुम्हारा भी हाथ है । तब इस बात को झुठला सकोगे ? इस बात का कोई माकूल जवाब दे सकोगे कि तुम्हें मालूम था कि सदा मरा नहीं था, फिर भी तुम इस बाबत खामोश थे ! जवाब दो !”

नाडकर्णी के मुंह से बोल न फूटा, उसने विचलित भाव से पुणेकर की तरफ देखा ।

पुणेकर ने फिर बोतल को मुंह लगाया ।

“अच्छा फिट किया मुझे ।” - फिर बोला ।

“फिट किया !” - कोठारी विजेता के से स्वर में बोला - “वाट लगा दी ।”

“अब क्या करोगे ?”

“अच्छा सवाल है । बोलता हूं ।” - वो नाडकर्णी की तरफ घूमा - “तुम मेरे साथ अपने घर या आफिस, जहां भी तुम सदा का माल रखे हो, चलोगे और वो माल और मेरा

इकबालिया बयान और नमिता की चिट्ठी मेरे हवाले करोगे ।"

"मैं इंकार करूं तो ?" - नाडकर्णी बोला ।

"तो यहीं मरे पड़े होगे ।"

नाडकर्णी ने जोर से थूक निगली ।

"लगता है जल्दी अक्ल आ गयी ।" - वो पुणेकर की तरफ घूमा - "तुम्हारी गन कहां है ?"

"क्यों पूछते हो ?"

"मेरे हवाले करो ।"

"मेज के दराज में है ।"

"देख ।" - वो नमिता से बोला ।

नमिता ने मेज के एक दराज में से अड़तीस कैलीबर की रिवाल्वर बरामद की ।

"चैक कर ।"

"भरी हुई है ।" - वो बोली ।

"बढ़िया । अब तू यहां ठहरेगी और इस गन से अपने सुहाग को कवर करके रखेगी ।"

उसने मजबूती से इंकार में सिर हिलाया और व्याकुल भाव से बोली - "मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी ।"

"पागल मत बनो ।"

"मैं ये काम नहीं कर सकूंगी ।"

"ये काम ही नहीं है । ये टुन्न है । देखना, बैठा-बैठा ही सो जायेगा.. .जैसे कि टैरेस पर सो जाया करता था । हमारी सहूलियत के लिये । यहां भी ये तुम्हें नाउम्मीद नहीं करेगा । तुमने इसकी तरफ रिवाल्वर तान के खाली इसके सामने बैठ जाना है । मैं बहुत जल्दी लौट के आऊंगा । ओके ?"

बड़ी कठिनाई से वो सहमति में सिर हिला पायी ।

"दैट्स लाइक ए गुड गर्ल ।" - वो नाडकर्णी की तरफ घूमा - "स्टैण्ड अप ।"

बड़े यत्न से नाडकर्णी उठकर अपने पैरों पर खडा हुआ ।

"मेरी कार पर चलेंगे । ड्राइव तुम करोगे । चलो ।"

नाडकर्णी को अपनी गन से कवर किये उसे अपने से आगे चलाता वो दरवाजे की तरफ बड़ा ।

पीछे पुणेकर ने अपना कांपता हाथ बढ़ाकर बोतल फिर थाम ली ।

***

एसीपी मनोहर पावटे, इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर, एएसआई प्रधान और एक हवलदार एक पुलिस जीप में सवार विट्ठल राव रोड पर दाखिल हुये ।

नगरकर पावटे को बता चुका था कि सब-इन्स्पेक्टर कदम की रिपोर्ट के मुताबिक नमिता पुणेकर अपने काटेज पर नहीं थी ।

"अभी प्रधान बतायेगा" - नगरकर बोला - "कि इस सड़क पर वो एक किलोमीटर का हिस्सा कौन-सा है जिस पर कि नाडकर्णी गायब हो गया था ।"

"पहचान लेगा ?"

"जवाब दे, भई ।"

"पहचान लूंगा, सर ।" - प्रधान विश्वास के साथ बोला - "थोड़ा बहुत ये बाजू या वो बाजू हो सकता है पण पहचान लूंगा । थोड़ा डिफीकल्ट, इसी वास्ते एक किलोमीटर बोला वर्ना कील ठोक के बोलता कि भीडू इधर से गायब हुआ । बोलता क्या, पीछू जाता ।"

"गुड ।"

प्रधान की सहूलियत के लिये हवलदार गाड़ी मुश्किल से पच्चीस किलोमीटर की रफ्तार से चला रहा था ।

पूरी खामोशी में कुछ फासला कटा ।

तभी एकाएक दूसरी तरफ किसी वाहन की हैडलाइट्स चमकीं ।

"कोई गाड़ी आ रही है ।" - नगरकर बड़बड़ाया - "बहुत तेज रफगर से । डिपर मार साले को ।"

हवलदार जीप का डिपर चलाने लगा ।

"पता नहीं लोग क्यों जान देने पर तुले होते हैं ! ऐसी सड़क पर भी यूं उड़ा रहा है गाड़ी जैसे गॉड अपॉइंटमेंट कैंसल कर देगा ।"

डिपर का सामने से आती गाड़ी के ड्राइवर पर कोई असर होता न जान पड़ा । वो पूर्ववत् तूफानी रफ्तार से करीब आती रही ।

"टाइम नहीं साला, वर्ना रैश ड्राइविंग के इलजाम में गिरफ्तार कर लेता ।"

ज्यों-ज्यों गाड़ी करीब आती गयी, हाई बीम पर लगी उसकी हैडलाइट्स और तीखी रोशनी बिखेरने लगीं ।

"अरे, बाजू कर ।" - वो ऐन सिर पर आन पहुंची तो नगरकर झल्लाया - "ठोक देगा ।"

हवलदार ने जीप को बाजू किया ।

गाड़ी बगले की तरह उनके पहलू से गुजरी ।

"वैन थी ।" - पावटे बोला - "नब्बे से कम पर नहीं जा..."

"नमिता पुणेकर चला रही थी ।" - नगरकर उत्तेजित भाव से बोला ।

"मैंने साफ देखा । साफ पहचाना । वो ही थी । उसकी बेमिसाल खूबसूरती ही उसकी सबसे बड़ी पहचान है । वो ही थी ।"

"सब-इन्स्पेक्टर कदम क्या कहता था ? उसने उसे यहां कहीं मिस किया था ?"

“हां ।”

“लिहाजा वो कल भी यहां आयी और आज भी आई ?”

“हां ।”

“हसबैंड से मिलने ?”

“और क्या करने ?”

“जैसे उसे मालूम हो कि वो जिन्दा था ।”

“मालूम ही होगा ।”

“क्यों आई ? हसबैंड की सहूलियत के लिये ? ताकि उसका कत्ल करने में हसबैंड को कोई दिक्कत न हो ?”

“अब क्या पता लेकिन आई तो बराबर ।”

“अगर तुमने सच में उसे देखा तो आई का सबूत है । हसबैंड से मिलने आयी, इस बात का कोई सबूत नहीं है ।”

“साहब, इस भुतहा जगह पर और क्या करने आयी ?”

“हूं । क्यों भई, वो तेरा एक किलोमीटर अभी कितनी दूर है ?”

“बस, आया ही समझिये, साहब ।” - एएसआई प्रधान बोला - “अबे जरा और धीरे चला ।”

ड्राइवर हवलदार ने रफ्तार और कम कर दी ।

***

कोठारी को नाडकर्णी के साथ गये आधा घंटा गुजर चुका था ।

नमिता ने अपनी कुर्सी पुणेकर से परे प्रवेश द्वार के बाजू की दीवार के साथ लगा ली थी और गन गोद में रखे उत्कण्ठा की प्रतिमूर्ति बनी प्रतीक्षा कर रही थी ।

दोनों के बीच मुकम्मल खामोशी स्थपित थी; न उसने और न पुणेकर ने एक शब्द भी बोला था ।

पुणेकर ने पहली बोतल बिल्कुल खाली कर दी थी और अब दूसरी बोतल भी खोल ली थी । उसने गिलास में विस्की डालने की कोशिश की थी तो वो आधी बाहर टेबल पर बिखर गयी थी ।

उस वक्त नमिता को उस पर तरस आ रहा था । पीना छोड़कर उसने कितना बड़ा काम किया था, कोठारी की जिद ने, ज्यादती ने, उसके संकल्प पर पानी फेर दिया था और वो फिर उसी मुकाम पर पहुंच गया था जहां कि हमेशा था ।

नयी बोतल ने उसकी नयी उम्मीदें जगा दी थीं । अब उसे विस्की खत्म हो जाने का, प्यासा रह जाने का अन्देशा नहीं था । नशे में तो वो भरपूर था लेकिन अब - पता नहीं विस्की की वजह से या कोठारी की गैरहाजिरी की वजह से - उसमें दिलेरी आ गयी जान पड़ती थी ।

"कुछ हाथ नहीं आयेगा ।" - वो थरथराती आवाज में बोला ।

उसके एकाएक बोल पड़ने से नमिता चौंकी, उसका हाथ स्वयंमेव ही रिवाल्वर की मूठ पर पड़ा ।

"आयेगा ।" - वो गुस्से से बोली ।

"आयेगा तो तेरे यार के हाथ आयेगा, तेरे हाथ नहीं आयेगा ।"

"हम दोनों एक हैं ।"

"खामखयाली है तेरी । जो शख्स यार को दगा दे सकता है, वो माशूक को दगा नहीं दे सकता ?"

"ये मिसाल ही गलत है । तुम्हारे से उसकी यारी कारोबारी थी ।"

"तेरे से भी ऐसी ही है । जिसका कारोबार ही उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा करना हो, वो किसी और किस्म की यारी कर ही नहीं सकता ।"

"तुम मुझे गुमराह कर रहे हो ।"

"गुमराह तो तू पहले से है । मैं तो मुझे राह लगाने की कोशिश कर रहा हूं ।"

"मत करो । चुप रहो या कोई और बात करो ।"

"वो वापिस नहीं आने वाला । वापिस आने को यहां कुछ नहीं रखा ।"

"मैं रखी हूं न !"

"अंटी में दम हो तो तेरे जैसी और मिल जाती हैं । रोज नयी मिल जाती है । हर औरत समझती है उस को सुर्खाब के पर लगे हैं, उस पर सोने का पतरा चढ़ा है, लेकिन होता तो नहीं ऐसा !"

"ये बात तुम्हारे पर लागू नहीं ? तुम्हारी अंटी में दम थोड़ा था ? क्यों मेरे पीछे पड़े थे ?"

"उसकी सजा भुगत रहा हूं न ! या नहीं भुगत रहा ? वो नौजवान है, काइयां है, वकील है; वो नहीं भुगतना चाहेगा ।"

"क्या करेगा ?"

"सब माल-पानी कब्जायेगा और तुझे अधर में लटका छोड़कर खिसक जायेगा ।"

"ये तुम नहीं, विस्की बोल रही है ।"

"वो तेरी जैसी और का तलबगार हो या न हो, तेरे से तो समझ ले, वो किनारा कर भी चुका ।"

"ऐसा नहीं हो सकता ।"

"ऐसा हो चुका है । क्योंकि तेरा किरदार उसकी समझ में आ चुका है । वो समझ चुका है असल में तू क्या है !"

"क्या हूं ?"

"बाई ।"

“जो तुम्हारे लिये ठीक है, उसके लिये गलत है ?”

“हां । पूछ क्यों ! पूछ क्यों मेरे लिये ठीक है ?”

“क्यों तुम्हारे लिये ठीक है ?”

“क्योंकि तू मेरी बीवी है । बीवी और माशूक में फर्क होता है । बीवी से निभाना पड़ता है । माशूक आती जाती रहती हैं ।”

“जिसे और कोई बाई बनाये या न बनाये, खुद बनाना पड़ता है । तीन हजार रुपये चार्ज करने वाली । ठीक ?”

“वो सब मैंने तेरे लिये नहीं, अपने लिये किया था ।”

“क्या मतलब ?”

“ताकि मुझे मेरी ताकत महसूस हो । मुझे याद रहे कि मैं मर्द हूं ।”

“मैं ऐसे मर्द पर लानत भेजती हूं जो अपनी ताकत बताने के लिये औरत को जलील करता हो ।”

“कोई औरत खुद अपनी मर्जी के बिना जलील नहीं हो सकती । जिसको जलालत से परहेज होता है, वो वो हरकतें नहीं करती जो तूने की । जलालत एकाएक गले नहीं पड़ती, उसकी रफ्ता रफ्ता बुनियाद बनती है जो औरत खुद बनाती है ।”

“छोड़ो वो किस्सा । जो हो चुका, उसे अनहुआ नहीं किया जा सकता । जो घंटी बज चुकी, उसे अनबजी नहीं किया जा सकता ।”

“बराबर बोला । इसीलिये बोला यार से खता खायेगी । उसे तेरी कोई परवाह नहीं । तेरी उस पर कोई जिम्मेदारी नहीं । तेरा उस पर कोई दावा नहीं । खाविन्द बेरुख होता है तो कोई नोटिस तो देता है ! वो यार है, नोटिस नहीं देने वाला । हाथ से रेत की तरह निकल जायेगा । अभी था अभी नहीं था । तू परछाई ही दबोचती रह जायेगी । उसे किसी बात की परवाह है तो वो पैसा है । या वो खुद है ।”

“तुम क्या जानो !”

“मैं ही जानता हूं । क्योंकि मैं उसे दस साल से जानता हूं इसलिये उसकी नस नस से वाकिफ हूं । तू उसे दस साल से जानती है ? तू उसकी नस नस से वाकिफ होने का दावा कर सकती है ?”

“इतना कुछ क्यों कह रहे हो ? मकसद क्या है तुम्हारा ?”

“नहीं समझी ?”

“नहीं, नहीं समझी ।”

“हमारी जुगलबन्दी अभी भी मुमकिन है ।”

“क्या.. .क्या कह रहे हो ?”

उसने अपना गिलास खाली किया और बड़े यत्न से उठकर अपने पैरों पर खड़ा हुआ ।

"अगर तू सच में उससे मुहब्बत करती है" - उसने उसकी तरफ कदम बढ़ाया - "और समझती है कि वो तेरे से मुहब्बत करता है..."

"वहीं खड़े रहो ।" - वो तीखे स्वर में बोली - "मेरे पास आने की कोशिश न करो ।"

"...तो खुशी से उसके साथ जा ।" - वो ठिठक कर बोला - "तो पैसे का लालच छोड़ । मैं पैसा रखकर तसल्ली कर लूंगा, उसे यारमारी के साथ साथ बीवीकतरा बनकर खुश होने दे । दूसरा तरीका ये है कि मेरे ही पास रहना कबूल कर । फिर सब कुछ हमारा होगा - मेरा नहीं, हमारा होगा ।"

"कैसे भला ? तुम समझते हो माल नाडकर्णी के पास है नहीं या वो उससे हथिया नहीं सकेगा ?"

"उसी के पास है । गन के जोर पर हथिया भी लेगा, लेकिन हथिया के कहां जायेगा ! पुलिस पीछे होगी तो कहां जायेगा ! माल के साथ पकड़ा जायेगा । मेरा माल मेरे पास वापिस होगा - हमारे पास वापिस होगा - और वो जेल में होगा । क्या !"

"नहीं, नहीं । मुझे बहकाओ मत । हलकान मत करो । मुझे शान्ति से, चैन से उसके लौटने का इन्तजार करने दो ।"

"वो नहीं लौटेगा । तू नाहक अपने आपको भरमा रही है । वो माल काबू में करेगा और निकल लेगा । वो जो करेगा अपने आपके लिये करेगा - कपिल कोठारी के लिये करेगा - और किसी के लिये नहीं करेगा । उसके लिये तू कुछ नहीं है, महज एक तौलिया है जिससे उसने अपने हाथ पोंछे और फेंक दिया । उसके लिये इतनी ही औकात है तेरी । इतना ही इस्तेमाल है तेरा ।"

"शटअप !" - क्रोध से कांपते हुये उसने रिवाल्वर हाथ में ले ली - "वर्ना गोली चला दूंगी ।"

"उसकी नीयत ठीक होती तो वो मुझे यहां पीछे छोड़कर न जाता..."

"तुम्हारी वजह से ।"

"...मुझे शूट करता और मुझे साथ लेकर जाता । मर चुके को मारने में क्या वान्दा था ? लाश इस उजाड़ बियाबान जगह पर खंडहर की तरह खड़े इस मकान में पड़ी सड़ती रहती, किसी को कभी खबर न होती ।"

"आई से..."

"डोंट से । लिसन । वो हमेशा लोगों को यूज करता है । मुझे भी किया ।"

"नानसेंस !"

"साजिश किसने रची ? किसने उसे तेरे पर थोपा ? किसने डाक्टर सिंगला को हथियार बनाने का आइडिया सरकाया ? जवाब दे !"

उसका शरीर लहराया । नमिता को लगा कि वो ढेर होने लगा था लेकिन वो लड़खड़ाता हुआ दराजों वाली टेबल के करीब तक पहुंचा और उसका सहारा लेकर सम्भल

गया । उस दौरान वो सावधानी से उस पर रिवाल्वर ताने रही ।

"बैठ जाओ ।" - वो बोली ।

"उसने हमेशा हर किसी को यूज किया - डाक्टर सिंगला को, मुझे, तुझे - अब उसे हम यूज कर सकते हैं । बाजी हमारे हाथ में आ सकती है । बस, हमने इतना करना है कि बाहर जाकर कार में सवार होना है और..."

एकाएक सिसकारी की तरह उसने सांस ली, उसका जिस्म तना, उसकी तरफ लहराती बांह हवा में फ्रीज हुई, फिर टेबल पर से उसकी पकड़ हट गयी और वो लड़खड़ाकर एक कदम पीछे हटा । उसका मुंह यूं खुला जैसे सांस लेने में दिक्कत महसूस कर रहा हो, उसकी आंखें उलटीं, क्षण भर को नार्मल हुईं, फिर उलटीं, फिर उसका जिस्म फिरकी की तरह घूमा और ढेर होने लगा । धराशायी होने से पहले उसका सिर भड़ाक से मेज के कोने से टकराया ।

नमिता उछलकर खड़ी हुई । रिवाल्वर उसके हाथ से निकल कर धप्प की आवाज के साथ दरी पर गिरी । वो लपक कर उसके करीब पहुंची ।

उसका जिस्म तिरछा हुआ एक पहलू के बल दरी पर पड़ा था और हाथ पांव बाहर को फैले हुये थे । वो घुटनों के बल नीचे झुकी, उसने उसके कोट और कमीज के बटन जैसे उधेड़कर खोले और उसकी नंगी छाती के साथ अपना कान लगाया ।

दिल धड़क रहा था ।

वो उठ खड़ी हुई और असहाय भाव से दायें बायें देखने लगी ।

क्या करूं !

उसके चेहरे की रंगत बदल रही थी, पहले वो काला पड़ता जान पड़ता था लेकिन अब राख की तरह सफेद लगने लगा था ।

वो फिर नीचे झुकी और बारी बारी उसकी हथेलियां मसलने लगी ।

तब उसे याद आया कि गिरते वक्त उसका सिर बहुत जोर से मेज से टकराया था । उसने सिर की तरफ ध्यान दिया तो देखा खोपड़ी के पीछे दरी पर खून जमा हो रहा था ।

वो झपटकर गोल मेज पर पहुंची तो उसने पाया कि पानी का जग खाली हो चुका था । जग उठाकर वो किचन की तरफ लपकी और उसे भरकर वापिस लौटी । उसने उसके कोट की जेब में हाथ डाला तो वहां से उसका रुमाल बरामद हुआ । उसने रुमाल को जग के पानी में डुबोया, सावधानी से उसके सिर को तिरछा किया और खोपड़ी पर से खून साफ किया । खून हटा तो उसे वहां कोई तीन इंच लम्बा गहरा घाव दिखाई दिया । उसने रुमाल को खोलकर जैसे तैसे उसे उस घाव पर बांधा ।

उस दौरान वो बेसुध पड़ा रहा था, उसकी सांस चल रही थी लेकिन उसे लगा कि वो मद्धम होती जा रही थी ।

क्या करूं ?

उसे हिलाने डुलाने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी । यूं होश में आने की जगह हो सकता था कि उसके रहे-सहे होश भी गायब हो जाते । वो बड़ी शिद्दत से महसूस कर रही थी कि उसकी चोट गम्भीर थी और उसे डॉक्टरी इमदाद की जरूरत थी । लेकिन डाक्टर कहां से आता ! वहां फोन नहीं था और अपना मोबाइल साथ लाना वो भूल गयी थी । फोन होता भी तो वो कहां फोन लगाती ! कौन रात की उस घड़ी उस बियाबान जगह पर आना कबूल करता ! आता भी तो क्योंकर वहां पहुंचता ! जिस कच्ची सड़क को वो एक बार देख चुकी थी, वो उसे दोबारा नहीं मिली थी तो कोई नया शख्स कैसे उस सड़क को तलाश कर लेता !

और कोठारी पता नहीं कब लौटता - लौटता भी या नहीं - जब तक वो लौटता तब तक क्या पता सदा मर चुका होता !

उस दौरान उसके मन में पश्चाताप की भावना भी आयी । उसे इस एहसास ने भी सताया कि उसने सदा के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया था । सदा ने उसकी हर शर्त मानी थी, उसकी हर ख्वाहिश, हर जरूरत हमेशा पूरी की थी बदले में उसने हमेशा डंडी मारी थी, सेर का बारह छटांक तोला था । उसकी सारी करतूतों की वाकफियत के बावजूद वो उसे अपनाने को तैयार था अभी भी उसे ‘आई लव यू’ बोलता था । इसका मतलब था कि आर्थिक रूप से उसकी जो दुर्गत उसने की थी, वो उसके लिये चेतावनी थी, उसकी सजा नहीं थी । तभी तो वापिस लौटा । बदले में और कुछ नहीं तो वो इतना तो कर सकती थी कि उसे मरने न देती । खोपड़ी की चोट थी - जो कि दिमाग तक पहुंची हो सकती थी - रुमाल की बदली रंगत बता रही थी कि खून अभी भी रिस रहा था, ऊपर से फुल नशे में था, वो तो किसी भी क्षण जान से जा सकता था ।

उसने उस पर झुक कर एक बार फिर उसका मुआयना किया तो पाया कि चेहरा पहले से ज्यादा फक था और अब सांस फंस-फंसकर कर आ रही थी ।

उसने मन-ही-मन एक निश्चय किया और उठ कर सीधी हुई ।

दृढ़ कदमों से वो वहां से बाहर निकली और तेजी से चलती अंधेरे में गिरती-पड़ती झाड़ियों में छुपी अपनी वैन तक पहुंची । वो उसमें सवार हुई, इंजन स्टार्ट किया और बड़ी कठिनाई से उसे घुमा कर वापिसी के लिये कच्ची सड़क पर डाला । फिर उसने उसे जितनी तेज वो वहां चल सकती थी, उतनी तेजी से बाहर सड़क की ओर दौड़ाया ।

टी-जंक्शन पर आकर वो ठिठकी ।

किधर जाये !

उसे किसी टेलीफोन की तलाश थी जहां से वो किसी डाक्टर को, किसी हस्पताल को, किसी इमरजेंसी सर्विस को फोन कर पाती । उसे अन्दाजा था कि दाईं ओर आगे सिरे पर फैरी स्टेशन था जहां कि टेलीफोन भी होता लेकिन नहीं मालूम था कि वो कितनी दूर था ।

उधर के रास्ते से भी वो वाकिफ नहीं थी जबकि बायीं ओर के रास्ते से वो पहले पांच बार गुजर चुकी थी।

उसने बायें ही जाने का फैसला किया।

विट्ठल राव रोड पर गाड़ी तेज चलाना सम्भव था इसलिये वहां उसने तूफानी रफ्तार से वैन चलाई।

वैन अंधेरे में आगे बढ़ती रही।

तभी आगे एक गाड़ी की हैडलाइट्स चमकीं।

उसने न वैन की रफ्तार कम की, न हैडलाइट्स को लो बीम पर लगाया और न डिपर मारा।

दूसरी गाड़ी का डिपर बार बार चल रहा था।

फिर वो सर्र से उसकी बगल से गुजरी।

वो इतना ही देख सकी कि वो एक जीप थी, उसमें कई लोग सवार थे जिनमें से एक गर्दन निकाल कर उसकी तरफ तब भी देखता रहा था, जबकि जीप आगे निकल गयी थी।

आगे मनोरी मर्वे रोड का टी जंकान आया।

उससे थोडा ही आगे एक सिग्नल था जिस पर पहुंचते ही हरी बत्ती लाल हो गयी।

मजबूरन उसने कार को सिग्नल पर रोका।

वो फिर सोचने लगी।

इस बार उसके जेहन में और तरह के खयाल आये।

जो वो कर रही थी, उससे उसका क्या होगा ?

कोठारी का क्या होगा ?

तब तक उसकी सोच एक ही बात पर केन्द्रित थी कि सदा का क्या होगा ?

वो बच गया तो क्या करेगा ?

उन दोनों को गिरफ्तार करा देगा।

कोठारी को तो यकीनन।

पता नहीं क्यों उस घड़ी उसे कोठारी की गिरफ्तारी से ज्यादा अहम बात सदा की जिन्दगी लगी। सदा के 'कत्ल' की भयानक सपने जैसी दहशत वो एक बार बर्दाश्त कर चुकी थी। दोबारा फिर वो दहशत वो नहीं झेलना चाहती थी, वो दु:स्वप्न वो नहीं देखना चाहती थी।

पैसा हो या न हो।

कोठारी हो या न हो।

तभी सिग्नल लाइट हरी हुई।

उसने कार क्रासिंग से आगे बढ़ाई।

कहीं कोई हार्न बजा।

फिर बजा ।

जैसे कोई जिद में बजा रहा हो ।

उसने हार्न की दिशा में सिर उठाया तो...

उसके नेत्र फैले ।

कोठारी !

क्रासिंग के पार अपनी कार में वो पैसेंजर सीट पर बैठा हुआ था ।

ड्राइविंग सीट पर संदीप नाडकर्णी था ।

उसने देखा कोठारी खिड़की में से हाथ निकालकर उसकी तरफ हिला रहा था और उसे वापिस जाने का इशारा कर रहा था ।

बीच चौराहे से यू टर्न देना कठिन था, एक्सीडेंट का खतरा मोल लेना था लेकिन जैसे तैसे उसने उस काम को अंजाम दिया ।

तब तक कोठारी की कार आगे निकल गयी थी और अब वो उसे पीछे आने का इशारा कर रहा था ।

उसने अपनी वैन कोठारी की कार के पीछे डाली ।

थोड़ी दूर जाकर वो सड़क से नीचे उतरकर रुकी ।

नमिता ने अपनी वैन उसके पीछे ले जाकर खड़ी की, बाहर निकली और झपटकर कोठारी के करीब पहुंची ।

"क्या हुआ ?" - वो कर्कश स्वर में बोला - "कहां जा रही है ?"

"सदा.. .सदा..."

"क्या सदा सदा ?"

"वो.. .वो..."

"रुक ।"

उसने इग्नीशन में से चाबी निकाल ली, कार से बाहर निकला और हिंसक भाव से नाडकर्णी से बोला - "कोई हरकत की तो गोली मार दूंगा । समझ गये ?"

नाडकर्णी ने जवाब न दिया, होंठ भींचे वो यूं सीधा सामने देखता रहा जैसे कुछ सुना ही न हो ।

कोठारी ने घूमकर नमिता की बांह थामी और उसे कार से थोड़ा परे ले आया ।

"क्या बात है ?" - वो भुनभुनाया - "यहां क्या कर रही है ?"

"सदा जख्मी हो गया है । पीछे बेहोश पड़ा है ।"

"जख्मी कैसे हो गया ?"

नमिता ने बताया ।

"मर गया ?"

"अभी नहीं । लेकिन हालत खराब जान पड़ती है । बहुत खून बह रहा है । फौरन डॉक्टरी इमदाद न मिली तो यकीनन मर जायेगा । मैं.. मैं डाक्टर की तलाश में निकली थी ।"

"हूं ।" - उसने एक उड़ती निगाह स्टियरिंग के पीछे बुत बने बैठे नाडकर्णी पर डाली - "मैं जा के देखता हूं उसे । तू यहीं ठहर । अपनी वैन को उन झाड़ियों के पीछे खड़ी कर दे, बत्तियां बुझा दे और मेरा इन्तजार कर । मैं बहुत जल्द लौटूंगा ।"

नमिता को चैन की सांस आती महसूस हुई ।

कोठारी सब ठीक कर देगा । ऐसे ही तो ट्रबलशूटर नहीं था । सदा हमेशा कहता था, कोठारी किसी भी स्थिति से दो चार हो सकता था, वो किसी भी ट्रबल को शूट कर सकता था ।

फिर उसे याद आया कि कोठारी नाडकर्णी को साथ लेकर क्या करने निकला था ।

"काम हो गया ?" - उसने झिझकते हुए पूछा ।

"हां । पैसा, इकबालिया बयान, चिट्ठी, सब कुछ मिल गया ।"

"चि.. .चिट्ठी कहां है ?"

"फूंक दी । हाथ आते ही पहला काम यही किया कि अपने इकबालिया बयान और तेरी चिट्ठी को माचिस दिखाई ।"

"पैसा !"

"पीछे डिक्की में है । सब काम मनमाफिक हुआ । आया मजा ?"

"इसे वापिस साथ क्यों लाये ?"

"ताकि मेरे पीठ फेरते ही ये पुलिस को फोन लगाने न बैठ जाये । सब ठीक ठाक हो गया, हमारी रवानगी में कोई लोचा न पड़ा तो मैं इसे सदा के पास छोड़ दूंगा ।"

"तुम वहां पहुंचो तो सही । वो पहले ही मर गया तो..."

"क्या बुरा होगा ? हमारे लिये क्या बुरा होगा ? लेकिन अब उसका मरना जरूरी नहीं इसलिये जाता हूं.. .देखता हूं ।"

वो चला गया ।

***

अंधेरे में डूबी वैन में बैठी नमिता खामोशी से सिग्रेट के कश लगा रही थी ।

और सोच रही थी ।

क्या सदा की जान को वाकई खतरा था ?

शायद नहीं ।

अब उसे लग रहा था कि उसने स्थिति का शुरुआती आकलन बहुत बढ़ा चढ़ा के किया था । उसका खोपड़ी का जख्म देखने में भयानक लगता था, खून बहता देखकर स्वाभाविक तौर पर दहशत होती थी लेकिन वो जानलेवा शायद नहीं था । खोपड़ी बहुत

मजबूत होती थी, बड़े बड़े वार झेल लेती थी । फिल्मों में सारे वार हीरो की खोपड़ी पर ही होते थे, वो फिर भी उठ खड़ा होता था और अस्पताल में ड्रैसिंग कराकर हीरोइन को देख के मुस्कराता था ।

और विस्की जब आज तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ पायी थी तो इस बार भी क्या बिगाड़ लेती !

मिसाल कोठारी की भी उसके सामने थी । दो बार उसकी खोपड़ी पर भीषण प्रहार हुआ फिर भी यूं खड़ा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं था ।

सब ठीक होगा । सदा के साथ भी सब ठीक होगा । कोई बड़ी बात नहीं कि कोठारी के पहुंचने तक वो उठ के बैठा हो ।

उस खयाल से उसे सकून मिला ।

लेकिन उसके जेहन के किसी कोने में बेचैनी फिर भी पर किये रही ।

क्या बात थी जो अनजाने में उसे आन्दोलित कर रही थी ?

क्या ये कि कोठारी उसे छोड़ जायेगा ?

कोठारी ! जिसके लिये उसने इतना कुछ किया, वो उसे छोड़ देगा !

तब एकाएक उसे अहसास हुआ कि उसकी बेचैनी की वजह वो नहीं थी । सदा की हालत भी नहीं थी । डाक्टर सिंगला भी नहीं था, जो बकौल सदा, जिन्दा था । उसकी बेचैनी की वजह कहीं बाहर नहीं, उसके भीतर थी ।

उसे खुद अपने आप से नफरत थी ।

कैसी औरत थी वो ! जिसकी सोच हर वक्त रुपये, आने, पाइयों में ही उलझी रहती थी । अपने दौलत के मिशन को करीब लाने के लिये उसने सदा के कत्ल की साजिश में शरीक होना कबूल किया, नाकाम होने के बाद नाकामी से कोई सबक न लिया और अपनी कोशिश न छोड़ी । अपनी दौलत की जुस्तजू के मद्देनजर उसने हमेशा अपनी हर हरकत को जायज ठहराने की कोशिश की । कोठारी से प्यार के हवाले से सोच लिया कि जो हो रहा था, ठीक हो रहा था ।

कहां था प्यार !

प्यार तो उसे एक ही चीज से था ।

पैसा ! पैसा ! पैसा !

क्या था कोठारी ?

उसका प्यार ?

नहीं, उसकी दिलजोई का जरिया ।

खाविन्द के अधूरे छोड़े काम को मुकम्मल करने वाला कैजुअल वर्कर । उसके नाज नखरे उठाने वाला मजदूर । उसकी हवस का गुलाम । डाक्टर सिंगला से किसी प्यार या

लगाव का कोई मतलब ही नहीं था । क्योंकि उसे तो एक मिशन की खातिर कल्टीवेट किया था । वो कामयाब हो जाता तो कहानी वहीं खत्म हो जाती ।

सदा !

अपने पति से उसे कोई मुहब्बत नहीं थी । किसी से हमदर्दी जताना, किसी पर तरस खाना, किसी का कोई लिहाज करना, मुहब्बत का पर्याय नहीं होता था ।

उसे किसी से मुहब्बत नहीं थी, क्योंकि मुहब्बत के जज्बे को उसने अपने भीतर से तब खुद नेस्तानाबूद कर दिया था । जबकि दौलत की चाह को अपने हर जज्बे पर हावी हो जाने दिया था । कैसे वो किसी से मुहब्बत कर सकती थी जबकि उसे खुद अपने आपसे मुहब्बत नहीं थी !

इसी वजह से वो हमेशा हर किसी से आशंकित रहती थी, हर किसी को कोसती थी । एक सांस में किसी के प्यार का दम भरती थी तो दूसरी सांस में उसे गाली देती थी ।

तकदीर ने उसे कहां पहुंचाया था ? कहां खड़ी थी वो ? क्या उसके पांव मजबूती से यथार्थ की धरती पर टिके हुये थे ?

नहीं । बिल्कुल भी नहीं ।

तभी सामने हैडलाइट्स चमकीं ।

वो कार से निकली और जाकर सड़क पर खड़ी हो गयी ।

कोठारी ने उसके पहलू में ला कर कार को रोका और हैडलाइट्स आफ कीं । उसने इंजन बन्द किया और और बाहर निकलने का उपक्रम किया ।

"सदा बिल्कुल ठीक है ।" - वो बोला ।

"तुम" - नमिता संदिग्ध भाव से बोली - "इतनी जल्दी कैसे लौट आये ?"

"अरे, तेरे सुहाग का सदका था" - वो हंसा - "शैतान की तरह गाड़ी चलाई । हवा से बातें करता गया, हवा से बातें करता तेरे पास वापिस लौटा ।"

"वो.. .वो किस हालत में था ?"

"उठ के बैठा हुआ था और फिर बोतल थामने की कोशिश में था । नाडकर्णी ने बोतल फोड़ दी और किस्सा ही खत्म कर दिया । तब सदा की शक्ल देखने वाली थी । लगता था कि यार का खून कर देगा । लेकिन फिर नॉर्मल हो गया था ।"

"अब वो खतरे से बाहर है ?"

"बिल्कुल !"

"ओह !" - उसने चैन की सांस खी - "दैट्स गुड न्यूज ।"

"अब तू अपनी वैन में बैठ और मेरे पीछे आ । हम काटेज पर चलते हैं । वहां तू वैन को छोड़ना, अपनी जरूरत की चीजें समेटना और काठमाण्डू की अर्ली मार्निंग फ्लाइट पकड़ने के लिये मेरे साथ चलना ।"

"कपिल..."

"हां ?"
"मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रही हूं ।"
उसके हाथ स्टियरिंग पर कसे, जबड़े भिंचे, उसने अपलक नमिता की तरफ देखा ।
नमिता ने पूरी हिम्मत जमा करके उससे निगाह मिलाई ।
"क्या बोला ?" - वो सर्द स्वर में बोला ।
"मैं" - नमिता पहले से ज्यादा दृढ़ता से बोली - "तुम्हारे साथ नहीं जा रही हूं ।"
"जानती है तू क्या कह रही है ?"
"हां, जानती हूं ।"
"तू खुद अपना सपना तोड़ रही है । हाथ आये पैसे को गुडबाई बोल रही है ।"
"मुझे नहीं चाहिये पैसा । समझ लो जो कुछ भी डिक्की में है, सब तुम्हारा है ।"
"तू मेरे को भी गुडबाई बोल रही है ?"
"ये बड़ा मुश्किल फैसला है, लेकिन.. .है ।"
"तेरे भीतर कुछ नहीं है ?"
"सब कुछ है, लेकिन, मुझे अभी अहसास हुआ है कि, तुम्हारे लिये नहीं है ।"
"तो फिर किसके लिये है ? खसम के लिये ?"
"पता नहीं ।"
"अब कहां जायेगी ?"
"उसी के पास जाऊंगी ।"
"लेकिन जब कुछ पता ही नहीं तो..."
"तसल्ली करने जाऊंगी कि वो ठीक ठाक है । फिर जहां सींग समायेंगे, चली जाऊंगी ।"
"तो ये इरादे हैं ?"
"क्या ? क्या कह रहे हो ?"
"सदा की सगी बनकर दिखायेगी । फिर दोनों मिलकर मुझे गिरफ्तार करा दोगे, ताकि जिस पैसे से अब बेरुखी दिखा रही है, वो दूसरे रूट से तेरे हाथ में आ जाये ! शेयरों की कमाई समेत । तू मेरे से ये खेल खेलेगी ?"
"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है लेकिन मुझे मालूम था कि तुम्हें यहीं सूझना था और इसके सिवाय और कुछ नहीं सूझना था ।"
"तू मुझे गलत समझ रही है ।"
"नहीं, कपिल, तुम मुझे गलत समझ रहे हो ।"
"कैसे भी सही, एक दूसरे को समझ तो रहे हैं न हम ?"
"लेकिन..."

"फिर लेकिन ! इधर आ के कार में बैठ । फिर इत्मीनान से बातें करते हैं । जल्दी कर । टाइम जाया न कर ।"

"नहीं । मैं जा रही हूं ।"

"अभी रुक । अभी तक ।" - वो कार से बाहर निकला - "अभी हमारी बात खत्म नहीं हुई ।"

"क्या बाकी रह गया ?"

"तेरा हिस्सा बाकी रह गया ।"

"मुझे नहीं चाहिये ।"

"मेरे को तो देना है न ! मेरे से ले । फिर भले ही उसको समुद्र में बहाना ।"

वो खामोश रही ।

क्या हर्ज था !

आखिर सदा का पैसा था ।

"डिक्की में है न !" - वो मुस्कराया - "अभी निकालता हूं ।" - और उसके करीब आ खड़ा हुआ - "तू हौसला रख । वही होगा जो तू चाहेगी ।"

उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया और चुम्बन लेने की कोशिश की ।

नमिता उसकी पकड़ में छटपटाई ।

"गुडबाई किस ।" - वो उसके होंठों पर अपने होंठ दबाता बोला ।

बड़ी मुश्किल से वो उसकी गिरफ्त से आजाद हुई ।

"क्या हुआ ?" - वो बोला - "डर गयी ?"

"हां ।" - वो हांफती-सी बोली - "डर गयी ।"

"तू डर गयी ?"

"हां, मैं डर गयी ।"

"साली ! जिसके सामने नंगी खड़ी होती है, उसकी किस से डर गयी ?"

"वो कहानी अब खत्म है ।"

"तेरी तरफ से खत्म है ।"

उसने उसके गिरहबान में हाथ डालने की कोशिश की ।

नमिता तड़पकर पीछे हटी ।

"खबरदार !" - वो फुम्फकारती सी बोली - "खबरदार जो मुझे हाथ लगाया ।"

"कमाल है ! छिनाल पर कुलवन्ती नारी का साया कैसे पड़ गया ?"

उसका हाथ हवा में घूमा ।

जोर की आवाज करता एक भरपूर झापड़ नमिता के गाल पर पड़ा ।

वो लड़खड़ा कर पीछे हटी, उसकी आंखों में आंसू छलछला आये ।

वैसा ही भीषण प्रहार उसके चेहरे पर फिर हुआ ।

उसके पांव उखड़ गये, वो भरभरा कर जमीन पर गिरी ।

वो उसके सिर पर आ खड़ा हुआ, उसने झुक कर यूं उसे उठाया जैसे वो कोई गठरी हो ।

"साली ! दगाबाज ! कमीनी !" - दांत पीसता वो फुंफकारा - "माल में हिस्सा कबूल है लेकिन मैं कबूल नहीं ! मैं भी देखता हूं तू क्या कबूल करती है और क्या कबूल नहीं करती ।"

गठरी की तरह ही उसने उसे अपनी कार की पिछली सीट पर फेंका ।

नमिता को सिवाय इसके कुछ महसूस नहीं हो रहा था कि उसका सिर फिरकनी की तरह घूम रहा था और आंखों के आगे रंग बिरंगे सितारे नाच रहे थे ।

शीशे चढ़ाये जाने की और दरवाजे बन्द होने की आवाज आयी ।

फिर उसके हलक में आग लगी । वो जोर-जोर से खांसने लगी ।

उसने जबरन उसके मुंह में नीट विस्की उड़ेल दी थी ।

धुंधलाई निगाह से उसने देखा कि अब वो खुद भी बोतल को मुंह लगाये था ।

"चीखना चिल्लाना चाहे" - वो बोला - "तो मेरी तरफ से कोई रोक टोक नहीं । खुशी से अपना शौक पूरा कर ले ।"

विस्की ने अपना असर दिखाना शुरू किया । वो उठ कर बैठी ।

"एक घूंट और ?"

"नहीं ।" - बड़ी मुश्किल से वो बोल पायी - "नहीं ।"

उसके दोनों हाथ एकाएक उसके वक्ष पर पड़े । हाथों के एक ही झटके से ब्रा समेत उसका ब्लाउज ऊपर उठ गया और उसके स्तन नग्न हो गये ।

दांत किटकिटाते नमिता ने जोर से हाथ घुमाया । हाथ उसकी कनपटी से टकराया तो उसे अपना ही हाथ टूटता महसूस हुआ ।

वो जोर से हंसा । उसने बायें हाथ से उसकी दोनों कलाइयां जकड़ लीं और दायें से उसके स्तनों को मसलने लगा, नोचने लगा ।

तड़पकर उसने अपना एक हाथ छुड़ाया और फिर उस पर वार करने की कोशिश की ।

उसने दूसरे हाथ से उसकी वो कलाई थाम ली और दोनों बांहों को उसके दोनों पहलुओं के साथ जकड़ दिया ।

"बाज आ जा !" - वो गुर्राया - "वर्ना मुंह नोच दूंगा । सारी जिन्दगी शीशा देखने से डरेगी ।"

उसने हाथ-पांव ढीले छोड़ दिये ।

"क्या चाहते हो ?" - वो फुसफुसाई ।

"देखना ।"

उसकी साड़ी को उसने उसकी कमर तक उठा दिया ।

"क्यों.. .क्यों कर रहे हो ?"

"ताकि जो तू भूल गयी है - या जान-बूझकर भूलना चाहती है - वो तेरे को याद आये । यही पसन्द है न तुझे ?.. .यही.. .यही.. .यही..."

वो अपनी मनमानी करता रहा ।

तभी एकाएक कार का भीतरी हिस्सा रोशनी से नहा गया ।

कोठारी हडबड़ा कर उस पर से उठा ।

"ये कोठारी की कार है ।" - उसे संदीप नाडकर्णी का उत्तेजित स्वर सुनायी दिया - "उधर नमिता की वैन भी खड़ी है ।"

नमिता घबराई, बौखलाई अपने कपड़े व्यवस्थित करने लगी ।

टोर्च की रोशनी भीतर पड़ी ।

उसने रोशनी के जरिये की तरफ निगाह उठाई तो शीशे में से झांकता इन्स्पेक्टर नगरकर का चेहरा दिखाई दिया ।

"देवा ! देवा ! इधर तो कामसूत्र चल रहा था ।"

उसने टोर्च का रुख नीचे की तरफ किया और एक झटके से कार का दरवाजा खोला ।

नमिता ने कोठारी की तरफ निगाह उठाई तो उसे बहुत ही दयनीय स्थिति में पाया । उसकी पतलून उसके टखनों के गिर्द थी और हाथों में हथकड़ियां थीं जिनकी वजह से वो आसानी से पतलून को उठाकर कमर से बांध भी नहीं सकता था ।

"आराम से ।" - पावटे की आवाज आयी - "आराम से ।"

किसी ने कोठारी को खींचकर बाहर निकाला और पतलून वापिस पहनने में उसकी मदद की ।

"साले ।" - नाडकर्णी दांत पीसता बोला - "मेरे को चलती कार से बाहर फेंक दिया । अभी आया मजा !"

नमिता ने अपने कपड़े व्यवस्थित कर लिये थे । अब वो घुटनों को ठोड़ी के नीचे लगाये बैठी सुबक रही थी ।

"नमिता !" - नाडकर्णी व्यग्र भाव से बोला - "ठीक हो तुम ?"

"मेरी छोड़ो ।" - वो रुंधे कण्ठ से बोली - "तुम इधर क्यों आये ? सदा के पास जाना था ।"

"इसने अपनी गन से मेरी कनपटी पर वार किया था और मुझे चलती कार से बाहर फेंक दिया था । मैं इन पुलिस वालों को सड़क पर पड़ा न दिखाई दे गया होता तो मेरी हालत भी सदा से जुदा न होती ।"

"ओह तो अब..."

नाडकर्णी ने पुलिस वालों की तरफ देखा ।

“चल रहे हैं ।” - नगरकर बोला ।

***

सदानन्द पुणेकर के जिस्म में हरकत हुई । बड़ी शिद्दत से उसने आंखें खोलीं तो उसे कड़ियों वाली छत यूं हिलती डुलती लगी जैसे उसके ऊपर आ गिरने वाली हो । छत दिखायी देने की वजह से ही उसे अहसास हुआ कि वो फर्श पर ढेर था ।

उसने कई लम्बी लम्बी सांसें लेकर अपने में ताकत बटोरी और फिर झूमता झामता उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हुआ और दो लड़खड़ाते कदम आगे बड़ा कर मेज के करीब पड़ी कुर्सी पर ढेर हुआ ।

उतने में ही उसकी ताकत चुक गयी । उसकी सनसनाती कनपटियों में, खोपड़ी में खून और धाड़ धाड़ करके बजने लगा ।

फिर सबसे पहले उसे यही अहसास हुआ कि वो वहां अकेला था ।

क्यों ? क्यों अकेला था ?

वो कहां गयी ?

चली गयी ।

क्यों चली गयी ? उसने तो कोठारी के लौटने तक वहीं रहना था और उस पर निगाह रखनी थी ! फिर भी चली गयी । जरूर कोई खास ही वजह थी ।

तब उसे अहसास हुआ कि उसका सिर बंधा हुआ था । उसने माथे पर से रूमाल को पकड़ कर खींचा तो उसकी गांठ खुल गयी और वो उसके हाथ में आ गया ।

लाल रंगा रूमाल !

सिर के पृष्ठ भाग को, जहां नब्ज बज रही थी, उसने दो उंगलियों से छुआ । उंगलियों को सामने लाकर उसने उन पर निगाह डाली तो अगले पोरों को लाल रंगा पाया ।

ओह ! तो ये वजह थी नमिता की गैरमौजूदगी की । वो घायल था और वो उसके लिये किसी इमदाद की तलाश में गयी थी ।

लौटी क्यों नहीं थी ?

उसे खुद अपना सवाल नाजायज लगा ।

उसे कहां मालूम था कि वो कब गयी थी ! क्या पता वो बस अभी गयी ही हो ! ऐसा था तो इतनी जल्दी कैसे लौट आती !

उसने फिर अपने जख्म को छुआ !

किस हालत में था वो ?

क्या मर रहा था ?

आंखों के आगे अंधेरा तो छा रहा था । आंखें खुली रखने के लिये उसे भारी मेहनत तो करनी पड़ रही थी ।

क्या करे ?

उसने मेज पर निगाह डाली । मेज पर धूल की परत चढ़ी हुई थी ।

मुंदती आंखों से कभी देखता, कभी न देखता वो खून से सनी अपनी उंगली से मेज की धूल में अक्षर बनाने लगा । उस काम को अंजाम दे चुकने के बाद उसने धुंधलाई आंखों से नतीजे का मुआयना किया । उसके होंठों पर एक क्षीण मुस्कराहट आयी । फिर उसकी आंखों के आगे अन्धेरा छा गया और उसका माथा भड़ाक से मेज से जाकर टकराया । धमक से मेज पर पड़ा वो पानी का गिलास उलट गया जिसमें से उसने तब पानी का घूंट भरा था जबकि वो वहां अकेला था । पानी मेज पर यूं बहा कि उसके बनाये अक्षरों में से दो मिट गये । मेज पर लिखा रह गया ।

कोठारी ! नमिता   को

फिर उसकी चेतना लुप्त हो गयी ।

***

एडवोकेट गुंजन शाह की पुलिस स्टेशन के लॉकअप के बाजू में बने मुलाकाती कक्ष में नमिता पुणेकर से मुलाकात हुई ।

नमिता की सूरत पर हवाइयां उड़ रही थीं । साफ जाहिर हो रहा था कि लॉकअप में गुजरी एक ही रात उसे बहुत भारी पड़ी थी ।

पिछली रात सब लोग सदा के खुफिया ठिकाने पर पहुंचे थे तो उन्होंने उसे वहां मरा पड़ा पाया था । फिर फोटोग्राफर, फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट वगैरह वहां तलब किये गये थे और पुलिस की वो रुटीन शुरू हुई थी, जो कि वैसे किसी केस की तहकीकात में जरूरी होती थी ।

रात के दो बजे इन्स्पेक्टर नगरकर उसे और कोठारी को लेकर थाने लौटा था और उन्हें जनाना और मर्दाना लॉकअप में बन्द कर दिया था । सुबह उसने उन पर इतना अहसान जरूर किया था कि उन्हें एक एक टेलीफोन काल करने की इजाजत दे दी थी । उस इजाजत का फायदा उठाकर नमिता ने एडवोकेट गुंजन शाह को काल लगायी थी और अपनी हालत बयान की थी ।

शाह के वहां पहुंचने से पहले इन्स्पेक्टर नगरकर ने कई बार उससे बात की थी और उसे समझाया था कि जुर्म के इकबाल में ही उसकी गति थी । जाहिर था कि ऐसा उसने कोठारी को भी समझाया था लेकिन वो खुद वकील था, ऐसे किसी झांसे में क्योंकर आता इसलिये ‘सॉफ्ट टार्गेट’ जानकर नगरकर नमिता को अपना निशाना बनाये रहा था लेकिन नमिता की जुबान नहीं खुलवा पाया था । कम से कम उस मामले में नमिता ने अपने एडवोकेट की हिदायत पर सौ फीसदी अमल किया था ।

वो सुबह सवेरे ही शाह की आमद की उम्मीद कर रही थी, लेकिन वो दोपहर के करीब आया ।

“तुम्हारे केस को स्टडी किया ।” - वो संजीदगी से बोला - “हालात का जायजा लिया, तब आया ।”

“क्या जायजा लिया ?” - वो आशापूर्ण स्वर में बोली ।

“इस बार मामला गम्भीर है । पहली बार की तरह इस बार ये लोग मेरी लफ्फाजी से मात नहीं खाने वाले । इस बार उनके पास तुम्हारे खिलाफ ठोस सबूत हैं ।”

“अच्छा !”

“तुम्हें अपने जोड़ीदार से उम्मीद होगी कि वो सब के पर कुतर देगा, वो खुद वकील था इसलिये कुछ नहीं बकने वाला था ?”

“सोच तो रही थी मैं ऐसा ।”

“सब बक दिया उसने । सब । गा गा कर सुनाया ।”

“क्या सब ?” - वो आतंकित भाव से बोली ।

“शुरू से आखिर तक की सारी दास्तान । तुम्हारे हसबैंड के कत्ल की साजिश । साजिश-दर-साजिश । पुणेकर का काउंटरअटैक । उस तनहा मकान पर हुआ फाइनल शो । सब बक दिया । कुछ न छोड़ा । अपना इकबालिया बयान तक साइन कर दिया ।”

“हे भगवान ! क्या कहा उसने ?”

“कहा कि साजिश तुमने रची थी ।”

“ओह नो ।”

“तुम्हारे पास ही उद्देश्य था । तुम्हीं अपने उम्रदराज, नपुंसक पति से पीछा छुड़ाना चाहती थीं । तमाम साजिश तुम्हारे खुराफाती दिमाग की उपज थी । सब तुमने सोचा था, विचारा था, अंजाम दिया था । वो तो महज मोहरा था, तुम्हारे - एक हसीनतरीन औरत के - हाथों में खेलता खिलौना था ।”

“सन आफ बिच ! असल में सब ऐन इसके उलट था । साजिश का आर्किटेक्ट वो कमीना था और मैं उसके हाथों का खिलौना थी ।”

“माई डियर, मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है, लेकिन मौजूदा हालात में उस पर पुलिस को भी यकीन आये, ऐसा मुमकिन नहीं दिखाई देता ।”

“हूं ।”

“वो पुणेकर का माल लूटने का - बाई दि वे माल पुलिस के कब्जे में है - इलजाम अपने सिर लेने को तैयार है, लेकिन कत्ल का इलजाम अपने सिर लेने को तैयार नहीं इसीलिये उसकी सारी बक झक है ।”

“कत्ल ! कौन-सा कत्ल ! कत्ल तो कोई हुआ ही नहीं ! अगर आपका इशारा सदा के कल रात के अंजाम की तरफ है तो वो तो महज एक हादसा था, जो कि खुद उसकी अपनी वजह से हुआ था ।”

“अच्छा ! वो कैसे ?”

नमिता ने बताया कि कैसे वो नशे में सन्तुलन खो कर गिरा था और मेज से सिर फोड़ बैठा था ।

"कौन मानेगा ?" - गुंजन शाह दार्शनिक भाव से बोला ।

"क्यों नहीं मानेगा ? मैं उस हादसे की गवाह हूं ।"

"तुम कौन हो ?"

"ओह !"

"तुम मुलजिम हो, जिस पर कि उसके कत्ल का इलजाम है । तुम वो खतरनाक औरत हो जिसने अपने हसबैंड को मार डालने की कई कोशिशें कीं और आखिरकार कामयाब होकर ही मानीं । तुम्हारी गवाही की क्या कीमत है ? कहां ठहरती है वो ? कोई मुलजिम अपनी ही करतूत को गवाह बनकर कैसे कवर कर सकता है ?"

"हे भगवान ! ये क्या गोरखधंधा है ! अरे, मैं तो कल रात उलटे इस कोशिश में थी कि उसकी जान न जाये । मैं अपने पीछे उसे जिन्दा छोड़कर उसे डाक्टरी इमदाद मुहैया कराने के लिये निकली थी ।"

"कौन मानेगा ?"

"वो क्या कहते हैं ?"

"सोचो ।"

"मैं कत्ल के बाद फरार हो रही थी ?"

"ऐग्जैक्टली ! लेकिन तुम फरार भी न हो सकी । पहले कोठारी ने थाम लिया, फिर पुलिस ने थाम लिया ।"

"कोठारी के थामने का क्या मतलब ? अगर वो मेरा मोहरा था तो वो भला मुझे क्यों थामता ?"

"अच्छा सवाल है ।"

"और पुलिस ने खुद अपनी आंखों से देखा था कि अपनी कार में वो - मेरा मोहरा, मेरे हाथों का खिलौना - कैसे मेरे साथ पेश आ रहा था !"

"तुम्हारी फरमायश पर ।"

"क्या !"

"आखिरकार हसबैंड से पीछा छूटा था, तुम सेलीब्रेट करना चाहती थीं ।"

"सरेराह ! कार में !"

"एडवेंचर । एडवेंचर का कोई ओर छोर नहीं होता ।"

"हे भगवान !"

"तुम एक सैक्सी औरत हो जिसकी काम वासना कभी भी जाग सकती है, कहीं भी जाग सकती है ।"

"ये कौन कहता है ?" - वो हाहाकारी स्वर में बोली ।

“वो ही कहता है ।”

“वो जबरन मेरे साथ मुंह काला नहीं कर रहा था ?”

“नहीं । गुलाम मलिका का हुक्म मान रहा था, मलिका की ख्वाहिश पूरी कर रहा था । ‘जेम्स, माउंट मी’ के जवाब में ‘यस मैडम’ बोल रहा था ।”

“बहन... ! कंजर का बीज !”

“हनी, मेरे चले जाने के बाद उसे इत्मीनान से कोसना, अभी टाइम जाया न करो । मुझे सब कुछ सुनाओ । सब कुछ वर्ड-बाई-वर्ड बयान करो । पिछली बार तुमने काफी कुछ छुपाया, इस बार कुछ नहीं छुपाना है, सुनने में कितना ही वाहियात लगे, सब बोलना है । शुरू से, कोई बात भूले बिना, सब बोलना है । कोई, कैसी भी बात नहीं छोड़नी है । इसी में तुम्हारी गति है । नाओ कम ऑन । बिगिन विद दि बिगिनिंग ।”

उसने अक्षरश: सब कुछ सुनाया । अपनी चिट्ठी और कोठारी के उससे जबरन हासिल किये इकबालिया बयान की बाबत भी कह सुनाया, डाक्टर सिंगला से अपने मोटीवेटिड अफेयर की बाबत भी न छुपाया ।

वो खामोश हुई तो गुंजन शाह भौंचक्का उसका मुंह देख रहा था ।

“तौबा !” - वो बोला - “तो तुम सच में ही अपने हसबैंड की जान के पीछे पड़ी थीं ।”

“कोठारी के कहने पर । उसके बहकावे में आ कर ।” - वो रुआंसे स्वर में बोली ।

“सिर्फ उसके बहकावे में आ कर ? तुम्हारी कोई मर्जी नहीं थी ?”

“मेरी दस फीसदी थी तो उसकी नब्बे फीसदी थी । दस फीसदी भी उसकी मोटीवेशन से, उसकी मनुहार से बनी थी ।”

“कत्ल प्रेग्नेंसी की तरह होता है । वो होता है या नहीं होता । होता है तो सौ फीसदी होता है; पांच, दस, बीस फीसदी नहीं होता ।”

“लेकिन उसका कत्ल नहीं हुआ । उसकी मौत एक हादसा थी ।”

“यही तो” - वो बड़बड़ाया - “मेरे को किसी तरीके से साबित करके दिखाना होगा । केस के कोर्ट में जाने से पहले साबित करके दिखाना होगा । केस कोर्ट में चला गया तो मेरा काम तो फिर भी वही होगा लेकिन तुम्हारे लिये मुश्किल होगी ।”

“क्या ?” - वो व्याकुल भाव से बोली - “क्या मुश्किल होगी ?”

“पहले तो रिमांड झेलना पड़ेगा, जो तीन हफ्ते तक का हो सकता है, और उस दौरान अन्दर बैठना पड़ेगा । फिर कत्ल का केस है, जमानत बहुत मुश्किल से, होते होते होगी ।”

“ओह ! तो क्या करेंगे ?”

“एसीपी पावटे से बात करूंगा ।”

“पिछली बार के कडुवे तजुर्बे के बाद वो आपसे बात करेगा ?”

“करेगा । वो पब्लिक सर्वेंट है । मैं पब्लिक हूं । वो पब्लिक को दरकिनार नहीं कर सकता ।”

"आप वकील हैं ।"

"पहले पब्लिक हूं । तुम फिक्र न करो, मेरे से बात करना पुलिस के भी हित में है ।"

"वो कैसे ?"

"उन लोगों की तैयारी हो जायेगी । कोर्ट के लिये ड्रैस रिहर्सल हो जायेगा ।"

"ओह !"

"मेरी कोशिश होगी कि जब मेरी पावटे से बात हो, इस केस से ताल्कुक रखता हर शख्स उसके आफिस में मौजूद हो ।"

"कोठारी भी ?"

"वो तो जरूर ।"

"कोई पंगा तो नहीं होगा ?"

"देखेंगे । अभी जाता हूं ।"

***

चार बजे सब एसीपी मनोहर पावटे के आफिस में मौजूद थे ।

अपनी एग्जीक्यूटिव चेयर पर मनोहर पावटे ।

उसके बाजू में उससे थोड़ा परे इन्स्पेक्टर विनोद नगरकर ।

सामने विजिटर्स चेयर पर मिडल में एडवोकेट गुंजन शाह ।

उसके बायें बाजू नमिता पुणेकर ।

दायें बाजू एक कुर्सी छोड़कर एडवोकेट कपिल कोठारी ।

संदीप नाडकर्णी की बाबत बताया गया था कि उसका आगमन किसी भी क्षण अपेक्षित था ।

"मेरी एक दरख्वास्त है ।" - एडवोकेट गुंजन शाह बोला ।

पावटे की भवें उठीं ।

"मैं चाहता हूं कि मेरी क्लायंट के बयान के वक्त मिस्टर कोठारी यहां मौजूद न हों और मिस्टर कोठारी के बयान के वक्त मैं और मेरी क्लायंट यहां मौजूद न हों ।"

"वजह ?"

"आपको निर्विरोध दो वर्शन सुनने को मिलेंगे । आप दोनों बयानों की खामियां खूबियां परख सकेंगे और निर्विघ्न फैसला कर सकेंगे कि कौन झूठ बोल रहा है ।"

"मेरे झूठ बोलने का कोई मतलब नहीं" - कोठारी ने प्रतिवाद किया - "मैं पहले ही सब कुछ सच सच बयान कर चुका हूं ।"

"मेरी क्लायंट का भी झूठ बोलने का कोई इरादा नहीं । लेकिन इसको तुम्हारी मौजूदगी में अपना बयान देने से एतराज है । क्यों एतराज है, तुम्हें मालूम है ।"

"नहीं, मुझे नहीं मालूम ।"

"तुम्हें बराबर मालूम है । क्योंकर मालूम है, ये सुनना तुम्हें गंवारा नहीं होगा । और भी ऐसी बातें हैं, जो मेरी क्लायंट कहेंगी लेकिन जिन्हें सुनना तुम्हें गंवारा नहीं होगा । नतीजतन जो तकरार यहां उठ खड़ी होगी, वो दोनों के लिये खराब होगी । जब भी भड़क कर दो जने एक दूसरे पर इलजाम लगाते हैं तो बहुत-सी बातें ऐसी कह बैठते हैं जो कि उन्हीं के खिलाफ जाने वाली होती हैं ।"

"ये इन दो जनों के सोचने की बात है ।" - नगरकर बोला - "आपके, मेरे या पावटे साहब के सोचने की बात नहीं ।"

"इन्स्पेक्टर साहब, ऐसी सिचुएशन इरादतन क्रियेट करना भी तो ठीक नहीं कि जोश में, बेध्यानी में, गैरजिम्मेदारी से कोई खुद अपने खिलाफ बोलने लगे !"

"न बोलने लगे । मुंह सी ले । हमें कोई फर्क नहीं पड़ता । इसी वजह से मैं तो इस मीटिंग को जरूरी ही नहीं समझता ।"

"एसीपी साहब समझते हैं । उन्हें इस मीटिंग में कोई खराबी नहीं दिखाई देती ।"

"मुझे" - पावटे बोला - "कोई भी रीजनेबल बात सुनने में कोई खराबी नहीं दिखाई देती । आजकल वैसे ही राइट आफ इनफर्मेशन का जमाना है । इसलिये इस केस में भी सब खुले तौर पर हो, इसमें एतराज की कोई बात नहीं । इसी वजह से ये" - उसने आपस में स्टेपल किये हुए कुछ फुलस्केप कागज मेज पर बीचोंबीच रखे - मिस्टर कपिल कोठारी का इकबालिया बयान - जो इन्होंने स्वेच्छा से इन्स्पेक्टर नगरकर को दिया - भी यहां हाजिर है । मिस्टर कोठारी, दिया न ?"

"हां ।" - कोठारी गम्भीरता से बोला ।

"अपनी मर्जी से ? बिना किसी के दबाव में आये ?"

"हां ।"

"ये है वो बयान जिसके हर पेज पर तुमने दस्तखत किये हैं ?"

"हां ।"

"देख कर तसदीक करना चाहते हो ?"

"नहीं ।"

"फिर पढ़ना चाहते हो ? कोई बात वापिस लेना चाहते हो ?"

"नहीं ।"

"मिस्टर शाह, आप इसका मुआयना करना चाहते हैं ? इसे पढ़ना चाहते हैं ?"

"नहीं ।" - शाह बोला - "मुझे मालूम हो चुका है, इसमें क्या दर्ज है । मैं उम्मीद करता हूं कि इस बाबत इन्स्पेक्टर साहब ने मेरे से कोई गलतबयानी नहीं की होगी ।"

"मैंने कोई गलतबयानी नहीं की ।" - नगरकर भुनभुनाया - "क्यों करूंगा भला मैं ! जब ये डाकूमेंटरी..."

“दैट्स एनफ, इन्स्पेक्टर ! अपनी एनर्जी उन इलजामात को बयान करने पर, जो कि मेरे क्लायंट पर आयद होते हैं, लगाओ तो बेहतर होगा ।”

नगरकर ने पावटे की तरफ देखा ।

“मैं बताता हूं ।” - पावटे बोला - “कोठारी ने अपने इकबालिया बयान में कहा है कि अपने खाविन्द के कत्ल की साजिश मैडम ने रची थी और अपनी मनुहार से, अपनी सैक्स अपील से, और भी उन तरीकों से जो कोई खूबसूरत औरत ही इस्तेमाल में ला सकती है, मैडम ने साजिश के अमल में मदद करने के लिये कोठारी को तैयार किया था, बल्कि मजबूर किया था, ऐसे हालत पैदा कर दिये थे कि ये न नहीं बोल सका था । ये मैं मैडम की उस प्लान की बात कर रहा हूं जो कि नाकाम रही थी ।”

“ये मेरी क्लायंट पर बेजा, बेबुनियाद इलजाम है । आप लोग इस हकीकत को नजरअन्दाज कर रहे हैं कि मोटरबोट - जो कि कत्ल वाकया हुआ होता तो मौकायवारदात होती - पर मेरी क्लायंट मौजूद नहीं थी । वहां या पुणेकर था और या ये शख्स था । वहां रेलिंग पर लगा खून पाया गया था, जो कि वहां दोनों में हुई किसी हाथापाई, धींगामुश्ती का सबूत है । क्या ये इस बात से इंकार करता है ?”

“नहीं ।”

“कबूल करता है कि बोट पर इसके और पुणेकर के अलावा कोई और नहीं था ?”

“हां ।”

“तो फिर मेरी क्लायंट गुनहगार क्योंकर हो गयी ? सिर्फ इसलिये कि ये ऐसा कहता है ?”

“नहीं, सिर्फ इसलिये नहीं ।”

“यानी कि और भी कुछ है ?”

“हां ।”

“क्या ?”

“बड़े वाला बम जो अभी आपके सामने धड़ाम की आवाज से फूटेगा ।”

“ओह, कम ऑन । और क्या है ?”

“दिखाओ ।” - पावटे नगरकर से बोला ।

नगरकर ने अपनी वर्दी की जेब से एक कागज बरामद किया और उसे हवा में लहराया ।

“और ये चिट्ठी है ।” - वो विजेता के से स्वर में बोला - “जो मैडम ने इसे मैंगलोर भेजी थी । अपने लोटस हैण्ड्स से लिखकर ।”

नमिता उछलकर खड़ी हुई, एकाएक उसकी आंखों से शोले बरसने लगे ।

“यू सन ऑफ बिच !” - वो दांत पीसती कोठारी से सम्बोधित हुई - “यू डर्टी डबल क्रॉसर ! यू...”

गुंजन शाह ने बड़ी मुश्किल से उसे शांत करके वापिस कुर्सी पर बिठाया ।

"मैं चिट्ठी पढ़कर सुनाता हूं ।" - स्थिति से आनन्दित होता नगकर बोला ।

"खबरदार !" - नमिता हिंसक भाव से बोली ।

"क्वायट !" - शाह ने उसे पुचकारा - "क्वायट, माई डियर ।"

"आल राइट ।" - नगरकर बोला - "लेकिन कुछ खास फिकरे फिर भी पढता हूं क्योंकि उनके बिना शाह साहब की समझ में नहीं आयेगा कि ये चिट्ठी उनकी क्लायंट के खिलाफ कितना बड़ा बम है । सुनिये । 'डार्लिंग, आई लव यू आई लव यू आई लव यू...एसीपी को शक है लेकिन वो लाख जोर लगा ले, अपने शक को यकीन में नहीं बदल सकता'... 'एसीपी को मेरा सरकाया ये आइडिया हजम हो गया है कि सदा को बोट पर हार्ट अटैक हो गया था और वो मर कर समुद्र में जा गिरा था'... 'तुम्हारे बिना सब सूना है, मैं तुम्हारे से मिलने को तड़प रही हूं'.. .अब शाह साहब क्या कहते हैं ? क्या ये चिट्ठी मैडम के इकबालिया बयान से कम है ?"

"कहां से मिली ?" - शाह ने सहज भाव से पूछा ।

"कोठारी की जेब से । गिरफ्तारी के बाद जब इसकी जमातलाशी हुई तो तब ।"

नमिता बैचेनी से पहलू बदल रही थी । उसकी सूरत से कभी गुस्सा झलकता था तो कभी बेबसी । उसका रोम-रोम उसकी कमीनगी को कोस रहा था कि उसने नाडकर्णी के पास से बरामदी के बाद अपना इकबालिया बयान तो जलाकर खाक कर दिया था लेकिन उसकी चिट्ठी बावक्तेजरूरत उसके खिलाफ इस्तेमाल करने के लिये अपने पास महफूज कर ली थी । वो उसके साथ फरार हो जाती तो वो उस चिट्ठी के सदके उसे हमेशा अपनी लौंडी बनाकर रखता ।

कमीना ! कुत्ता ! कैसे मुस्करा रहा था ! कैसे उसकी दुश्वारी के मजे ले रहा था !

"मेरे को" - शाह बोला - "कोठारी के भी एक इकबालिया बयान की खबर लगी है जो कि पुणेकर ने इससे बोट पर लिखवाया था । वो बयान इस चिट्ठी के साथ उपलब्ध था । वो कहां है ?"

"उसकी कोई जरूरत नहीं ।" - नगरकर संतुष्ट भाव से बोला - "कोई अहमियत नहीं । कोठारी का जो इकबालिया बयान टेबल पर पड़ा है, जो इसने गिरफ्तारी के बाद स्वेच्छा से पुलिस को दिया, वो सब कुछ कवर करता है, सब कुछ एक्सप्लेन करता है, इसलिये वो ही अहम है ।"

"जरूर होगा..."

"है ।"

"ओके, है । मेरा फिर भी सवाल है कि इसका पहले वाला इकबालिया बयान, जो इसने बोट पर लिखा था, कहां है ? क्या ये ऐसे किसी बयान के वजूद से इंकार करता है ?"

"मैंने कहा न कि उस बयान की कोई अहमियत नहीं । वो कुछ साबित नहीं करता ।"

“तुम्हें क्या मालूम ?”

“मुझे मालूम है ।”

“कैसे मालूम है ? क्या चिट्ठी के साथ वो बयान भी जमातलाशी में इसके पास से बरामद हुआ ? क्या तुमने उसे पढ़ा ?”

जवाब देने की जगह नगरकर ने पावटे की तरफ देखा ।

“नहीं बरामद हुआ ।” - शाह दबंग लहजे में बोला - “नहीं पढ़ा । क्योंकि उस बयान को इस शख्स ने नष्ट कर दिया लेकिन उसी के साथ हाथ आयी चिट्ठी नष्ट न की । क्यों न की ? क्योंकि ये उस चिट्ठी को ब्लैकमेल का जरिया बनाना चाहता था, उसे तलवार की तरह मेरी क्लायंट के सिर पर लटकाना चाहता था, ताकि ये इसके खिलाफ अपना मुंह न खोल पाती ।”

“ऐसा कोई बयान नहीं था ।”

“ये कहे ऐसा कोई बयान नहीं था । नहीं कह सकेगा । क्योंकि कहेगा तो संदीप नाडकर्णी आकर इसका मुंह पकड़ लेगा जिसके पास से कि इसने चिट्ठी के साथ-साथ वो बयान भी बरामद किया था । कहां है संदीप नाडकर्णी ? क्या उसका बयान रिकार्ड किया गया है ?”

“आ जायेगा ।” - नगरकर लापरवाही से बोला ।

“मुझे नहीं लगता कि उसका बयान रिकार्ड किया गया है ।”

पावटे ने खंखारकर गला साफ किया ताकि शाह की तवज्जो नगरकर की तरफ से हट के उसकी तरफ हो पाती ।

“मिस्टर शाह” - फिर पावटे बोला - “हम कोर्ट में नहीं हैं । जहां हम हैं, वहां पुलिस से ऐसी जवाबतलबी करना वांछनीय नहीं । इस वक्त अहम सवाल ये है कि मैडम के खिलाफ हमारे पास पर्याप्त, मजबूत सबूत हैं या नहीं । हमारा कहना ये है कि हमारे पास मैडम के खिलाफ चिट्ठी से ज्यादा डैमेजिंग सबूत हैं, जो हम कोर्ट में पेश करेंगे और जो साबित करेंगे कि मैडम ने कत्ल की साजिश ही न की, कत्ल की एक नाकाम कोशिश ही न की, कत्ल भी किया । मैं फिर कहता हूं कि ये जिरह के लिये मुनासिब जगह नहीं, आरोप प्रत्यारोप के लिये मुनासिब जगह नहीं, ये किसी पूर्वाग्रह के बिना एक्सचेंज ऑफ थाट्स और एक्सचेंज ऑफ आइडियाज के लिये मुनासिब जगह है । ये जानकारी शेयर करने के लिये मुनासिब जगह है । ये खामखयालियां दुरुस्त करने के लिये - भले ही वो हमारी हों या मुलजिमा के वकील की हों - मुनासिब जगह है । मैडम के लिये ये जानने की जगह है कि इनके खिलाफ क्या चार्ज है और उसे कैसे साबित किया जा सकता है ! मैडम चाहें तो हमारे साथ डायलॉग कर सकती हैं, चाहें तो खामोश रह सकती हैं, होंठ सी सकती हैं ।”

“वैरी वैल सैड ।” - शाह शुष्क स्वर में बोला - “तो मैडम के खिलाफ मेन चार्ज ये है कि ये कातिल हैं ?”

“हां ।”

“और आप इसे कातिल साबित कर सकते हैं ?”

“अभी” - नगरकर बोला - “एसीपी साहब ने बोला तो है कि कोर्ट में करेंगे ।”

“नगरकर, प्लीज ।” - पावटे बोला ।

नगरकर ने होंठ भींच लिये ।

“हां ।”

“करो ।”

“अभी ?”

“हां । जब इसे एक्सचेंज आफ थाट्स और एक्सचेंज आफ आइडियाज की जगह बताया तो क्यों नहीं ?”

“ओके । सुनिये । मैडम इस बात से इंकार नहीं कर सकतीं कि कल रात विट्ठल राव रोड के करीब के उस तनहा मकान में अपने हसबैंड के साथ अकेली थीं और बाकायदा हथियारबन्द थीं । इनके अधिकार में अड़तीस कैलीबर की भरी हुई रिवाल्वर थी जो कि इन्होंने अपने हसबैंड पर तानी हुई थी । हसबैंड -सदानन्द पुणेकर - नशे में धुत्त था । उसी हालत में उसने भाग निकलने की हिमाकत की । मैडम ने उसे रोकने के लिये मेज पर पड़ी विस्की की बोतल उठाई और उसके सिर में दे मारी । उस वार से लड़खड़ा कर पुणेकर गिरा तो धराशायी होने से पहले रास्ते में इसका सिर मेज से टकरा गया और वो मर गया ।”

“इसलिये ये कत्ल हुआ ?”

“और क्या हुआ ?”

“अभी तुमने खुद कहा मैडम हथियारबन्द थीं, इसने गोली क्यों न चलाई ?”

“क्योंकि मारने की कोशिश में पुणेकर मैडम पर झपटा था, तब रिवाल्वर मैडम के हाथ से निकल गयी थी ।”

“कमाल है ! तुम तो कहा, वर्तमान, भविष्य सब जानते हो । बराय मेहरबानी बताओ तो इस बार मेरे यहां पोता होगा या पोती ?”

“आप मजाक कर रहे हें ।”

“जब तुमने पुणेकर को नशे में धुत्त बताया तो क्यों ये मुमकिन नहीं कि नशे में वो खुद ही तवाजन खो बैठा और मेज से टकराकर सिर फोड़ बैठा ?”

“तो बोतल कैसे टूटी ?”

“बोतल मेज पर थी, वो मेज से टकराया तो मेज हिली और बोतल उस पर से गिरकर टूट गयी ।”

“बोतल के कुछ टूटे टुकड़ों पर खून लगा पाया गया था । अगर बोतल यूं टूटी तो फर्श पर बिखरे टुकड़ों पर खून क्योंकर लगा ?”

गुंजन शाह ने कुछ क्षण सोचा और फिर बोला - "जब किसी का कोई एक्सीडेंट होता है तो पहले वो उस जगह को टटोलता है जहां उसे चोट लगी जान पड़ती है । पुणेकर भी जब मेज से टकराकर धराशायी हुआ तो सम्भलने के बाद सबसे पहले उसने अपनी खोपड़ी ही टटोली और यूं उसकी उंगलियां खून से रंग गयीं । फिर उसी हाथ से बोतल उठाकर उसने उसमें से घूंट भरने की कोशिश की, लेकिन उसकी हालत उसकी उम्मीद से ज्यादा खराब थी इसलिये बोतल उसके हाथ से फिसल गयी और फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो गयी । नाओ, फार युअर काइंड कनसिडरेशन, इस वजह से फर्श पर बिखरे टूटी बोतल के कुछ टुकड़े खूनआलूदा पाये गये ।"

"हाथापायी की बाबत क्या कहते हैं ?" - नगरकर तनिक आवेश से बोला ।

"हाथापायी ! कैसी हाथापायी ?"

"जो हादसे से पहले उन दोनों के बीच में हुई ।"

"कौन कहता है कि हुई ?"

"मैडम का ब्लाउज फटा हुआ था । इनके चेहरे पर खरोंचों के निशान थे । ये सब हाथापायी का सबूत नहीं तो और क्या है ? जरा मैडम के चेहरे पर निगाह डालिये, इनके चेहरे पर खरोंचों के निशान अभी भी मौजूद हैं ।"

"पुणेकर की" - पावटे बोला - "कमीज फटी हुई थी, उसके बटन टूटे हुये थे ।"

"मेरे से हड़बड़ी में बटन खुल नहीं रहे थे ।" - नमिता के मुंह से अपने आप निकल गया - "सदा की छाती नंगी करने के लिये मैंने कमीज को दोनों हाथों से थामकर, उधेड़कर किस्म से अलग किया था । तभी वो फटी थी, तभी बटन टूटे थे ।"

"छाती नंगी किसलिये ?"

"दिल की धड़कन पता करने के लिये । छाती को मसलने के लिये । उन्हें होश में लाने की कोशिश करने के लिये ।"

"तो आपका ब्लाउज कैसे फटा ? आपके चेहरे पर खरोंचें कैसे आयीं ?"

"वो.. .वो सब बाद में हुआ था । उससे सदा का कोई लेना देना नहीं था ।"

"तो किसका लेना देना था ?"

"आप लोगों को मालूम है ।"

"जवाब दीजिये ।"

उसने इलजाम लगाती निगाहों से कोठारी की तरफ देखा ।

"तो" - नगरकर बोला - "आपकी अपने हसबैंड से कोई हाथापायी नहीं हुई थीं ?"

"हां ।"

"आपने विस्की की बोतल उठाकर अपने हसबैंड के सिर पर नहीं मारी थी ?"

"हां ।"

“तो फिर” - नगरकर का स्वर नाटकीय हो उठा - “बोतल पर आपकी उंगलियों के निशान क्योंकर बने ?”

“मैंने ड्रिंक्स बनाने के लिये उसे हैंडल किया था ।”

“आपको अपने हसबैंड की इतनी फिक्र थी कि आपने उसे होश में लाने के लिये कई कुछ किया तो वहां से भाग क्यों खड़ी हुईं ?”

“भाग न खड़ी हुई” - शाह वार्तालाप का सूत्र अपने हाथ में लेता सख्ती से बोला - “हसबैंड के लिये मैडीकल एड की तलाश में निकली ।”

“मैं सदा को अपनी आंखों के सामने मरता नहीं देख सकती थी” - उसका लहजा फिर जज्बाती हो उठा - “वहां मौजूद रहकर मैं उसका कोई भला नहीं कर सकती थी । जो मैं कर सकती थी, वो करके देख चुकी थी इसलिये उसको बचाने के लिये मेरा वहां से निकलना जरूरी था ।”

“उसको बचाने के लिये नहीं” - पावटे बोला - “खुद को बचाने के लिये ।”

“हमें क्या मालूम नहीं” - नगरकर ने तरह दी - “कि वहां से निकल कर आप कहां गयीं ? यार की बांहों में गयीं ।”

“क्या !” - शाह के मुंह से निकला ।

“जब ये पुलिस की निगाह में आयी थीं, तब ये कोठारी की कार की पिछली सीट पर लेटी हुई थी, इनका बाइस्कोप बाहर था, साड़ी कमर से ऊंची उठी हुई थी और ये...”

“एनजाइंग हरसैल्फ ।” - पावटे जल्दी से बोला - “शी वाज एनजाइंग हरसैल्फ । वाज हैविंग आल दि फन विद हर लवर ।”

“ये अन्दाज था इनका” - नगरकर बोला - “अपने हसबैंड की मदद करने का ।”

“इसने मेरे साथ जबरदस्ती की थी ।” - नमिता रुआंसे स्वर में बोली - “इसने जबरदस्ती मुझे.. .मुझे... ही रेप्ड मी । मेरा ब्लाउज भी इसने फाड़ा । मेरा मुंह भी इसने नोचा ।”

“बस !” - शाह हाथ उठाता बोला - “बस !”

“कैसे बस ?” - नगरकर आवेश में बोला - “अभी कैसे बस ? आप जरा इधर मेरी तरफ देखिये ।”

नमिता ने बड़े यत्न से उसकी तरफ देखा ।

“आप ये कहना चाहती हैं कि जिस शख्स के सामने आप राजी से बिछती थीं, उसने आपका रेप किया ? जिससे आपके पूरी तरह से स्थापित नाजायज ताल्लुकात थे, उसने आपसे जबरदस्ती की ? वो भी कार में ? सरेराह ? यूं कि कपड़े फाड़ देने पड़े ? मुंह नोच लेना पड़ा ?”

“हां । हां । हां ।”

“क्यों ?”

"क्योंकि मैं आइन्दा इससे कोई ताल्लुकात नहीं रखना चाहती थी ।"

"क्या ?"

"क्योंकि मेरा इस पर से विश्वास उठ गया था ।"

"एकाएक ? खड़े पैर ?"

"हां ।"

"आप झूठ बोल रही हैं । जिस शख्स के लिये आप गरदान की तरह 'लव यू लव यू' भजती थीं, ये कोई मानने की बात है कि आप यूं एकाएक उससे विरक्त हो गयीं जैसे स्विच आफ करने से लाइट बन्द हो जाती है ? कपिल कोठारी नाम का ये शख्स एक मुद्दत से आपके पहलू की रौनक था । फिर आपने समझा, ये मर गया लेकिन ये एकाएक जिन्दा हो गया और आपकी आशिकी की बुझती शमा फिर रोशन हो उठी । नाडकर्णी इस बात का गवाह है कि आप आखिरी क्षण तक अपने हसबैंड का माल कब्जाने की स्कीम में इसके साथ शामिल थीं । नाडकर्णी को साथ लेकर जब ये उस तनहा मकान से गया था तो पीछे आप क्या कर रही थीं ? आप अपने हसबैंड पर रिवाल्वर ताने बैठी थीं - उस हसबैंड पर गन ताने बैठी थीं जिसकी जान की आपको फिक्र थी, जिसको आप मरने नहीं देना चाहती थीं - लेकिन आखिर तो आपने ऐन यही किया । उसको मरता छोड़कर वहां से फूट लीं । रिवाल्वर साथ ले गयीं । आगे यार मिल गया तो मरता हसबैंड भूल गया, मैडीकल एड भूल गयी, याद रहा तो यार को वहीं राइड मारने देने का जोशोजुनून ।"

"नो !"

"यस । बाई आल मीन्स यस । मैंने जब टार्च की रोशनी कार के भीतर डाली थी तो आप क्या कर रही थीं ? एसीपी साहब की जुबान में, यू वर एनजाइंग युअरसैल्फ । यू वर हैविंग आल दि फन इन दि वर्ल्ड ।"

"नहीं । नहीं ।" - वो चिल्लाई - "ये सब झूठ है । गलत है । बकवास है । ऐसा कुछ नहीं था । मैं अपनी मर्जी के खिलाफ इस शख्स की जोर जबरदस्ती की शिकार हो रही थी । ये अपनी ताकत दिखा कर अपनी मनमानी कर रहा था ।"

"मर्जी के खिलाफ बोला ?"

"हां ।"

"मर्जी को क्या हो गया था ?"

"मैंने पहले ही बोला, मैं आइन्दा इससे कोई ताल्लुकात नहीं रखना चाहती थी ।"

"बोला, लेकिन वजह न बोली ।"

"मैं..."

"अभी पूरी बात सुनिये । ये सुनिये कि आपके कथित हृदयपरिवर्तन पर आपके मरते हसबैंड का कोई एतबार नहीं था । ये सुनिये कि आपके पीठ फेरते ही वो नहीं मर गया था । आपके पीछे थोड़ी देर वो न सिर्फ जिन्दा रहा था, बल्कि होश में भी आ गया था । तब उसने

अपना रुमाल निकालकर अपनी खोपड़ी से बहते खून को रोकने तक की कोशिश की थी...”

“मैंने की थी !”

“क्या ?”

“खून रोकने की कोशिश । मैंने उसकी जेब से रुमाल निकालकर पट्टी की तरह उसके सिर पर बांधा था ।”

“मैडम, हमें रुमाल आपके हसबैंड के सिर पर बंधा नहीं मिला था, खून से लथपथ फर्श पर गिरा पड़ा मिला था ।”

“खुल गया होगा ।”

“या” - शाह आश्वासनहीन स्वर में बोला - “होश में आने पर पुणेकर ने खोल लिया होगा ।”

“फाइन ! फाइन ! अब ये तसवीर देखिये ।”

उसने जेब से लिफाफा निकालकर उसमें से एक पांच गुणा सात का रंगीन फोटोग्राफ बरामद किया और उसे नमिता और शाह के बीच में मेज पर यूं रखा कि दोनों उसे देख पाते ।

“देखिये” - वो पुरजोर लहजे में बोला - “कि आपका हसबैंड अपने ही खून से क्या लिखकर पीछे छोड़कर गया ! अपने खून में उंगली डुबोकर उसने धूल की परत चढ़ी मेज पर क्या लिखा ! लिखा - ‘कोठारी ! नमिता’ ये लिखा उसने अपनी डाइंग डिक्लेरेशन के तौर पर । अपने खिलाफ साजिश रचने वालों के, अपनी मौत की वजह बनने वालों के नाम तक वो बताकर मरा । देखिये ! देखिये !”

कोठारी ने भी कुर्सी से आधा उठ कर मेज पर आगे झुक कर तसवीर पर निगाह डाली ।

“मेरा नाम !” - उसके मुंह से निकला - “लेकिन मैं तो तब वहां था ही नहीं । मैं तो तब नाडकर्णी के साथ था । आप नाडकर्णी से पूछ लो कि हम दोनों पुणेकर को पीछे हट्टा-कट्टा, चाक-चौबन्द छोड़ के गये थे ।”

“कत्ल का लूट से ताल्लुक था ।” - पावटे बोला - “लूट कत्ल की वजह बनी थी । इसलिये कत्ल के लिये तुम भी बराबर के जिम्मेदार हो ।”

“लेकिन मैंने लूटा किसको ?” - कोठारी ने तीखे स्वर में प्रतिवाद किया - “नाडकर्णी को । न कि पुणेकर को । इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि जो पैसा मैंने लूटा वो पुगेकर का था । मैंने वो नाडकर्णी से लूटा, भले ही वो किसी और का था । जो रकम नाडकर्णी के आफिस की सेफ से मैंने हथियाई थी, उस पर पुणेकर का नाम नहीं लिखा था । आप मुझे लूट के लिये जिम्मेदार ठहरा सकते हैं, कत्ल के लिये नहीं । मैं नहीं जानता मेरे पीछे क्या हुआ ? न मुझे इस बात का कोई इलहाम था कि पीछे क्या हो सकता था ! कत्ल

मेरे एजेंडे में शुमार नहीं था । अगर वो इस औरत के एजेंडे में शुमार था तो ये जाने । न मैं मौकायवारदात के करीब भी कहीं था और न इस एक्सट्रीम स्टेप में मेरी कोई हामी थी । मैंने लूट का गुनाह किया है और उसे मैं अपने इकबालिया बयान के जरिये कनफैस कर चुका हूं - मुकम्मल माल आप बरामद कर चुके हैं - कत्ल से मेरा कोई वास्ता नहीं । इस बात से इत्तफाक खुद एसीपी साहब जाहिर कर चुके हैं ।''

पावटे का सिर अपने आप सहमति में हिला ।

''तो ये बात है !'' - शाह बोला ।

''क्या बात है ?'' - पावटे बोला ।

''डील हो भी चुका है । आप इसे सस्ते में छोड़ेंगे और ये आपके मेरी क्लायंट पर टूटकर गिरने में आपकी मदद करेगा । कोई बड़ी बात नहीं कि डील में ये टर्म भी शामिल हो कि अगर ये मेरी क्लायंट को खूनी साबित करने के लिये इसके खिलाफ गवाही देगा तो आप इसे वादामाफ गवाह बना लेंगे । इसी वजह से ये लूट का गुनाह कबूल कर रहा है और इस बात पर जोर दे रहा है कि ये कत्ल में शरीक नहीं था । टू एड एण्ड अबैट ए मर्डर इज ए क्राइम आफ इक्वल ग्रेविटी । ये मेरी क्लायंट को सजा दिलाने में आपकी मदद करेगा, बदले में आप इसका 'एड एण्ड अबैट' वाला रोल भूल जायेंगे । कुछ गलत कहा मैंने ?''

दोनों पुलिस अधिकारियों में से किसी ने जवाब न दिया ।

''मेरे यहां आने का क्या फायदा हुआ, जब जो सौदेबाजी होनी थी, वो पहले ही हो चुकी है । जब कि जानकारी शेयर करने की जगह जानकारी थोपने की जगह बनाई जा चुकी है । एसीपी साहब, ये खामखयालियां दुरुस्त करने की नहीं, खामखयालियां पैदा करने की, उन्हें पुख्ता करने की जगह है । ये इंसाफगाह नहीं, गढ़ के, ठोक पीट के, लीप पोत के केस बनाने की वर्कशाप है । यहां बाजीगरी से मुलजिम के पैरों के नीचे से जमीन खिसकाने का कारोबार होता है ।''

''मैडम के पैरों के नीचे से जमीन हम नहीं खिसकायेंगे'' - नगरकर भड़का - ''इनके कुकर्म खिसकायेंगे, वो अकाट्य सबूत खिसकायेंगे जो इनके खिलाफ हमारे पास हैं । मैडम गिरफ्तार हैं तो अपने कुकर्मों की वजह से और सजा भी पायेंगी तो अपने कुकर्मों की वजह से ।''

तभी दरवाजे पर दस्तक पड़ी ।

पावटे के चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव आये ।

''यस ?'' - वो उच्च स्वर में बोला ।

एक हवलदार भीतर दाखिल हुआ । उसने साहब लोगों को सैल्यूट मारा ।

''एसआई हजारे साहब ।'' - वो मुस्तैदी से बोला - ''एसएचओ साहब से मिलना मांगता है । अर्जेंट कर के । बाहर वेट करेला है ।''

''मैं देखता हूं ।'' - नगरकर उठता हुआ बोला ।

लम्बे डग भरता वो वहां से बाहर निकल गया ।

“हम ।” - पीछे पावटे बोला - “इन्स्पेक्टर के लौटने का इन्तजार करेंगे ।”

शाह ने सहमति में सिर हिलाया ।

कुछ क्षण खामोशी रही ।

उस दौरान नमिता ने कई बार बेचैनी से पहलू बदला । फिर वो शाह की तरफ झुकी और उसके कान के पास मुंह ले जाकर फुसफुसाई - “अब क्या होगा ?”

“ये लोग खास तुम्हारे पीछे पड़े हैं ।” - शाह भी वैसे ही फुसफुसाया - “बाकायदा तैयारी करके तुम्हें अपना निशाना बनाये हैं । इसलिये फिलहाल जो होगा, अच्छा नहीं होगा ।”

“ये तो फ्रेम अप है ।”

“हो सकता है ।”

“है । मैंने सदा का खून नहीं किया । मैंने उसके सिर पर बोतल नहीं मारी । मैं तो उसके करीब भी नहीं फटकी थी । सिवाय उसको होश में लाने की कोशिश के मैंने उसको छुआ तक नहीं था ।”

“मुझे तुम्हारी बात पर एतबार है । अपने क्लायंट की बात पर एतबार करना मेरा फर्ज है । लेकिन अभी तो सब कुछ तुम्हारे खिलाफ है । कोठारी की छोटा गुनाह कबूल करके बड़े गुनाह से पल्ला झाड़ने की ट्रिक काम करती जान पड़ती है । वो शहीद बन के दिखा रहा है और तुम्हें ऐसी खलनायिका के रंग में रंग रहा है जिसने दो मर्दों को उल्लू बनाया, जो न अपने खसम की सगी हुई और न अपने यार की ।”

“झूठ ! बकवास ! उल्लू तो मैं बनी । दोनों मर्दों से ।”

“आई अन्डरस्टैंड, हनी ।”

“नो यू डोंट अंडरस्टैण्ड । मेरा जमीर मुझे कोई सजा दे तो दे, कानूनन मैं नहीं समझती कि मैंने कोई सजावार काम किया है ।”

तभी दरवाजा खुला और इन्स्पेक्टर नगरकर ने वापिस भीतर कदम रखा ।

“अभी यहां एक हाई टेंशन ड्रामा होगा ।” - शाह फुफसाया - “झेल लोगी ?”

“कैसा ड्रामा !” - वो सशंक भाव से बोली ।

“कैसा भी । मैंने तुम्हें वार्न कर दिया है । फिर न कहना खबर न हुई ।”

“लेकिन...”

“चुप ।”

नगरकर चेहरे पर गहन गम्भीरता के भाव लिये अपनी सीट पर वापिस लौटा ।

“एसीपी साहब” - उसके बोल पाने से पहले शाह बोला - “मैंने अपनी क्लायंट से मशवरा किया है । वो अब कबूल करती है कि उसने अपने हसबैंड के सिर पर विस्की की बोतल मारी थी ।”

“क्या !” - सबसे पहले उस बात की नगरकर पर प्रतिक्रिया हुई - “क्या कहा ?”

“मेरी क्लायंट अपना गुनाह कबूल करती है । ये कबूल करती है कि इसने अपने हसबैंड पर बोतल से वार किया था, लेकिन मजबूरी में किया था । आत्मरक्षा के लिये किया था ।”

“यू” - नमिता आने से बाहर हो गयी - “यू डर्टी डबल क्रासिंग...”

“चुप !” - शाह घुड़क कर बोला - “एक लफ्ज भी और जुबान से न निकले ।”

नमिता ने जोर से थूक निगली और तीव्र अनिच्छापूर्ण भाव से होंठ भींचे ।

लेकिन निगाहों से अपने वकील पर भाले बर्छियां बरसाना बन्द न किया ।

सब ! - उसके दिल से कराह निकली - सब उसके दुश्मन !

उसने कोठारी की तरफ देखा ।

अब उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कराहट थी और आंखों में जीत की चमक थी ।

उस नये रहस्योद्घाटन से पावटे भी हैरान था । मुंह बाये वो कभी शाह की तरफ तो कभी उसकी क्लायंट की तरफ देख रहा था ।

फिर उन पर से भटक कर उनकी निगाह अपने इन्स्पेक्टर पर पड़ी ।

मुलजिम के कनफैशन पर उसे संतोष हुआ हो या खुशी हुई हो, ऐसा उसकी सूरत से न दिखाई दिया । वो भी कम हैरानी की बात नहीं थी ।

“लेकिन” - नगरकर बोला तो उसके स्वर में पराजय की झलक थी - “पुणेकर बोतल के वार से नहीं मरा था ।”

“क्या !” - पावटे के मुंह से निकला ।

“बाजरिया सब-इन्स्पेक्टर हजारे अभी ये” - उसने हाथ में थमा एक कागज हवा में लहराया - “पोस्टमार्टम रिपोर्ट यहां पहुंची है, जो कहती है कि पुणेकर के सिर पर लगी चोट का उसकी मौत से कोई लेना देना नहीं ।”

कमरे में मुकम्मल सन्नाटा छा गया ।

उस रहस्योद्घाटन से हर कोई चमत्कृत था ।

सिवाय एडवोकेट गुंजन शाह के ।

“मिस्टर शाह” - आखिरकार पावटे ने खामोशी भंग की - “पोस्टमार्टम रिपोर्ट से आपको कोई हैरानी हुई नहीं जान पड़ती ।”

“मैं सख्त हैरान हूं ।” - गुंजन शाह यूं बोला जैसे किताब पढ़ रहा हो - “और ये जानने के लिये मरा जा रहा हूं कि मरने वाला असल में कैसे मरा !”

पावटे ने नगरकर की तरफ देखा ।

“ये रिपोर्ट कहती है” - नगरकर ने फिर हाथ में थमा कागज सबके सामने लहराया - “कि सैंट्रल नर्वस सिस्टम को सडन शॉक पहुंचने की वजह से मरा और उस शॉक की वजह जिस्म में अल्कोहल और ट्रांक्विलाइजर्स का कम्बीनेशन बना । मरने वाला बेतहाशा शराब

पिये था और साथ में ट्रांक्विलाइजर की गोलियां खाये था । नतीजा ये हुआ कि दिमाग की नसें फूल गयीं और सैंट्रल नर्वस सिस्टम बैठ गया । ये है उसकी मौत की वजह ।''

''क्या मतलब हुआ इसका ?'' - पावटे बोला - ''सिर पर चोट न लगी होती तो भी मरता ?''

''हां । तभी तो बोला उस चोट का उसकी मौत से कोई लेना-देना नहीं ।''

''लेकिन'' - शाह मासूमियत से बोला - ''सिर की चोट का जिक्र तो रिपोर्ट में है न ?''

''है । लेकिन फिजीकल आब्जरवेशन के तौर पर । उस चोट से दिमाग को कोई नुकसान पहुंचा हो, ऐसा रिपोर्ट में दर्ज नहीं है ।''

''फिर तो'' - कोठारी बोला - ''ये खुदकुशी का केस हुआ !''

''खुदकुशी !'' - पावटे अपलक उसे देखता बोला ।

''और क्या ! उसे मालूम होना चाहिये था कि ट्रांक्विलाइजर्स के साथ विस्की पीना घातक हो सकता था । फिर भी उसने ऐसा किया तो खुद ही तो अपनी जान का दुश्मन बना ।''

''हूं ।''

पावटे ने नगरकर को इशारा किया और उठ खड़ा हुआ ।

''हम अभी आते हैं ।'' - वो बोला ।

''प्राइवेट मशवरा करना चाहते हैं ?'' - शाह बोला ।

''यही समझ लीजिये ।''

''अगर आप लोग ये मशवरा करना चाहते हैं कि मेरी क्लायंट के पीछे पड़ने में अब कुछ नहीं रखा तो वो आप अब यहीं कर सकते हैं ।''

''क्या !''

''अब लोगों का कुछ छुपाना या मेरी क्लायंट के खिलाफ कोई नयी पुलिसिया स्ट्रेटेजी तैयार करना नादानी होगा । इसलिये यहीं बैठिये और अच्छे पारदर्शी पुलिस अधिकारियों की तरह सबसे नोट्स एक्सचेंज कीजिये, ताकि दूध का दूध हो और पानी का पानी हो ।''

नगरकर ने आग्नेय नेत्रों से शाह की तरफ देखा ।

''लगता है'' - शाह बोला - ''तुम अच्छे पारदर्शी पुलिस अधिकारी नहीं कहलाना चाहते ।''

नगर ने कोई सख्त बात कहने के लिये मुंह खोला, लेकिन पावटे ने इशारे से उसे खामोश करा दिया । पावटे वापिस अपनी कुर्सी पर बैठ गया, कुछ क्षण अपनी उंगलियों को आपस में उलझाता निकालता रहा, फिर शाह की तरफ आकर्षित हुआ ।

''अभी आपने मैडम का जो कनफेशन पेश किया'' - वो संजीदगी से बोला - ''वो आपका ग्रैंडस्टैण्ड था ?''

जवाब में शाह केवल मुस्कराया ।

"आपको शुरु से सब मालूम था ?"

"अन्दाजा था ।"

"वो भी कैसे था ?"

"अपने क्लायंट पर भरोसा जताने की वजह से था, उसके बयान पर एतबार करने की वजह से था । मेरी तमाम प्रैक्टिस के इस मूल मन्त्र से था कि जो मेरा क्लायंट है, वो बेगुनाह है ।"

"बहरहाल आपको अन्दाजा था कि पुणेकर की मौत की वजह कोई और थी ?"

"हां । लेकिन ये नहीं मालूम था कि वो वजह क्या थी ! क्योंकि मुझे किसी ने ट्रांक्विलाइजर्स की बाबत नहीं बताया था । शराब के साथ ट्रांक्विलाइजर्स, नींद की गोलियां, कोई खुद अपनी जान का दुश्मन ही खा सकता है ।"

"तो आप इस बात से सहमत हैं कि उसने खुदकुशी की ?"

"हां ।"

"खुदकुशी की कोई वजह होती है ।"

"जान-बूझकर की हो तो ।"

"अनजाने में की । वो नहीं जानता था कि शराब और ट्रांक्विलाइजर्स का कम्बीनेशन उसकी जान ले लेगा । खुदकुशी नहीं तो हादसा सही ।"

"मुझे बताया गया था कि यहां संदीप नाडकर्णी भी आने वाला था ।"

"आने वाला तो था.. .आपको उससे कोई काम था ? कुछ पूछना चाहते थे आप उससे ?"

"यही जानना चाहता था कि उसने पुलिस को क्या बयान दिया था ।"

"उसका बयान तहरीरी तौर पर हमारे पास है, आप चाहें तो वो हम आपको दिखा सकते हैं ।"

"आप अपने इन्स्पेक्टर साहब से इजाजत ले लीजिये, क्योंकि इनकी शक्ल से लग रहा है कि इन्हें एतराज है ।"

"इन्हें कोई एतराज नहीं ।"

"बाज लोग होते हैं ऐसे कि उन्हें हर बात से एतराज होता है ।"

"छोड़िये, मिस्टर शाह । खामखाह की नुक्ताचीनी अच्छी नहीं होती । आप बोलिये आप बयान देखना चाहते हैं ?"

"यस, प्लीज ।"

पावटे ने नगरकर को इशारा किया ।

चेहरे पर तीव्र अनिच्छा के भाव लिये वो उठकर बाहर गया और दो आपस में नत्थी फुलस्केप शीट्स के साथ वापिस लौटा । उसने वो शीट्स शाह के सामने डाल दीं ।

"थैंक्यू ।" - शाह बोला - "थैंक्यू माई डियर ।"

उसने गौर से उन पर दर्ज नाडकर्णी के बयान को पड़ा ।

“गुड !” - फिर बोला - “गुड ! ये फोटोकापी है इसलिये मुझे कुछ जगहों को अन्डरलाइन करने की इजाजत दीजिये ।”

पावटे ने सहमति में सिर हिलाया ।

शाह ने जेब से बालपैन निकालकर कुछ सतरों को अन्डरलाइन किया ।

“अब मैं” - फिर बोला - “संदीप नाडकर्णी के इस बयान के उन हिस्सों को पढ़कर सुनाना चाहता हूं जिन्हें मैंने अन्डरलाइन किया और जिन्हें आप लोगों की खास तवज्जो में लाने के लिये मैं हाईलाइट करने जा रहा हूं । सुनिये, यहां क्या कहता है नाडकर्णी का तहरीरी बयान । कहता है... ‘कोठारी ने नमिता को आदेश दिया कि वो बाहर जाये और बाहर खड़ी उसकी कार में से विस्की की बोतल निकाल कर लाये । नमिता बाहर गयी और विस्की की दो बन्द बोतलों के साथ लौटी’ ।.. .चन्द सतरें आगे लिखा है, ‘कोठारी ने गन पुणेकर पर तान दी और कहा - गिलास उठाओ और खाली करो वर्ना भेजा उड़ा दूंगा । मैंने कोठारी को बहुत समझाया कि वो शराब के मामले में पुणेकर के साथ जबरदस्ती न करे क्योंकि वो अल्कोहलिक था, लेकिन वो न माना । नमिता ने भी बताया, फरियाद की कि पुणेकर पीना छोड़ चुका था लेकिन कोठारी गन से डरा-धमका कर उसे जबरन पिलाने की अपनी जिद पर अड़ा रहा । बाजबूद इसके कि खुद कोठारी को बिना किसी के बताये मालूम था कि पुणेकर अल्कोहलिक था । नतीजा ये निकला कि मजबूर पुणेकर पीता गया, पीता गया । एक बार वो नशे के हवाले हो गया तो और पीने पर मजबूर करने के लिये कोठारी का उस पर रिवाल्वर ताने रखना भी जरूरी न रहा । यूं मेरे वहां से रवाना होने तक पुणेकर आधी बोतल से ज्यादा विस्की पी चुका था और उसमें से आधी से ज्यादा उसने नीट पी थी । उसको बेतहाशा विस्की पिलाने के पीछे कोठारी का मकसद ये जान पड़ता था कि उसके माल कब्जाकर लौटने तक पुणेकर किसी हरकत, किसी शरारत, किसी खुराफात के काबिल न रहे’ ।”

शाह ने तहरीर पर से सिर उठाकर बड़े अर्थपूर्ण भाव से कोठारी की तरफ देखा ।

कोठारी के धीरज का बांध टूट गया ।

“क्या मतलब इस तमाशबीनी का ?” - वो चिल्लाया ।

“तमाशबीनी !” - शाह की भवें उठी, उसने हाथ में थमे कागज कोठारी की तरफ लहराये - “तुम्हें इसके संदीप नाडकर्णी का तहरीरी बयान होने पर शक है ? या तुम ये दावा करना चाहते हो कि नाडकर्णी ने जो कहा, झूठ कहा ? या कहना चाहते हो कि ये नाडकर्णी का बयान है ही नही ?”

“ये मेरे खिलाफ साजिश है और इस साजिश में तुम शामिल हो, लेकिन कामयाब नहीं हो सकोगे ।”

“तुम” - पावटे सख्ती से बोला - “पुलिस पर साजिश का इलजाम लगा रहे हो ?”

“मैं कुछ नहीं जानता...”

“नहीं जानते हो तो जानो । तुम इस बयान को नहीं झुठला सकते क्योंकि मैडम भी इसमें दर्ज हर बात की गवाह हैं । तुम अपने खिलाफ दो-दो गवाहों के मुंह पर पट्टी नहीं बांध सकते ।”

“मेरे खिलाफ ! क्यों मेरे खिलाफ ! जब हमारे में डील हो चुका है...”

“डील की बुनियाद ये थी कि कत्ल से तुम्हारा कोई लेना देना नहीं था । जब तुम्हारी बुनियाद ही हिली जा रही है तो कैसा डील ! ये डील कि हम एक गुनहगार के तरफदार बनकर एक बेगुनाह को फांसी का रास्ता दिखायें ?”

“ये बयान आप लोगों के पास तब भी था, जबकि हमारा डील हुआ था ।”

“लेकिन तब हमने इसकी अहमियत की तरफ तवज्जो नहीं दी थी । तवज्जो दी होती तो डील ही न होता ।”

“इससे कुछ साबित नहीं होता...”

“तो भड़क क्यों रहे हो ? चुपचाप बैठो ।”

“मेरा कत्ल से कोई लेना देना नहीं । किसी को धमकाना और धमकी पर खरा उतर कर दिखाना एक ही बात नहीं होती । मैंने अगर पुणेकर को विस्की पीने पर मजबूर किया था तो उसकी वजह इस बयान में ही दर्ज है कि मैं चाहता था कि मेरे माल कब्जा कर लौटने तक वो टिक के बैठता । मुझे नहीं मालूम था कि पुणेकर ट्रांक्विलाइजर की गोलियां खाता था और उनका शराब के साथ कम्बीनेशन घातक होता था ।”

“ये झूठ बोलता है ।” - नमिता आवेश से बोली - “सदा की गोलियों की बाबत इसे बराबर मालूम था । सदा ने इसके सामने जेब से गोलियों की शीशी निकाली थी और उसमें से एक गोली खायी थी । इसने खास तौर से पूछा था कि वो कैसी गोलियां थीं और सदा क्यों खाता था । सदा ने इसे साफ साफ बोला था कि वो ट्रांक्विलाइजर की गोलियां थीं, विस्की छोड़ने की वजह से विड्राल सिम्पटम्स बन गये थे जिन की वजह से वो उसे खानी पड़ती थीं ।”

“यानी” - शाह बोला - “खुद सदा के बताये इसे मालूम था कि वो विस्की पीना छोड़ा चुका था ।”

“मैंने कुछ नहीं सुना था ।” - कोठारी बोला - “मुझे याद नहीं कि वहां ऐसी कोई बात हुई थी ।”

“गोली खाने के बाद” - नमिता बोली - “सदा ने शीशी मेज पर रख दी थी । इसने मेज पर से शीशी उठाकर उसका मुआयना किया था और बोल कर उस पर दर्ज प्रेस्क्रिप्शन को पढ़ा था जो कहती थी - ‘हर चार घंटे बाद । या जब जरूरत हो’ ।”

“मुझे कुछ याद नहीं ।”

“वो शीशी याद दिलोयगी न !” - शाह बोला - “माई डियर, अगर उसे तुमने हैण्डल किया था तो उस पर तुम्हारी उंगलियों के निशान होंगे ।”

“थे ।” - नगरकर दबे स्वर में बोला - “हमारे फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट की रिपोर्ट है कि उस पर हत्प्राण सदानन्द पुणेकर की और एडवोकेट कपिल कोठारी की उंगलियों के निशान पाये गये थे ।”

“सो देयर ।”

“इससे कुछ साबित नहीं होता ।” - कोठारी पूरी ढिठाई से बोला - “हो सकता है मैंने बेध्यानी में मेज पर से शीशी उठा ली हो । मैंने शीशी को छुआ था इससे क्या ये साबित हो गया कि उसमें से गोली निकालकर मैंने पुणेकर की विस्की में मिला दी थी या उसके हलक में धकेल दी थी ?”

“नहीं । लेकिन गन तान कर पुणेकर को विस्की पीने पर मजबूर करना विस्की उसके हलक में धकेलने के ही बराबर था ।”

“विस्की ! विस्की ! गोली नहीं ! और विस्की की वजह अब स्थापित है ।”

“उस पर विस्की थोपने से पहले तुम्हें मालूम था कि वो ट्रान्क्विलाइजर खाता था ।”

“एक गोली” - नमिता बोली - “इसके सामने खायी थी ।”

“तुम पुणेकर से पुराने वाकिफ थे” - शाह बोला - “उसके करीबी थे, जिगरी थे इसलिये ये भी बराबर जानते थे कि वो अल्कहोलिक था । हर पढ़े-लिखे शख्स को मालूम होता है कि ऐसी गोलियों का शराब के साथ कम्बीनेशन जानलेवा होता है, तुम तो पढ़े लिखों से भी दो कदम आगे हो, वकील हो ।”

“पुणेकर भी कोई अनपढ़ नहीं था ।”

“कबूल । उसने गोली मर्जी से खायी क्योंकि वो उसकी जरूरत थी । अभी नमिता ने बोला नहीं कि शीशी पर क्या लिखा था ! लिखा था ‘हर चार घंटे बाद या जब जरूरत हो’ । वो बीमार शख्स था, उसने गोली की जरूरत महसूस की इसलिये खा ली । लेकिन विस्की तो उस पर तुमने थोपी ! जबरन ! नतीजा जानते बूझते ! इस लिहाज से क्या बड़ी बात है कि एकाध गोली तुमने उसकी विस्की में भी सरका दी !”

“नानसेंस !”

“तुम्हारे पास वजह थी ऐसी हरकत की । तुम नहीं चाहते थे कि वो तुम्हारी बाबत, तुम्हारी अपनी बीवी से जुगलबन्दी की बाबत, अपना मुंह खोलता । इसलिये उसका मुंह हमेशा के लिये बन्द करने के लिये तुमने वो फैंसी तरीका अख्तियार किया । उसकी जानकारी के बिना उसके ड्रिंक में वो गोलियां सरका दीं । वो पीना छोड़ चुका था - उसकी बीवी गवाह है, उसका स्टाक ब्रोकर दोस्त गवाह है कि वो पीना छोड़ चुका था - इसी वजह से विड्राल सिम्पटम्स को फाइट करने के लिये वो ट्रान्क्विलाइजर्स खाता था । तुमने ऐसे

शख्स को गन की नोक पर बेतहाशा विस्की पीने को मजबूर किया । माई डियर सर, मेरे कानूनी इल्म के मुताबिक ये कत्ल है, सिर्फ कत्ल है और कत्ल के सिवाय कुछ नहीं है ।"

"ये झूठ है, बकवास है और झूठ और बकवास के पुलंदे के सिवाय कुछ नहीं है ।"

"ऐसा ?"

"हां, ऐसा । अगर मैं पुणेकर की विस्की में गोलियां सरका सकता था तो नमिता भी सरका सकती थी ।"

"शीशी पर इसकी उंगलियों के निशान नहीं हैं ।"

"इसने पोंछ दिये होंगे ।"

"तो पुणेकर के और तुम्हारे निशान भी पुंछ गये होते ।"

"इसने शीशी यूं उठाई होगी कि उस पर निशान न बनने पायें । उस पर अपना रुमाल डालकर उठाई होगी । यूं शीशी छुप गयी होगी और इसकी हरकत भी छुप गयी होगी ।"

"वैरी वैल सैड । लाइक ए गुड आर्गुमेंट फ्रॉम एन एबल लायर । अब बरायमेहरबानी ये भी बताओ कि अगर पुणेकर की विस्की में गोलियां इसने डालीं तो उसके सिर पर बोतल मारने की क्या जरूरत थी ? गोलियों और शराब के कम्बीनेशन से जिस शख्स का मर जाना महज वक्त की बात था, उस पर जानलेवा वार करने का क्या मतलब ?"

"मैं... मैं कुछ नहीं जानता..."

"तो जानो न, माई डियर । सब कुछ तो ऑन रिकार्ड है ।"

"ऑन रिकार्ड कुछ और भी है जिसे आप अपनी सहूलियत के लिये भुलाये दे रहे हैं ।"

"और क्या है ?"

"और वो तहरीर है जो मरने वाले ने अपने खून से लिखकर पीछे छोड़ी । जिसकी इन्स्पेक्टर साहब ने अभी आपको तसवीर दिखाई थी । इन्स्पेक्टर साहब, जरा वो तसवीर फिर दिखाइये ।"

नगरकर ने तसवीर मेज पर रखी ।

"देखिये !" - कोठारी बोला - "देखिये इसमें क्या दर्ज है ?"

"क्या दर्ज है ?" - शाह बोला - "इसमें तुम्हारा और नमिता दोनों का नाम दर्ज है । कैसे एक को बेगुनाह और दूसरे को गुनहगार साबित कर सकोगे ?"

"मेरे नाम के आगे एक्सक्लेमेशन मार्क (!) है, विस्मयबोधक चिन्ह है ।"

"तो क्या हुआ ?"

"जो इस बात पर जोर देता है कि मरने वाले को ही इस बात से इत्तफाक नहीं था कि उसका हमलावर मैं था । उसने ये बात इस तहरीर को पढ़ने वालों को मेरे नाम के आगे '!' लगाकर जतायी । और आगे हकीकत जाहिर की.. .नमिता का नाम लिखा । अभी इससे आगे भी कुछ है जिसका पहले इन्स्पेक्टर साहब ने जिक्र नहीं किया था ।"

"थोड़े फासले के बाद 'को' है ।"

"और आगे कुछ और था जो मिट गया । मेज पर पानी बहने की वजह से मिट गया ।"

"क्या मिट गया ?"

"'थामो' मिट गया । पुणेकर ने जो लिखा था, वो था कोठारी ! .. .विस्मय । 'नमिता को थामो' ।"

दोनों पुलिस अधिकारी प्रभावित दिखाई देने लगे और फिर तसवीर का मुआयना करने लगे ।

"मिटा तो है कुछ ।" - पावटे बोला ।

"वहां से नहीं ।" - शाह शुष्क स्वर में बोला - "जहां से मिटा होने का ये दावा करता है ।"

"पानी ने कहीं से भी कुछ मिटाया हो सकता है ।" - कोठारी ने जिद की ।

"कबूल, लेकिन इतने मुकम्मल तरीके से नहीं कि जो मिटा उसकी परछाई तक पीछे न बचे ।"

"ये भी हो सकता है । क्यों नहीं हो सकता ?"

"'को' के आगे से कुछ यूं मिटा कि उसकी परछाईं तक पीछे न बची ?"

"हां ।"

"तो फिर तुम्हें क्या पता क्या मिटा ! तुम कोई नजूमी हो ?"

"मेरा कम्पीटेंट गेस कहता है, इंटेलीजेंट अन्डरस्टैण्डिग कहती है, कॉमनसेंस कहती है कि 'थामो' मिटा ।"

"'पकड़ो' नहीं ? 'गिरफ्तार करो' नहीं ?"

"वो मर रहा था । उससे उस हालत में मुख्तसर से मुख्तसर बात लिखने की उम्मीद की जाती थी ।"

"इसलिये 'थामो' ?"

"हां ।"

"अगर मुख्तसर ही लिखना था तो 'नमिता को थामो' लिखना ही क्यों न काफी समझा ? तुम्हारा नाम लिखने की क्या जरूरत थी ?"

"जिन्दा बचता तो बताता । शायद मुझे नाइंसाफी से बचाना चाहता था ।"

"अच्छा !"

"हां जब मौत करीब होती है तो मरने वाले को ऐसी बातें आम सूझती हैं । इसीलिये डाइंग डिक्लेरेशन की अहमियत है.. .कि मरते वक्त कोई झूठ नहीं बोलता ।"

"'कोठारी' और 'नमिता' के बीच में जितना फासला है, 'नमिता' और 'को' में उससे कहीं ज्यादा फासला है । ऐसा क्यों ?"

“ये सवाल बेमानी है । मरने वाला खुशखत नहीं लिख रहा था, सुलेख का अभ्यास नहीं कर रहा था जो मीजान में, नापजोख में सब कुछ ऐन चौकस होता ।”

“ठीक । लेकिन ‘को’ से पहले कुछ मिटा जान पड़ता है और मेरे खयाल से वो ही ‘नमिता’ और ‘को’ में कदरन ज्यादा फासले की वजह है ।”

“नानसेंस !”

“तुम्हारी आब्जरवेशन खुदाई हुक्म और मेरी आब्जरवेशन नानसेंस ! ऐसा क्यों, भई ?”

जवाब देने की जगह कोठारी ने उपेक्षा से मुंह बिचकाया ।

“आप देखिये एसीपी साहब, और फैसला कीजिये कि क्या ‘को’ से पहले कुछ मिटा नहीं जान पड़ता !”

दोनों अधिकारियों ने तसवीर का गम्भीर मुआयना किया ।

फिर एसीपी ने हौले से सहमति में सिर हिलाया ।

“अब आप इजाजत दें तो इस तहरीर की बाबत मैं अपना अन्दाजा जाहिर करूं ?” - शाह बोला ।

“कीजिये ।” - पावटे बोला ।

“पहली बात तो ये है कि ‘कोठारी’ के बाद विस्मयसूचक चिन्ह (!) नहीं, पूर्णविराम (।) है । मोटे तौर पर विस्मयसूचक चिन्ह में और पूर्णविराम में एक बिन्दी का फर्क होता है जो पहले चिन्ह में होती है, दूसरे में नहीं होती । हाथ से लिखते वक्त पूर्णविराम के नीचे बिन्दी - डॉट - लगा दी जाये तो वो ही विस्मयसूचक चिन्ह बन जाता है । मैं बाइफोकल्स लगाता हूं जिसकी वजह से रीडिंग में छोटे अक्षर मुझे बड़े दिखते हैं इसलिये मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि ‘कोठारी’ के आगे जो चिन्ह है वो विराम है और वो विस्मयसूचक चिन्ह इसलिये लग रहा है क्योंकि उसके ऐन नीचे इत्तफाक से धूल का एक बड़ा सा कण आ गया है जो कि खून से लिखी तहरीर का हिस्सा नहीं । पुलिस वाले डाकूमेंट्स की या मौकायवारदात की इंस्पेक्शन के लिये मैग्नीफाइंग ग्लास पास रखते हैं, आपके पास हो तो उसके जरिये तसदीक कीजिये कि मैंने जो कहा सच कहा ।”

“बाद में देखेंगे । आप अपनी बात मुकम्मल कीजिये ।”

“मेरी दूसरी बात उस कदरन ज्यादा फासले की बाबत है जो कि ‘नमिता’ और ‘को’ के बीच में है । वो फासला खामखाह नहीं है । इसलिये है कि बीच से कुछ मिट गया है । मेरे फाजिल दोस्त ने, फैलो एडवोकेट ने, कोठारी ने तहरीर की जो अपनी इंटरप्रेटेशन पेश की, उसमें ‘को’ को मुकम्मल लफ्ज माना जब कि मेरी नाचीज राय में ‘को’ उस लफ्ज का सिरा है जिसका शुरुआती हिस्सा मेज पर बहे पानी की वजह से मिट गया है । और मेरा दावा है कि वो लफ्ज... नक्को है ।”

“नक्को !”

"मुम्बइया जुबान में । मीनिंग 'नहीं' । 'नो' । लिहाजा पुणेकर ने मरने से पहले जो असल में लिखा, वो था - 'कोठारी । नमिता नक्को' । यानी कि मुजरिम, विलेन आफ दि पीस, कोठारी है नमिता नहीं ।"

कमरे में सन्नाटा छा गया ।

फिर पावटे ने मेज के दराज से मैग्नीफाइंग ग्लास निकाला और उसकी मदद से तसवीर का बारीक मुआयना किया ।

आखिरकार उसने तसवीर पर से सिर उठाया तो उसकी इलजाम लगाती निगाह कोठारी पर पड़ी ।

"बकवास ! सब बकवास !" - कोठारी भड़क कर बोला - "शाह साहब अपनी क्लायंट को बचाने के लिये कोई भी, कैसी भी कहानी गढ़ सकते हैं ।"

"बिल्कुल ठीक कहा ।" - गुंजन शाह रोबदार आवाज से बोला - "मैं ऐसा कर सकता हूं । मैं हर वो काम कर सकता हूं जिसमें मुझे अपने क्लायंट की भलाई दिखाई देती हो । दिस इज माई जॉब । दिस इज माई ड्यूटी । दिस इज माई रिलिजस ड्यूटी । लेकिन इस बार मैंने कोई कहानी नहीं गढ़ी, इसलिये नहीं गढ़ी क्योंकि कहानी गढ़ने की जरूरत ही नहीं है । इस बार तो हकीकत का अपना बयान ही किसी भी गढ़ी हुई कहानी पर भारी पड़ रहा है । तुम्हारे खिलाफ एकाध बात हो तो चलो अपनी वकील होने की ट्रेनिंग की वजह से तुम उसे झुठला लो, लेकिन तुम्हारे खिलाफ तो बातों की गठरी है, किसे-किसे झुठलाओगे ! सुनो । सुनो और गिनो । तुम बीवी के यार हो । तुम वो शख्स हो, जो सदानन्द पुणेकर के कत्ल की एक कोशिश पहले भी कर चुका है । तुम वो शख्स हो जिसने कल रात उसका सारा नकद माल - पौने दो करोड़ से ज्यादा रुपये - लूट लिया । तुम वो शख्स हो, उस लूट को अंजाम देने से पहले जिसने गन दिखाकर, शूट कर देने की धमकी देकर डिएडिक्शन के दौर से गुजरते, विड्राल सिम्पटम्स के लिये ट्रान्क्विलाइजर खाते पुणेकर को बेतहाशा विस्की पीने का आत्मघाती काम करने के लिये मजबूर किया । तुम वो शख्स हो जिसकी उंगलियों के निशान गोलियों की उस शीशी पर पाये गये जिनके शराब से कम्बीनेशन का नाम मौत था । तुम वो शख्स हो, मरने वाले की डाइंग डिक्लेरेशन में बतौर कातिल जिसका नाम दर्ज है और तुम वो शख्स हो जिसको फांसी के फन्दे पर झूलता देखकर मुझे दिली खुशी होगी ।"

"ठहर जा, साले..."

दांत किटकिटाता कोठारी तोप से छूटे गोले की तरह अपनी कुर्सी से निकल कर शाह पर झपटा ।

नगरकर उसके पीछे लपका ।

पावटे जोर जोर से निरंतर घंटी बजाने लगा ।

दो हवलदार दौड़ते हुए वहां पहुंचे ।

नगरकर ने उनके साथ मिल कर कोठारी को काबू में किया ।

लेकिन तब तक पगलाया हुआ कोठारी काफी डैमेज कर चुका था ।

वयोवृद्ध वकील गुंजन शाह का चश्मा टूट गया था, उसकी एक आंख उस पर हुए प्रहार की वजह से काली पड़ने भी लगी थी और उसकी नाक में से खून बह रहा था ।

फिर भी वो बड़े संतोषपूर्ण भाव से हंस रहा था ।

"जेंटलमैन" - वो बोला - "इस वहशी इंसान की इस हरकत से बड़ा सबूत इसके खिलाफ कोई और नहीं हो सकता । आई रैस्ट माई केस ।"

तब तक कोठारी शांत हो चुका था ।

अब उसके चेहरे पर पराजय और पस्ती के भाव दिखाई दे रहे थे ।

नगरकर ने उसे वापिस उसकी कुर्सी पर धकेल दिया ।

दोनों हवलदार मुस्तैदी से उसके दायें बायें खड़े हो गये ।

"यू आल राइट नाओ ?" - पावटे उसे घूरता हुआ बोला ।

"यस ।" - कोठारी हांफता सा बोला - "यस । आई एम सारी ।"

"यू नीड नाट बी, माई डियर ।" - शाह बोला - "चश्मा टूटने की वजह से मुझे थोड़ी दिक्कत होगी, बाकी सब ठीक है ।"

"अब क्या कहते हो ?" - पावटे बोला ।

कोठारी खामोश रहा ।

"यू आर ए डूम्ड मैन । इसलिये अब खामोश रहने का - या झूठ बोलने का - क्या फायदा ?"

"हां । क्या फायदा ?"

"तो ?"

"मैं अपना ओरीजिनल गुनाह कबूल करता हूं । मैं कबूल करता हूं कि सदानन्द पुणेकर को खत्म करने की साजिश मैंने रची थी, उसकी हर डिटेल मैंने वर्क आउट की थी । ये औरत इतनी मूढ है कि टांगें फैलाने के अलावा इसे कुछ नहीं आता । इससे कोई उम्मीद करना जहालत थी लेकिन साजिश के एक पहलू में इसका रोल था जिसमें इसकी शिरकत जरूरी थी । सम्बन्ध तोड़ लेने की धमकी देकर मैंने इसको उस शिरकत के लिये तैयार किया, ट्रेन किया, जैसे तैसे दो बार इसने अपने हिस्से का काम करके भी दिखाया, लेकिन हमारी बद्‌किस्मती या पुणेकर की खुशकिस्मती, कामयाबी हाथ न लगी ।"

वो खामोश हो गया ।

कुछ क्षण कोई कुछ न बोला ।

"मैं" - फिर वो ही बोला - "हर बात कबूल करता हूं लेकिन इस बात से पुरजोर इंकार करता हूं कि मैंने पुणेकर का कत्ल किया या कत्ल का सामान किया । अब मुझे खून से हाथ रंगने की जरूरत ही नहीं थी । अब मेरा लक्ष्य ये औरत नहीं थी, सिर्फ पैसा था और

पैसा कल रात खून से हाथ रंगे बिना भी मेरी पहुंच में था । इस सिलसिले में मेरी नेकनीयती का सबसे बड़ा सबूत ये है कि मैंने उसके शेयर हथियाने की कोशिश नहीं की । नाडकर्णी के आफिस में जिस सेफ में उसके यूरो मौजूद थे, वहां और भी काफी पैसा था, लेकिन मैंने उसको हाथ लगाने की, उस पर नीयत मैली करने की कोशिश नहीं की थी । मेरा इरादा पुणेकर के कत्ल का होता तो क्या मैं ऐसे विहेव करता ?"

"मिशन सिर्फ पैसा हथियाना था ?"

"पहले इसे" - उसने नमिता की तरफ एक उड़ती निगाह डाली - "हथियाना भी था लेकिन बोट पर पुणेकर के हाथों मेरा जो अंजाम होते होते बचा था, उसके बाद मेरा इश्क का बुखार उतर गया था । उसके बाद पैसा ही मेरा मिशन बाकी रह गया था ।"

"उसकी क्या वजह थी ?"

"घोड़े ।"

"क्या ?"

"रेस का रसिया हूं । घोड़ों पर दांव लगाये बिना नहीं रह सकता । लेकिन रेसकोर्स में तकदीर ने कभी साथ न दिया । कर्जा लेकर रेस खेलता रहा, हारता रहा । हारता रहा और एट पार आने के लिये और बड़े दांव लगाता रहा ।"

"कर्जा कहां से मिलता था ?"

"अन्डरवर्ल्ड से । पुणेकर की वजह से अन्डरवर्ल्ड तक मेरी अच्छी पहुंच थी और सदा की वजह से ही कोई कितनी भी बड़ी रकम के लिये मुझे इंकार नहीं करता था । वो कर्जा बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ गया था कि अदायगी के लिये मेरे पर दबाव बनने लगा था । जान से मार दिये जाने की धमकियां मिलने लगी थीं । मेरे पास एकमुश्त पैसा कहां से आता ! या तो रेसकोर्स में मेरा जैक पॉट लगता या मैं किसी दूसरे के माल पर घात लगाता । ये मेरी शादी से पहले की वाकिफ थी । एक साल पहले ऐसा इत्तफाक हुआ कि हम दोनों फिर करीब आ गये । तब मुझे पता लगा कि इसकी प्राब्लम पुणेकर था और मेरी प्राब्लम का हल पुणेकर था । नतीजतन उसके कत्ल की साजिश परवान चढ़ी, लेकिन वो हमारा भी बाप निकला । बाजी पलट दी । हाथ से निकलती बाजी की डोर कल रात फिर काबू में आयी तो इस बार खोटी तकदीर ने वाट लगा दी । नतीजा सामने है ।"

पावटे ने सहमति में सिर हिलाया ।

"आप लोग मेरे पर जो भी इलजाम लगायेंगे, मैं सिर माथे लूंगा, लेकिन एक बात का मैं मरते दम तक विरोध करूंगा ।"

पावटे की भवें उठीं ।

"मैं कातिल नहीं । मैंने पुणेकर को नहीं मारा । मेरा उसको मारने का कोई इरादा ही नहीं था । होता तो उसे शूट करके इसे साथ ले के वहां से निकलता । मुझे नहीं मालूम था कि जो गोलियां वो खाता था, उनके साथ मिलकर विस्की ऐसा उत्पात मचा सकती थी ।

और जहां तक मैं समझता हूं पुणेकर को भी नहीं मालूम था । मालूम होता तो वो गोली न खाता । गोली खाता तो मेरी धमकी के बावजूद विस्की न पीता ।”

“हूं । और कुछ ?”

उसने इंकार में सिर हिलाया ।

“इन्हें” - पावटे हवलदारों से बोला - “वापिस लाकअप में लेकर जाओ ।”

दोनों हवलदारों के बीच में चलता कोठारी वहां से रुखसत हो गया ।

उस दौरान नमिता ने क्षण भर को भी उसकी तरफ आंख न उठाई ।

सागर से गहरा इश्क आखिर पानी का बुलबुला साबित हुआ ।

“मैडम को भी लॉकअप में पहुंचाओ ।” - पावटे नगरकर से बोला ।

सहमति में सिर हिलाता नगरकर उठ खड़ा हुआ ।

नमिता ने व्याकुल भाव से शाह की तरफ देखा ।

शाह ने आंखों से उसे आश्वासन दिया और आगे पावटे की तरफ देखा ।

“अभी इनकी रिहाई मुमकिन नहीं ।” - पावटे बोला ।

“सारी, हनी ।” - शाह बोला और फिर वो भी उठकर खड़ा हुआ ।

“आप बैठिये ।” - तत्काल पावटे बोला - “आप अभी नहीं जा रहे हैं ।”

शाह वापिस कुर्सी पर ढेर हो गया ।

***

बहुत बाद में मुलाकाती कक्ष में एडवोकेट गुंजन शाह की नमिता पुणेकर से फिर मुलाकात हुई ।

नमिता ने आशापूर्ण नेत्रों से उसकी तरफ देखा ।

“पुलिस वालों की ईगो आड़े आ रही है, माई हनी चाइल्ड ।” - अपनी चश्मारहित आंखों को उल्लुओं की तरह झपकाता और अपनी तब तक काली पड़ चुकी आंख को सहलाता शाह बोला - “तुम्हें होल्ड करके रखना उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है । वो मीडिया को हिंट दे बैठे हुये हैं कि उन्होंने केस हल कर भी लिया हुआ है और मुजरिम को पकड़ भी लिया हुआ है ।”

“वो बात तो ठीक है । कोठारी तो अपना गुनाह कबूल भी कर चुका है ।”

“हां, ठीक है । लेकिन तुम्हारे जैसी हसीनतरीन मुजरिम की जगह कोठारी को पेश करने में उनकी हेठी होती है न !”

“उनका हिंट मेरी तरफ था ?”

“ये भी कोई पूछने की बात है ! और कोठारी से डील किसलिये किया था ! उसको इतनी छूट किसलिये दी थी ! उसकी इतनी करतूतों को नजरअन्दाज किसलिये किया था !”

“ओह !”

“कुछ अरसा यहां रहने के लिये अपना दिल पक्का कर लो । उसके बाद भी उन्होंने तुम्हें न छोड़ा तो मैं कोर्ट में जाऊंगा । ओके ?”

“आप कहते हैं तो ओके ।”

“मैं कहता हूं ।”

“आपने ये कहके, ये गलतबयानी करके, मेरे छक्के क्यों छुड़ाये कि मैं कबूल करती हूं कि मैंने अपने हसबैंड के सिर पर विस्की की बोतल मारी थी ?”

“तुम्हें वार्न तो किया था कि हाई टेंशन ड्रामा होगा !”

“लेकिन ये तो नहीं बताया था कि क्या ड्रामा होगा ! ये तो नहीं कहा था कि आप, मेरे अपने वकील, इतना बड़ा इलजाम मेरे सिर थोपेंगे ?”

“ग्रैंडस्टैण्ड था गुंजन शाह का ।”

“वो तो अब मुझे मालूम है कि क्या था लेकिन तब तो मेरे प्राण सुखा दिये थे । वो.. .आपके लिये.. .मेरे मुंह से.. .गाली तक निकलने लगी थी ।”

“मैंने निकलने कहां दी थी ?”

“राज क्या था आपकी उस मूव का ?”

“सुनो । मुझे घड़ी भर को भी विश्वास नहीं आया था कि पुणेकर का सिर मेज से टकराकर फटा था और उसी चोट ने उसके प्राण हर लिये थे । ऐसी चोटें लोगों को लगती ही रहती हैं, मर कोई नहीं जाता । भगवान ने इंसानी खोपड़ी बहुत मजबूत बनाई है, उसमें सीरियस फ्रैक्चर हो तो तभी चोट दिमाग तक पहुंचती है और मौत का कारण बनती है । तुमने उसकी खोपड़ी में गहरा जख्म देखा था लेकिन फ्रैक्चर नहीं देखा था । फ्रैक्चर भी हुआ होता तो जख्म के रास्ते भेजा बाहर निकल आया होता और एक बार होश खोने के बाद वो उठ के न बैठ गया होता । लिहाजा मुझे यकीन था कि वो चोट - वो जख्म - पुणेकर की मौत की वजह नहीं था । लेकिन मरा तो वो था । कोई तो वजह थी मौत की । तब मुझे याद आया था कि उसने न सिर्फ बेतहाशा विस्की पी थी, थोड़े से ही वक्फे में ट्रान्क्विलाइजर की दो गोलियां खायी थीं । उस बाबत मैंने एक पैथालोजिस्ट से बात की तो उसने मुझे बताया कि जो शख्स अल्कहोलिक हो उस पर वो कम्बीनेशन कहर ढा सकता था । तब मुझे लगभग यकीन हो गया था कि पुणेकर की जान उस कम्बीनेशन ने ही ली थी । उसकी मौत का उसकी सिर की चोट से कोई रिश्ता नहीं था, भले ही उसने खोपड़ी मेज पर मारी हो या बकौल पुलिस, तुमने खोपड़ी पर बोतल मारी हो । ओके सो फार ?”

नमिता ने सहमति में सिर हिलाया ।

“फिर पीछे एसीपी के आफिस में एसआई हजारे का जिक्र आया । मैं उस एसआई को जनता हूं क्योंकि वो कोर्ट में अक्सर पेश होता रहता है । वो उस सरकारी मोर्ग में ड्यूटी करता है जहां कि पोस्टमार्टम होते हैं । उसको वहां अर्जेंट पहुंचा सुनकर मेरे को यही सूझा कि वो पुणेकर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट लेकर आया था । फिर इन्स्पेक्टर नगरकर उससे

मिलने आफिस से बाहर गया । वो वापिस लौटा था तो उसके हाथ में थमे पोस्टमार्टम रिपोर्ट के फार्म को मैंने फासले से ही पहचान लिया था । दूसरे, वो गरजता बरसता तुम्हारे पर कातिल होने की तोहमत लगाता बाहर गया था और जब पोस्टमार्टम रिपोर्ट के साथ लौटा था तो उसका चेहरा उतरा हुआ था । माई डियर, मैं उतने से ही समझ गया था कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में वो दर्ज नहीं था जिसकी कि उसे अपेक्षा थी ।"

"ये कि सदा सिर की चोट से मरा था ?"

"हां । तब दूसरी, आल्टरनेट, वजह मेरे जेहन में आयी और मुझे बिल्कुल ही यकीन हो गया कि उसकी जान ट्रान्क्विलाइजर की गोलियों के ऊपर बेतहाशा शराब पीने से गयी थी । तब मैंने - जैसे उनकी खिल्ली उड़ाने के लिये - वो स्टण्ट मारा कि तुम कबूल करती थीं कि तुमने उनके कहे मुताबिक अपने हसबैंड पर बोतल से वार किया था । लेकिन साथ ही उलटी पड़ जाने की सूरत में गुंजायश भी रख ली कि आत्मरक्षा के लिये किया था ।"

"ओह !"

"उन लोगों को वो बात भला क्योंकर कबूल होती जो बाजरिया पोस्टमार्टम रिपोर्ट हकीकत से वाकिफ हो चुके थे । तुम्हारे उस कनफेशन को वो नजरअन्दाज नहीं कर सकते थे जो कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट सामने आने से पहले सामने आया था । पोस्टमार्टम की रिपोर्ट सामने आते ही उन्हें सूझ जाना था कि पुणेकर की मौत के लिये कोठारी जिम्मेदार था जिसने कि गन दिखाकर पुणेकर को शराब पीने पर मजबूर किया था और वो ट्रान्क्विलाइजर्स और शराब के कम्बीनेशन की वजह से मर गया था । यानी कि तुम्हारे बोतल सिर में मारने से तो वो नहीं मरा था, लेकिन अपनी जुबानी बोतल मारी होना कबूल करके तुमने साबित कर दिया था कि जो असल में हुआ था, उसमें तुम्हारी कोई कंट्रीब्यूशन नहीं थी, वो सिर्फ और सिर्फ कोठारी का वन मैन शो था । यानी कि तुम कत्ल के इल्जाम से बरी । माई डियर, ये वो नतीजा था जो मैं अपने उस ग्रैंडस्टैण्ड से निकालना चाहता था और जो निकला ।"

"फायदा ?"

"फायदा ! पूछती हो फायदा ! अरे, कानून कातिल को अपने जुर्म का फायदा उठाने की इजाजत नहीं देता । कोई औरत अपने हसबैंड का कत्ल करके उसकी वारिस नहीं बन सकती । उसकी सम्पति की दावेदार नहीं बन सकती । अब आयी बात समझ में !"

"सर" - वो प्रशंसात्मक स्वर में बोली - "जो गाली मैं उस वक्त नहीं दे सकी थी, इजाजत हो तो अब दूं ?"

"इजाजत है ।"

"क्योंकि मुझे गालियां बकने का शौक है ।"

"बड़ा मौलिक शौक है ।"

"सर, यू आर ए वन कनिंग, गाड-फारसेकन सन ऑफ बिच !"

"थैंक्यू । थैंक्यू । इस बार जब फीस देना तो गालियों में पिरो कर देना ।"

"जरूर ।" - वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली - "कैसी विडम्बना है ? कोठारी ने जब सदा को मारने की कोशिश की तो मार न सका, जब मारने की कोई कोशिश ही न की तो वो मर गया । मुझे कोठारी की बात पर पूरा यकीन है कि सदा को विस्की पीने को मजबूर करते वक्त उसे कतई इमकान नहीं था कि वो मर जायेगा । खुद मैंने सपने में नहीं सोचा था कि सालों से बोतल के रियाजी सदा को तब विस्की पीने से कुछ हो जाने वाला था ।"

"तभी तो कहते हैं कि ये संसार विचित्रताओं का घर है ।"

"उसकी तरह मैंने भी सदा को बोतल नहीं मारी थी लेकिन मेरे पर इलजाम आया । मैंने तो अपनी तरफ से उसे बचाने की हरचन्द कोशिश की लेकिन मुझे कातिल साबित करने में कसर न छोड़ी गयी । ये मेरी विडम्बना है कि मैंने सदा को मारकर उसका माल कब्जाने की कोशिश की तो मेरा कुछ न बिगड़ा, अब जब मैंने उसकी जान बचाने की इतनी सिंसियर कोशिश की तो हवालात में बन्द हूं । जैसे मैं बेगुनाह हूं वैसे ही कोठारी भी बेगुनाह है लेकिन" - उसने एक गहरी सांस ली - "कैसे बचेगा ? खुद मैं कैसे बचूंगी ? मेरे पर भी तो इरादायकत्ल का इल्जाम आयेगा ।"

"तुम्हें पुलिस को अपनी खाल बचाने का ये कहकर मौका देना होगा कि - भले ही नहीं मारी थी - तुमने पुणेकर के सिर में बोतल मारी थी, लेकिन इरादायकत्ल का इलजाम तुम पर नहीं आयेगा ।"

"नहीं आयेगा ?"

"नहीं आयेगा । मैं उसको आत्मरक्षा में किया गया वार साबित करने में जान लड़ा दूंगा । इस बात से तुम्हें बड़ा फायदा ये पहुंचा है कि अब पुणेकर के खिलाफ तुम और कोठारी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे नहीं हो । अब तुम्हारे पर चार्ज अलग है और तुम्हारा केस अलग है और कोठारी पर चार्ज अलग है और उसका केस अलग है । कोठारी ने आपा खोकर एसीपी के आफिस में जो हरकतें की थीं - सबसे बड़ी हरकत मेरे पर हमला थी, मैं बड़ा वकील यूं फेनफेयर के साथ कोर्ट में उसके खिलाफ गवाही दूंगा - वो ही उसकी वाट लगाने में काफी होगी । दूसरे, जोश में उसने दो पुलिस अधिकारियों के सामने, गवाहों के सामने ये कहा था, कबूल किया था कि पुणेकर को खत्म करने की साजिश उसने रची थी, उसने हर डिटेल को वर्क आउट किया था क्योंकि तुम्हें तो टांगें फैलाने के अलावा कुछ आता ही नहीं ।.. .वैसे क्या ये बात सच है ?"

"कौन-सी बात ?"

"कि टांगें फैलाने के अलावा तुम्हें कुछ नहीं आता ?"

"ओह ! शटअप !"

"कुछ तो आता होगा । डिमांस्ट्रेशन देना ।"

“आई से, शटअप आलरेडी ।”

“दूसरी गुड न्यूज तुम्हारे लिये ये है कि पुलिस अगर तुम्हारे खिलाफ कोठारी से डील कर सकती है तो कोठारी के खिलाफ तुम्हारे से भी डील कर सकती है । वो उसे वादामाफ गवाह बनाने की पेशकश कर सकती है तो तुम्हें भी कर सकती है । मैं इस बारे में एसीपी पावटे से बात करूंगा ।”

“उसने आपकी न सुनी तो ?”

“तो ऊपर डीसीपी से बात करूंगा । उसने भी न सुनी तो जॉइंट कमिश्नर से बात करूंगा । उसने भी न सुनी तो कमिश्नर से बात करूंगा । उसने न सुनी तो होम मिनिस्टर से बात करूंगा ।”

“बस, बस । यूं तो नयी दिल्ली पहुंचकर मानोगे ।”

“कहने का मतलब ये है कि कैसे भी करूं, सजा तो मैं तुम्हें नहीं होने दूंगा ।”

“क्योंकि मैं बेगुनाह हूं ?”

“क्योंकि मेरी फीस मारी जायेगी ।”

“सन ऑफ बिच !” - नमिता का स्वर पहले से भी ज्यादा प्रशंसात्मक हो उठा ।

“गाली देती है !”

“इजाजत लेकर ।”

“इजाजत एक बार के लिये थी । मेरी उम्र का तो लिहाज कर !”

“आपको खुद अपनी उम्र का लिहाज है ?”

“नहीं । बाई दि वे, यहां तो कुछ हो पाना मुमकिन नहीं होगा ?”

“देखा !”

शाह अपनी सलामत आंख मूंदकर धूर्त भाव से हंसा ।

***

एसीपी के आफिस में पावटे और नगरकर मौजूद थे । दोनों के सामने चाय के कप थे, दोनों के चेहरे पर संजीदगी थी ।

“तौबा !” - पावटे गहरी सांस लेता बोला - “मुजरिमों से पार पाना आसान है, उनके वकीलों से पार पाना मुश्किल है ।”

“आपका इशारा गुंजन शाह की तरफ है ?”

“और किसकी तरफ है !”

“कोठारी भी वकील है, इसलिये सोचा कि...”

“वो तो उतना ही नालायक वकील साबित हुआ जितना कि नालायक मुजरिम । अपना आपा खो बैठा और खुद ही सब बक दिया ।”

“मुकर जायेगा ।”

“हर बात से तो नहीं मुकर पायेगा । रेस की लत से कैसे मुकरेगा ? कर्जाई होने से कैसे मुकरेगा ? नमिता पुणेकर की अपने खिलाफ गवाही को कैसे झुठलायेगा ? नाडकर्णी की गवाही को कैसे झुठलाएगा ?”

“लगता है अब हमें उस औरत से डील करना होगा ।”

“हमारी मजबूरी है, वर्ना मुजरिम छूट जायेगा ।”

“वो तो शाह ही सब...”

“मैं नमिता पुणेकर की नहीं, कोठारी की बात कर रहा हूं । बड़ी मछली फंसती दिखाई दे तो छोटी की कुर्बानी हम कर सकते है ।”

“छोटी मछली की तो चान्दी हो जायेगी । उस पर कत्ल का इलजाम आयद नहीं होगा तो उसके तो दोनों हाथों में लड्डू होगा । सजा से भी बच जायेगी और अपने खाविन्द के विरसे की भी दावेदार बन जायेगी । पौने दो करोड़ से ज्यादा के यूरो । साठ लाख की फेस वैल्यू के शेयर, पचास लाख का जीवन बीमा और पता नहीं क्या क्या !”

“सम पीपल हैव आल दि लक इन दि वर्ल्ड ।”

“एण्ड मोर ।”

“कहते हैं जुर्म का कोई हासिल नहीं । क्राइम डज नाट पे । क्राइम सीम्ज टु हैव पेड हैण्डसमली टु दिस वूमेन ।”

“क्राइम ने नहीं पे किया, सर, देखा जाये तो क्राइम में नाकामी ने पे किया । अपनी असली, नापाक, कोशिशों से तो उसके हाथ कुछ भी न लगा ।”

“ये भी ठीक है ।”

तभी फोन की घंटी बजी ।

एसीपी ने काल रिसीव की ।

कुछ क्षण वो फोन पर व्यस्त रहा, फिर रिसीवर वापिस क्रेडल पर रखा और पावटे की ओर घूमा ।

“जानते हो” - वो मन्त्रमुग्ध स्वर में बोला - “किसका फोन था ?”

“किसका ?” - नगरकर उत्सुक भाव से बोला ।

“मिसेज रोटोलो का ।”

“उस गोवानी अम्मा का ?”

“हां ।”

“वो क्या कहती थी ?”

“सुनोगे तो हैरान हो जाओगे । कहती है, अभी चार दिन पहले उसने सदानन्द पुणेकर को अपने ही घर में चोरों की तरह घुसते देखा था ।”

“किसलिये ?” - नगरकर हैरानी से बोला ।

“बीवी से मिलने के लिये !”

“क्या ! उस बीवी से मिलने के लिये, जो उसे मालूम था कि उसके कत्ल की साजिश में शरीक थी ?”

“हां । और क्या खूब मिलने के लिये ! कहती है कि उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ था कि वो पुणेकर को ही काटेज में घुसते देख रही थी - क्योंकि वो तो मर चुका बताया जाता था - इसलिये अपने सस्पेंस को दूर करने के लिये उसने थोड़ी तांक झांक की जुर्रत की थी । वो चुपचाप उनकी टैरेस पर पहुंची थी और शीशों से पार पर्दों के बीच बनी एक झिरी में से भीतर झांका था । कहती है दोनों ड्राइंगरूम के फर्श पर गुत्थमगुत्था थे और उसी के शब्दों में ‘मिस्टर पुणेकर वाज परफारमिंग लाइक ए स्टड बुल’ ।”

“क्या !” - पावटे हकबकाया सा बोला - “यानी कि डाक्टर देशपाण्डे ने उसकी बाबत गलत कहा कि वो नपुंसक था ?”

“नहीं । वो भला झूठ क्यों बोलेगा ?”

“तो फिर मिसेज रोटोलो ने किसी और मर्द को देखा ?”

“पुणेकर को ही देखा । क्योंकि अगले दिन तसदीक के लिये वही तमाम नजारा उसने फिर किया । मुगालता एक बार लग सकता है, बार बार नहीं लग सकता ।”

“उसकी उम्र की तनहा औरत को बार-बार भी लग सकता है । वो जागी आंखों से सपने देखती है । अगर उसने सच में ऐसा कुछ देखा था तो अभी तक खामोश क्यों थी ?”

“सोचता था ।” - पावटे मिस्टर रोटोलो के अन्दाजेबयां की नकल करता बोला - “सोचता था कि ऐसा बात रिपीट करना सकता था या नहीं करना सकता था ।”

“वो नजारा करते वक्त न सोचा कि वो किसी की प्राइवेसी पर हमला था, दोहराने का सवाल आया तो साला सोचता था ।”

“नगरकर, वो पुणेकर को स्टड बुल बोली ।”

“तो ?”

“तो नमिता की मूल शिकायत का तो वजूद ही खत्म हो गया !”

“तो ?”

“तो सोचता हूं कि कहीं उसका हृदयपरिवर्तन तो नहीं हो गया था, वो निष्ठावान पत्नी तो नहीं बन गयी थी ! वो सच ही तो नहीं बोल रही थी कि कल रात उसने अपने पति को बचाने की भरपूर कोशिश की थी ।”

“जिसके तहत उसने पति के सिर पर बोतल दे मारी थी ?”

“वो उस औरत का नहीं, उसके वकील का बयान था । वो शाह की कोई स्ट्रेटेजी थी, जो उसने अपने क्लायंट पर थोपी थी ।”

“हूं ।”

“नगरकर, आई वांट टु गिव दैट वूमेन ए ब्रेक ।”

“जी !”

“हम एडवोकेट गुंजन शाह की उसको छुड़ाने की कोशिशों में रुकावट नहीं बनेंगे ।”

“बदले में हमें क्या मिलेगा ?”

पावटे की आंखों के आगे परीचेहरा, शोलाबदन, मुजस्सम हुस्न नमिता का चेहरा लहराया ।

“देखेंगे ।” - वो अरमानभरे स्वर में बोला - “देखेंगे ।”

समाप्त